This is a digital copy of a book that was preserved for generations on library shelves before it was carefully scanned by Google as part of a project to make the world's books discoverable online.

It has survived long enough for the copyright to expire and the book to enter the public domain. A public domain book is one that was never subject to copyright or whose legal copyright term has expired. Whether a book is in the public domain may vary country to country. Public domain books are our gateways to the past, representing a wealth of history, culture and knowledge that's often difficult to discover.

Marks, notations and other marginalia present in the original volume will appear in this file - a reminder of this book's long journey from the publisher to a library and finally to you.

**Usage guidelines**

Google is proud to partner with libraries to digitize public domain materials and make them widely accessible. Public domain books belong to the public and we are merely their custodians. Nevertheless, this work is expensive, so in order to keep providing this resource, we have taken steps to prevent abuse by commercial parties, including placing technical restrictions on automated querying.

We also ask that you:

+ *Make non-commercial use of the files* We designed Google Book Search for use by individuals, and we request that you use these files for personal, non-commercial purposes.

+ *Refrain from automated querying* Do not send automated queries of any sort to Google's system: If you are conducting research on machine translation, optical character recognition or other areas where access to a large amount of text is helpful, please contact us. We encourage the use of public domain materials for these purposes and may be able to help.

+ *Maintain attribution* The Google "watermark" you see on each file is essential for informing people about this project and helping them find additional materials through Google Book Search. Please do not remove it.

+ *Keep it legal* Whatever your use, remember that you are responsible for ensuring that what you are doing is legal. Do not assume that just because we believe a book is in the public domain for users in the United States, that the work is also in the public domain for users in other countries. Whether a book is still in copyright varies from country to country, and we can't offer guidance on whether any specific use of any specific book is allowed. Please do not assume that a book's appearance in Google Book Search means it can be used in any manner anywhere in the world. Copyright infringement liability can be quite severe.

**About Google Book Search**

Google's mission is to organize the world's information and to make it universally accessible and useful. Google Book Search helps readers discover the world's books while helping authors and publishers reach new audiences. You can search through the full text of this book on the web at `http://books.google.com/`

BODLEIAN LIBRARY

DUNN BEQUEST

29461 f. 28

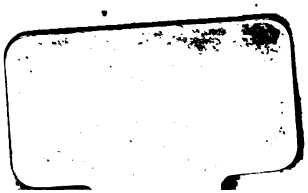

S. G. Dunn
Coll. Jesu. Oxon.

Clarendon Press Series

# M. TULLII CICERONIS

## EPISTOLAE SELECTAE

CURANTE

ALBERTO WATSON, A.M.

COLLEGII AENEI NASI APUD OXONIENSES SOCIO, QUONDAM TUTORE

EDITIO SECUNDA

Oxonii

E TYPOGRAPHEO CLARENDONIANO

M DCCC LXXXIV

BODLEIAN
D
23 JUL 1964
LIBRARY

London

HENRY FROWDE

OXFORD UNIVERSITY PRESS WAREHOUSE

AMEN CORNER

Textus huius editionis congruit cum editione maiore quam ipse, Baiterum perpaucis locis exceptis secutus, quatuor fere abhinc annos curavi. Paucos tamen errores typographicos correxi, et in indice nominum propriorum quaedam mutavi, prout diversa huius editionis ratio postulavit.

*Scribebam Oxonii mense Quinctili*
A. D. MDCCCLXXIV.

PAG.

ORDO EPISTOLARUM . . . . . vii

VITA CICERONIS . . . . . xi

EPISTOLARUM PARS PRIMA . . . . . 1

„ „ SECUNDA . . . . . 53

„ „ TERTIA . . . . . 126

„ „ QUARTA . . . . . 178

„ „ QUINTA . . . . . 220

INDEX I. . . . . 281

„ II. . . . . 283

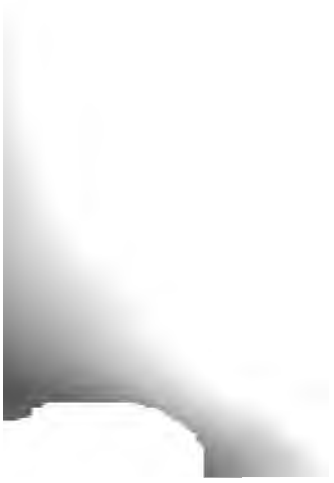

# ORDO EPISTOLARUM HUIUS LIBRI CUM ORDINE VULGATO COLLATUS.

| ORDO HUIUS LIBRI. | | ORDO VULGATUS. |
|---|---|---|
| 1 | Ad Att. | 1. 1. |
| 2 | „ | 1. 2. |
| 3 | Ad Fam. | 5. 7. |
| 4 | „ | 5. 1. |
| 5 | „ | 5. 2. |
| 6 | Ad Att. | 1. 13. |
| 7 | „ | 1. 14. |
| 8 | „ | 1. 16. |
| 9 | „ | 2. 1. |
| 10 | „ | 2. 16. |
| 11 | „ | 2. 18. |
| 12 | „ | 2. 19. |
| 13 | „ | 2. 24. |
| 14 | „ | 2. 25. |
| 15 | Ad Q. F. | 1. 2. |
| 16 | Ad Att. | 3. 15. |
| 17 | Ad Fam. | 14. 2. |
| 18 | „ | 14. 1. |
| 19 | Ad Att. | 3. 23. |
| 20 | „ | 4. 1. |
| 21 | Ad Fam. | 1. 1. |
| 22 | „ | 1. 2. |
| 23 | Ad Q. F. | 2. 3. |
| 24 | „ | 2. 4. |
| 25 | Ad Att. | 4. 5. |
| 26 | Ad Fam. | 1. 7. |
| 27 | „ | 7. 5. |
| 28 | Ad Att. | 4. 15. |
| 29 | Ad Fam. | 1. 9. |
| 30 | „ | 2. 6. |
| 31 | Ad Att. | 5. 11. |
| 32 | „ | 5. 16. |
| 33 | Ad Fam. | 8. 4. |
| 34 | „ | 8. 8. |
| 35 | „ | 8. 6. |
| 36 | Ad Att. | 5. 21. |
| 37 | Ad Fam. | 2. 13. |
| 38 | Ad Att. | 6. 2. |

| ORDO HUIUS LIBRI. | | ORDO VULGATUS. |
|---|---|---|
| 39 | Ad Fam. | 15. 5. |
| 40 | „ | 15. 6. |
| 41 | „ | 8. 14. |
| 42 | Ad Att. | 6. 6. |
| 43 | Ad Fam. | 14. 5. |
| 44 | Ad Att. | 7. 7. |
| 45 | „ | 7. 9. |
| 46 | „ | 7. 10. |
| 47 | „ | 7. 11. |
| 48 | „ | 7. 13. |
| 49 | „ | 8. 11 A. |
| 50 | „ | 8. 11 B. |
| 51 | „ | 8. 12 D. |
| 52 | Ad Fam. | 16. 12. |
| 53 | „ | 16. 15. |
| 54 | Ad Att. | 8. 3. |
| 55 | „ | 8. 9. |
| 56 | „ | 8. 11. |
| 57 | „ | 8. 13. |
| 58 | „ | 8. 15 A. |
| 59 | „ | 8. 16. |
| 60 | „ | 9. 6 A. |
| 61 | „ | 9. 7. |
| 62 | „ | 9. 9. |
| 63 | „ | 9. 10. |
| 64 | „ | 9. 11 A. |
| 65 | „ | 9. 12. |
| 66 | „ | 9. 16. |
| 67 | „ | 9. 18. |
| 68 | „ | 10. 1. |
| 69 | Ad Fam. | 8. 16. |
| 70 | „ | 2. 16. |
| 71 | Ad Att. | 10. 8. |
| 72 | „ | 10. 8 A. |
| 73 | „ | 10. 8 B. |
| 74 | „ | 10. 16. |
| 75 | Ad Fam. | 14. 7. |
| 76 | „ | 8. 17. |

| ORDO HUIUS LIBRI. | | ORDO VULGATUS. |
|---|---|---|
| 77 | Ad Fam. | 9. 9. |
| 78 | Ad Att. | 11. 4. |
| 79 | „ | 11. 5. |
| 80 | „ | 11. 6. |
| 81 | „ | 11. 9. |
| 82 | „ | 11. 12. |
| 83 | Ad Fam. | 15. 15. |
| 84 | Ad Att. | 12. 1. |
| 85 | „ | 12. 2. |
| 86 | Ad Fam. | 9. 5. |
| 87 | „ | 9. 18. |
| 88 | „ | 7. 3. |
| 89 | „ | 9. 17. |
| 90 | „ | 4. 4. |
| 91 | „ | 6. 6. |
| 92 | „ | 6. 7. |
| 93 | „ | 13. 11. |
| 94 | „ | 4. 14. |
| 95 | „ | 4. 11. |
| 96 | Ad Att. | 12. 21. |
| 97 | Ad Fam. | 13. 16. |
| 98 | „ | 4. 5. |
| 99 | „ | 4. 6. |
| 100 | „ | 6. 2. |
| 101 | „ | 4. 12. |
| 102 | „ | 13. 4. |
| 103 | „ | 12. 18. |
| 104 | Ad Att. | 13. 52. |
| 105 | „ | 14. 1. |
| 106 | „ | 14. 2. |
| 107 | Ad Fam. | 11. 1. |
| 108 | Ad Att. | 14. 12. |
| 109 | „ | 14. 13 A. |
| 110 | „ | 14. 13 B. |
| 111 | Ad Fam. | 9. 14. |
| 112 | Ad Att. | 14. 21. |
| 113 | Ad Fam. | 11. 27. |
| 114 | „ | 11. 28. |
| 115 | „ | 12. 1. |
| 116 | „ | 11. 3. |
| 117 | Ad Att. | 16. 7. |
| 118 | Ad Fam. | 12. 2. |
| 119 | „ | 12. 23. |
| 120 | „ | 11. 4. |
| 121 | Ad Att. | 16. 8. |
| 122 | „ | 16. 11. |
| 123 | Ad Fam. | 11. 5. |
| 124 | „ | 12. 22. |
| 125 | „ | 11. 8. |
| 126 | „ | 12. 4. |
| 127 | „ | 10. 28. |
| 128 | „ | 12. 5. |
| 129 | „ | 10. 31. |
| 130 | „ | 10. 6. |
| 131 | „ | 10. 27. |
| 132 | „ | 10. 8. |
| 133 | „ | 10. 10. |
| 134 | „ | 12. 6. |
| 135 | „ | 10. 30. |
| 136 | „ | 11. 9. |
| 137 | „ | 11. 10. |
| 138 | „ | 12. 12. |
| 139 | „ | 10. 11. |
| 140 | „ | 10. 15. |
| 141 | „ | 10. 34. |
| 142 | „ | 10. 13. |
| 143 | „ | 11. 23. |
| 144 | „ | 10. 35. |
| 145 | „ | 11. 13 a. |
| 146 | „ | 10. 23. |
| 147 | „ | 12. 10. |
| 148 | „ | 10. 24. |

# ORDO VULGATUS EPISTOLARUM CUM ORDINE HUIUS LIBRI COLLATUS.

| | ORDO VULGATUS. | | ORDO HUIUS LIBRI. |
|---|---|---|---|
| AD ATT. | I. I. | .. | I |
| „ | I. 2. | .. | 2 |
| „ | I. I3. | .. | 6 |
| „ | I. I4. | .. | 7 |
| „ | I. I6. | .. | 8 |
| „ | 2. I. | .. | 9 |
| „ | 2. I6. | .. | I0 |
| „ | 2. I8. | .. | II |
| „ | 2. I9. | .. | I2 |
| „ | 2. 24. | .. | I3 |
| „ | 2. 25. | .. | I4 |
| „ | 3. I5. | .. | I6 |
| „ | 3. 23. | .. | I9 |
| „ | 4. I. | .. | 20 |
| „ | 4. 5. | .. | 25 |
| „ | 4. I5. | .. | 28 |
| „ | 5. II. | .. | 3I |
| „ | 5. I6. | .. | 32 |
| „ | 5. 2I. | .. | 36 |
| „ | 6. 2. | .. | 38 |
| „ | 6. 6. | .. | 42 |
| „ | 7. 7. | .. | 44 |
| „ | 7. 9. | .. | 45 |
| „ | 7. I0. | .. | 46 |
| „ | 7. II. | .. | 47 |
| „ | 7. I3. | .. | 48 |
| „ | 8. 3. | .. | 54 |
| „ | 8. 9. | .. | 55 |
| „ | 8. II. | .. | 56 |
| „ | 8. II A. | .. | 49 |
| „ | 8. II B. | .. | 50 |
| „ | 8. I2 D. | .. | 5I |
| „ | 8. I3. | .. | 57 |
| AD ATT. | 8. I5 A. | .. | 58 |
| „ | 8. I6. | .. | 59 |
| „ | 9. 6 A. | .. | 60 |
| „ | 9. 7. | .. | 6I |
| „ | 9. 9. | .. | 62 |
| „ | 9. I0. | .. | 63 |
| „ | 9. II A. | .. | 64 |
| „ | 9. I2. | .. | 65 |
| „ | 9. I6. | .. | 66 |
| „ | 9. I8. | .. | 67 |
| „ | I0. I. | .. | 68 |
| „ | I0. 8. | .. | 7I |
| „ | I0. 8 A. | .. | 72 |
| „ | I0. 8 B. | .. | 73 |
| „ | I0. I6. | .. | 74 |
| „ | II. 4. | .. | 78 |
| „ | II. 5. | .. | 79 |
| „ | II. 6. | .. | 80 |
| „ | II. 9. | .. | 8I |
| „ | II. I2. | .. | 82 |
| „ | I2. I. | .. | 84 |
| „ | I2. 2. | .. | 85 |
| „ | I2. 2I. | .. | 96 |
| „ | I3. 52. | .. | I04 |
| „ | I4. I. | .. | I05 |
| „ | I4. 2. | .. | I06 |
| „ | I4. I2. | .. | I08 |
| „ | I4. I3 A. | .. | I09 |
| „ | I4. I3 B. | .. | II0 |
| „ | I4. 2I. | .. | II2 |
| „ | I6. 7. | .. | II7 |
| „ | I6. 8. | .. | I2I |
| „ | I6. II. | .. | I22 |

| | ORDO VULGATUS. | ORDO HUIUS LIBRI. |
|---|---|---|
| AD FAM. | I. 1. | 21 |
| „ | I. 2. | 22 |
| „ | I. 7. | 26 |
| „ | I. 9. | 29 |
| „ | 2. 6. | 30 |
| „ | 2. 13. | 37 |
| „ | 2. 16. | 70 |
| „ | 4. 4. | 90 |
| „ | 4. 5. | 98 |
| „ | 4. 6. | 99 |
| „ | 4. 11. | 95 |
| „ | 4. 12. | 101 |
| „ | 4. 14. | 94 |
| „ | 5. 1. | 4 |
| „ | 5. 2. | 5 |
| „ | 5. 7. | 3 |
| „ | 6. 2. | 100 |
| „ | 6. 6. | 91 |
| „ | 6. 7. | 92 |
| „ | 7. 3. | 88 |
| „ | 7. 5. | 27 |
| „ | 8. 4. | 33 |
| „ | 8. 6. | 35 |
| „ | 8. 8. | 34 |
| „ | 8. 14. | 41 |
| „ | 8. 16. | 69 |
| „ | 8. 17. | 76 |
| „ | 9. 5. | 86 |
| „ | 9. 9. | 77 |
| „ | 9. 14. | 111 |
| „ | 9. 17. | 89 |
| „ | 9. 18. | 87 |
| „ | 10. 6. | 130 |
| „ | 10. 8. | 132 |
| „ | 10. 10. | 133 |
| „ | 10. 11. | 139 |
| „ | 10. 13. | 142 |
| „ | 10. 15. | 140 |
| „ | 10. 23. | 146 |
| „ | 10. 24. | 148 |
| „ | 10. 27. | 131 |
| „ | 10. 28. | 127 |

| | ORDO VULGATUS. | ORDO HUIUS LIBRI. |
|---|---|---|
| AD FAM. | 10. 30. | 135 |
| „ | 10. 31. | 129 |
| „ | 10. 34. | 141 |
| „ | 10. 35. | 144 |
| „ | 11. 1. | 107 |
| „ | 11. 3. | 116 |
| „ | 11. 4. | 120 |
| „ | 11. 5. | 123 |
| „ | 11. 8. | 125 |
| „ | 11. 9. | 136 |
| „ | 11. 10. | 137 |
| „ | 11. 13 a. | 145 |
| „ | 11. 23. | 143 |
| „ | 11. 27. | 113 |
| „ | 11. 28. | 114 |
| „ | 12. 1. | 115 |
| „ | 12. 2. | 118 |
| „ | 12. 4. | 126 |
| „ | 12. 5. | 128 |
| „ | 12. 6. | 134 |
| „ | 12. 10. | 147 |
| „ | 12. 12. | 138 |
| „ | 12. 18. | 103 |
| „ | 12. 22. | 124 |
| „ | 12. 23. | 119 |
| „ | 13. 4. | 102 |
| „ | 13. 11. | 93 |
| „ | 13. 16. | 97 |
| „ | 14. 1. | 18 |
| „ | 14. 2. | 17 |
| „ | 14. 5. | 43 |
| „ | 14. 7. | 75 |
| „ | 15. 5. | 39 |
| „ | 15. 6. | 40 |
| „ | 15. 15. | 83 |
| „ | 16. 12. | 52 |
| „ | 16. 15. | 53 |
| AD QUINTUM FRATREM. | | |
| | 1. 2. | 15 |
| | 2. 3. | 23 |
| | 2. 4. | 24 |

# VITA CICERONIS.

| Annus aetatis Ciceronis | | A.U.C. |
|---|---|---|
| | Cicero nascitur, a. d. iii. Nonas Ianuarias . | 648 |
| 18 | In Pompeii consulis exercitu contra socios Italicos militat tiro . . . . . | 665 |
| 19 | P. Sulpicius occisus. Fuga C. Marii . . | 666 |
| 20 | Sulla ad bellum Mithridaticum profecto C. Marius in Italiam redit. Bellum civile . | 667 |
| 21 | Cicero 'de Inventione' scribit. Mors C. Marii . | 668 |
| 24 | Reditus Sullae. Bellum civile renovatur . | 671 |
| 26 | Cicero 'pro P. Quinctio' dicit. Sulla rem publicam constituit . . . . . | 673 |
| 27 | Cicero 'pro Sex. Roscio Amerino' dicit . | 674 |
| 28–29 | Cicero valetudinis causa Roma profectus Athenis commoratur, deinde Asiam peragrat . . | 675-676 |
| | Mors Sullae . . . . . | 676 |
| 30 | Cicero Romam redux Terentiam ducit uxorem (?) . . . . . | 677 |
| 32 | Quaestor est in Sicilia Lilybaetanus . . | 679 |
| 37 | C. Verrem accusat . . . . . | 684 |
| 38 | Curulem aedilitatem gerit . . . . | 685 |
| 41 | Praetor legem Maniliam suadet . . . | 688 |
| 42 | Ciceroni filius Marcus nascitur . . . | 689 |
| 44 | Cicero consul Catilinae frustratur consilia . | 691 |
| 46 | Clodius absolutus . . . . . | 693 |
| 48 | C. Caesar consul cum Pompeio et Crasso consilia communicat . . . . . | 695 |
| 49–50 | Cicero exsul. Nonis Sextilibus in Italiam redit | 696–697 |
| 51 | Cum Pompeio et Caesare in gratiam redit . | 698 |

| Annus aetatis Ciceronis. | | A.U.C. |
|---|---|---|
| 54 | M. Crassus contra Parthos pugnans occiditur . | 701 |
| 55 | P. Clodius a T. Milone occisus. Cn. Pompeius iii. consul, sine collega . . . . . | 702 |
| 56–57 | Cicero Ciliciam pro consule regit. In Italiam redit a. d. vii. Kal. Decembres . . . | 703–704 |
| 58 | Bellum civile. Cicero post longam dubitationem ad Pompeium proficiscitur . . . | 705 |
| 59 | Post pugnam Pharsalicam in Italiam redit. Mors Pompeii . . . . . | 706 |
| 60 | Caesar cum Cicerone redit in gratiam . . | 707 |
| 61 | Bellum Africanum. Mors Catonis. Cicero repudiata Terentia Publiliam ducit uxorem . | 708 |
| 62 | Mors Tulliae. Caesar in Hispania contra filios Pompeii pugnat . . . . . | 709 |
| 63 | C. Caesar Idibus Martiis occiditur. Cicero ut iturus in Graeciam profectus Romam revertitur. Orationes quattuor habet in M. Antonium, quae Philippicae appellatae sunt. | 710 |
| 64 | Cicero alias orationes decem Philippicas in M. Antonium habet. Bellum Mutinense. Cicero vii. Id. Decembres occiditur . . | 711 |

"my candidature"

"is canvassing in person"

he receives for answer a plain, unvarnished old-fashioned no."

"has not been a bad thing for my prospects"

Infin. with spero, common in Comedy.

"when the news gets spread"

Epistolary tenses used only for exact point of time.

ose up to whole sentence. The reason is that none of these are serious opponents.

colleague of Cic. as curule aedile & judge of bribes.

at. was charged with extortion in Africa.

= Ovelli. All MSS. have Aufidio.

... had been praetor in Asia. thought best to ... called Aulo filius till Cicero would know what he meant. ... athens would ... & could not stand. ... in Asia with Pompey

# M. TULLII CICERONIS

## EPISTOLAE SELECTAE.

### PARS I.

### 1. AD ATTICUM I. 1.

SCR. ROMAE MENSE QUINTILI A.U.C. 689.

CICERO ATTICO SAL.

1. PETITIONIS nostrae, quam tibi summae curae esse scio, huius modi ratio est, quod adhuc coniectura provideri possit. Prensat unus P. Galba; sine fuco ac fallaciis, more maiorum, negatur. Ut opinio est hominum, non aliena rationi nostrae fuit illius haec praepropera prensatio; nam illi ita negant volgo, ut mihi se debere dicant. Ita quiddam spero nobis profici, cum hoc percrebrescit, plurimos nostros amicos inveniri. Nos autem initium prensandi facere cogitaramus eo ipso tempore, quo tuum puerum cum his litteris proficisci Cincius dicebat, in campo, comitiis tribuniciis, a. d. XVI. Kalend. Sextiles. Competitores, qui certi esse videantur, Galba et Antonius et Q. Cornificius: puto te in hoc aut risisse aut ingemuisse. Ut frontem ferias, sunt qui etiam Caesonium putent. Aquilium non arbitramur, qui denegavit et iuravit morbum et illud suum regnum iudiciale opposuit. Catilina, si iudicatum erit meridie non lucere, certus erit competitor. De Auli filio et de Palicano non puto te exspectare dum scribam. 2. De iis, qui nunc

petunt, Caesar certus putatur. Thermus cum Silano contendere existimatur, qui sic inopes et ab amicis et *ab* existimatione sunt, ut mihi videatur non esse *ἀδύνατον* Curium obducere. Sed hoc praeter me nemini videtur. Nostris rationibus maxime conducere videtur Thermum fieri cum Caesare; nemo est enim ex iis, qui nunc petunt, qui, si in nostrum annum reciderit, firmior candidatus fore videatur, propterea quod curator est viae Flaminiae, †quae cum erit absoluta sane facile eum libenter nunc ceteri consuli acciderim. Petitorum haec est adhuc informata cogitatio. Nos in omni munere candidatorio fungendo summam adhibebimus diligentiam et fortasse, quoniam videtur in suffragiis multum posse Gallia, cum Romae a iudiciis forum refrixerit, excurremus mense Septembri legati ad Pisonem, ut Ianuario revertamur: cum perspexero voluntates nobilium, scribam ad te. Cetera spero prolixa esse, his dumtaxat urbanis competitoribus. Illam manum tu mihi cura ut praestes, quoniam propius abes, Pompeii, nostri amici: nega me ei iratum fore, si ad mea comitia non venerit. 3. Atque haec huius modi sunt. Sed est quod abs te mihi ignosci pervelim: Caecilius, avunculus tuus, a P. Vario cum magna pecunia fraudaretur, agere coepit cum eius fratre A. Caninio Satyro de iis rebus, quas eum dolo malo mancipio accepisse de Vario diceret; una agebant ceteri creditores, in quibus erat *L.* Lucullus et P. Scipio et is, quem putabant magistrum fore, si bona venirent, L. Pontius. Verum hoc ridiculum est de magistro. Nunc cognosce rem. Rogavit me Caecilius, ut adessem contra Satyrum: dies fere nullus est quin hic Satyrus domum meam ventitet; observat L. Domitium maxime, me habet proximum; fuit et mihi et Q. fratri magno

Silanus cons. 62

the struggle is thought to lie between
Thermus said to raise or come C. Marcius Figulus cons.
"quite on the cards".

Turium in margin of Med. & Z. should be kept.
He just failed to be consul. "Lucio Turio paucae centuriae ad consulatum defuerunt".

So Med.
Manutius gives "quae tunc erit absoluta sane facile: cum libenter nunc Caesari consulem addiderimus."
Tyrrell suggests "eo libentius Thermum Caesari consulem accenderimus", a word found in Plautus.
Boot guessed at a pun "Thermum ciceri" "lupine to a vetch".
2 has munciteri So Kayser "cum libentius municipia consulem accipient."
Piso consul 64. Libera Legatio.
"provided I have only to deal with civilian rivals." "plain-sailing".
A soldier most popular
then orator, then jurisconsult.

"to have fraudulently purchased". P. Sitius Nuceria killed himself 46 B.C.
Baiter inserts L. on his own authority.
sc. auctionis "liquidator". Tribune 44. Killed at Mutina.

MSS. have hunc cognoscere; an instance of faulty division.
rem was always written rē.

"who is my sheet anchor in my canvass"

"even without the aid of any advocate produced by Caecilius individually" Cong. produceret
" consider my obligations & position"
belli = humani

abs is Archaic, used in letters & earlier speeches.

Il. XXII 159.
"neque enim levia aut ludicra petuntur" Aen. XII 764.

"that you would fancy my school to be an offering to it".
To Metor.
M has ΕΙΝ ΑΝΑΘΜΑ; here the Θ is probably a mis-reading for a Roman M. Then reading should be with Tyrrell ἡλίου ἄνθημα "a blaze of sunlight".
ἄνθημα is common in Stoic philosophy familiar to Cicero.

usui in nostris petitionibus. 4. Sane sum perturbatus cum ipsius Satyri familiaritate, tum Domitii, in quo uno maxime ambitio nostra nititur. Demonstravi haec Caecilio; simul et illud ostendi, si ipse unus cum illo uno contenderet, me ei satis facturum fuisse; nunc in causa universorum creditorum, hominum praesertim amplissimorum, qui sine eo, quem Caecilius suo nomine perhiberet, facile causam communem sustinerent, aequum esse eum et officio meo consulere et tempori. Durius accipere hoc mihi visus est quam vellem et quam homines belli solent, et postea prorsus ab instituta nostra paucorum dierum consuetudine longe refugit: abs te peto, ut mihi hoc ignoscas et me existimes humanitate esse prohibitum, *ne contra* amici summam existimationem miserrimo eius tempore venirem, cum is omnia sua studia et officia in me contulisset. Quod si voles in me esse durior, ambitionem putabis mihi obstitisse; ego autem arbitror, etiam si id sit, mihi ignoscendum esse: *ἐπεὶ οὐχ ἱερήϊον οὐδὲ βοείην.* Vides enim, in quo cursu simus et quam omnes gratias non modo retinendas, verum etiam acquirendas putemus. Spero tibi me causam probasse, cupio quidem certe. 5. Hermathena tua valde me delectat et posita ita belle est, ut totum gymnasium eius *ἀνάθημα* esse videatur. Multum te amamus.

## 2. AD ATTICUM I. 2.

SCR. ROMAE A.U.C. 689.

CICERO ATTICO SAL.

1. L. Iulio Caesare C. Marcio Figulo consulibus filiolo me auctum scito salva Terentia. Abs te tam diu nihil litterarum? ego de meis ad te rationibus scripsi antea diligenter. Hoc tempore Catilinam, competitorem

nostrum, defendere cogitamus; iudices habemus, quos voluimus, summa accusatoris voluntate. Spero, si absolutus erit, coniunctiorem illum nobis fore in ratione petitionis; sin aliter acciderit, humaniter feremus. 2. Tuo adventu nobis opus est maturo; nam prorsus summa hominum est opinio tuos familiares, nobiles homines, adversarios honori nostro fore: ad eorum voluntatem mihi conciliandam maximo te mihi usui fore video. Qua re Ianuario mense, ut constituisti, cura ut Romae sis.

## 3. AD FAMILIARES V. 7. 62 B.C.

SCR. ROMAE A.U.C. 692.

M. TULLIUS M. F. CICERO S. D. CN. POMPEIO CN. F. MAGNO IMPERATORI.

1. S. T. E. Q. V. B. E. Ex litteris tuis, quas publice misisti, cepi una cum omnibus incredibilem voluptatem; tantam enim spem otii ostendisti, quantam ego semper omnibus te uno fretus pollicebar; sed hoc scito, tuos veteres hostes, novos amicos, vehementer litteris perculsos atque ex magna spe deturbatos iacere. 2. Ad me autem litteras, quas misisti, quamquam exiguam significationem tuae erga me voluntatis habebant, tamen mihi scito iucundas fuisse; nulla enim re tam laetari soleo quam meorum officiorum conscientia, quibus si quando non mutue respondetur, apud me plus officii residere facillime patior: illud non dubito, quin, si te mea summa erga te studia parum mihi adiunxerint, res publica nos inter nos conciliatura coniuncturaque sit. 3. Ac ne ignores, quid ego in tuis litteris desiderarim, scribam aperte, sicut et mea natura et nostra amicitia postulat: res eas gessi, quarum aliquam in tuis litteris et nostrae necessitudinis et rei publicae causa gratulationem exspectavi; quam ego abs te praeter-

accusator = P. Clodius

Asconius thinks he did not do so as there are no "commentarii" existing for this speech as there are for others.

"in the matter of". humaniter = with equanimity

nobiles = Hortensius, L. Lucullus & M. Crassus.

Pollicebar i.e. in Pro Lege Manilia.

novos amicos: Caesar & popular party. C. as praetor in this year proposed to transfer dedication of temple of Jupiter Capitolinus from Catulus to Pompey.

iacere = are prostrate
expression

"consciousness of my services to you for which if no fair return is made I am quite content that the balance of services done should be on my side."

"will ever draw & keep us close together"

T. his verebare. He subj. gives thought of Pompey.

"have met with a chorus of approval & acknowledgement"

Lacinium is Acc. in attraction by me.

should have an assault made on his civil existence & his property.

pudor = "the respect due to him"

Par. & T have "a quo quidem".

in defiance alike of equity & the courtesy of the old regime

esse - sperabam

either ① Present used as in Comedy in place of Future

② Imperf. "I did not expect that you were

"slight to my family".

missam esse arbitror, quod vererere ne cuius animum offenderes. Sed scito ea, quae nos pro salute patriae gessimus, orbis terrae iudicio ac testimonio comprobari; quae, cum veneris, tanto consilio tantaque animi magnitudine a me gesta esse cognosces, ut tibi multo maiori, quam Africanus fuit, me non multo minorem quam Laelium facile et in re publica et in amicitia adiunctum esse patiare.

## 4. AD FAMILIARES V. 1.

SCR. IN GALLIA CITERIORE A.U.C. 692.

Q. METELLUS Q. F. CELER PROCOS. S. D. M. TULLIO CICERONI.

1. SI vales, bene est. Existimaram pro mutuo inter nos animo et pro reconciliata gratia nec absentem *me* ludibrio laesum iri nec Metellum fratrem ob dictum capite ac fortunis per te oppugnatum iri; quem si parum pudor ipsius defendebat, debebat vel familiae nostrae dignitas vel meum studium erga vos remque publicam satis sublevare. Nunc video illum circumventum, me desertum, a quibus minime conveniebat. 2. Itaque in luctu et squalore sum, qui provinciae, qui exercitui praesum, qui bellum gero: quae quoniam nec ratione nec maiorum nostrorum clementia administrastis, non erit mirandum, si vos poenitebit. Te tam mobili in me meosque esse animo non sperabam: me interea nec domesticus dolor nec cuiusquam iniuria ab re publica abducet.

## 5. AD FAMILIARES V. 2.

SCR. ROMAE A.U.C. 692.

M. TULLIUS M. F. CICERO Q. METELLO Q. F. CELERI PROCOS. S. D.

1. SI tu exercitusque valetis, bene est. Scribis ad me te existimasse pro mutuo inter nos animo et pro reconciliata gratia numquam te a me ludibrio laesum iri. Quod

cuius modi sit, satis intellegere non possum, sed tamen suspicor ad te esse adlatum, me, in senatu cum disputarem permultos esse qui rem publicam a me conservatam dolerent, dixisse a te propinquos tuos, quibus negare non potuisses, impetrasse ut ea quae statuisses tibi in senatu de mea laude esse dicenda reticeres. Quod cum dicerem, illud adiunxi, mihi tecum ita dispertitum officium fuisse in rei publicae salute retinenda, ut ego urbem a domesticis insidiis et ab intestino scelere, tu Italiam et ab armatis hostibus et ab occulta coniuratione defenderes, atque hanc nostram tanti et tam praeclari muneris societatem a tuis propinquis labefactatam, qui, cum tu a me rebus amplissimis atque honorificentissimis ornatus esses, timuissent ne quae mihi pars abs te voluntatis mutuae tribueretur. 2. Hoc in sermone cum a me exponeretur, quae mea exspectatio fuisset orationis tuae quantoque in errore versatus essem, visa est oratio non iniucunda, et mediocris quidam est risus consecutus, non in te, sed magis in errorem meum et quod me abs te cupisse laudari aperte atque ingenue confitebar. Iam hoc non potest in te non honorifice esse dictum, me in clarissimis meis atque amplissimis rebus tamen aliquod testimonium tuae vocis habere voluisse. 3. Quod autem ita scribis, 'pro mutuo inter nos animo,' quid tu existimes esse in amicitia mutuum, nescio; equidem hoc arbitror, cum par voluntas accipitur et redditur. Ego si hoc dicam, me tua causa praetermisisse provinciam, tibi ipse levior videar esse; meae enim rationes ita tulerunt atque eius mei consilii maiorem in dies singulos fructum voluptatemque capio: illud dico, me, ut primum in contione provinciam deposuerim, statim, quem ad modum eam tibi traderem, cogitare coepisse. Nihil dico de sortitione vestra: tantum te suspicari volo,

"argued". Cf. Quid est hoc quod homines studiosissimi disputant?
e.g. Clodius, Clodia (his wife) > Met. Nepos.
" In saying this however"

intestino " - treason of her own citizens"

" shrunk from allowing you to pay me in return even a tribute of regard."
"how I had looked forward ~~to some recognition in words~~ ~~from you~~".

triumphs "some recognition in words from you".

"reciprocity in friendship".

"should seem to make foolish pretensions" - pace V.L. ipsi.

i.e. Antonius

Regular word for summoning Senate
Cf. Virgil "cogitque vocatas."

Jam illud = praeterea

"is couched in such terms"
officium = "devotion".

"have put together"

Either "lately" or "to the immediate neighbourhood of Rome.
He came near Rome with his army in 63-62 as a
demonstration in aid of his brother.
"was a fair return"

"In my devotion to the state I yield to no man".

"was deliberately gathering"
Mucia wife of Pompey.

nihil in ea re per collegam meum me insciente esse factum. Recordare cetera; quam cito senatum illo die facta sortitione coëgerim, quam multa de te verba fecerim, cum tu ipse mihi dixisti orationem meam non solum in te honorificam, sed etiam in collegas tuos contumeliosam fuisse. 4. Iam illud senatus consultum, quod eo die factum est, ea perscriptione est, ut, dum id exstabit, officium meum in te obscurum esse non possit. Postea vero quam profectus es, velim recordere, quae ego de te in senatu egerim, quae in contionibus dixerim, quas ad te litteras miserim: quae cum omnia collegeris, tum ipse velim iudices, satisne videatur his omnibus rebus tuus adventus, cum proxime Romam venisti, mutue respondisse. 5. Quod scribis de reconciliata *gratia* nostra, non intellego, cur reconciliatam esse dicas, quae numquam imminuta est. 6. Quod scribis non oportuisse Metellum fratrem tuum ob dictum a me oppugnari, primum hoc velim existimes, animum mihi istum tuum vehementer probari et fraternam plenam humanitatis ac pietatis voluntatem; deinde, si qua ego in re fratri tuo rei publicae causa restiterim, ut mihi ignoscas; tam enim sum amicus rei publicae, quam qui maxime; si vero meam salutem contra illius impetum in me crudelissimum defenderim, satis habeas nihil me etiam tecum de tui fratris iniuria conqueri: quem ego cum comperissem omnem sui tribunatus conatum in meam perniciem parare atque meditari, egi cum Claudia, uxore tua, et cum vestra sorore Mucia, cuius erga me studium pro Cn. Pompeii necessitudine multis in rebus perspexeram, ut eum ab illa iniuria deterrerent. 7. Atqui ille, quod te audisse certo *scio*, pr. Kal. Ianuarias, qua iniuria nemo umquam in minimo magistratu improbissimus civis adfectus est, ea me consulem adfecit, cum rem publicam

conservassem, atque abeuntem magistratu contionis habendae potestate privavit; cuius iniuria mihi tamen honori summo fuit: nam, cum ille mihi nihil nisi ut iurarem permitteret, magna voce iuravi verissimum pulcherrimumque ius iurandum, quod populus item magna voce me vere iurasse iuravit. 8. Hac accepta tam insigni iniuria, tamen illo ipso die misi ad Metellum communes amicos, qui agerent cum eo, ut de illa mente desisteret; quibus ille respondit sibi non esse integrum: etenim paulo ante in contione dixerat ei, qui in alios animum advertisset indicta causa, dicendi ipsi potestatem fieri non oportere. Hominem gravem et civem egregium! qui, qua poena senatus consensu bonorum omnium eos adfecerat, qui urbem incendere et magistratus ac senatum trucidare, bellum maximum conflare voluissent, eadem dignum iudicaret eum, qui curiam caede, urbem incendiis, Italiam bello liberasset. Itaque ego Metello, fratri tuo, praesenti restiti: nam in senatu Kal. Ianuariis sic cum eo de re publica disputavi, ut sentiret sibi cum viro forti et constanti esse pugnandum. a. d. III. Non. Ianuar. cum agere coepisset, tertio quoque verbo orationis suae me appellabat, mihi minabatur; neque illi quicquam deliberatius fuit quam me, quacumque ratione posset, non iudicio neque disceptatione, sed vi atque impressione evertere. Huius ego temeritati si virtute atque animo non restitissem, quis esset qui me in consulatu non casu potius existimaret quam consilio fortem fuisse? 9. haec si tu Metellum cogitare de me nescisti, debes existimare te maximis de rebus a fratre esse celatum; sin autem aliquid impertivit tibi sui consilii, lenis a te et facilis existimari debeo, qui nihil tecum de his ipsis rebus expostulem. Et, si intellegis non me dicto Metelli, ut scribis, sed

It was "rem publicam atque hanc urbem mea unius opera esse salvam"
"swore the oath in its deepest truth & noblest meaning"
MSS. all have "idem" which is supported by De Rep I 4. – "salvam esse consulatu abiens in contione P. R. idem iurante iuravissem." "which same oath the people took (in swearing) that I had sworn truly."
"he had already committed himself to the supposed "dictum" of Metellus letter. "the minute" "the time he had taken up"
"How dignified, how patriotic!

"withstood to the face"

agere – to argue for his proposal i.e. recall of Pompey.

"by no trial in a court of law but by violent brow-beating"

'clarity'

"culpable weakness + laxity"

"make a proposal"

"though after what had passed I had no reason to trouble myself about it."
i.e. from being deprived of his office.

'from you I desire a similar candour in judging of my sense of wrong"

"To these sentiments I still adhere"
can permit that resentment in the smallest degree to influence

consilio eius animoque in me inimicissimo esse commotum, cognosce nunc humanitatem meam, si humanitas appellanda est in acerbissima iniuria remissio animi ac dissolutio: nulla est a me umquam sententia dicta in fratrem tuum; quotienscumque aliquid est actum, sedens iis adsensi, qui mihi lenissime sentire visi sunt. Addam illud etiam, quod iam ego curare non debui, sed tamen fieri non moleste tuli atque etiam, ut ita fieret, pro mea parte adiuvi, ut senati consulto meus inimicus, quia tuus frater erat, sublevaretur. 10. Qua re non ego oppugnavi fratrem tuum, sed fratri tuo repugnavi, nec in te, ut scribis, animo fui mobili, sed ita stabili, ut in mea erga te voluntate etiam desertus ab officiis tuis permanerem. Atque hoc ipso tempore tibi paene minitanti nobis per litteras hoc rescribo atque respondeo: ego dolori tuo non solum ignosco, sed summam etiam laudem tribuo; meus enim me sensus, quanta vis fraterni sit amoris, admonet. A te peto ut tu quoque aequum te iudicem dolori meo praebeas; si acerbe, si crudeliter, si sine causa sum a tuis oppugnatus, ut statuas mihi non modo non cedendum, sed etiam tuo atque exercitus tui auxilio in eius modi causa utendum fuisse. Ego te mihi semper amicum esse volui; me ut tibi amicissimum esse intellegeres, laboravi. Maneo in voluntate et, quoad voles tu, permanebo citiusque amore tui fratrem tuum odisse desinam quam illius odio quicquam de nostra benevolentia detraham.

## 6. AD ATTICUM I. 13.

SCR. ROMAE A. D. VI. KAL. FEB. A.U.C. 693.

CICERO ATTICO SAL.

1. ACCEPI tuas tres iam epistolas: unam a M. Cornelio, quam Tribus Tabernis, ut opinor, ei dedisti, alteram, quam

mihi Canusinus tuus hospes reddidit, tertiam, quam, *ut* scribis, ancora soluta de phaselo dedisti; quae fuerunt omnes, *ut* rhetorum pueri loquuntur, cum humanitatis sparsae sale, tum insignes amoris notis: quibus epistolis sum equidem abs te lacessitus ad rescribendum, *sed* idcirco sum tardior, quod non invenio fidelem tabellarium; quotus enim quisque est, qui epistolam paulo graviorem ferre possit, nisi eam pellectione relevarit? accedit *eo*, quod mihi non*, ut quisque in Epirum proficiscitur: *ego* enim te arbitror caesis apud Amaltheam tuam victimis statim esse ad Sicyonem oppugnandum profectum; neque tamen id ipsum certum habeo, quando ad Antonium proficiscare aut quid in Epiro temporis ponas: ita neque Achaicis hominibus neque Epiroticis paulo liberiores litteras committere audeo. 2. Sunt autem post discessum a me tuum res dignae litteris nostris, sed non committendae eius modi periculo, ut aut interire aut aperiri aut intercipi possint. Primum igitur scito primum me non esse rogatum sententiam praepositumque esse nobis pacificatorem Allobrogum, idque admurmurante senatu. neque me invito esse factum; sum enim et ab observando homine perverso liber, et ad dignitatem in re publica retinendam contra illius voluntatem solutus, et ille secundus in dicendo locus habet auctoritatem paene principis et voluntatem non nimis devinctam beneficio consulis. Tertius est Catulus, quartus, si etiam hoc quaeris, Hortensius. Consul autem ipse parvo animo et pravo, tantum cavillator genere illo moroso, quod etiam sine dicacitate ridetur, facie magis quam facetiis ridiculus, nihil agens cum re publica, seiunctus ab optimatibus, a quo nihil speres boni rei publicae, quia non volt, nihil [speres] mali, quia non audet. Eius autem collega et in me per-

"the friend with whom you lodged at Canusium."
Unusual phrase. Peerlkamp reads "ora" soluta "just as we stiffed our cable" & quotes Quint. "sublatae sunt ancorae, solvimus oram"
"seasoned with the salt of culture."
Madvig's conj. for MSS. quae pereunt omnes rhetorum; pure loquuntur. Applied to letters loquuntur would be bad.
= but it might even be omitted as it is in Comedy.
"of more than ordinary weight."
Moort "notum".

Sicyon is fem. & so emend to "oppugnandam".

"lay out, invest."

C. Calpurnius Piso, consul 67, afterwards governed Gallia Narbonensis & was not very successful in keeping peace. Hence ironical.
M. Pupius Piso & M. Val. Messala were consuls.
solutus = "at liberty to"

V.L. tamen
a mere humourist of the sulky sort
"gets laughed at more for his expression than his expressions"
no politician

"the contagion"
cf. Phil. I. "Cum serperet in urbe infinitum malum".
Georg. III 469 "dira per incautum serpant contagia vulgus"
"when they were offering a national sacrifice
"performed afresh"

nostrum = of my own standing. Cor. was of praetorian rank.
princeps = first to take notice of it.
"who pronounced that sacrilege had been committed".

i.e. Pompeia
cf. repudium remittere
A common form was "tuas res tibi habeto".
be thrown out
"M. is behaving so far with great righteousness". gorge
quaestio = in dies.
the Athenian orator "πικρότατος κατήγορος (Diod.)
"attacks & returns to the charge" hunc = this outrage
Cato Luc. 63 - 62

aperte - to my face
cf. "solet aliud sentire et loqui, neque tantum valere ingenio
ut non appareat quid cupiat." ad Fam. 8.1.3.
no courtesy, frankness, political honour, elevation, energy
generosity.
more in detail

point. Cic. was one of praetors for 62.
Tyrrell suggests "inveniam" "work it into"

honorificus et partium studiosus ac defensor bonarum. 3. Qui nunc leviter inter se dissident; sed vereor ne hoc, quod infectum est, serpat longius: credo enim te audisse, cum apud Caesarem pro populo fieret venisse eo muliebri vestitu virum, idque sacrificium cum virgines instaurassent, mentionem a Q. Cornificio in senatu factam—is fuit princeps, ne tu forte aliquem nostrum putes—; postea rem ex senatus consulto [ad virgines atque] ad pontifices relatam idque ab iis nefas esse decretum; deinde ex senatus consulto consules rogationem promulgasse; uxori Caesarem nuntium remisisse. In hac causa Piso amicitia P. Clodii ductus operam dat ut ea rogatio, quam ipse fert et fert ex senatus consulto et de religione, antiquetur: Messalla vehementer adhuc agit severe. Boni viri precibus Clodii removentur a causa; operae comparantur; nosmet ipsi, qui Lycurgei a principio fuissemus, quotidie demitigamur; instat et urget Cato. Quid multa? vereor ne haec, neglecta a bonis, defensa ab improbis, magnorum rei publicae malorum causa sit. 4. Tuus autem ille amicus—scin quem dicam?—de quo tu ad me scripsisti, postea quam non auderet reprehendere, laudare coepisse, nos, ut ostendit, admodum diligit, amplectitur, amat, aperte laudat; occulte, sed ita, ut perspicuum sit, invidet. Nihil come, nihil simplex, nihil ἐν τοῖς πολιτικοῖς honestum, nihil illustre, nihil forte, nihil liberum. Sed haec ad te scribam alias subtilius; nam neque adhuc mihi satis nota sunt et huic terrae filio nescio cui committere epistolam tantis de rebus non audeo. 5. Provincias praetores nondum sortiti sunt: res eodem est loci, quo reliquisti. τοποθεσίαν, quam postulas, Miseni et Puteolorum, includam orationi meae. a. d. III. Non. Decembr. mendose fuisse animadverteram. Quae laudas ex orationibus, mihi crede, valde mihi

placebant, sed non audebam antea dicere; nunc vero, quod a te probata sunt, multo mihi ἀττικώτερα videntur. In illam orationem Metellinam addidi quaedam: liber tibi mittetur, quoniam te amor nostri philorhetora reddidit. 6. Novi tibi quidnam scribam? quid? etiam. Messalla consul Autronianam domum emit HS. CXXXIIII. 'Quid id ad me?' inquies. Tantum, quod ea emptione et nos bene emisse iudicati sumus et homines intellegere coeperunt, licere amicorum facultatibus in emendo ad dignitatem aliquam pervenire. Teucris illa lentum negotium est, sed tamen est in spe. Tu ista confice. A nobis liberiorem epistolam exspecta. VI. Kal. Febr. M. Messalla M. Pisone coss.

## 7. AD ATTICUM I. 14.

SCR. ROMAE ID. FEB. A.U.C. 693.

CICERO ATTICO SAL.

1. VEREOR ne putidum sit scribere ad te, quam sim occupatus, sed tamen distinebar, ut huic vix tantulae epistolae tempus habuerim atque id ereptum e summis occupationibus. Prima contio Pompeii qualis fuisset, scripsi ad te antea: non iucunda miseris, inanis improbis, beatis non grata, bonis non gravis; itaque frigebat. Tum Pisonis consulis impulsu levissimus tribunus pl. Fufius in contionem producit Pompeium—res agebatur in circo Flaminio et erat in eo ipso loco illo die nundinarum πανήγυρις—; quaesivit ex eo, placeretne ei iudices a praetore legi, quo consilio idem praetor uteretur: id autem erat de Clodiana religione ab senatu constitutum. 2. Tum Pompeius μᾶλ' ἀριστοκρατικῶς locutus est senatusque auctoritatem sibi omnibus in rebus maximi videri semperque visam esse respondit et id multis verbis. Postea

against Metellus Nepos.

lover of oratory

P. Autronius Paetus elected consul for 65 but convicted for bribery, joined Catiline, went into exile 62.

13,400,000 sest. or £120,000. Crassus cost 3,500,000.

Tyrrell proposes to read XXXIV = 3,400,000 supposing Cic. house to have cost more but yet to have been a good bargain as it was much finer. But Clodius bought Scaurus house for 14,000,000.

M. Livius Drusus > Crassus had Cic. house first.

Teucris refers to Cassandra whose promises never came off. Boissier thinks it a pun because C. Ant. was conquered by Dardani in Moesia.

"a regular slow-coach"

Tu istaec. cf. tu mandata efficere quae recepisti.

Autronius was not prosecuted till 59.

putidum: in bad taste

Ita may well have fallen out before tamen. "I am so busy"

impedio = demonstrate.

nimis = unsatisfactory

unimportant cf. Juv. I 64 "Quis se lautum et beatum exigui statutis."

paltry

i.e. in Campus Martius.

"high feast of market day" nundinae were dies fasti.

in a high & dry style

"the affairs you (Atticus) know about" i.e. consulate "en bloc"

caupona is used of things "quae forte offeruntur" Boot.
"in most florid style"
saying

Z has proxime & Diomedes quotes as instance of proxime with the
" accus.
"the stringing together with great pomp."
" you know my paint-pots"
established a claim for gratitude

Tyrrell restores "meis rationibus omnibus litteris" from R.
"in all my speeches, in every letter of them".
In Phil. II 20 "te neque ullos versus neque ullas omnino litteras nosse" litteras merely means "literature"
In Pro Lege Man. & Sestius he ascribes to Pompeius & not to Crassus the victory over Spartacus.
"whether directly or indirectly"
"blew my own trumpet" or with a comma after sperte &
datum ... brought down the house

καρπεῖ a certain conj. for καρποι of MSS.
"easy transitions" "virus capit, reddit mortuus"
instrumenta - antitheses cf.
κατασκευαι are constructive arguments as opposed to destructive. "thunders"
"even from where you are"

Messalla consul in senatu de Pompeio quaesivit, quid de religione et de promulgata rogatione sentiret: locutus ita est in senatu, ut omnia illius ordinis consulta γενικῶς laudaret, mihique, ut adsedit, dixit se putare satis ab se etiam de istis rebus esse responsum. 3. Crassus postea quam vidit illum excepisse laudem ex eo, quod suspicarentur homines ei consulatum meum placere, surrexit ornatissimeque de meo consulatu locutus est, ut ita diceret, se, quod esset senator, quod civis, quod liber, quod viveret, mihi acceptum referre; quotiens coniugem, quotiens domum, quotiens patriam videret, totiens se beneficium meum videre. Quid multa? totum hunc locum, quem ego varie meis orationibus, quarum tu Aristarchus es, soleo pingere, de flamma, de ferro—nosti illas λεκύθους—, valde graviter pertexuit. Proximus Pompeio sedebam: intellexi hominem moveri, utrum Crassum inire eam gratiam, quam ipse praetermisisset, an esse tantas res nostras, quae tam libenti senatu laudarentur, ab eo praesertim, qui mihi laudem illam eo minus deberet, quod meis omnibus litteris in Pompeiana laude perstrictus esset. 4. Hic dies me valde Crasso adiunxit, et tamen ab illo aperte tecte quicquid est datum libenter accepi. Ego autem ipse, di boni! quo modo ἐνεπερπερευσάμην novo auditori Pompeio! si umquam mihi περίοδοι, si καρποί, si ἐνθυμήματα, si κατασκευαὶ suppeditaverunt, illo tempore. Quid multa? clamores. Etenim haec erat ὑπόθεσις: de gravitate ordinis, de equestri concordia, de consensione Italiae, de intermortuis reliquiis coniurationis, de vilitate, de otio. Nosti iam in hac materia sonitus nostros: tanti fuerunt, ut ego eo brevior sim, quod eos usque istinc exauditos putem. 5. Romanae autem se res sic habent: senatus Ἄρειος πάγος. Nihil constantius, nihil severius, nihil fortius: nam cum dies

venisset rogationi ex senatus consulto ferendae, concursabant barbatuli iuvenes, totus ille grex Catilinae, duce filiola Curionis, et populum, ut antiquaret, rogabant; Piso autem consul, lator rogationis, idem erat dissuasor. Operae Clodianae pontes occuparant; tabellae ministrabantur ita, ut nulla daretur VTI ROGAS. Hic tibi rostra Cato advolat, convitium Pisoni consuli mirificum facit, si id est convitium, vox plena gravitatis, plena auctoritatis, plena denique salutis; accedit eodem etiam noster Hortensius, multi praeterea boni; insignis vero opera Favonii fuit. Hoc concursu optimatium comitia dimittuntur; senatus vocatur. Cum decerneretur frequenti senatu, contra pugnante Pisone, ad pedes omnium singillatim accidente Clodio, ut consules populum cohortarentur ad rogationem accipiendam, homines ad quindecim Curioni nullum senatus consultum facienti adsenserunt; ex altera parte facile cccc. fuerunt. Acta res est. Fufius tribunus tum concessit. Clodius contiones miseras habebat, in quibus Lucullum, Hortensium, C. Pisonem, Messallam consulem contumeliose laedebat; me tantum 'comperisse omnia' criminabatur. Senatus et de provinciis praetorum et de legationibus et de ceteris rebus decernebat, ut ante, quam rogatio lata esset, ne quid ageretur. Habes res Romanas. 6. Sed tamen etiam illud, quod non speraram, audi: Messalla consul est egregius, fortis, constans, diligens, nostri laudator, amator, imitator; ille alter uno vitio minus vitiosus, quod iners, quod somni plenus, quod imperitus, quod ἀπρακτότατος, sed voluntate ita καχέκτης, ut Pompeium post illam contionem, in qua ab eo senatus laudatus est, odisse coeperit; itaque mirum in modum omnes a se bonos alienavit, neque id magis amicitia Clodii adductus fecit quam studio perditarum rerum atque partium. Sed habet

"young fops with their small beards"
Curio, "pudicitiae suae prodigus" bell. Cat.

"gangways"
"I am in favour". A marginal corr. for commutticimus of MSS, which Schmidt suggests is a comic word from mulcare = "cudgel" &c. "drubbing"

good sense & conviction
for sanity

F. did yeoman service. Offered triumvirs in 59, served under Pompey, put to death after Pharsalus.

Curio the elder, consul in 76. He died in 53.

the affair was settled.
Cong. of Manutius for tertium concessit, graevius would correct to "tertius concessit": there is a special force in "tum"; he thus yielded but waited to veto it in "comitia".

So much for things at Rome.

fainéant
temperament "mauvais sujet"

Tyrrell takes quid quaeris with last sentence "Can I say more
Has given money for past services as advocate.
dodrans $\frac{3}{4}$
In the Argiletum, Rome's
"Paternoster Row"
425,000 sest.
"make it up with Lucceius"
"I will do my best to help you"
cf. Sullaturit & proscripturit
Wesenberg's reading "read" "redii". L. was at Rome now.

"how I came to show less fight than usual".
"en Homère, au rebours"
cf. γηράσκοντι τε γιγνομένῳ τε. (Od. IV 208)
resolution of Senate" ut consules populum cohortarentur
ad rogationem accipiendam"
that crowds rallied round me with shouts of enthusiastic applause.

used my name to exasperate the people
... Piso "lator rogationis, idem dissuasor".

hit upon the idea

sui similem in magistratibus praeter Fufium neminem. Bonis utimur tribunis pl., Cornuto vero Pseudocatone. 7. Quid quaeris? Nunc ut ad privata redeam, Τεῦκρις promissa patravit. Tu mandata effice, quae recepisti. Q. frater, qui Argiletani aedificii reliquum dodrantem emit HS. DCCXXV., Tusculanum venditat, ut, si possit, emat Pacilianam domum. Cum Lucceio in gratiam redi: video hominem valde petiturire. Navabo operam. Tu, quid agas, ubi sis, cuius modi istae res sint, fac me quam diligentissime certiorem. Idibus Febr.

## 8. AD ATTICUM I. 16. 61

Scr. Romae Mense Maio a.u.c. 693.

CICERO ATTICO SAL.

1. Quaeris ex me, quid acciderit de iudicio, quod tam praeter opinionem omnium factum sit, et simul vis scire, quo modo ego minus, quam soleam, proeliatus sim: respondebo tibi ὕστερον πρότερον Ὁμηρικῶς. Ego enim, quam diu senatus auctoritas mihi defendenda fuit, sic acriter et vehementer proeliatus sum, ut clamor concursusque maxima cum mea laude fierent: quod si tibi umquam sum visus in re publica fortis, certe me in illa causa admiratus esses; cum enim ille ad contiones confugisset in iisque meo nomine ad invidiam uteretur, di immortales! quas ego pugnas et quantas strages edidi! quos impetus in Pisonem, in Curionem, in totam illam manum feci! quo modo sum insectatus levitatem senum, libidinem iuventutis! saepe, ita me di iuvent! te non solum auctorem consiliorum meorum, verum etiam spectatorem pugnarum mirificarum desideravi. 2. Postea vero quam Hortensius excogitavit, ut legem de religione Fufius

tribunus pl. ferret, in qua nihil aliud a consulari rogatione differebat nisi iudicum genus—in eo autem erant omnia—, pugnavitque ut ita fieret, quod et sibi et aliis persuaserat nullis illum iudicibus effugere posse, contraxi vela perspiciens inopiam iudicum, neque dixi quicquam pro testimonio, nisi quod erat ita notum atque testatum, ut non possem praeterire. Itaque, si causam quaeris absolutionis, ut iam πρὸς τὸ πρότερον revertar, egestas iudicum fuit et turpitudo; id autem ut accideret, commissum est Hortensii consilio, qui, dum veritus est ne Fufius ei legi intercederet, quae ex senatus consulto ferebatur, non vidit illud, satius esse illum in infamia relinqui ac sordibus quam infirmo iudicio committi; sed ductus odio properavit rem deducere in iudicium, cum illum plumbeo gladio iugulatum iri tamen diceret. 3. Sed iudicium si quaeris quale fuerit, incredibili exitu, sic, uti nunc ex eventu ab aliis, a me iam ex ipso initio consilium Hortensii reprehendatur. Nam ut reiectio facta est clamoribus maximis, cum accusator tamquam censor bonus homines nequissumos reiiceret, reus tamquam clemens lanista frugalissumum quemque secerneret, ut primum iudices consederunt, valde diffidere boni coeperunt; non enim umquam turpior in ludo talario consessus fuit: maculosi senatores, nudi equites, tribuni non tam aerati quam, ut appellantur, aerarii; pauci tamen boni inerant, quos reiectione fugare ille non potuerat, qui maesti inter sui dissimiles et maerentes sedebant et contagione turpitudinis vehementer permovebantur. 4. Hic, ut quaeque res ad consilium primis postulationibus referebatur, incredibilis erat severitas, nulla varietate sententiarum; nihil impetrabat reus; plus accusatori dabatur, quam postulabat; triumphabat—quid quaeris?—

that of course being the vital point
glans = mode of appointment
reclinus "drew in my horns"
i.e. the alibi case.

poss. revenir.
for this disaster we are indebted to the sagacity of H.

under suspicion & in mourning garb of a "reus"
precipitated the trial
or. fuit
"challenge"
i.e. L. Lentulus Crus, consul in 49 B.C.
i.e. when buying slaves.
" in a gambling hell." " company"
needy. "Tribunes coloured rather than rich in cash"
T. transforms aerati & aerarii & renders "not now so much pay-givers (their usual title) as paytakers". to Munretus.
"looking as sad as they felt"
"their contact with corruption" "a sense of reflected infamy"
i.e. the ?ΑΥΚΙΟΣΣ

"had shown such penetration"

Tyrrell does not favour Jerics view.

cf. Pro Balbo 5.12.

"his accounts"

Jugurthine War 109–108.
Went into exile during Marius' sixth consulship.

"smoked"

"as great a crowd met me next day."

Consilium = here the praetors legal advisers. bench

"Musa mihi causas memora" Aen I 8.
Crassus must be referred to.
Calvus may have been a nickname
But probably one branch of Licinian family was called Calvus, the other Crassus.
Many guesses of a Sullan proscript hynnius whose property was bought by Crassus under name "Calvus."
Conj. Calvum ἐξ Ἀττικῶν illum laudatorem meum. Boot.
Turnebus "ex Nasonianis illum laudatorem meum."
also "noti callianus ill... heaviness that a depth of infamy"

helped to swell their price

complete disappearance

Hortensius se vidisse tantum; nemo erat qui illum reum ac non miliens condemnatum arbitraretur. Me vero teste producto credo te ex acclamatione Clodii advocatorum audisse quae consurrectio iudicum facta sit, ut me circumsteterint, ut aperte iugula sua pro meo capite P. Clodio ostentarint: quae mihi res multo honorificentior visa est quam aut illa, cum iurare tui cives Xenocratem testimonium dicentem prohibuerunt, aut cum tabulas Metelli Numidici, cum eae, ut mos est, circumferrentur, nostri iudices aspicere noluerunt; multo haec, inquam, nostra res maior. 5. Itaque iudicum vocibus, cum ego sic ab iis, ut salus patriae, defenderer, fractus reus et una patroni omnes conciderunt; ad me autem eadem frequentia postridie convenit, quacum abiens consulatu sum domum reductus. Clamare praeclari Ariopagitae se non esse venturos nisi praesidio constituto. Refertur ad consilium: una sola sententia praesidium non desideravit. Defertur res ad senatum: gravissime ornatissimeque decernitur; laudantur iudices; datur negotium magistratibus; responsurum hominem nemo arbitrabatur. ἔσπετε νῦν μοι, Μοῦσαι, ὅππως δὴ πρῶτον πῦρ ἔμπεσε. Nosti Calvum ex Nanneianis illum, illum laudatorem meum, de cuius oratione erga me honorifica ad te scripseram: biduo per unum servum, et eum ex gladiatorio ludo, confecit totum negotium; arcessivit ad se, promisit, intercessit, dedit. Iam vero—o di boni rem perditam!—etiam noctes certarum mulierum atque adulescentulorum nobilium introductiones non nullis iudicibus pro mercedis cumulo fuerunt. Ita summo discessu bonorum, pleno foro servorum, XXV. iudices ita fortes tamen fuerunt, ut summo proposito periculo vel perire maluerint quam perdere omnia: XXXI. fuerunt, quos fames magis quam fama

commoverit; quorum Catulus cum vidisset quendam, 'quid vos' inquit 'praesidium a nobis postulabatis? an ne nummi vobis eriperentur [timebatis]?' 6. Habes, ut brevissime potui, genus iudicii et causam absolutionis. Quaeris deinceps, qui nunc sit status rerum et qui meus: rei publicae statum illum, quem tu meo consilio, ego divino confirmatum putabam, qui bonorum omnium coniunctione et auctoritate consulatus mei fixus et fundatus videbatur, nisi quis nos deus respexerit, elapsum scito esse de manibus uno hoc iudicio, si iudicium est, triginta homines populi Romani levissimos ac nequissimos nummulis acceptis ius ac fas omne delere et, quod omnes non modo homines, verum etiam pecudes factum esse sciant, id Thalnam et Plautum et Spongiam et ceteras huius modi quisquilias statuere numquam esse factum. 7. Sed tamen, ut te de re publica consoler, non ita, ut sperarunt mali, tanto imposito rei publicae volnere alacris exsultat improbitas in victoria; nam plane ita putaverunt, cum religio, cum pudicitia, cum iudiciorum fides, cum senatus auctoritas concidisset, fore ut aperte victrix nequitia ac libido poenas ab optimo quoque peteret sui doloris, quem improbissimo cuique inusserat severitas consulatus mei. 8. Idem ego ille—non enim mihi videor insolenter gloriari, cum de me apud te loquor, in ea praesertim epistola, quam nolo aliis legi—idem, inquam, ego recreavi adflictos animos bonorum, unum quemque confirmans, excitans; insectandis vero exagitandisque nummariis iudicibus omnem omnibus studiosis ac fautoribus, illius victoriae παρρησίαν eripui, Pisonem consulem nulla in re consistere umquam sum passus, desponsam homini iam Syriam ademi, senatum ad pristinam suam severitatem revocavi atque abiectum excitavi, Clodium praesentem

Cobet brackets this gloss.

"united action"
cf. Ed. I 28. "Libertas, quae sera tamen respexit inertem."

jus ac fas = all law & justice

"not so actively exciting" "improb." "party of disorder"

"criminal passion"

"wantonly" Idem ego ille = I also

"to others"

"sufferance" "left them not a word to say"
"be at peace"

prefaced with a set speech
Q. perfetui tergo bovis - wlde.

point sui interest

"stimulus"

the following topic
"with wonderful effect"

by affecting ignorance
Supplied e. cold. Memmiadis by Dubbinus, had been charged
P. Corn. Lent. Sura accomplice of Catiline,
with peculation in 81 & 80 B.C.
let loose on.
Cat. in 65 repetundae
& in 64 for murder of Marius Gratidianus

Family name Pulcher.
allusion to Bona Dea.

Elder Curio bought an estate of Marius at Baiae.

R. kep Marianas which should be read.
Tyrrell grants "Quid" after "inquam" "Tell me what owners his
your patron."
Q. Marcius Rex married Clodius' sister Terentia
"in fancy"

fregi in senatu cum oratione perpetua, plenissima gravitatis, tum altercatione huius modi; ex qua licet pauca degustes—nam cetera non possunt habere neque vim neque venustatem remoto illo studio contentionis, quem ἀγῶνα vos appellatis—: 9. nam, ut Idibus Maiis in senatum convenimus rogatusque ego sententiam multa dixi de summa re publica, atque ille locus inductus a me est divinitus, ne una plaga accepta patres conscripti conciderent, ne deficerent; volnus esse eius modi, quod mihi nec dissimulandum nec pertimescendum videretur; ne aut ignorando stultissimi *aut metuendo ignavissimi* iudicaremur; bis absolutum esse Lentulum, bis Catilinam; hunc tertium iam esse a iudicibus in rem publicam immissum. 'Erras, Clodi; non te iudices urbi, sed carceri reservarunt, neque te retinere in civitate, sed exsilio privare voluerunt. Quam ob rem, patres conscripti, erigite animos, retinete vestram dignitatem. Manet illa in re publica bonorum consensio; dolor accessit bonis viris, virtus non est imminuta; nihil est damni factum novi, sed, quod erat, inventum est: in unius hominis perditi iudicio plures similes reperti sunt.' 10. Sed quid ago? Paene orationem in epistolam inclusi. Redeo ad altercationem: surgit pulchellus puer, obiicit mihi, me ad Baias fuisse. Falsum, sed tamen quid huic? 'Simile est' inquam, 'quasi dicas in operto fuisse.' 'Quid' inquit 'homini Arpinati cum aquis calidis?' 'Narra' inquam 'patrono tuo, qui Arpinatis aquas concupivit; nosti enim marinas.' 'Quousque' inquit 'hunc regem feremus.' 'Regem appellas,' inquam 'cum Rex tui mentionem nullam fecerit?'—Ille autem Regis hereditatem spe devorarat.—'Domum' inquit 'emisti.' 'Putes' inquam 'dicere, iudices emisti.' 'Iuranti' inquit

'tibi non crediderunt.' 'Mihi vero' inquam 'xxv. iudices crediderunt, xxxi., quoniam nummos ante acceperunt, tibi nihil crediderunt.' Magnis clamoribus adflictus conticuit et concidit. 11. Noster autem status est hic: apud bonos iidem sumus, quos reliquisti, apud sordem urbis et faecem multo melius nunc, quam *cum* reliquisti: nam et illud nobis non obest, videri nostrum testimonium non valuisse: missus est sanguis invidiae sine dolore; atque etiam hoc magis, quod omnes illi fautores illius flagitii rem manifestam illam redemptam esse a iudicibus confitentur; accedit illud, quod illa contionalis hirudo aerarii, misera ac ieiuna plebecula, me ab hoc Magno unice diligi putat, et hercule multa et iucunda consuetudine coniuncti inter nos sumus, usque eo, ut nostri isti comissatores coniurationis, barbatuli iuvenes, illum in sermonibus Cn. Ciceronem appellant; itaque et ludis et gladiatoribus mirandas ἐπισημασίας sine ulla pastoricia fistula auferebamus. 12. Nunc est exspectatio comitiorum, in quae omnibus invitis trudit noster Magnus Auli filium, atque in eo neque auctoritate neque gratia pugnat, sed quibus Philippus omnia castella expugnari posse dicebat [in quae modo asellus onustus auro posset ascendere]; consul autem ille deterioris histrionis similis suscepisse negotium dicitur et domi divisores habere; quod ego non credo. Sed senatus consulta duo iam facta sunt odiosa, quod in consulem facta putantur, Catone et Domitio postulante, unum, ut apud magistratus inquiri liceret, alterum, cuius domi divisores habitarent, adversus rem publicam. 13. Lurco autem tribunus pl., qui magistratum simul cum lege Aelia iniit, solutus est et Aelia et Fufia, ut legem de ambitu ferret, quam ille bono auspicio claudus homo

"lost heart"

the ineffectiveness of my testimony
"my unpopularity has been let blood without hurting"

"a perfectly clear case bought off by the judges".

"the hundred headed treasury leech" the mob i.e. drains the treasury
"rabble"

"the born companions of the conspiracy"

"we came off with astonishing éclat".
cat-calls cf. Rat. Legg. οὐ σύριγξ ἦν οὐδέ τινες ἄμουσοι βοαὶ πλήθους.

Cobet brackets in quae — ascendency
"the consul is said to be playing second fiddle."
Either (1) inferior or (2) second part i.e. δευτεραγωνιστης to Pompey.
For MSS. reading Boot reads "Doterionis" cong. of Bosius a nickname given to either Aristodemus or Neoptolemus, the actors whom Philip used as bribery agents, δωτηρίων.
δωρηταί = "bribery agents."
D. brother-in-law of Cato, consul 54.

"under the obligations of Aelian Law".
The real reading of M. is insimul cum which Munro emends to "inimulatum lege Aelia" "unfeathered by Aelian law". Doubtful Latin.
Other conj. simultatem cum "at feud with"
A tribune was forbidden to legislate at time of election
∴ elections were put off instead ∴ durco "shook off the trammels of

vitio auspicio - without the auspices being vitiated.

The MS contains this novelty

cf. Pro Quint. "feminis ~~quam pro reo~~ M. in tribus quam pro reo pronuntiasset."
tabulas V. L. tabulibus.

8000 sest. £25.

mark you

"deification"

"A twelfth-night Royalty" "mere child's play" Turn. ? [illegible]
Cf. Hor. "pueri ludentes rex eris aiunt".
Cf. Tac. "inter alia aequalium ludicra regnum".
Cf. Troja ludus.
Cf. [illegible] (turning into a cucumber) as a gibe at
[illegible] of Claudius.
"Olim erat magna res deum fieri; nunc fabam mimum "inscriptions"
fecisti." Seneca.
[illegible] Faunum [illegible] (immortal) offering to dead
Bosius "fabam mimum (immortal)
fabulam mimicam Landsberg
Tyrrell suggests fabulam with omission of mimum as
interlinear gloss "the rank enjoyed by us consulars which
cuis usual to call a deification [illegible] word
"Is looking to [illegible], for his [illegible] - Caecilii Metelli. your praises"
Pun on Caecilius dramatist. I have been lost in your
MSS. vale te venditavi. Also conj. vindicavi, laid you
conj. valere te venditavi
out" i.e. by not writing.
Tyrrell says actorum is understood.

promulgavit: ita comitia in a. d. VI. Kal. Sext. dilata sunt. Novi est in lege hoc, ut qui nummos in tribus pronuntiarit, si non dederit, impune sit; sin dederit, ut quoad vivat singulis tribubus HS. CIↃ CIↃ CIↃ debeat. Dixi hanc legem P. Clodium iam ante servasse; pronuntiare enim solitum esse et non dare. Sed heus tu! videsne consulatum illum nostrum, quem Curio antea ἀποθέωσιν vocabat, si hic factus erit, fabam mimum futurum? qua re, ut opinor, φιλοσοφητέον, id quod tu facis, et istos consulatus non flocci facteon. 14. Quod ad me scribis, te in Asiam statuisse non ire, equidem mallem ut ires, ac vereor ne quid in ista re minus commode fiat; sed tamen non possum reprehendere consilium tuum, praesertim cum egomet in provinciam non sim profectus. 15. Epigrammatis tuis, quae in Amaltheo posuisti, contenti erimus, praesertim cum et Thyillus nos reliquerit et Archias nihil de me scripserit, ac vereor ne, Lucullis quoniam Graecum poëma condidit, nunc ad Caecilianam fabulam spectet. 16. Antonio tuo nomine gratias egi eamque epistolam Mallio dedi; ad te ideo antea rarius scripsi, quod non habebam idoneum, cui darem, nec satis sciebam, quo darem. Valde te venditavi. 17. Cincius si quid ad me tui negotii detulerit, suscipiam; sed nunc magis in suo est occupatus, in quo ego ei non desum. Tu, si uno in loco es futurus, crebras a nobis litteras exspecta; ast plures etiam ipse mittito. 18. Velim ad me scribas, cuius modi sit Ἀμαλθεῖον tuum, quo ornatu, qua τοποθεσίᾳ, et quae poëmata quasque historias de Ἀμαλθείᾳ habes ad me mittas: lubet mihi facere in Arpinati. Ego tibi aliquid de meis scriptis mittam: nihil erat absoluti.

## 9. AD ATTICUM II. 1.

SCR. ROMAE MENSE IUNIO A.U.C. 694. 60

CICERO ATTICO SAL.

1. KAL. Iuniis eunti mihi Antium et gladiatores M. Metelli cupide relinquenti venit obviam tuus puer: is mihi litteras abs te et commentarium consulatus mei Graece scriptum reddidit; in quo laetatus sum *me* aliquanto ante de isdem rebus Graece item scriptum librum L. Cossinio ad te perferundum dedisse: nam, si ego tuum ante legissem, furatum me abs te esse diceres. Quamquam tua illa—legi enim libenter—horridula mihi atque incompta visa sunt, sed tamen erant ornata hoc ipso, quod ornamenta neglexerant, et, ut mulieres, ideo bene olere, quia nihil olebant, videbantur. Meus autem liber totum Isocrati myrothecium atque omnes eius discipulorum arculas ac non nihil etiam Aristotelia pigmenta consumpsit; quem tu Corcyrae, ut mihi aliis litteris significas, strictim attigisti, post autem, ut arbitror, a Cossinio accepisti; quem tibi ego non essem ausus mittere, nisi eum lente ac fastidiose probavissem. 2. Quamquam ad me scripsit iam Rhodo Posidonius se, nostrum illud ὑπόμνημα *cum* legeret, quod ego ad eum, ut ornatius de isdem rebus scriberet, miseram, non modo non excitatum esse ad scribendum, sed etiam plane perterritum. Quid quaeris? conturbavi Graecam nationem: ita, volgo qui instabant ut darem sibi quod ornarent, iam exhibere mihi molestiam destiterunt. Tu, si tibi placuerit liber, curabis ut et Athenis sit et in ceteris oppidis Graeciae; videtur enim posse aliquid nostris rebus lucis adferre. 3. Oratiunculas autem et quas postulas et plures etiam mittam, quoniam quidem ea, quae nos scribimus adulescentulorum studiis excitati, te etiam delectant. [Fuit enim mihi com-

# Literary.

Brother of Q. Metellus Creticus; a praetor in 69 B.C.
So in SS. Prof. Tyrrell has "infido relinquendi", saying that the other is not Ciceronian.

"plagiarised"
a trifle rough & unkempt

"seemed perfumed to perfection because they used no perfume."
Cf. Plaut. Most I 3. 116 "mulier recte olet ubi nil olet"
"It's dressing case & all the range - pots of his school."
"clans"

"revised it minutely & critically."
précis

"have left off plagueing me"

"give some distinction to"

"I'd a penny to"

"had risen into eminence"
quibbling style of pleading in law-courts.
for a higher role & more "en homme d'état"

"made thing affect"
munitus "indicarunt". Other cong. "inrolgarunt".

fragments "échantillons" "corpus"

cf. Virgil "et ter dictis, albane, muneres".
cf. Pro Sest. "Fortitan non nemo vir fortis .. dixerit, restitisses".
Klotz right restores quo of the med. for quod.
quo: ad quam rem.

at present all is quiet.

" non potest impedire Metello. Brut.
M. was a brother-in-law of Clodius.
ami de la patrie
has a good heart

In Sicilia aedilitatem sese (se petere (Conrad)) dictitarat M.[2]
in Sicilia hereditatem sese hereditasset M.[1]
Bosius "in Sicilia Herae aedilitatem se petere dictitasset."
Junius "in Sic. heri aed. se petere dict."
a German has explained M.[1]: if a Roman died intestate his property was divided among his gentiles; if Clodius set his 'gens' he could not come in for any of these.
inly he inherited from the 'gens' he was going to

modum, quod in eis orationibus, quae Philippicae nominantur, enituerat civis ille tuus [Demosthenes], et quod se ab hoc refractariolo iudiciali dicendi genere abiunxerat, ut σεμνότερός τις et πολιτικώτερος videretur, curare ut meae quoque essent orationes, quae consulares nominarentur; quarum una est in senatu Kal. Ianuariis, altera ad populum de lege agraria, tertia de Othone, quarta pro Rabirio, quinta de proscriptorum filiis, sexta, cum provinciam in contione deposui, septima, qua Catilinam emisi, octava, quam habui ad populum postridie quam Catilina profugit, nona in contione, quo die Allobroges †invocarunt, decima in senatu, Nonis Decembribus. Sunt praeterea duae breves, quasi ἀποσπασμάτια legis agrariae. Hoc totum σῶμα curabo ut habeas; et quoniam te cum scripta, tum res meae delectant, isdem ex libris perspicies et quae gesserim et quae dixerim: aut ne poposcisses; ego enim tibi me non offerebam. 4. Quod quaeris, quid sit quod te arcessam, ac simul impeditum te negotiis esse significas, neque recusas quin, non modo si opus sit, sed etiam si velim, accurras, nihil sane est necesse; verum tamen videbare mihi tempora peregrinationis commodius posse discribere: nimis abes diu, praesertim cum sis in propinquis locis, neque nos te fruimur et tu nobis cares. Ac nunc quidem otium est, sed, si paulo plus furor Pulchelli progredi posset, valde ego te istim excitarem. Verum praeclare Metellus impedit et impediet. Quid quaeris? est consul φιλόπατρις et, ut semper iudicavi, natura bonus. 5. Ille autem non simulat, sed plane tribunus pl. fieri cupit; qua *de* re cum in senatu ageretur, fregi hominem et inconstantiam eius reprehendi, qui Romae tribunatum pl. peteret, cum in Sicilia aedilitatem se petere dictitasset, neque magno opere dixi esse nobis laborandum, quod nihilo magis ei liciturum esset plebeio

rem publicam perdere, quam similibus eius me consule patriciis esset licitum. Iam, cum se ille septimo die venisse a freto neque sibi obviam quemquam prodire potuisse et noctu se introisse dixisset in eoque se in contione iactasset, nihil ei novi dixi accidisse, ex Sicilia septimo die Romam: tribus horis Roma Interamnam; noctu introisse: item ante; non esse itum obviam: ne tum quidem, cum iri maxime debuerit. Quid quaeris? hominem petulantem modestum reddo non solum perpetua gravitate orationis, sed etiam hoc genere dictorum; itaque iam familiariter cum ipso cavillor ac iocor; quin etiam, cum candidatum deduceremus, quaerit ex me, num consuessem Siculis locum gladiatoribus dare? Negavi. 'At ego' inquit 'novus patronus instituam; sed soror, quae tantum habet consularis loci, unum mihi solum pedem dat.' 'Noli' inquam 'de uno pede sororis queri; licet etiam alterum tollas.' 'Non consulare' inquies 'dictum:' fateor; sed ego illam odi male consularem: [ea] est enim seditiosa, [ea] cum viro bellum gerit, neque solum cum Metello, sed etiam cum Fabio, quod eos † in hoc esse moleste fert. 16. Quod de agraria lege quaeris, sane iam videtur refrixisse. Quod me quodam modo molli brachio de Pompeii familiaritate obiurgas, nolim ita existimes, me mei praesidii causa cum illo coniunctum esse, sed ita res erat instituta, ut, si inter nos esset aliqua forte dissensio, maximas in re publica discordias versari esset necesse: quod a me ita praecautum atque ita provisum est, non ut ego de optima illa mea ratione decederem, sed ut ille esset melior et aliquid de populari levitate deponeret; quem de meis rebus, in quas eum multi incitarant, multo scito gloriosius quam de suis praedicare; sibi enim bene gestae, mihi conservatae rei publicae dat testimonium. Hoc

a pun on obvious use = e go to meet & reject.
"no one has crossed his path: no one had done that when it was
most important to cross his purpose."
"the bully"
"with a serious set speech" "repartees"
"when we were escorting home a friend of ours who was
standing for office" "at the glad. games".

inch
"ell"
"no little of a consul's wife" this is a comic seriousness
shrew "is at daggers drawn with"
Q. Tir. Qu. "Filiam ut dazam in seditionem atque in incertas nuptias".
at the fact they are taking
Boot his thus restored lied.
Law of L. Flavius trib. 61-60. refrimisse = hung fire
gently

"of my former constitutional policy"
of his weak subserviency to the populace.
in far more flattering terms. he has guided & saved the state

"a treatment which healed the diseased limbs of the body politic rather than used the knife"

"I take the will to do harm from those who have the power" [above the line: "the medicine"]

Tyrrell dislikes this phrase & suggests "Romulea faece" or "Romulae faece" "this degenerate Rome".
cf. Plut. ἐν Ῥωμύλου ὑποστάθμῃ fairer

"though we have often been on brink of a revolution"
showed himself even in the distance

"are we to hire them to help us"

carried by a larger majority "a [illegible]ties"
he accused Scipio b. his successful rival in the praetorship. [above the line: "the Cornelian"]
"ground lost at Rhodes without gaining much ground"
155. "inhoneste ac modeste tamen"
= a spiteful act, yet he prosecuted with moderation; ita dixit
= so badly
mildly reproachful to

facere illum mihi quam prosit nescio; rei publicae certe prodest. Quid, si etiam Caesarem, cuius nunc venti valde sunt secundi, reddo meliorem, num tantum obsum rei publicae? 7. Quin etiam, si mihi nemo invideret, si omnes, ut erat aequum, faverent, tamen non minus esset probanda medicina, quae sanaret vitiosas partes rei publicae, quam quae exsecaret. Nunc vero, cum equitatus ille, quem ego in clivo Capitolino te signifero ac principe collocaram, senatum deseruerit, nostri autem principes digito se caelum putent attingere, si mulli barbati in piscinis sint, qui ad manum accedant, alia autem neglegant, nonne tibi satis prodesse videor, si perficio ut nolint obesse qui possunt? 8. nam Catonem nostrum non tu amas plus quam ego; sed tamen ille optimo animo utens et summa fide nocet interdum rei publicae: dicit enim tamquam in Platonis πολιτεία, non tamquam in Romuli faece, sententiam. Quid verius quam in iudicium venire qui ob rem iudicandam pecuniam acceperit? censuit hoc Cato, adsensit senatus: equites curiae bellum, non mihi; nam ego dissensi. Quid impudentius publicanis renuntiantibus? fuit tamen retinendi ordinis causa faciunda iactura: restitit et pervicit Cato; itaque nunc, consule in carcere incluso, saepe item seditione commota, aspiravit nemo eorum, quorum ego concursu itemque ii consules, qui post me fuerunt, rem publicam defendere solebant. Quid ergo? istos, inquies, mercede conductos habebimus? quid faciemus, si aliter non possumus? an libertinis atque etiam servis serviamus? Sed, ut tu ais, ἄλις σπουδῆς. 9. Favonius meam tribum tulit honestius quam suam, Lucceii perdidit. Accusavit Nasicam honeste, ac moleste tamen dixit, ita ut Rhodi videretur molis potius quam Moloni operam dedisse; mihi, quod defendissem, leviter succensuit.

Nunc tamen petit iterum rei publicae causa. Lucceius quid agat, scribam ad te, cum Caesarem videro, qui aderit biduo. 10. Quod Sicyonii te laedunt, Catoni et eius aemulatori attribues Servilio. Quid? ea plaga nonne ad multos bonos viros pertinet? sed, si ita placuit, laudemus; deinde in discessionibus soli relinquamur! Amalthea mea te exspectat et indiget tui. 11. Tusculanum et Pompeianum valde me delectant, nisi quod me, illum ipsum vindicem aeris alieni, aere non Corinthio, sed hoc circumforaneo obruerunt. In Gallia speramus esse otium. Prognostica mea cum oratiunculis propediem exspecta; et tamen, quid cogites de adventu tuo, scribe ad nos: nam mihi Pomponia nuntiari iussit, te mense Quintili Romae fore; id a tuis litteris, quas ad me de censu tuo miseras, discrepabat. 12. Paetus, ut antea ad te scripsi, omnes libros, quos frater suus reliquisset, mihi donavit. Hoc illius munus in tua diligentia positum est: si me amas, cura ut conserventur et ad me perferantur; hoc mihi nihil potest esse gratius, et cum Graecos, tum vero diligenter Latinos ut conserves velim. Tuum esse hoc munusculum putabo. Ad Octavium dedi litteras; cum ipso nihil eram locutus: neque enim ista tua negotia provincialia esse putabam, neque te in tocullionibus habebam; sed scripsi, ut debui, diligenter.

## 10. AD ATTICUM II. 16.

SCR. IN FORMIANO INEUNTE MENSE MAIO A.U.C. 695.

CICERO ATTICO SAL.

Coss. Julius Caesar: Bibulus

1. CENATO mihi et iam dormitanti pridie K. Maias epistola est illa reddita, in qua de agro Campano scribis. Quid quaeris? primo ita me pupugit, ut somnum mihi ademerit, sed id cogitatione magis quam molestia;

Prob. for tribuneship.

From Lusitania as pro-praetor.
Servilius passed a decree preventing violence in exaction of debts from provincials.
Boot cong. st. Si cannot ... "since".
St tace is common in Plautus. Prof. Purser S.C. senatus consultum.
In SS. ~~discessionibus~~ dissensionibus - dissensiones
discessionibus - divisions Manutius.
" with bills as well as houses" "maintaining of credit"
"Weather-chart" Perhaps esse is a Plautinism for futurum esse.
Aratus' Διοσημεῖα.
Atticus' sister married Q. Cicero.
So Z. Other MSS. accessory.
Ser. Claudius, cousin or half brother.

I shall consider this pretty present as coming from you.
C. Oct. father of Augustus succeeded C. Ant. as governor of Macedonia as pro-praetor.
"a bit of a usurer." Casaubon "istic".

excited

"The result of my thinking comes pretty much to this"

from some friend of Caesar

"some more sweeping measure"

"of gratuitous assignation of land" "concentrated on"

customs-duties. Abolished in 60.
5% on manumitted slaves.

"after a popular harangue" "lackeys"

Sophocles frag. Right accent is φορβειᾶς

"He plays no more piping treble pipes,
Roars with wild blast his uncurbed storm of sound."

"chopped logic"

Caesar himself must be responsible for the means"

"how great Pasha"

"make good this"

cogitanti autem haec fere succurrebant: primum ex eo, quod superioribus litteris scripseras, ex familiari te illius audisse prolatum iri aliquid, quod nemo improbaret, maius aliquid timueram; hoc mihi eius modi non videbatur. Deinde, ut me egomet consoler, omnis exspectatio largitionis agrariae in agrum Campanum videtur esse derivata, qui ager, ut dena iugera sint, non amplius hominum quinque milia potest sustinere: reliqua omnis multitudo ab illis abalienetur necesse est. Praeterea, si ulla res est, quae bonorum animos, quos iam video esse commotos, vehementius possit incendere, haec certe est, et eo magis, quod portoriis Italiae sublatis, agro Campano diviso, quod vectigal superest domesticum praeter vicensimam? quae mihi videtur una contiuncula clamore pedisequorum nostrorum esse peritura. 2. Gnaeus quidem noster iam plane quid cogitet nescio:

φυσᾷ γὰρ οὐ σμικροῖσιν αὐλίσκοις ἔτι,
ἀλλ' ἀγρίαις φύσαισι, φορβείᾶς ἄτερ·

qui quidem etiam istuc adduci potuerit. Nam adhuc haec ἐσοφίζετο, se leges Caesaris probare, actiones ipsum praestare debere; agrariam legem sibi placuisse, potuerit intercedi necne, nihil ad se pertinere; de rege Alexandrino placuisse sibi aliquando confici; Bibulus de caelo tum servasset necne, sibi quaerendum non fuisse; de publicanis, voluisse *se* illi ordini commodare; quid futurum fuerit, si Bibulus tum in forum descendisset, se divinare non potuisse: nunc vero, Sampsicerame, quid dices? vectigal te nobis in monte Antilibano constituisse, agri Campani abstulisse? quid, hoc quem ad modum obtinebis? 'Oppressos vos' inquit 'tenebo exercitu Caesaris.' Non mehercule me tu quidem tam isto exercitu quam ingratis animis eorum hominum, qui

appellantur boni, qui mihi non modo praemiorum, sed ne sermonum quidem umquam fructum ullum aut gratiam rettulerunt. 3. Quod si in eam me partem incitarem, profecto iam aliquam reperirem resistendi viam: nunc prorsus hoc statui, ut, quoniam tanta controversia est Dicaearcho, familiari tuo, cum Theophrasto, amico meo, ut ille tuus τὸν πρακτικὸν βίον longe omnibus anteponat, hic autem τὸν θεωρητικόν, utrique a me mos gestus esse videatur; puto enim me Dicaearcho adfatim satis fecisse, respicio nunc ad hanc familiam, quae mihi non modo, ut requiescam, permittit, sed reprehendit, quia non semper quierim. Qua re incumbamus, o noster Tite, ad illa praeclara studia et eo, unde discedere non oportuit, aliquando revertamur. 4. Quod de Quinti fratris epistola scribis, ad me quoque fuit πρόσθε λέων, ὄπιθεν δὲ —. Quid dicam nescio: nam ita deplorat primis versibus mansionem suam, ut quemvis movere possit; ita rursus remittit, ut me roget, ut annales suos emendem et edam. Illud tamen, quod scribit, animadvertas velim, de portorio circumvectionis; ait se de consilii sententia rem ad senatum reiecisse: nondum videlicet meas litteras legerat, quibus ad eum re consulta et explorata rescripseram non deberi. Velim, si qui Graeci iam Romam ex Asia de ea causa venerunt, videas et, si tibi videbitur, iis demonstres, quid ego de ea re sentiam. Si possum discedere, ne causa optima in senatu pereat, ego satis faciam publicanis, εἰ δὲ μή,— vere tecum loquar—in hac re malo universae Asiae et negotiatoribus; nam eorum quoque vehementer interest. Hoc ego sentio valde nobis opus esse. Sed tu id videbis. Quaestores autem, quaeso, num etiam de cistophoro dubitant? nam si aliud nihil erit, cum erimus omnia experti,

who far from showing their gratitude in material rewards have not even thanked me in words."

"if I roused myself to oppose that party"

B.C. 350 -286. a Peripatetic of Messana.

school of philosophy   you will admit

"the haven which I never should have left"

I too found him a regular chimaera.

H. [illegible] 181. Prima leo, postrema -

"prolonged stay in Asia"

"tones down"   MSS. "scribis". Cratander "scribit."

"the claim for port dues". goods removed unsold to another

" Publicani claimed tax but traders resisted it.
harbour

" having considered the matter"

get out of my opinion to save the good cause

I prefer the interests of the whole of Asia & with it the traders for it is a matter of great moment to them

about paying in Roman or Asiatic currency

as a last resource.

Klotz would supply "neque opera" before "neque verbo".

visie

hoc praetor

"power under restraint"

"things in general have come to this"

pen-à-pen
Tyrrell rightly brackets "de singulis rebus".

clubs

"a deprecation to be imprecated in public by the candidates upon themselves"

ego ne illud quidem contemnam, quod extremum est. Te in Arpinati videbimus et hospitio agresti accipiemus, quoniam maritumum hoc contempsisti.

## 11. AD ATTICUM II. 18.

SCR. ROMAE MENSE IUNIO A.U.C. 695.

CICERO ATTICO SAL.

1. ACCEPI aliquot epistolas tuas, ex quibus intellexi, quam suspenso animo et sollicito scire averes, quid esset novi: tenemur undique, neque iam quo minus serviamus recusamus, sed mortem et eiectionem quasi maiora timemus, quae multo sunt minora; atque hic *est* status, qui una voce omnium gemitur neque verbo cuiusquam sublevatur: σκοπὸς est, ut suspicor, illis, qui tenent, nullam cuiquam largitionem relinquere. Unus loquitur et palam adversatur adulescens Curio: huic plausus maximi, consalutatio forensis perhonorifica, signa praeterea benevolentiae permulta a bonis impertiuntur; Fufium clamoribus et convitiis et sibilis consectantur. His ex rebus non spes, sed dolor est maior, cum videas civitatis voluntatem solutam, virtutem alligatam. 2. Ac ne forte quaeras κατὰ λεπτὸν de singulis rebus, universa res eo est deducta, spes ut nulla sit aliquando non modo privatos, verum etiam magistratus liberos fore. Hac tamen in oppressione sermo in circulis dumtaxat et in conviviis est liberior, quam fuit; vincere incipit timorem dolor, sed ita, ut omnia sint plenissima desperationis. Habet etiam Campana lex exsecrationem in contione candidatorum, si mentionem fecerint, qua aliter ager possideatur atque ut ex legibus Iuliis: non dubitant iurare ceteri; Laterensis existimatur laute fecisse, quod tribunatum pl. petere destitit, ne iuraret. 3. Sed de re publica non libet plura

scribere: displiceo mihi nec sine summo scribo dolore. Me tueor, ut oppressis omnibus, non demisse, ut tantis rebus gestis, parum fortiter. A Caesare valde liberaliter invitor [in legationem illam], sibi ut sim legatus, atque etiam libera legatio voti causa datur. Sed haec et praesidii apud pudorem Pulchelli non habet satis et a fratris adventu me ablegat; illa et munitior est et non impedit quo minus adsim, cum velim: hanc ego teneo, sed usurum me non puto; neque tamen scit quisquam. Non lubet fugere, aveo pugnare. Magna sunt hominum studia. Sed nihil adfirmo, tu hoc silebis. 4. De Statio manu misso et non nullis aliis rebus angor equidem, sed iam prorsus occallui. Tu vellem ego vel cuperem adesses: nec mihi consilium nec consolatio deesset. Sed ita te para, ut, si inclamaro, advoles.

## 12. AD ATTICUM II. 19.

SCR. ROMAE MENSE QUINTILI A.U.C. 695.

CICERO ATTICO SAL.

1. MULTA me sollicitant et ex rei publicae tanto motu et ex iis periculis, quae mihi ipsi intenduntur, et sescenta sunt; sed mihi nihil est molestius quam Statium manu missum:

> Nec meum imperium: ac mitto imperium: non simultatem meam
> Revereri saltem!

Nec quid faciam scio, neque tantum est in re, quantus est sermo. Ego autem ne irasci possum quidem iis quos valde amo: tantum doleo, ac mirifice quidem. † Cetera in magnis rebus; minae Clodii contentionesque, *quae* mihi proponuntur, modice me tangunt: etenim vel subire eas videor mihi summa cum dignitate vel declinare nulla cum molestia posse. Dices fortasse:

I am out of humour.

"considering the general despondency"

an unofficial embassy for the purpose of discharging a
nominal vow'

"resting as it does on the honour of Clodius"
Nettleship suggests "pudorem". This would require "contra".
Q. Cic. left Rome Jan 58 B.C.
"from joining Caesar when I chose".

"People are zealous in my cause". Lane = Libera legatio.

"have grown thick-skinned"

disturbed state

"What when I bid him – well let bidding be:
But my displeasure – must that go for naught?

scandal. Rhetorical plural.

So M. Kayser has "ceterum in magnis rebus nimis"

avoid

dignity is out of date like acorn-diet.

Possibly I am getting myope & am the victim of "noblesse oblige."

C parties C professions.

"more distasteful than I had expected, nay more than I like to see."

Restored "the one whose [illegible] delay the fortunes of the [illegible]"

M has an [illegible] change to ac. his mind himself

"I just jog along"

Impostor & man were able [illegible] hosted "
Pompey & Caesar "went out of his way to attack"
July 5.

1 insects "it"

[illegible] would amend to "intermortuus" "half-dead"

dignitatis ἅλις, tamquam δρυός: saluti, si me amas, consule. Me miserum! cur non ades? nihil profecto te praeteriret; ego fortasse τυφλώττω et nimium τῷ καλῷ προσπέπονθα. 2. Scito nihil umquam fuisse tam infame, tam turpe, tam peraeque omnibus generibus, ordinibus, aetatibus offensum, quam hunc statum, qui nunc est, magis mehercule, quam vellem, non modo quam putaram. Populares isti iam etiam modestos homines sibilare docuerunt. Bibulus in caelo est, nec qua re scio, sed ita laudatur, quasi

Unus homo nobis cunctando restituit rem.

Pompeius, nostri amores, quod mihi summo dolori est, ipse se adflixit: neminem tenet voluntate; ne metu necesse sit iis uti, vereor. Ego autem neque pugno cum illa causa propter illam amicitiam, neque approbo, ne omnia improbem, quae antea gessi: utor via. 3. Populi sensus maxime theatro et spectaculis perspectus est: nam gladiatoribus qua dominus qua advocati sibilis conscissi; ludis Apollinaribus Diphilus tragoedus in nostrum Pompeium petulanter invectus est:

Nostra miseria tu es magnus—

millies coactus est dicere;

Eandem virtutem istam veniet tempus cum graviter gemes

totius theatri clamore dixit itemque cetera. Nam eius modi sunt ii versus, uti in tempus ab inimico Pompeii scripti esse videantur.

Si neque leges neque mores cogunt—

Et cetera magno cum fremitu et clamore sunt dicta. Caesar cum venisset mortuo plausu, Curio filius est insecutus: huic ita plausum est, ut salva re publica Pompeio plaudi solebat. Tulit Caesar graviter: litterae

Capuam ad Pompeium volare dicebantur. Inimici erant equitibus, qui Curioni stantes plauserant, hostes omnibus; Rosciae legi, etiam frumentariae, minitabantur: sane res erat perturbata. Equidem malueram, quod erat susceptum ab illis, silentio transiri, sed vereor ne non liceat: non ferunt homines, quod videtur esse tamen ferendum. Sed est iam una vox omnium, magis odio firmata quam praesidio. 4. Noster autem Publius mihi minitatur, inimicus est; impendet negotium, ad quod tu scilicet advolabis. Videor mihi nostrum illum consularem exercitum bonorum omnium, etiam satis bonorum, habere firmissimum. Pompeius significat studium erga me non mediocre; idem adfirmat verbum de me illum non esse facturum; in quo non me ille fallit, sed ipse fallitur. Cosconio mortuo sum in eius locum invitatus: id erat vocari in locum mortui; nihil me turpius apud homines fuisset, neque vero ad istam ipsam ἀσφάλειαν quicquam alienius; sunt enim illi apud bonos invidiosi, ego apud improbos meam retinuissem invidiam, alienam adsumpsissem. 5. Caesar me sibi volt esse legatum. Honestior declinatio haec periculi; sed ego hoc non repudio. Quid ergo est? Pugnare malo. Nihil tamen certi. Iterum dico, utinam adesses! sed tamen, si erit necesse, arcessemus. Quid aliud? quid? Hoc opinor: certi sumus perisse omnia; quid enim ἀκκιζόμεθα tam diu? sed haec scripsi properans et mehercule timide. Posthac ad te aut, si perfidelem habebo, cui dem, scribam plane omnia, aut, si obscure scribam, tu tamen intelleges. In iis epistolis me Laelium, te Furium faciam; cetera erunt ἐν αἰνιγμοῖς. Hic Caecilium colimus et observamus diligenter. Edicta Bibuli audio ad te missa: iis ardet dolore et ira noster Pompeius.

Tyrrell takes this as Epistolary.
volare = sent post-haste
Roscius law 64.
There is a very violent feeling abroad.

"but it rests rather on hatred than real force."

trouble threatens us.

v.c. Clodius.

C. Cosconius praetor 63, a land Commissioner
A pun "that would have been to give me my quietus".

hoc = periculum

~~cognate~~ "cognizant with the matter any longer"
cf. Schol. on Plat. Gorg. "προσποιῇ μωρίαν καὶ τὸ μὴ εἰδέναι"

The younger L. had a friend L. Furius Philus consul 136. B.C.
en mots converts

"more earnest & piercing"
For "celer" of MS. Broius and κελευσμα.
Probably a verse from some drama.
So MSS. Long. ad[illegible]

there were outcries against it

quaestor in Macedonia 59 consul 50
adopted by maternal uncle Q. Servilius Caepio.
L. [illegible] friend of Ant.
his father accused Clodius in 61.

because
at the [illegible]

## 13. AD ATTICUM II. 24.

SCR. ROMAE MENSE SEXTILI A.U.C. 695.

CICERO ATTICO SAL.

1. QUAS Numestio litteras dedi, sic te iis evocabam, ut nihil acrius neque incitatius fieri posset: ad illam celeritatem adde etiam, si quid potes. Ac ne sis perturbatus; novi enim te et non ignoro, quam sit amor omnis sollicitus atque anxius, sed res est, ut spero, non tam exitu molesta quam auditu. 2. Vettius ille, ille noster index, Caesari, ut perspicimus, pollicitus est sese curaturum, ut in aliquam suspitionem facinoris Curio filius adduceretur; itaque insinuatus in familiaritatem adulescentis et cum eo, ut res indicat, saepe congressus rem in eum locum deduxit, ut diceret sibi certum esse cum suis servis in Pompeium impetum facere eumque occidere. Hoc Curio ad patrem detulit, ille ad Pompeium; res delata ad senatum est. Introductus Vettius primo negabat se umquam cum Curione constitisse; neque id sane diu: nam statim fidem publicam postulavit; reclamatum est. Tum exposuit manum fuisse iuventutis duce Curione, in qua Paulus initio fuisset et Q. Caepio hic Brutus et Lentulus, flaminis filius, conscio patre; postea C. Septimium, scribam Bibuli, pugionem sibi a Bibulo attulisse: quod totum irrisum est, Vettio pugionem defuisse, nisi ei consul dedisset, eoque magis id eiectum est, quod a. d. III. Idus Mai. Bibulus Pompeium fecerat certiorem, ut caveret insidias; in quo ei Pompeius gratias egerat. 3. Introductus Curio filius dixit ad ea, quae Vettius dixerat, maximeque in eo tum quidem Vettius est reprehensus, quod dixerat adulescentium consilium, ut in foro [cum] gladiatoribus Gabinii Pompeium adori-

rentur, in eo principem Paulum fuisse, quem constabat eo tempore in Macedonia fuisse. Fit senatus consultum, ut Vettius, quod confessus esset se cum telo fuisse, in vincula coniiceretur; qui eum emisisset, eum contra rem publicam esse facturum. Res erat in ea opinione, ut putarent id esse actum, ut Vettius in foro cum pugione et item servi eius comprehenderentur cum telis, deinde ille se diceret indicaturum, idque ita factum esset, nisi Curiones rem ante ad Pompeium detulissent. Tum senatus consultum in contione recitatum est. Postero autem die Caesar, is, qui olim, praetor cum esset, Q. Catulum ex inferiore loco iusserat dicere, Vettium in rostra produxit eumque in eo loco constituit, quo Bibulo consuli aspirare non liceret. Hic ille omnia, quae voluit, de re publica dixit, ut qui illuc factus institutusque venisset. Primum Caepionem de oratione sua sustulit, quem in senatu acerrime nominarat, ut appareret noctem et nocturnam deprecationem intercessisse; deinde, quos in senatu ne tenuissima quidem suspitione attigerat, eos nominavit: Lucullum, a quo solitum esse ad se mitti C. Fannium, illum, qui in P. Clodium subscripserat, L. Domitium, cuius domum constitutam fuisse, unde eruptio fieret; me non nominavit, sed dixit consularem disertum, vicinum consulis, sibi dixisse Ahalam Servilium aliquem aut Brutum opus esse reperiri; addidit ad extremum, cum iam dimissa contione revocatus a Vatinio fuisset, se audisse a Curione his de rebus conscium esse Pisonem, generum meum, et M. Laterensem. 4. Nunc reus erat apud Crassum Divitem Vettius de vi et, cum esset damnatus, erat indicium postulaturus; quod si impetrasset, iudicia fore videbantur: ea nos, utpote qui nihil contemnere soleamus, *non contemnebamus, sed* non pertimes-

+ as quaestor +

" had stirred his release."

arranged

thereupon
primed & schooled

But ends this omnia ille (Caesar) [illegible] etc.

who supported the prosecution of Clodius

C. Servilius Ahala killed Sp. Maelius
a common-place of Cicero's.

married Tullia in 64. Quaestor in 58 died 54.

Epist.
Pub. P. Licinius Crassus a praetor of this year
mentioned by Val. Max.
" demand [illegible]'s infinity."
judicia: a number of prosecutions
In. solemus thes. soleamus [illegible] soleremus
inserted [illegible]. a case of [illegible]

Caedes metaphorical of a "quaestio" dispelled

M'ea ingenium
infortunatius nihil inserted by Lambinus.
"tum mortis tempore" Lambinus.
C. died in 60.
he. has "et" inserted
Kahnt inserts quidem before "et"

ἑλικτὰ κοὐδὲν ὑγιὲς ἀλλὰ πᾶν πέριξ φρονοῦντες Eur. Andr. 448
not that he really did so but that he might
e has a very strange disposition as you know;
tortuous mind - no - you know the rest
however knows too well the proverb, words must
-- ἀφαιρεῖς θρεῖν χρεών Eur. Rhes. 393
peacefully he praised me sky-high

cebamus. Hominum quidem summa erga nos studia significabantur, sed prorsus vitae taedet: ita sunt omnia omnium miseriarum plenissima. Modo caedem timueramus, quam oratio fortissimi senis, Q. Considii, discusserat; ea, quam quotidie timere potueramus, subito exorta est. Quid quaeris? nihil me *infortunatius, nihil* fortunatius est Catulo, cum splendore vitae, † tum hoc tempore. Nos tamen in his miseriis erecto animo et minime perturbato sumus, honestissimeque dignitatem nostram et magna cura tuemur. 5. Pompeius de Clodio iubet nos esse sine cura et summam in nos benevolentiam omni oratione significat. Te habere consiliorum auctorem, sollicitudinum socium, omni in cogitatione coniunctum cupio; qua re, ut Numestio mandavi tecum ut ageret, item atque eo si potest acrius te rogo, ut plane ad nos advoles: respirabo, si te videro.

## 14. AD ATTICUM II. 25.

SCR. ROMAE MENSE SEXTILI, A.U.C. 695.

CICERO ATTICO SAL.

1. CUM aliquem apud te laudaro tuorum familiarium, volam illum scire ex te me id fecisse, ut nuper me scis scripsisse ad te de Varronis erga me officio, te ad me rescripsisse eam rem summae tibi voluptati esse; sed ego mallem ad illum scripsisses mihi illum satis facere, non quo faceret, sed ut faceret. Mirabiliter enim moratus est, sicut nosti, ἐλικτὰ καὶ οὐδέν—. Sed nos tenemus praeceptum illud, τὰς τῶν κρατούντων. At hercule alter tuus familiaris, Hortalus, quam plena manu, quam ingenue, quam ornate nostras laudes in astra sustulit, cum de Flacci praetura et de illo tempore Allobrogum diceret! sic habeto, nec amantius nec honorificentius nec copiosius

potuisse dici: ei te hoc scribere a me tibi esse missum sane volo. 2. Sed quid tu scribas? quem iam ego venire atque adesse arbitror; ita enim egi tecum superioribus litteris. Valde te exspecto, valde desidero, neque ego magis, quam ipsa res et tempus poscit. His de negotiis quid scribam ad te, nisi idem, quod saepe? re publica nihil desperatius, iis, quorum opera, nihil maiore odio: nos, ut opinio et spes et coniectura nostra fert, firmissima benevolentia hominum muniti sumus. Qua re advola: aut expedies nos omni molestia aut eris particeps. Ideo sum brevior, quod, ut spero, coram brevi tempore conferre quae volumus licebit. Cura ut valeas.

## 15. AD QUINTUM FRATREM I. 2.

SCR. MENSE NOVEMBRI, A.U.C. 695.

MARCUS QUINTO FRATRI.

1. STATIUS ad me venit a. d. VIII. K. Novembr. Eius adventus, quod ita scripsisti, direptum iri te a tuis, dum is abesset, molestus mihi fuit; quod autem exspectationem sui concursumque eum, qui erat futurus, si una tecum decederet neque antea visus esset, sustulit, id mihi non incommode visum est accidisse: exhaustus est enim sermo hominum et multae emissae iam eius modi voces, ἀλλ' *aleí τινα φῶτα μέγαν*· quae te absente confecta esse laetor. 2. Quod autem idcirco a te missus est, mihi ut se purgaret, id necesse minime fuit: primum enim numquam ille mihi fuit suspectus, neque ego, quae ad te de illo scripsi, scripsi meo iudicio, sed cum ratio salusque omnium nostrum, qui ad rem publicam accedimus, non veritate solum, sed etiam fama niteretur, sermones ad te aliorum semper, non mea iudicia perscripsi; qui quidem quam frequentes essent et quam graves, adventu suo Statius

MS. tui. Defended by Lehmann.

"remarks .... let fly"
τινα φῶτα μέγαν καὶ καλὸν ἐδέγμην Od. IX 513. Polyphemus
of Od.

gossip          scandal

he was present

were particularly ~~vehement~~ ill-natured at the mention of him

"ἀφελῶς pulupo" "unsuspectingly" So Med.
Tyrrell reads "ἀφελῶς" "in all naïveté"
to have used expressions like these.
Cong. of Baiter. MS. has "potuisse"

The long & short of it is

those who were annoyed were no longer without a subject for their strictures

a native of Blaudus in Phrygia

cordially

"from the national talent for imposing on people"

"treated with the utmost courtesy" the most worthless creatures.

ipse cognovit: etenim intervenit non nullorum querelis, quae apud me de illo ipso habebantur, et sentire potuit sermones iniquorum in suum potissimum nomen erumpere. 3. Quod autem me maxime movere solebat, cum audiebam illum plus apud te posse, quam gravitas istius aetatis, imperii prudentia postularet—quam multos enim mecum egisse putas, ut se Statio commendarem? quam multa autem ipsum ἀσφαλῶς mecum in sermone ita protulisse 'id mihi non placuit; monui, suasi, deterrui?' quibus in rebus etiamsi fidelitas summa est, quod prorsus credo, quoniam tu ita iudicas, tamen species ipsa tam gratiosi liberti aut servi dignitatem habere nullam potest. Atque hoc sic habeto—nihil enim nec temere dicere nec astute reticere debeo—, materiam omnem sermonum eorum, qui de te detrahere vellent, Statium dedisse; antea tantum intellegi potuisse, iratos tuae severitati esse non nullos, hoc manumisso iratis quod loquerentur non defuisse.

II. 4. Nunc respondebo ad eas epistolas, quas mihi reddidit L. Caesius, cui, quoniam ita te velle intellego, nullo loco deero; quarum altera est de Blaudeno Zeuxide, quem scribis certissimum matricidam tibi a me intime commendari. Qua de re et de hoc genere toto, ne forte me in Graecos tam ambitiosum factum esse mirere, pauca cognosce. Ego cum Graecorum querelas nimium valere sentirem propter hominum ingenia ad fallendum parata, quoscumque de te queri audivi quacumque potui ratione placavi. Primum Dionysopolitas qui erant inimicissimi levi, quorum principem Hermippum non solum sermone meo, sed etiam familiaritate devinxi; ego Apamensem Hephaestum, ego levissimum hominem, Megaristum Antandrium, ego Niciam Smyrnaeum, ego nugas maximas omni mea

comitate complexus sum, Nymphontem etiam Colophonium: quae feci omnia, non quo me aut hi homines aut tota natio delectaret—pertaesum est levitatis, adsentationis, animorum non officiis, sed temporibus servientium—, 5. sed, ut ad Zeuxim revertar, cum is de M. Cascellii sermone secum habito, quae tu scribis, ea ipsa loqueretur, obstiti eius sermoni et hominem in familiaritatem recepi. Tua autem quae fuerit cupiditas tanta, nescio, quod scribis cupisse te, quoniam Smyrnae duos Mysos insuisses in culeum, simile in superiore parte provinciae edere exemplum severitatis tuae et idcirco Zeuxim elicere omni ratione voluisse, quem adductum in iudicium fortasse dimitti non oportuerat, conquiri vero et elici blanditiis, ut tu scribis, ad iudicium necesse non fuit, eum praesertim hominem, quem ego et ex suis civibus et ex multis aliis quotidie magis cognosco nobiliorem esse prope quam civitatem suam. 6. 'At enim Graecis solis indulgeo.' Quid? L. Caecilium nonne omni ratione placavi? quem hominem! qua ira! quo spiritu! quem denique praeter Tuscenium, cuius causa sanari non potest, non mitigavi? Ecce supra caput homo levis ac sordidus, sed tamen equestri censu, Catienus: etiam is lenietur; cuius tu in patrem quod fuisti asperior, non reprehendo; certo enim scio te fecisse cum causa; sed quid opus fuit eius modi litteris, quas ad ipsum misisti? 'Illum crucem sibi ipsum constituere, ex qua tu eum ante detraxisses; te curaturum, fumo ut combureretur, plaudente tota provincia.' Quid vero ad C. Fabium nescio quem?—nam eam quoque epistolam T. Catienus circumgestat—'renuntiari tibi Licinium plagiarium cum suo pullo miluino tributa exigere.' Deinde rogas Fabium, ut et patrem et filium vivos comburat, si possit; si minus, ad te mittat, uti iudicio

want of principle
subservience
"their disposition to ignore gratitude for expediency"

fessions

"tempt out"

enticed by false pretences.

This seems pointless.
Tyrrell conj. (1) "mobiliorem" more excitable even than his excitable fellow citizens ∴ committed murder under extenuating circumstances
or (2) emend "mobiliorem" here & Blandeno for Bladeno above, another town in Asia Minor. "softer even than his soft-named town". Most characteristic pun.
"how he urged ∴ hum.
'whose case is past remedy'
" threatens us"

"should be stifled with smoke"

kidnapper — with his young kite
"local terms"

"a violence of expression injurious to your character"

"irregularity of your correspondence"

hasty

Proquestor of Sicily in 59-58.

purity of administration

requisitionary letters.
inequitable, eccentric or contrary to other letters.
i.e. by the petitioners themselves

which were so much criticised

comburantur. Eae litterae abs te per iocum missae ad C. Fabium, si modo sunt tuae, cum leguntur, invidiosam atrocitatem verborum habent; 7. ac, si omnium mearum praecepta litterarum repetes, intelleges esse nihil a me nisi orationis acerbitatem et iracundiam et, si forte, raro litterarum missarum indiligentiam reprehensam; quibus quidem in rebus si apud te plus auctoritas mea quam tua sive natura paulo acrior sive quaedam dulcedo iracundiae sive dicendi sal facetiaeque valuissent, nihil sane esset, quod nos poeniteret. Et mediocri me dolore putas adfici, cum audiam, qua sit existimatione Vergilius, qua tuus vicinus C. Octavius? nam si te interioribus vicinis tuis, Ciliciensi et Syriaco, anteponis, valde magnum facis! atque is dolor est, quod cum ii, quos nominavi, te innocentia non vincant, vincunt tamen artificio benevolentiae colligendae, qui neque Cyrum Xenophontis neque Agesilaum noverint; quorum regum summo imperio nemo umquam verbum ullum asperius audivit.

III. 8. Sed haec a principio tibi praecipiens quantum profecerim, non ignoro: nunc tamen decedens, id quod mihi iam facere videris, relinque quaeso quam iucundissimam memoriam tui. Successorem habes perblandum; cetera valde illius adventu tua requirentur. In litteris mittendis, *ut* saepe ad te scripsi, nimium te exorabilem praebuisti: tolle omnes, si potes, iniquas, tolle inusitatas, tolle contrarias. Statius mihi narravit scriptas ad te solere adferri, ab se legi, et, si iniquae sint, fieri te certiorem; antequam vero ipse ad te venisset, nullum delectum litterarum fuisse; ex eo esse volumina selectarum epistolarum, quae reprehendi solerent. 9. Hoc de genere nihil te nunc quidem moneo; sero est enim, ac scire potes multa me varie diligenterque monuisse: illud tamen, quod

Theopompo mandavi, cum essem admonitus ab ipso, vide per homines amantes tui, quod est facile, ut haec genera tollantur epistolarum, primum iniquarum, deinde contrariarum, tum absurde et inusitate scriptarum, postremo in aliquem contumeliosarum. Atque ego haec tam esse, quam audio, non puto, et, si sunt occupationibus tuis minus animadversa, nunc perspice et purga. Legi epistolam, quam ipse scripsisse Sulla nomenclator dictus est, non probandam; legi non nullas iracundas. 10. Sed tempore ipso de epistolis: nam cum hanc paginam tenerem, L. Flavius, praetor designatus, ad me venit, homo mihi valde familiaris. Is mihi, te ad procuratores suos litteras misisse, quae mihi visae sunt iniquissimae, ne quid de bonis, quae L. Octavii Nasonis fuissent, cui L. Flavius heres est, deminuerent ante, quam C. Fundanio pecuniam solvissent; itemque misisse ad Apollonidenses, ne de bonis, quae Octavii fuissent, deminui paterentur prius, quam Fundanio debitum solutum esset. Haec mihi veri similia non videntur; sunt enim a prudentia tua remotissima. 'Ne deminuat heres?' Quid si infitiatur? quid si omnino non debet? quid? praetor solet iudicare deberi? Quid? ego Fundanio non cupio? non amicus sum? non misericordia moveor? Nemo magis; sed vis iuris eius modi est quibusdam in rebus, ut nihil sit loci gratiae. Atque ita mihi dicebat Flavius scriptum in ea epistola, quam tuam esse dicebat, te aut quasi amicis tuis gratias acturum aut quasi inimicis incommoda *ad*laturum. 11. Quid multa? Ferebat graviter, et vehementer mecum querebatur orabatque, ut ad te quam diligentissime scriberem: quod facio et te prorsus vehementer etiam atque etiam rogo, ut et procuratoribus Flavii remittas de deminuendo et Apollonidensibus ne quid perscribas, quod

" rudely"
so many faults of this kind.
little noted
weed them out

Prob. tribune of 61-60 B.C. who imprisoned Metellus Celer.

Apollonis in Mysia.

the gov. deputed judices to try questions of fact.

M. has viz. = "method of procedure in some cases does not admit of any private motives"

So Gronovius for incommoda laturum of M.
Certander "incommodaturum"

very strongly

M. has praescribas 'dictate'. Baiter gives perscribas "make an entry"

"official declaration or record in the form of a decree or memorandum of your own"

"immediately after." a Comice usage.

Written 43 B.C.

'stick to the ship". or "die game" (more strongly expressed)

① such expressions must be reserved for greater troubles
or ② You will find these expressions not warranted
[illegible] or meant to exact. [illegible] = stilted.
Tyrrell reads [illegible]: "they require some changes in your conduct." The Prof. has [illegible] account.
With [illegible] must we must trans. "such remarks may be called reproaches, but in a very moderate or rather in a very minute degree"
"considering the integrity of your conduct".

Of Hypaepa in Lydia.

contra Flavium sit, amplius. Et Flavii causa et scilicet Pompeii facies omnia. Nolo medius fidius ex tua iniuria in illum tibi liberalem me videri, sed te oro, ut tu ipse auctoritatem et monumentum aliquod decreti aut litterarum tuarum relinquas, quod sit ad Flavii rem et ad causam accomodatum: fert enim graviter homo et mei observantissimus et sui iuris dignitatisque retinens se apud te neque amicitia nec iure valuisse; et, ut opinor, Flavii aliquando rem et Pompeius et Caesar tibi commendarunt, et ipse ad te scripserat Flavius et ego certe. Qua re si ulla res est, quam tibi me petente faciendam putes, haec ea sit. Si me amas, cura, elabora, perfice, ut Flavius et tibi et mihi quam maximas gratias agat: hoc te ita rogo, ut maiore studio rogare non possim.

IV. 12. Quod ad me de Hermia scribis, mihi mehercule valde molestum fuit. Litteras ad te parum fraterne scripseram; quas oratione Diodoti, Luculli liberti, commotus, de pactione statim quod audieram, iracundius scripseram et revocare cupiebam: huic tu epistolae non fraterne scriptae fraterne debes ignoscere. 13. De Censorino, Antonio, Cassiis, Scaevola, te ab iis diligi, ut scribis, vehementer gaudeo. Cetera fuerunt in eadem epistola graviora, quam vellem: ὀρθὰν τὰν ναῦν et ἅπαξ θανεῖν. Maiora ista erunt: meae obiurgationes fuerunt amoris plenissimae; quae sunt non nulla, sed tamen mediocria et parva potius. Ego te numquam ulla in re dignum minima reprehensione putassem, cum te sanctissime gereres, nisi inimicos multos haberemus. Quae ad te aliqua *cum* monitione aut obiurgatione scripsi, scripsi propter diligentiam cautionis meae, in qua et maneo et manebo et, idem ut facias, non desistam rogare. 14. Attalus Hypaepenus mecum egit, ut se ne impedires, quo minus, quod

ad Q. Publicii statuam decretum est, erogaretur: quod ego te et rogo et admoneo, ne talis viri tamque nostri necessarii honorem minui per te aut impediri velis. Praeterea Aesopi [tragoedi], nostri familiaris, Licinius servus, tibi notus, aufugit: is Athenis apud Patronem Epicureum pro libero fuit; inde in Asiam venit. Postea Plato quidam Sardianus, Epicureus, qui Athenis solet esse multum et qui tum Athenis fuerat, cum Licinius eo venisset, cum eum fugitivum esse postea ex Aesopi litteris cognosset, hominem comprehendit et in custodiam Ephesi tradidit, sed in publicam an in pistrinum non satis ex litteris eius intellegere potuimus: tu, quoquo modo est, quoniam Ephesi est, hominem investiges velim summaque diligentia vel tecum deducas. Noli spectare, quanti homo sit; parvi enim pretii est, qui iam nihili est; sed tanto dolore Aesopus est adfectus propter servi scelus et audaciam, ut nihil ei gratius facere possis, quam si illum per te recuperarit.

V. 15. Nunc ea cognosce, quae maxime exoptas: rem publicam funditus amisimus, adeo ut Cato, adulescens nullius consilii, sed tamen civis Romanus et Cato, vix vivus effugeret, quod, cum Gabinium de ambitu vellet postulare, neque praetores diebus aliquot adiri possent vel potestatem sui facerent, in contionem escendit et Pompeium privatum dictatorem appellavit; propius nihil est factum, quam ut occideretur. Ex hoc, qui sit status totius rei publicae, videre potes. 16. Nostrae tamen causae non videntur homines defuturi: mirandum in modum profitentur, offerunt se, pollicentur. Equidem cum spe sum maxima, tum maiore etiam animo, spe, superiores fore nos, animo, ut in hac re publica ne casum quidem ullum pertimescam. Sed tamen se res sic habet:

"should be paid from the provincial treasury"

"a private prison, a mill.

"whichever it is".

Tyrrell reads "potest" sc. fieri. "in whatever way it is possible".

We must suppose a lacuna "vel Romam mittas vel tecum deducas". "how valueless".

quanti = "how valueless"

M has qui jam nihil est. Orelli has qui tam nihil est.

"considering how worthless he is." Ghest. has qui jam nihili est (nihilist).

"a feather-brained young man"

C. has dropped out. C. Porcius Cato tribune 57-56.

"allowed no access to or communication with themselves"

Gabinius was consul elect.

"unofficial" "he had the narrowest escape of being murdered".

to Madvig & Baiter

MS. has essent superiores fore nos, confidant animo et pertimescant.

confidence "while the constitution lasts"

i.e. for ferlinellis like Rubirius.
"we shall have the lists covered with glory".

lukewarm

without however releasing

or. designati L. Piso & A. Gabinius.

friend of Lucretius

August 14 58. B.C.

the assurances about the veins of P. which you say
upbraid me into being
V. "gave you"

"as not in the least to affect my mental capacities"
that I have no sphere or society in which to display"

si diem nobis dixerit, tota Italia concurret, ut multiplicata gloria discedamus; sin autem vi agere conabitur, spero fore studiis non solum amicorum, sed etiam alienorum, ut vi resistamus. Omnes et se et suos amicos, clientes, libertos, servos, pecunias denique suas pollicentur; nostra antiqua manus bonorum ardet studio nostri atque amore; si qui antea aut alieniores fuerant aut languidiores, nunc horum regum odio se cum bonis coniungunt. Pompeius omnia pollicetur et Caesar, quibus ego ita credo, ut nihil de mea comparatione deminuam. Tribuni pl. designati sunt nobis amici; consules se optime ostendunt; praetores habemus amicissimos et acerrimos cives, Domitium, Nigidium, Memmium, Lentulum; bonos etiam alios, *hos* singulares: qua re magnum fac animum habeas et spem bonam. De singulis tamen rebus, quae quotidie gerantur, faciam te crebro certiorem.

## 16. AD ATTICUM III. 15.

SCR. THESSALONICAE XIV. KALENDAS SEPTEMBRES A.U.C. 696.

CICERO ATTICO SAL.

1. ACCEPI Idibus Sextilibus quattuor epistolas a te missas: unam, qua me obiurgas, ut sim firmior; alteram, qua Crassi libertum ais tibi de mea sollicitudine macieque narrasse; tertiam, qua demonstras acta in senatu; quartam de eo, quod a Varrone scribis tibi esse confirmatum de voluntate Pompeii. 2. Ad primam tibi hoc scribo, me ita dolere, ut non modo a mente non deserar, sed id ipsum doleam, me tam firma mente ubi utar et quibuscum non habere. Nam si tu me uno non sine maerore cares, quid me censes, qui et te et omnibus? et, si tu incolumis me requiris, quo modo a me ipsam incolumitatem

desiderari putas? nolo commemorare, quibus rebus sim spoliatus, non solum quia non ignoras, sed etiam ne rescindam ipse dolorem meum: hoc confirmo, neque tantis bonis esse privatum quemquam neque in tantas miserias incidisse. Dies autem non modo non levat luctum hunc, sed etiam auget; nam ceteri dolores mitigantur vetustate, hic non potest non et sensu praesentis miseriae et recordatione praeteritae vitae quotidie augeri: desidero enim non mea solum neque meos, sed me ipsum. Quid enim sum? Sed non faciam ut aut tuum animum angam querelis aut meis volneribus saepius manus adferam. Nam quod purgas eos, quos ego mihi scripsi invidisse, et in eis Catonem, ego vero tantum illum puto ab isto scelere afuisse, ut maxime doleam plus apud me simulationem aliorum quam istius fidem valuisse. Ceteros quod purgas, debent mihi purgati esse, tibi si sunt. 3. Sed haec sero agimus. Crassi libertum nihil puto sincere locutum. In senatu rem probe scribis actam. Sed quid Curio? an illam orationem non legit? quae unde sit prolata nescio. Sed Axius, eiusdem diei scribens ad me acta, non ita laudat Curionem. At potest ille aliquid praetermittere; tu, nisi quod erat, profecto non scripsisti. Varronis sermo facit exspectationem Caesaris, atque utinam ipse Varro incumbat in causam! quod profecto cum sua sponte, tum te instante faciet. 4. Ego, si me aliquando vestri et patriae compotem fortuna fecerit, certe efficiam ut maxime laetere unus ex omnibus amicis, meaque officia et studia, quae parum antea luxerunt—fatendum est enim—, sic exsequar, ut me aeque tibi ac fratri et liberis nostris restitutum putes. Si quid in te peccavi, ac potius quoniam peccavi, ignosce; in me enim ipsum peccavi vehementius. Neque haec eo

" from such high estate" (tear open)

i.e. Hortensius

pretended friendship of others

Jame; when Lignus vetoed his recall. satisfactorily

The elder Curio.

"claims of duty & affection which were not so remarkable as they should have been"

"if all the love you bear me & have borne me were earned by services on my part all along...."

Pius reads tantum amorem se exhibuisses"

Collegia compitalicia Restored by Clodius in 58.

but what might if I had had any obligation to urge have been thought about  MS. potuit, a characteristic usage of Cicero.
scelere = fault

i.e. "se nihil contra hujus (Caesaris) voluntatem facere posse"

privilegium such as that of Clodius was forbidden by the laws of the Twelve Tables.

Tyrrell's "tecum Curionem" is probably the right reading.

MSS. sic which is common corruption for S.C. senatus-consultum

I still dwell on the past

scribo, quo te non meo casu maximo dolore esse adfectum sciam, sed profecto, si, quantum me amas et amasti, tantum amare deberes ac debuisses, numquam esses passus me, quo tu abundabas, egere consilio, nec esses passus mihi persuaderi utile nobis esse legem de collegiis perferri. Sed tu tantum lacrimas praebuisti dolori meo, quod erat amoris, tamquam ipse ego; quod meritis meis perfectum oportuit, ut dies et noctes, quid mihi faciendum esset, cogitares, id abs te meo, non tuo scelere praetermissum est. Quod si non modo tu, sed quisquam fuisset, qui me Pompeii minus liberali responso perterritum a turpissimo consilio revocaret, quod unus tu facere maxime potuisti, aut occubuissem honeste aut victores hodie viveremus. Hic mihi ignosces: me enim ipsum multo magis accuso, deinde te quasi me alterum; et simul meae culpae socium quaero, ac si restituor, etiam minus videbimur deliquisse, abs teque certe, quoniam nullo nostro, tuo ipsius beneficio diligemur. 5. Quod te cum Culleone scribis de privilegio locutum, est aliquid, sed multo est melius abrogari: si enim nemo impediet, quid est firmius? sin erit, qui ferri non sinat, idem senatus consulto intercedet. Nec quicquam aliud opus est abrogari: nam prior lex nos nihil laedebat; quam si, ut est promulgata, laudare voluissemus aut, ut erat neglegenda, neglegere, nocere omnino nobis non potuisset. Hic mihi primum meum consilium defuit, sed etiam obfuit. Caeci, caeci, inquam, fuimus in vestitu mutando, in populo rogando, quod, nisi nominatim mecum agi coeptum esset, fieri perniciosum fuit. Sed pergo praeterita; verum tamen ob hanc causam, ut, si quid agetur, legem illam, in qua popularia multa sunt, ne tangatis. 6. Verum est stultum me praecipere, quid agatis aut quo modo: utinam modo agatur

aliquid! multa occultant tuae litterae, credo, ne vehementius desperatione perturber. Quid enim vides agi posse aut quo modo? per senatumne? ast tute scripsisti ad me, quoddam caput legis Clodium in curiae poste fixisse, NE REFERRI NEVE DICI LICERET. Quo modo igitur Domitius se dixit relaturum? quo modo autem iis, quos tu scribis, et de re dicentibus et, ut referretur, postulantibus Clodius tacuit? ac, si per populum, poteritne nisi de omnium tribunorum pl. sententia? quid de bonis? quid de domo? poteritne restitui? aut, si non poterit, egomet quo modo potero? Haec nisi vides expediri, quam in spem me vocas? sin autem spei nihil est, quae est mihi vita? itaque exspecto Thessalonicae acta Kal. Sext., ex quibus statuam in tuosne agros confugiam, ut neque videam homines, quos nolim, et te, ut scribis, videam et propius sim, si quid agatur—idque intellexi cum tibi, tum Q. fratri placere—, an abeam Cyzicum. 7. Nunc, Pomponi, quoniam nihil impertisti tuae prudentiae ad salutem meam, quod aut in me ipso satis esse consilii decreras aut te nihil plus mihi debere quam ut praesto esses, quoniamque ego proditus, inductus, coniectus in fraudem, omnia mea praesidia neglexi, totam Italiam [in me] erectam ad me defendendum destitui et reliqui, me meosque meis tradidi inimicis inspectante et tacente te, qui, si non plus ingenio valebas quam ego, certe timebas minus: si potes, erige adflictos et in eo nos iuva; sin omnia sunt obstructa, id ipsum fac ut sciamus et nos aliquando aut obiurgare aut comiter consolari desine. Ego si tuam fidem accusarem, non me potissimum tuis tectis crederem: meam amentiam accuso, quod a te tantum *me* amari, quantum ego vellem, putavi; quod si fuisset, fidem eandem, curam maiorem adhibuisses, me

"rebuilt"

ad alert

of περιορᾶν.

in this matter

"if every path is closed against me"

M has critez. Alia communiter - me & my family in common"

"the bank of Valerius"
G. Naevius & his friends at tabula Sextiana in Pro. Quint. 25.
Scholia Bobiensa says "ad tabulam Valeriam dicebatur ubi Valerius Maximus tabulam rerum ab ~~se~~ in Gallia prospere gestarum proposuerat ~~[illegible]~~ vulgo."

certe ad exitium praecipitantem retinuisses, istos labores, quos nunc in naufragiis nostris suscipis, non subisses. 8. Qua re fac ut omnia ad me perspecta et explorata perscribas, meque, ut facis, velis esse aliquem, quoniam, qui fui et qui esse potui, iam esse non possum, et ut his litteris non te, sed me ipsum a me esse accusatum putes. Si qui erunt, quibus putes opus esse meo nomine litteras dari, velim conscribas curesque dandas. Data XIIII. Kal. Sept.

## 17. AD FAMILIARES XIV. 2.

SCR. THESSALONICAE A.D. III. NON. OCT. A.U.C. 696.

TULLIUS S. D. TERENTIAE ET TULLIOLAE ET CICERONI SUIS.

1. NOLI putare me ad quemquam longiores epistolas scribere, nisi si quis ad me plura scripsit, cui puto rescribi oportere; nec enim habeo quod scribam, nec hoc tempore quicquam difficilius facio. Ad te vero et ad nostram Tulliolam non queo sine plurimis lacrimis scribere; vos enim video esse miserrimas, quas ego beatissimas semper esse volui idque praestare debui, et, nisi tam timidi fuissemus, praestitissem. 2. Pisonem nostrum merito eius amo plurimum: eum, ut potui, per litteras cohortatus sum gratiasque egi, ut debui. In novis tribunis pl. intellego spem te habere: id erit firmum, si Pompeii voluntas erit, sed Crassum tamen metuo. A te quidem omnia fieri fortissime et amantissime video, nec miror, sed maereo casum eius modi, ut tantis tuis miseriis meae miseriae subleventur: nam ad me P. Valerius, homo officiosus, scripsit, id quod ego maximo cum fletu legi, quem ad modum a Vestae ad tabulam Valeriam ducta esses. Hem, mea lux, meum desiderium, unde omnes opem petere solebant! te nunc, mea Terentia, sic

vexari, sic iacere in lacrimis et sordibus! idque fieri mea culpa, qui ceteros servavi, ut nos periremus! 3. Quod de domo scribis, hoc est de area, ego vero tum denique mihi videbor restitutus, si illa nobis erit restituta; verum haec non sunt in nostra manu: illud doleo, quae impensa facienda est, in eius partem *te* miseram et despoliatam venire. Quod si conficitur negotium, omnia consequemur; sin eadem nos fortuna premet, etiamne reliquias tuas misera proicies? Obsecro te, mea vita, quod ad sumptum attinet, sine alios, qui possunt, si modo volunt, sustinere, et valetudinem istam infirmam, si me amas, noli vexare: nam mihi ante oculos dies noctesque versaris; omnes labores te excipere video; timeo, ut sustineas. Sed video in te esse omnia: qua re, ut id, quod speras et quod agis, consequamur, servi valetudini. 4. Ego, ad quos scribam, nescio, nisi ad eos, qui ad me scribunt, aut ad eos, de quibus ad me vos aliquid scribitis. Longius, quoniam ita vobis placet, non discedam, sed velim quam saepissime litteras mittatis, praesertim, si quid est firmius, quod speremus. Valete, mea desideria, valete. D. a. d. III. Non. Oct. Thessalonica.

## 18. AD FAMILIARES XIV. 1.

SCR. DYRRHACHII A.D. VI. KAL. DECEMBRES A.U.C. 696.

TULLIUS TERENTIAE SUAE, TULLIOLAE SUAE, CICERONI SUO SALUTEM DICIT.

1. ET litteris multorum et sermone omnium perfertur ad me, incredibilem tuam virtutem et fortitudinem esse teque nec animi neque corporis laboribus defatigari. Me miserum! te ista virtute, fide, probitate, humanitate in tantas aerumnas propter me incidisse! Tulliolamque nostram, ex quo patre tantas voluptates capiebat, ex eo

site

impoverished "must necessarily share"
we gain everything

"I fear that you will break down"

"If there are any power grounds for hope"

sapere = "realize things" Born 65.

Atticus > Cato
Avius > Hortensius.

Consul for 54.

hus U. Neapolitana M has ipso. this should be emended to "Piso". Hispo is unknown. Piso consul 58 went to Macedonia as proconsul.

a country seat

tantos percipere luctus! Nam quid ego de Cicerone dicam? qui cum primum sapere coepit, acerbissimos dolores miseriasque percepit. Quae si, tu ut scribis, fato facta putarem, ferrem paulo facilius, sed omnia sunt mea culpa commissa, qui ab iis me amari putabam, qui invidebant, eos non sequebar, qui petebant. 2. Quod si nostris consiliis usi essemus neque apud nos tantum valuisset sermo aut stultorum amicorum aut improborum, beatissimi viveremus: nunc, quoniam sperare nos amici iubent, dabo operam, ne mea valetudo tuo labori desit. Res quanta sit, intellego, quantoque fuerit facilius manere domi quam redire; sed tamen, si omnes tribunos pl. habemus, si Lentulum tam studiosum, quam videtur, si vero etiam Pompeium et Caesarem, non est desperandum. 3. De familia, quo modo placuisse scribis amicis, faciemus; de loco, nunc quidem iam abiit pestilentia, sed quam diu fuit, me non attigit. Plancius, homo officiosissimus, me cupit esse secum et adhuc retinet. Ego volebam loco magis deserto esse in Epiro, quo neque Hispo veniret nec milites, sed adhuc Plancius me retinet; sperat posse fieri, ut mecum in Italiam decedat: quem ego diem si videro et si in vestrum complexum venero ac si et vos et me ipsum recuperaro, satis magnum mihi fructum videbor percepisse et vestrae pietatis et meae. 4. Pisonis humanitas, virtus, amor in omnes nos tantus est, ut nihil supra possit: utinam ea res ei voluptati sit! gloriae quidem video fore. De Q. fratre nihil ego te accusavi, sed vos, cum praesertim tam pauci sitis, volui esse quam coniunctissimos. 5. Quibus me voluisti agere gratias, egi et me a te certiorem factum esse scripsi. Quod ad me, mea Terentia, scribis te vicum vendituram, quid, obsecro te,—me miserum?—quid futurum est? et,

si nos premet eadem fortuna, quid puero misero fiet? Non queo reliqua scribere—tanta vis lacrimarum est—, neque te in eundem fletum adducam. Tantum scribo: si erunt in officio amici, pecunia non deerit; si non erunt, tu efficere tua pecunia non poteris. Per fortunas miseras nostras, vide, ne puerum perditum perdamus. Cui si aliquid erit, ne egeat, mediocri virtute opus est et mediocri fortuna, ut cetera consequatur. 6. Fac valeas et ad me tabellarios mittas, ut sciam, quid agatur et vos quid agatis. Mihi omnino iam brevis exspectatio est. Tulliolae et Ciceroni salutem dic. Valete. D. a. d. VI. K. Decemb. Dyrrhachii.

7. Dyrrhachium veni, quod et libera civitas est et in me officiosa et proxima Italiae; sed si offendet me loci celebritas, alio me conferam, ad te scribam.

## 19. AD ATTICUM III. 23.

SCR. DYRRHACHII PRIDIE KALENDAS DECEMBRES A.U.C. 696.

CICERO ATTICO SAL.

1. A. d. v. Kal. Decembr. tres epistolas a te accepi: unam datam a. d. VIII. Kal. Novembres, in qua me hortaris, ut forti animo mensem Ianuarium exspectem, eaque, quae ad spem putas pertinere, de Lentuli studio, de Metelli voluntate, de tota Pompeii ratione, perscribis. In altera epistola praeter consuetudinem tuam diem non adscribis, sed satis significas tempus; lege enim ab octo tribunis pl. promulgata scribis te eas litteras eo ipso die dedisse, id est a. d. III. Kal. Novembres, et, quid putes utilitatis eam promulgationem attulisse, scribis: in quo si iam haec nostra salus cum hac lege desperata erit, velim pro tuo in me amore hanc inanem meam diligentiam miserabilem potius quam ineptam putes, sin est aliquid

"seal the ruin of our poor boy".
talent

Any suspense in any case cannot now be long

bustle.

24 hrs.

attitude
contrary to   4. hist. Repos counsel for 54.

criticism
"a subject for pity rather than contempt"

nostris - in our favour
Manutius conj. "novis" which seems demanded by "veterum"

under the circumstances
place in Senate
"the traditional one providing indemnity for the
i.e. his house
proposers, if in carrying out the law any other law
be infringed."
"by whom its insertion was procured

"when a law is repealed the very sanction against repeal
is repealed in the way in which the law itself must be
repealed." This merely requires protest. So MSS.
Klotz & Tyrrell read "quo minus" "forbidding its repeal."
Med. read "quo non". So Clarke.
modo might well be a corruption of non.

repeal in part supersede

is or was illegal
E.H. etc. quas hac lege inhib (together - this law is so far void"
Clodius only provided against subsequent tribunes as he
relied on his veto against those of his own year.

"defines the powers of the tribunes elect"

spei, des operam ut maiore diligentia posthac a nostris magistratibus defendamur. 2. Nam ea veterum tribunorum pl. rogatio tria capita habuit, unum de reditu meo, scriptum incaute; nihil enim restituitur praeter civitatem et ordinem, quod mihi pro meo casu satis est, sed, quae cavenda fuerint et quo modo, te non fugit. Alterum caput est tralaticium de impunitate, SI QVID CONTRA ALIAS LEGES EIVS LEGIS ERGO FACTVM SIT. Tertium caput, mi Pomponi, quo consilio et a quo sit inculcatum, vide: scis enim Clodium sanxisse, ut vix aut omnino non posset nec per senatum nec per populum infirmari sua lex. Sed vides numquam esse observatas sanctiones earum legum, quae abrogarentur: nam, si id esset, nulla fere abrogari posset; neque enim ulla est, quae non ipsa se saepiat difficultate abrogationis. Sed, cum lex abrogatur, illud ipsum abrogatur, quo modo eam abrogari oporteat. 3. Hoc, quod re vera ita est, cum semper ita habitum observatumque sit, octo nostri tribuni pl. caput posuerunt hoc: SI QVID IN HAC ROGATIONE SCRIPTVM EST, QVOD PER LEGES PLEBISVE SCITA, hoc est quod per legem Clodiam, PROMVLGARE, ABROGARE, DEROGARE, OBROGARE SINE FRAVDE SVA NON LICEAT, NON LICVERIT, QVODVE EI QVI PROMVLGAVIT, DEROGAVIT, OB EAM REM POENAE MVLTAEVE SIT, E. H. L. N. R. 4. Atque hoc in illis tribunis pl. non laedebat; lege enim collegii sui non tenebantur; quo maior est suspitio malitiae alicuius, cum id, quod ad ipsos nihil pertinebat, erat autem contra me, scripserunt, ut novi tribuni pl., si essent timidiores, multo magis sibi eo capite utendum putarent. Neque id a Clodio praetermissum est: dixit enim in contione a. d. III. Nonas Novembres hoc capite designatis tribunis pl. praescriptum esse, quid liceret; tamen in lege nulla esse eius modi caput te non fallit, quo, si opus esset,

omnes in abrogando *uterentur*. Ut Ninnium aut ceteros fugerit investiges velim et quis attulerit et qua re octo tribuni pl. ad senatum de me referre non dubitarint— scilicet quod observandum illud caput non putabant—, iidem in abrogando tam cauti fuerint, ut id metuerent, soluti cum essent, quod ne iis quidem, qui lege tenentur, est curandum. Id caput sane nolim novos tribunos pl. ferre, sed perferant modo quidlubet: uno capite, quo revocabor, modo res conficiatur, ero contentus. Iam dudum pudet tam multa scribere; vereor enim ne re iam desperata legas, ut haec mea diligentia miserabilis tibi, aliis irridenda videatur. Sed si est aliquid in spe, vide legem, quam T. Fadio scripsit Visellius: ea mihi perplacet; nam Sestii nostri, quam tu tibi probari scribis, mihi non placet. 5. Tertia est epistola pridie Idus Novembr. data, in qua exponis prudenter et diligenter, quae sint quae rem distinere videantur, de Crasso, de Pompeio, de ceteris: qua re oro te ut, si qua spes erit, posse studiis bonorum, auctoritate, multitudine comparata, rem confici, des operam ut uno impetu perfringatur, in eam rem incumbas ceterosque excites; sin, ut ego perspicio cum tua coniectura, tum etiam mea, spei nihil est, oro obtestorque te, ut Q. fratrem ames, quem ego miserum misere perdidi, neve quid eum patiare gravius consulere de se, quam expediat sororis tuae filio, meum Ciceronem, cui nihil misello relinquo praeter invidiam et ignominiam nominis mei, tueare, quoad poteris, Terentiam, unam omnium aerumnosissimam, sustentes tuis officiis. Ego in Epirum proficiscar, cum primorum dierum nuntios excepero: tu ad me velim proximis litteris, ut se initia dederint, perscribas. Data pridie Kal. Decembr.

MS. "quod" retained by Orelli & Tyrrell." But if it were requisite, all etc.
Madvig "quo": this blunts force of argument.
"How it escaped h. etc." minimus tribune 59-58.
M. has aut nimium." who added the saving clause"
MS. sive quod.

"carry something whatever it may be."

"pathetic"

C. Visellius Varro, jurisconsult, cousin of Cicero.

"to delay a measure for my recall"

(1) influence of leading men & (2) decree of Senate
"carried through by force".

"whom alas! I have hopelessly ruined"

how things are shaping.

He was recalled Aug. 14, 57 B.C.

safely

I felt certain (during my exile)

n account of my regard for your advice
MSS. have "nec etiam impetu ... etc."
Zosimo read nec etiam pro praeterita mea in te observantia".
undem is so strongly adversative that it must be wrong to
interpose a clause referring to iii. as in text.
cundemque : and yet

I do not exact to the full all arrears of delight in your
sweet companionship in the past."

"With regard to my political position"

# M. TULLII CICERONIS

## EPISTOLAE SELECTAE.

## PARS II.

### 20. AD ATTICUM IV. 1.

SCR. ROMAE MEDIO MENSE SEPTEMBRI A.U.C. 697.

CICERO ATTICO SAL.

1. CUM primum Romam veni, fuitque cui recte ad te litteras darem, nihil prius faciendum mihi putavi, quam ut tibi absenti de reditu nostro gratularer; cognoram enim—ut vere scribam—te in consiliis mihi dandis nec fortiorem nec prudentiorem quam me ipsum, me etiam propter meam in te observantiam nimium in custodia salutis meae diligentem, eundemque te, qui primis temporibus erroris nostri aut potius furoris particeps et falsi timoris socius fuisses, acerbissime discidium nostrum tulisse plurimumque operae, studii, diligentiae, laboris ad conficiendum reditum meum contulisse: 2. itaque hoc tibi vere adfirmo, in maxima laetitia et exoptatissima gratulatione unum ad cumulandum gaudium conspectum aut potius complexum mihi tuum defuisse; quem semel nactus si umquam dimisero, ac nisi etiam praetermissos fructus tuae suavitatis praeteriti temporis omnes exegero, profecto hac restitutione fortunae me ipse non satis dignum iudicabo. 3. Nos adhuc in nostro statu, quod difficillime recuperari posse arbitrati sumus, splendorem nostrum illum forensem et in

senatu auctoritatem et apud viros bonos gratiam magis, quam optaramus, consecuti sumus; in re autem familiari, quae quem ad modum fracta, dissipata, direpta sit, non ignoras, valde laboramus tuarumque non tam facultatum, quas ego nostras esse iudico, quam consiliorum ad colligendas et constituendas reliquias nostras indigemus. 4. Nunc, etsi omnia aut scripta esse a tuis arbitror aut etiam nuntiis ac rumore perlata, tamen ea scribam brevi, quae te puto potissimum ex meis litteris velle cognoscere. X Pr. Nonas Sextiles Dyrrhachio sum profectus, ipso illo die, quo lex est lata de nobis; Brundisium veni Nonis Sextilibus: ibi mihi Tulliola mea fuit praesto natali suo ipso die, qui casu idem natalis erat et Brundisinae coloniae et tuae vicinae Salutis; quae res animadversa *a* multitudine summa Brundisinorum gratulatione celebrata est. Ante diem VI. Idus Sextiles cognovi, [cum Brundisii essem,] litteris Quinti, mirifico studio omnium aetatum atque ordinum, incredibili concursu Italiae legem comitiis centuriatis esse perlatam: inde a Brundisinis honestissimis ornatus iter ita feci, ut undique ad me cum gratulatione legati convenerint. 5. Ad urbem ita veni, ut nemo ullius ordinis homo nomenclatori notus fuerit, qui mihi obviam non venerit, praeter eos inimicos, quibus id ipsum [se inimicos esse] non liceret aut dissimulare aut negare. Cum venissem ad portam Capenam, gradus templorum ab infima plebe completi erant, a qua plausu maximo cum esset mihi gratulatio significata, similis et frequentia et plausus me usque ad Capitolium celebravit, in foroque et in ipso Capitolio miranda multitudo fuit. Postridie in senatu, qui fuit dies Nonarum Septembr., senatui gratias egimus. 6. Eo biduo cum esset annonae summa caritas et homines ad theatrum primo, deinde ad senatum concur-

MSS. optamus "than I could wish"
with regard to my property.

purse

for getting tog. & securing

Brund. was founded 244 B.C.

Temple Salus on Quirinal was ded. 303 B.C

Q. Jus. I 116 "Quaeque salutato crepitat Concordia nido"
"was hailed with much rejoicing"
Found in Z but omitted by M. The Sulp. would imply that it was owing to his not having left B. that he got the letter.

Lehmann emends to "ab infimo plebe" "from the very bottom". A scribe would easily alter to infima. ab with compleri would be superfluous.

to vote for that measure

I complied

elaborately.

MSS. ~~[illegible]~~ dedisset". with this supply "populus" before plausum. Written pl. it would easily have dropped out. recitando cf. Orat 44. "Cum immolanda Iphigenia Calchas xc. contionem. tristis esset".
Praetor. Ap. Claudius Pulcher
Trib. Q. Numm. Rufus & Sex. Atilius Serranus."

declare the consecration by Clodius void"

building

a quot. from some old play

shaken

rissent, impulsu Clodii mea opera frumenti inopiam esse clamarent, cum per eos dies senatus de annona haberetur et ad eius procurationem sermone non solum plebis, verum etiam bonorum Pompeius vocaretur idque ipse cuperet, multitudoque a me nominatim, ut id decernerem, postularet, feci et accurate sententiam dixi. Cum abessent consulares, quod tuto se negarent posse sententiam dicere, praeter Messallam et Afranium, factum est senatus consultum in meam sententiam, ut cum Pompeio ageretur ut eam rem susciperet lexque ferretur; quo senatus consulto recitato continuo cum more hoc insulso et novo plausum meo nomine recitando dedissent, habui contionem; omnes magistratus praesentes praeter unum praetorem et duos tribunos pl. dederunt. 7. Postridie senatus frequens; et omnes consulares nihil Pompeio postulanti negarunt; ille legatos quindecim cum postularet, me principem nominavit et *ad* omnia me alterum se fore dixit. Legem consules conscripserunt, qua Pompeio per quinquennium omnis potestas rei frumentariae toto orbe terrarum daretur; alteram Messius, qui omnis pecuniae dat potestatem et adiungit classem et exercitum et maius imperium in provinciis, quam sit eorum, qui eas obtineant; illa nostra lex consularis nunc modesta videtur, haec Messii non ferenda. Pompeius illam velle se dicit, familiares hanc. Consulares duce Favonio fremunt; nos tacemus, et eo magis, quod de domo nostra nihil adhuc pontifices responderunt; qui si sustulerint religionem, aream praeclaram habebimus; superficiem consules ex senatus consulto aestimabunt: sin aliter, demolientur, suo nomine locabunt, rem totam aestimabunt. 8. Ita sunt res nostrae, ut in secundis, fluxae, ut in adversis, bonae. In re familiari valde sumus, ut scis

perturbati. Praeterea sunt quaedam domestica, quae litteris non committo. Q. fratrem insigni pietate, virtute, fide praeditum sic amo, ut debeo. Te exspecto et oro ut matures venire eoque animo venias, ut me tuo consilio egere non sinas. Alterius vitae quoddam initium ordimur. Iam quidam, qui nos absentes defenderunt, incipiunt praesentibus occulte irasci, aperte invidere: vehementer te requirimus.

## 21. AD FAMILIARES I. 1.

SCR. ROMAE IDIBUS IANUARIIS A.U.C. 698.

M. CICERO S. D. P. LENTULO PROCOS.

1. Ego omni officio ac potius pietate erga te ceteris satis facio omnibus, mihi ipse numquam satis facio; tanta enim magnitudo est tuorum erga me meritorum, ut, quia tu nisi perfecta re de me non conquiesti, ego, quia non idem in tua causa efficio, vitam mihi esse acerbam putem. In causa haec sunt: Hammonius, regis legatus, aperte pecunia nos oppugnat; res agitur per eosdem creditores, per quos, cum tu aderas, agebatur. Regis causa si qui sunt qui velint, qui pauci sunt, omnes rem ad Pompeium deferri volunt; senatus religionis calumniam non religione, sed malevolentia et illius regiae largitionis invidia comprobat. 2. Pompeium et hortari et orare, etiam liberius accusare et monere, ut magnam infamiam fugiat, non desistimus; sed plane nec precibus nostris nec admonitionibus relinquit locum: nam cum in sermone quotidiano, tum in senatu palam sic egit causam tuam, ut neque eloquentia maiore quisquam nec gravitate nec studio nec contentione agere potuerit, cum summa testificatione tuorum in se officiorum et amoris erga te sui. Marcellinum tibi esse iratum scis: is hac regia causa exceptа

cf. πάλιγγενεσίαν

51. Consuls Lent. Marcellinus
& Lucius Marcius Philippus.

only when the whole business was accomplished.
the causes of my failure are as follows.
financiers
are attached to the king
trumped-up pleas about his books
disgust at the wholesale bribery by the king
discreditable imputations
gives me no ground

earnestness

This three causes rejice
margin of C has "tubicini" which would be unsuited to diction
of this letter. Perhaps "gratum" or "non ingratum"
should be read for "iratum"

he cannot be diverted from his intention of bringing the religious question before the house

M. Lucullus

"It is a great struggle; things are going badly"

It must be remembered that we have to deal with a case secretly embittered by

"afterwards made worse by the open meddling of the consuls to the great disgust of everybody"

His reality = Pompeius.

ceteris in rebus se acerrimum tui defensorem fore ostendit. Quod dat, accipimus: quod instituit referre de religione et saepe iam retulit, ab eo deduci non potest. 3. Res ante Idus acta sic est;—nam haec Idibus mane scripsi: —Hortensii et mea et Luculli sententia cedit religioni de exercitu—teneri enim res aliter non potest—, sed ex illo senatus consulto, quod te referente factum est, tibi decernit, ut regem reducas, quod commodo rei publicae facere possis; ut exercitum religio tollat, te auctorem senatus retineat. Crassus tres legatos decernit, nec excludit Pompeium; censet enim etiam ex iis, qui cum imperio sint; Bibulus tres legatos, ex iis, qui privati sunt. Huic adsentiuntur reliqui consulares praeter Servilium, qui omnino reduci negat oportere, et Volcatium, qui, Lupo referente, Pompeio decernit, et Afranium, qui adsentitur Volcatio. Quae res auget suspitionem Pompeii voluntatis, animadvertebatur Pompeii familiares adsentiri Volcatio. Laboratur vehementer; inclinata res est: Libonis et Hypsaei non obscura concursatio et contentio omniumque Pompeii familiarium studium in eam opinionem rem adduxerunt, ut Pompeius cupere videatur; cui qui nolunt, idem tibi, quod eum ornasti, non sunt amici. 4. Nos in causa auctoritatem eo minorem habemus, quod tibi debemus; gratiam autem nostram exstinguit hominum suspitio, quod Pompeio se gratificari putant. Ut in rebus multo ante, quam profectus es, ab ipso rege et ab intimis ac domesticis Pompeii clam exulceratis, deinde palam a consularibus exagitatis et in summam invidiam adductis, ita versamur. Nostram fidem omnes, amorem tui absentis praesentes tui cognoscent. Si esset in iis fides, in quibus summa esse debebat, non laboraremus.

## 22. AD FAMILIARES I. 2.

SCR. ROMAE A. D. XVI. KAL. FEBRUARIAS A.U.C. 698.

M. CICERO S. D. P. LENTULO PROCOS.

1. IDIBUS Ianuariis in senatu nihil est confectum, propterea quod dies magna ex parte consumptus est altercatione Lentuli consulis et Caninii tribuni pl. Eo die nos quoque multa verba fecimus maximeque visi sumus senatum commemoratione tuae voluntatis erga illum ordinem permovere. Itaque postridie placuit, ut breviter sententias diceremus; videbatur enim reconciliata nobis voluntas esse senatus, quod cum dicendo, tum singulis appellandis rogandisque perspexeram. Itaque cum sententia prima Bibuli pronuntiata esset, ut tres legati regem reducerent, secunda Hortensii, ut tu sine exercitu reduceres, tertia Volcatii, ut Pompeius reduceret, postulatum est, ut Bibuli sententia divideretur. Quatenus de religione dicebat, cui quidem rei iam obsisti non poterat, Bibulo adsensum est; de tribus legatis frequentes ierunt in alia omnia. 2. Proxima erat Hortensii sententia, cum Lupus, tribunus pl., quod ipse de Pompeio retulisset, intendere coepit, ante se oportere discessionem facere quam consules. Eius orationi vehementer ab omnibus reclamatum est; erat enim et iniqua et nova. Consules neque concedebant neque valde repugnabant, diem consumi volebant; id quod est factum: perspiciebant enim in Hortensii sententiam multis partibus plures ituros, quamquam aperte Volcatio adsentirentur. Multi rogabantur, atque id ipsum consulibus invitis; nam ii Bibuli sententiam valere cupierunt. 3. Hac controversia usque ad noctem ducta senatus dimissus est. Ego eo die casu

angry dialogue

"we (your friends) resolved not to speak at length"
"during my speech"
"in addressing & making requests to individuals"
"had been read out for discussion"

should be put to the vote as two seperate questions i.e.
① Religious scruples to prevent "exercitus."
② Whether "legati" from the "privati"
rejected the motion by a large majority

was met with loud cries of "order!"

Uno. insertion of "non" before "invitis" is necessary
be adopted

"self-seeking"

"whole mission has been bought & sold"

"the plan of bringing the question before the people".
Cic. had secured tribunes to veto (legibus)
& mag. to declare "se servaturos de caelo" (auspicia)
"most stringent resolution was passed"
"entered on the minutes"

1st Feb.
offered to stand his trial

apud Pompeium cenavi nactusque tempus hoc magis idoneum quam umquam antea, quod post tuum discessum is dies honestissimus nobis fuerat in senatu, ita sum cum illo locutus, ut mihi viderer animum hominis ab omni alia cogitatione ad tuam dignitatem tuendam traducere: quem ego ipsum cum audio, prorsus eum libero omni suspitione cupiditatis; cum autem eius familiares omnium ordinum video, perspicio, id quod iam omnibus est apertum, totam rem istam iam pridem a certis hominibus, non invito rege ipso consiliariisque eius, esse corruptam. 4. Haec scripsi a. d. XVI. Kal. Februarias ante lucem: eo die senatus erat futurus. Nos in senatu, quem ad modum spero, dignitatem nostram, ut potest in tanta hominum perfidia et iniquitate, retinebimus; quod ad popularem rationem attinet, hoc videmur esse consecuti, ut ne quid agi cum populo aut salvis auspiciis aut salvis legibus aut denique sine vi posset. De his rebus pridie, quam haec scripsi, senatus auctoritas gravissima intercessit; cui cum Cato et Caninius intercessissent, tamen est perscripta: eam ad te missam esse arbitror. De ceteris rebus, quicquid erit actum, scribam ad te, et, ut quam rectissime agatur, omni mea cura, opera, diligentia, gratia providebo.

## 23. AD QUINTUM FRATREM II. 3.

SCR. ROMAE PRID. ID. FEBR. ET XV. KAL. MART. A.U.C. 698.

MARCUS QUINTO FRATRI SALUTEM.

1. SCRIPSI ad te antea superiora; nunc cognosce, postea quae sint acta: a Kal. Febr. legationes in Idus Febr. reiiciebantur; eo die res confecta non est. a. d. III. Non. Febr. Milo adfuit; ei Pompeius advocatus venit;

dixit Marcellus, a me rogatus; honeste discessimus. Prodicta dies est in VII. Idus Febr. Interim reiectis legationibus in Idus referebatur de provinciis quaestorum et de ornandis praetoribus; sed res multis querelis de re publica interponendis nulla transacta est. C. Cato legem promulgavit de imperio Lentuli abrogando: vestitum filius mutavit. 2. A. d. VII. Id. Febr. Milo adfuit; dixit Pompeius, sive voluit: nam, ut surrexit, operae Clodianae clamorem sustulerunt, idque ei perpetua oratione contigit, non modo ut adclamatione, sed ut convitio et maledictis impediretur. Qui ut peroravit—nam in eo sane fortis fuit, non est deterritus, dixit omnia atque interdum etiam silentio, cum auctoritate † peregerat—, sed ut peroravit, surrexit Clodius: ei tantus clamor a nostris—placuerat enim referre gratiam—, ut neque mente nec lingua neque ore consisteret. Ea res acta est, cum hora sexta vix Pompeius perorasset, usque ad horam VIII., cum omnia maledicta, versus denique obscenissimi in Clodium et Clodiam dicerentur. Ille furens et exsanguis interrogabat suos in clamore ipso, quis esset, qui plebem fame necaret. Respondebant operae: 'Pompeius.' Quis Alexandriam ire cuperet. Respondebant: 'Pompeius.' Quem ire vellent. Respondebant: 'Crassum.' Is aderat tum, Miloni animo non amico. Hora fere nona quasi signo dato Clodiani nostros conputare coeperunt: exarsit dolor. Urgere illi, ut loco nos moverent; factus est a nostris impetus; fuga operarum; eiectus de rostris Clodius; ac nos quoque tum fugimus, ne quid in turba. Senatus vocatus in curiam; Pompeius domum: neque ego tamen in senatum, ne aut de tantis rebus tacerem aut in Pompeio defendendo—nam is carpebatur a Bibulo, Curione, Favonio, Servilio filio—animos bonorum viro-

"we acquitted ourselves well"
"the trial was adjourned"

= de prov. praetoriis ornandis.

"or rather wished to speak"
throughout his whole speech. Cf. Aen. perpetua prosecuta

quae voluit
"had finished" Original was perhaps "summa semper ageret."
"pay him out"
"he was master neither of his senses, his voice, nor his countenance" "that scene lasted"
Epigrams of Catullus

Clodius prosecuted Milo before "Comitia tributa"

"burst all bounds."

sc. "pateremur".

"was brow-beaten"

Feb. 14.

"P. took the matter seriously"
Either emend to VII or insert ad before a.d.
C has dropped out."

my ill wishers

hinted at

The pf. gives Pompey's idea, not Cicero's which would have required "interemit."

are ~~having~~ maintained

antagonists

Bost inserts "a" with a comma at "illo".

so reckless

in that affair i.e. Milo's trial.
M has "in ea" = "for the Quirinalia".
Sed M.

of the Pupinian tribe

rum offenderem. Res in posterum dilata est; Clodius in Quirinalia prodixit diem. 3. A. d. VI. Id. Febr. senatus ad Apollinis fuit, ut Pompeius adesset. Acta res est graviter a Pompeio. Eo die nihil perfectum est. A. d. V. Id. Febr. ad Apollinis senatus consultum factum est, ea, quae facta essent a. d. VI. Id. Febr., contra rem publicam esse facta. Eo die Cato vehementer est in Pompeium invectus et eum oratione perpetua tamquam reum accusavit; de me multa me invito cum mea summa laude dixit: cum illius in me perfidiam increparet, auditus est magno silentio malevolorum. Respondit ei vehementer Pompeius Crassumque descripsit, dixitque aperte se munitiorem ad custodiendam vitam suam fore, quam Africanus fuisset, quem C. Carbo interemisset. 4. Itaque magnae mihi res iam moveri videbantur: nam Pompeius haec intellegit nobiscumque communicat, insidias vitae suae fieri, C. Catonem a Crasso sustentari, Clodio pecuniam suppeditari, utrumque et ab eo et a Curione, Bibulo ceterisque suis obtrectatoribus confirmari, vehementer esse providendum ne opprimatur contionario illo populo a se prope alienato, nobilitate inimica, non aequo senatu, iuventute improba. Itaque se comparat, homines ex agris arcessit; operas autem suas Clodius confirmat: manus ad Quirinalia paratur; in eo multo sumus superiores ipsius copiis; et magna manus ex Piceno et Gallia exspectatur, ut etiam Catonis rogationibus de Milone et Lentulo resistamus. 5. A. d. III. Idus Febr. Sestius ab indice Cn. Nerio Pupinia ambitus est postulatus et eodem die a quodam M. Tullio de vi. Is erat aeger: domum ut debuimus, ad eum statim venimus eique nos totos tradidimus, idque fecimus praeter hominum opinionem, qui nos ei iure succensere putabant, ut humanissimi

gratissimique et ipsi et omnibus videremur, itaque faciemus. Sed idem Nerius index edidit ad adligatos Cn. Lentulum Vatiam et C. Cornelium: † ista ei. Eodem die senatus consultum factum est, ut sodalitates decuriatique discederent, lexque de iis ferretur, ut, qui non discessissent, ea poena, quae est de vi, tenerentur. 6. A. d. III. Idus Febr. dixi pro Bestia de ambitu apud praetorem Cn. Domitium in foro medio, maximo conventu, incidique in eum locum in dicendo, cum Sestius multis in templo Castoris volneribus acceptis subsidio Bestiae servatus esset. Hic προφκονομησάμην quiddam εὐκαίρως de iis, quae in Sestium adparabantur crimina, et eum ornavi veris laudibus, magno adsensu omnium. Res homini fuit vehementer grata: quae tibi eo scribo, quod me de retinenda Sestii gratia litteris saepe monuisti.

7. Pridie Idus Febr. haec scripsi ante lucem; eo die apud Pomponium in eius nuptiis eram cenaturus. Cetera sunt in rebus nostris huius modi, *ut* tu mihi fere diffidenti praedicabas, plena dignitatis et gratiae; quae quidem tua, mi frater, patientia, virtute, pietate, suavitate etiam, tibi mihique sunt restituta. Domus tibi ad lucum Pisonis Luciniana conducta est; sed, ut spero, paucis mensibus post K. Quintiles in tuam commigrabis. Tuam in Carinis mundi habitatores Lamiae conduxerunt. A te post illam Olbiensem epistolam nullas litteras accepi. Quid agas et ut te oblectes, scire cupio maximeque te ipsum videre quam primum. Cura, mi frater, ut valeas et, quamquam est hiems, tamen Sardiniam istam esse cogites. XV. K. Martias.

"reported in addition to the others implicated."
But M has "allegatos" "before the commissioners"
Wes. edidit allegatos = reported as implicated.
For ista ei Orelli has "itaque rei facti sunt."
Wes. "H L. Bestiam".
"clubs & agents"

"took time by the fore-lock"

Atticus moving Pilia
"when I had almost lost heart"
No "ut" in M. mss. cujus modi tu....
text
as "lucum" is named after gods not men Boot would
read "lacum" Cf. lacum Servilium (Rosc. Am. 89)
For Lucmana of M read Luciniani
Liciniana mss.
respectable tenants
M has Caminae
M ribiensem

"what was most fortunate for political reasons" i.e. the Senate could still control the law courts.

division of opinion

his occasional fits of ill-humour

to my complete satisfaction

would satisfy the wishes of Paulus
"lector & bully as he is"

left the court

i.e. solvendum. used of payment through a bank.
"we shall be under one roof"
"to-day & to-morrow are still considered holidays, but the Latin festival ended yesterday"

## 24. AD QUINTUM FRATREM II. 4.

Scr. Romae mense Martio a.u.c. 698.

MARCUS QUINTO FRATRI SALUTEM.

1. Sestius noster absolutus est a. d. v. Idus Martias, et, quod vehementer interfuit rei publicae, nullam videri in eius modi causa dissensionem esse, omnibus sententiis absolutus est. Illud, quod tibi curae saepe esse intellexeram, ne cui iniquo relinqueremus vituperandi locum, qui nos ingratos esse diceret, nisi illius perversitatem quibusdam in rebus quam humanissime ferremus, scito hoc nos in eo iudicio consecutos esse, ut omnium gratissimi iudicaremur; nam defendendo moroso homini cumulatissime satis fecimus, et, id quod ille maxime cupiebat, Vatinium, a quo palam oppugnabatur, arbitratu nostro concidimus dis hominibusque plaudentibus. Quin etiam Paulus noster cum testis productus esset in Sestium, confirmavit se nomen Vatinii delaturum, si Macer Licinius cunctaretur, et Macer ab Sestii subselliis surrexit ac se illi non defuturum adfirmavit. Quid quaeris? homo petulans et audax [Vatinius] valde perturbatus debilitatusque discessit. 2. Quintus tuus, puer optimus, eruditur egregie: hoc nunc magis animum adverto, quod Tyrannio docet apud me. Domus utriusque nostrum aedificatur strenue. Redemptori tuo dimidium pecuniae curavi. Spero nos ante hiemem contubernales fore. De nostra Tullia, tui mehercule amantissima, spero cum Crassipede nos confecisse. Dies erant duo, qui post Latinas habentur religiosi; ceterum confectum Latiar erat.

## 25. AD ATTICUM IV. 5.

SCR. IN ANTIATI V. IDUS APRILES A.U.C. 698.

CICERO ATTICO SAL.

1. AIN tu? an me existimas ab ullo malle mea legi probarique quam a te? Cur igitur cuiquam misi prius? Urgebar ab eo, ad quem misi, et non habebam exemplar. Quid? etiam-dudum enim circumrodo, quod devorandum est — subturpicula mihi videbatur esse παλινῳδία. Sed valeant recta, vera, honesta consilia: non est credibile, quae sit perfidia in istis principibus, ut volunt esse et ut essent, si quicquam haberent fidei. Senseram, noram inductus, relictus, proiectus ab iis; tamen hoc eram animo, ut cum iis in re publica consentirem: iidem erant, qui fuerant. Vix aliquando te auctore resipui. 2. Dices ea tenus te suasisse, qua facerem, non etiam ut scriberem. Ego mehercule mihi necessitatem volui imponere huius novae coniunctionis, ne qua mihi liceret labi ad illos, qui etiam tum, cum misereri mei debent, non desinunt invidere. Sed tamen modici fuimus ὑποθέσει, ut scripsi: erimus uberiores, si et ille libenter accipiet et ii subringentur, qui villam me moleste ferunt habere, quae Catuli fuerat, a Vettio me emisse non cogitant; qui domum negant oportuisse me aedificare, vendere aiunt oportuisse. Sed quid ad hoc, si, quibus sententiis dixi quod et ipsi probarent, laetati sunt tamen me contra Pompeii voluntatem dixisse? Finis. Sed quoniam, qui nihil possunt, ii me nolunt amare, demus operam ut ab iis, qui possunt, diligamur. 3. Dices 'vellem iam pridem.' Scio te voluisse et me asinum germanum fuisse. Sed iam tempus est me ipsum a me

Seriously
Boot seems right in rejecting "an" before "me".
It would be inserted after "Ain tu"? by dittography.
es - Pompey. "Anything else? Yes
It was De Prov. Consul. This was written
before the Pro Balbo. It is an "amende honorable"
to Caesar. "But good-bye to"
"befooled, deserted, flung aside"

came to my senses
that your advice only had reference to my actions

treatment
fluent    pull a wry face.

"if they cantled as they did"
no more of them.

perfect ass

C. is running away with all my spare cash.

You say "you must come straight from the road to my suburban villa" I think it would be more convenient to go to your town-house; I can go to your hortis the next day; what is it to you?

"have beautified

"by rolling up the parchments & putting them in cases"

Y has constructione N has sit tybis.

graeco "sillybis" "with titles"

construction = putting tog. of sheets for rolling round the stick

regard

modest; implying a weak excuse.

different as our cases are

amari, quando ab illis nullo modo possum. Domum meam quod crebro invisis, est mihi valde gratum. Viaticum Crassipes praeripit. Tu de via recta in hortos. Videtur commodius ad te: postridie scilicet; quid enim tua? sed viderimus. Bibliothecam mihi tui pinxerunt constrictione et sittybis: eos velim laudes.

## 26. AD FAMILIARES I. 7.

SCR. ROMAE MENSE MAIO A.U.C. 698.

M. CICERO S. D. P. LENTULO PROCOS.

1. LEGI tuas litteras, quibus ad me scribis gratum tibi esse, quod crebro certior per me fias de omnibus rebus et meam erga te benevolentiam facile perspicias: quorum alterum mihi, ut te plurimum diligam, facere necesse est, si volo is esse, quem tu me esse voluisti; alterum facio libenter, ut, quoniam intervallo locorum et temporum diiuncti sumus, per litteras tecum quam saepissime colloquar. Quod si rarius fiet quam tu exspectabis, id erit causae, quod non eius generis meae litterae sunt, ut eas audeam temere committere: quotiens mihi certorum hominum potestas erit, quibus recte dem, non praetermittam. 2. Quod scire vis, qua quisque in te fide sit et voluntate, difficile dictu est de singulis: unum illud audeo, quod antea tibi saepe significavi, nunc quoque re perspecta et cognita scribere, vehementer quosdam homines et eos maxime, qui te et maxime debuerunt et plurimum iuvare potuerunt, invidisse dignitati tuae, simillimamque in re dissimili tui temporis nunc et nostri quondam fuisse rationem, ut, quos tu rei publicae causa laeseras, palam te oppugnarent, quorum auctoritatem, dignitatem voluntatemque defenderas, non tam memores essent virtutis tuae quam laudis inimici.

Quo quidem tempore, ut perscripsi ad te antea, cognovi Hortensium percupidum tui, studiosum Lucullum, ex magistratibus autem L. Racilium et fide et animo singulari. Nam nostra propugnatio ac defensio dignitatis tuae propter magnitudinem beneficii tui fortasse plerisque officii maiorem auctoritatem habere videatur quam sententiae. 3. Praeterea quidem de consularibus nemini possum aut studii erga te aut officii aut amici animi esse testis: etenim Pompeium, qui mecum saepissime non solum *a* me provocatus, sed etiam sua sponte de te communicare solet, scis temporibus illis non saepe in senatu fuisse; cui quidem litterae tuae, quas proxime miseras, quod facile intellexerim, periucundae fuerunt. Mihi quidem humanitas tua vel summa potius sapientia non iucunda solum, sed etiam admirabilis visa est: virum enim excellentem et tibi tua praestanti in eum liberalitate devinctum, non nihil suspicantem propter aliquorum opinionem suae cupiditatis te ab se abalienatum, illa epistola retinuisti; qui mihi cum semper tuae laudi favere visus est, etiam ipso suspitiosissimo tempore Caniniano, tum vero lectis tuis litteris perspectus est a me toto animo de te ac de tuis ornamentis et commodis cogitare. 4. Qua re ea, quae scribam, sic habeto, me cum illo re saepe communicata de illius ad te sententia atque auctoritate scribere: quoniam senatus consultum nullum exstat, quo reductio regis [Alexandrini] tibi adempta sit, eaque, quae de ea scripta est, auctoritas, cui scis intercessum esse, ut ne quis omnino regem reduceret, tantam vim habet, ut magis iratorum hominum studium quam constantis senatus consilium esse videatur, te perspicere posse, qui Ciliciam Cyprumque teneas, quid efficere, et quid consequi possis, et, si res facultatem

"to be rather instigated by a feeling of duty than of deliberate approval."

With these exceptions

pressed by me.

as I can easily understand

courtesy

i.e. in the matter of the corn supply.

"even in the Cav. episode when his feelings towards you might well have been misconstrued."

honour & interest.

with his full consent & authority

resolution

parting expression

only so much

deliberate judgement

Assessment of your powers & your chances of success

at Ptolemais

In 54.

"Our approval of this view did not prevent us seeing"
our oracular friends
if the issue were such as we wish - hoping for

certain

if you have been successful in your scheme
on account of the resolution that has been passed
I must as emphatically warn you against any
dangerous struggle.

time offering
it was our opinion
had given sufficient security
in the province under your government
intentions

habitura videatur, ut Alexandriam atque Aegyptum tenere possis, esse et tuae et nostri imperii dignitatis, Ptolemaide aut aliquo propinquo loco rege conlocato te cum classe atque exercitu proficisci Alexandriam, ut, eam cum pace praesidiisque firmaris, Ptolemaeus redeat in regnum; ita fore, ut et per te restituatur, quem ad modum senatus initio censuit, et sine multitudine reducatur, quem ad modum homines religiosi Sibyllae placere dixerunt. 5. Sed haec sententia sic et illi et nobis probabatur, ut ex eventu homines de tuo consilio existimaturos videremus: si cecidisset, ut volumus et optamus, omnes te et sapienter et fortiter, si aliquid esset offensum, eosdem illos et cupide et temere fecisse dicturos. Qua re quid adsequi possis, non tam facile est nobis quam tibi, cuius prope in conspectu Aegyptus est, iudicare. Nos quidem hoc sentimus, si exploratum tibi sit posse te illius regni potiri, non esse cunctandum; si dubium sit, non esse conandum. Illud tibi adfirmo, si rem istam ex sententia gesseris, fore ut absens a multis, cum redieris ab omnibus, conlaudere. Offensionem esse periculosam propter interpositam auctoritatem religionemque video; sed ego te, ut ad certam laudem adhortor, sic a dimicatione deterreo redeoque ad illud, quod initio scripsi, totius facti tui iudicium non tam ex consilio tuo quam ex eventu homines esse facturos. 6. Quod si haec ratio rei gerendae periculosa tibi esse videbitur, placebat illud, ut, si rex amicis tuis, qui per provinciam atque imperium tuum pecunias ei credidissent, fidem suam praestitisset, et auxiliis eum tuis et copiis adiuvares; eam esse naturam et regionem provinciae tuae, ut illius reditum vel adiuvando confirmares vel neglegendo impedires. In hac ratione quid res, quid causa, quid tempus ferat, tu facillime

optimeque perspicies; quid nobis placuisset, ex me potissimum putavi te scire oportere. 7. Quod mihi de nostro statu, de Milonis familiaritate, de levitate et imbecillitate Clodii gratularis, minime miramur te tuis ut egregium artificem praeclaris operibus laetari: quamquam est incredibilis hominum perversitas—graviore enim verbo uti non libet—, qui nos, quos favendo in communi causa retinere potuerunt, invidendo abalienarunt; quorum malevolentissimis obtrectationibus nos scito de vetere illa nostra diuturnaque sententia prope iam esse depulsos, non nos quidem ut nostrae dignitatis simus obliti, sed ut habeamus rationem aliquando etiam salutis. Poterat utrumque praeclare, si esset fides, si gravitas in hominibus consularibus; sed tanta est in plerisque levitas, ut eos non tam constantia in re publica nostra delectet, quam splendor offendat. 8. Quod eo liberius ad te scribo, quia non solum temporibus his, quae per te sum adeptus, sed iam olim nascenti prope nostrae laudi dignitatique favisti, simulque quod video, non, ut antehac putabam, novitati esse invisum meae; in te enim, homine omnium nobilissimo, similia invidorum vitia perspexi, quem tamen illi esse in principibus facile sunt passi, evolare altius certe noluerunt. Gaudeo tuam dissimilem fuisse fortunam; multum enim interest, utrum laus imminuatur an salus deseratur. Me meae tamen ne nimis paeniteret, tua virtute perfectum est; curasti enim, ut plus additum ad memoriam nominis nostri quam demptum de fortuna videretur. 9. Te vero emoneo cum beneficiis tuis, tum amore incitatus meo, ut omnem gloriam, ad quam a puritia inflammatus fuisti, omni cura atque industria consequare magnitudinemque animi tui, quam ego semper sum admiratus semperque amavi, ne umquam inflectas

"the paltry, feeble conduct"

"you must feel the delight of an artist in his master-piece."

principles

self-respect

"both objects might have been secured very well"

prestige

"that it was not my want of nobility which excited dislike"

"the same malignity of detractors at work"

"your soaring above them"

renounce

men loudly praise your liberality
more marked
from your exercise of military command
here - your prefects at Rome
"you now perceive from your success to be true"
maintain
by the incidents of your career & mine
the energy displayed on each side is very diff.

cuiusquam iniuria. Magna est hominum opinio de te, magna commendatio liberalitatis, magna memoria consulatus tui: haec profecto vides quanto expressiora quantoque illustriora futura sint, cum aliquantum ex provincia atque ex imperio laudis accesserit. Quamquam te ita gerere volo quae per exercitum atque imperium gerenda sunt, ut haec multo ante meditere, huc te pares, haec cogites, ad haec te exerceas sentiasque—id quod quia semper sperasti, non dubito quin adeptus intellegas —te facillime posse obtinere summum atque altissimum gradum civitatis. Quae quidem mea cohortatio ne tibi inanis aut sine causa suscepta videatur, illa me ratio movit, ut te ex nostris eventis communibus admonendum putarem, ut considerares, in omni reliqua vita quibus crederes, quos caveres. 10. Quod scribis te velle scire, qui sit rei publicae status, summa dissensio est, sed contentio dispar; nam qui plus opibus, armis, potentia valent, profecisse tantum mihi videntur stultitia et inconstantia adversariorum, ut etiam auctoritate iam plus valerent. Itaque perpaucis adversantibus omnia, quae ne per populum quidem sine seditione se adsequi arbitrabantur, per senatum consecuti sunt; nam et stipendium Caesari decretum est et decem legati, et ne lege Sempronia succederetur facile perfectum est. Quod eo ad te brevius scribo, quia me status hic rei publicae non delectat: scribo tamen, ut te admoneam, quod ipse, litteris omnibus a pueritia deditus, experiendo tamen magis quam discendo cognovi, tu *ut* tuis rebus integris discas neque salutis nostrae rationem habendam nobis esse sine dignitate neque dignitatis sine salute. 11. Quod mihi de filia et de Crassipede gratularis, agnosco humanitatem tuam speroque et opto nobis hanc coniunctionem voluptati fore.

Lentulum nostrum eximia spe summae virtutis adulescentem cum ceteris artibus, quibus studuisti semper ipse, tum in primis imitatione tui fac erudias; nulla enim erit hac praestantior disciplina: quem nos, et quia tuus et quia te dignus est filius et quia nos diligit semperque dilexit, in primis amamus carumque habemus.

## 27. AD FAMILIARES VII. 5.

SCR. ROMAE MENSE MARTIO A.U.C. 700.

CICERO CAESARI IMP. S. D.

1. VIDE, quam mihi persuaserim te me esse alterum non modo in iis rebus, quae ad me ipsum, sed etiam in iis, quae ad meos pertinent: C. Trebatium cogitaram, quocumque exirem, mecum ducere, ut eum meis omnibus studiis, beneficiis quam ornatissimum domum reducerem. Sed postea quam et Pompeii commoratio diuturnior erat, quam putaram, et mea quaedam tibi non ignota dubitatio aut impedire profectionem meam videbatur aut certe tardare, vide, quid mihi sumpserim: coepi velle ea Trebatium exspectare a te, quae sperasset a me, neque mehercule minus ei prolixe de tua voluntate promisi, quam eram solitus de mea polliceri. 2. Casus vero mirificus quidam intervenit quasi vel testis opinionis meae vel sponsor humanitatis tuae: nam cum de hoc ipso Trebatio cum Balbo nostro loquerer accuratius domi meae, litterae mihi dantur a te, quibus in extremis scriptum erat: 'M. † itfiuium, quem mihi commendas, vel regem Galliae faciam, vel hunc † Leptae delega, si vis: tu ad me alium mitte, quem ornem.' Sustulimus manus et ego et Balbus: tanta fuit opportunitas, ut illud nescio quid non fortuitum, sed divinum videretur. Mitto igitur ad te Trebatium atque ita mitto, ut initio mea sponte, post autem invitatu tuo

"accomplishments which have ever been your taste."

54 B.C.

Cic. was legatus Pompey.

the liberty I have taken

in less ample terms

coincidence

to give witness /

go bail for

the fin. agent of Caesar at Rome

Council in 60 B.C. (first of provincial extraction)

Lepta was afterwards "praefectus fabrum" to Cic.

the best guess is "Thes-cinium Rufum", a quaestor of Cic. in Cilicia.

hackneyed phrase (prob. "fungi"

in the language of men of the world
he is at the top of the tree

any specific favors

these little marks of distinction
"Let me be something of a bore which your kindness ought to prevent but which I see tolerate"
Quamquam is a convincing emend. of Ernesti.
"Although thanks to your kindness this is scarcely possible yet I see I shall [illegible] it."

has realized

R Bosius for "fractor" of M.

mittendum duxerim. 3. Hunc, mi Caesar, sic velim omni tua comitate complectare, ut omnia, quae per me possis adduci ut in meos conferre velis, in unum hunc conferas; de quo tibi homine haec spondeo, non illo vetere verbo meo, quod, cum ad te de Milone scripsissem, iure lusisti, sed more Romano, quo modo homines non inepti loquuntur, probiorem hominem, meliorem virum, pudentiorem esse neminem; accedit etiam, quod familiam ducit in iure civili singulari memoria, summa scientia. Huic ego neque tribunatum neque praefecturam neque ullius beneficii certum nomen peto; benevolentiam tuam et liberalitatem peto, neque impedio, quo minus, si tibi ita placuerit, etiam hisce eum ornes gloriolae insignibus; totum denique hominem tibi ita trado, de manu, ut aiunt, in manum tuam istam et victoria et fide praestantem. Simus enim putidiusculi, quam per te vix licet; verum, ut video, licebit. Cura, ut valeas, et me, ut amas, ama.

## 28. AD ATTICUM IV. 15.

SCR. ROMAE IV. KAL. SEXTILES A.U.C. 700.

CICERO ATTICO SAL.

1. DE Eutychide gratum, qui vetere praenomine, novo nomine T. erit Caecilius, ut est ex me et ex te iunctus Dionysius M. Pomponius. Valde mehercule mihi gratum est Eutychidem tua erga me benevolentia cognosse suam illam in meo dolore συμπάθειαν neque tum mihi obscuram neque post ingratam fuisse. 2. Iter Asiaticum tuum puto tibi suscipiendum fuisse; numquam enim tu sine iustissima causa tam longe a tot tuis et hominibus et rebus carissimis et suavissimis abesse voluisses. Sed humanitatem tuam amoremque in tuos reditus celeritas declarabit; sed vereor ne lepore suo *te* detineat diutius rhetor Clodius

et homo pereruditus, ut aiunt, et nunc quidem deditus Graecis litteris Pituanius. Sed, si vis homo esse, recipe te ad nos, ad quod tempus confirmasti; cum illis tamen, cum salvi venerint, Romae vivere licebit. 3. Avere te scribis accipere aliquid a me litterarum: dedi, ac multis quidem de rebus, ἡμερολεγδὸν perscripta omnia; sed, [ut coniicio,] quoniam mihi non videris in Epiro diu fuisse, redditas tibi non arbitror. Genus autem mearum ad te quidem litterarum eius modi fere est, ut non libeat cuiquam dare, nisi de quo exploratum sit tibi eum redditurum. 4. Nunc Romanas res accipe: a. d. III. Nonas Quinctiles Sufenas et Cato absoluti, Procilius condemnatus; ex quo intellectum est τρισαρειοπαγίτας ambitum, comitia, interregnum, maiestatem, totam denique rem publicam flocci non facere. [Debemus] patrem familias domi suae occidere nolle, neque tamen id ipsum abunde; nam absolverunt XXII., condemnarunt XXVIII. Publius sane diserto epilogo criminans mentes iudicum commoverat. Hortalus in ea causa fuit, cuius modi solet. Nos verbum nullum. Verita est enim pusilla, quae nunc laborat, ne animum Publii offenderem. 5. His rebus actis Reatini me ad sua Τέμπη duxerunt, ut agerem causam contra Interamnates apud consulem et decem legatos, quod lacus Velinus, a M'. Curio emissus, interciso monte, in Nar defluit; ex quo est illa siccata et humida tamen modice Rosia. Vixi cum Axio, qui etiam me ad Septem aquas duxit. 6. Redii Romam Fonteii causa a. d. VII. Idus Quinct. Veni in spectaculum, primum magno et aequabili plausu—sed hoc ne curaris; ego ineptus, qui scripserim—; deinde Antiphonti operam: is erat ante manumissus quam productus. Ne diutius pendeas, palmam tulit; sed nihil tam pusillum, nihil tam sine voce,

(1) a real student or (2) a money-lender poring over greek bills.

"a man of your word"

Aulius & Pit. "after their safe arrival"

de jour en jour.

redderse usually used of giving a thing to the proper person or place

Prose. on a charge of parricide. the others for bribery

"big-wigs" Text. 54-56.

Debemus is rightly bracketed by Lbes. The scribe did not see that it depended on "Intellectum est." He also changes occidere to occidi.

peroration

"happy valley"

"unbroken"

"brought on the stage"

only the same size as himself
the "cuplosa A." of Horace.

" bribery is very rife & more by them"
"the price of money rose from 4 to 8 o/o" 2 Q 23. 326.
consul in 53.

on the surface & in earnest neutralises "a lead" claims

be delayed
£4000

had secured him an appointment on Caesar's staff
Cons. 54
issued the summons against him praetor this year
but I am doing good work
will perhaps be added to the number of my clients

nihil tam . . . verum haec tu tecum habeto. In Andromacha tamen maior fuit quam Astyanax, in ceteris parem habuit neminem. Quaeris nunc de Arbuscula: valde placuit. Ludi magnifici et grati. 7. Venatio in aliud tempus dilata. Sequere nunc me in campum: ardet ambitus; σῆμα δέ τοι ἐρέω. Faenus ex triente Idibus Quinctilibus factum erat bessibus. Dices 'istuc quidem non moleste fero.' O virum! O civem! Memmium Caesaris omnes opes confirmant; cum eo Domitium consules iunxerunt, qua pactione, epistolae committere non audeo. Pompeius fremit, queritur, Scauro studet; sed utrum fronte an mente, dubitatur. Ἐξοχὴ in nullo est; pecunia omnium dignitatem exaequat. Messalla languet, non quo aut animus desit aut amici, sed coitio consulum *et* Pompeius obsunt. Ea comitia puto fore ut ducantur. Tribunicii candidati iurarunt se arbitrio Catonis petituros: apud eum HS. quingena deposuerunt ut, qui a Catone damnatus esset, id perderet et competitoribus tribueretur. 8. Haec ego pridie scribebam, quam comitia fore putabantur; sed ad te, quinto Kal. Sextil. si facta erunt et tabellarius non erit profectus, tota comitia perscribam, quae si, ut putantur, gratuita fuerint, plus unus Cato potuerit quam *omnes leges* omnesque iudices. 9. Messius defendebatur a nobis de legatione revocatus; nam eum Caesari legarat Appius. Servilius edixit ut adesset. Tribus habet Pomptinam, Velinam, Maeciam. Pugnatur acriter; agitur tamen satis. Deinde me expedio ad Drusum, inde ad Scaurum: parantur orationibus indices gloriosi. Fortasse accedent etiam consules designati, in quibus si Scaurus non fuerit, in hoc iudicio valde laborabit. 10. Ex Q. fratris litteris suspicor iam eum esse in Britannia: suspenso animo

exspecto, quid agat. Illud quidem sumus adepti, quod multis et magnis iudiciis possumus iudicare nos Caesari et carissimos et iucundissimos esse. Dionysium velim salvere iubeas et eum roges et hortere, ut quam primum veniat, ut possit Ciceronem meum atque etiam me ipsum erudire.

## 29. AD FAMILIARES I. 9.

SCR. ROMAE MENSE OCTOBRI EXEUNTE A.U.C. 700.

M. CICERO S. D. P. LENTULO IMP.

1. PERIUCUNDAE mihi fuerunt litterae tuae, quibus intellexi te perspicere meam in te pietatem: quid enim dicam benevolentiam, cum illud ipsum gravissimum et sanctissimum nomen pietatis levius mihi meritis erga me tuis esse videatur? Quod autem tibi grata mea erga te studia scribis esse, facis tu quidem abundantia quadam amoris, ut etiam grata sint ea, quae praetermitti sine nefario scelere non possunt; tibi autem multo notior atque illustrior meus in te animus esset, si hoc tempore omni, quo diiuncti fuimus, et una et Romae fuissemus. 2. Nam in eo ipso, quod te ostendis esse facturum quodque et in primis potes et ego a te vehementer exspecto, in sententiis senatoriis et in omni actione atque administratione rei publicae floruissemus: de qua ostendam equidem paulo post, qui sit meus sensus et status, et rescribam tibi ad ea, quae quaeris; sed certe et ego te auctore amicissimo ac sapientissimo et tu me consiliario fortasse non imperitissimo, fideli quidem et benevolo certe, usus esses: — quamquam tua quidem causa te esse imperatorem provinciamque bene gestis rebus cum exercitu victore obtinere, ut debeo, laetor: — sed certe qui tibi ex me fructus debentur, eos uberiores et praesentiores praesens capere potuisses. In eis vero

highest
seems too feeble to express your claims upon me

more evident
merely 3 years (from 54)

in political action & administration

ancestor: a guide in the course of action he advises
counterfeiting merely suggests

more substantial

the magnificence & brilliancy of that episode

has avenged our wrongs on himself & saved us trouble
Tyrrell thinks Pompey is meant who by his duplicity in the Egyptian question had forfeited a bold demeanour in politics (libertatem)

to go somewhat deeper into the motives of my policy

of your exertions in my cause
Tyrrell would insert "eventis" after "initio" as otherwise there would be a contra-diction.

loyalty

on the score of gratitude

[redacted] a return for any special favour rendered
All MSS. have "aliquo". this is right.
Cic. says he owes to the state by reason of intercourse
its own deserts the same feeling which he displayed before as being due "by reason of the common duty of all citizens & not by reason of any signal favour to myself".

ulciscendis, quos tibi partim inimicos esse intellegis propter tuam propugnationem salutis meae, partim invidere propter illius actionis amplitudinem et gloriam, mirificum me tibi comitem praebuissem: quamquam ille perennis inimicus amicorum suorum, qui tuis maximis beneficiis ornatus in te potissimum fractam illam et debilitatam vim suam contulit, nostram vicem ultus est ipse sese; ea est enim conatus, quibus patefactis nullam sibi in posterum non modo dignitatis sed ne libertatis quidem partem reliquit. 3. Te autem etsi mallem in meis rebus expertum quam etiam in tuis, tamen in molestia gaudeo eam fidem cognosse hominum non ita magna mercede, quam ego maximo dolore cognoram; de qua ratione tota iam videtur mihi exponendi tempus dari, ut tibi rescribam ad ea, quae quaeris. 4. Certiorem te per litteras scribis esse factum me cum Caesare et cum Appio esse in gratia, teque id non reprehendere adscribis; Vatinium autem scire te velle ostendis quibus rebus adductus defenderim et laudarim. Quod tibi ut planius exponam, altius paulo rationem consiliorum meorum repetam necesse est. Ego me, Lentule, initio rerum atque actionum tuarum non solum meis sed etiam rei publicae restitutum putabam et, quoniam tibi incredibilem quendam amorem et omnia in te ipsum summa ac singularia studia deberem, rei publicae, quae te in me restituendo multum adiuvisset, eum certe me animum merito ipsius debere arbitrabar, quem antea tantum modo communi officio civium, non alicui erga me singulari beneficio debitum praestitissem. Hac me mente fuisse et senatus ex me te consule audivit et tu in nostris sermonibus collocutionibusque ipse vidisti. 5. Etsi iam primis temporibus illis multis rebus meus offendebatur animus, cum te agente de reliqua nostra

dignitate aut occulta non nullorum odia aut obscura in me studia cernebam; nam neque de monumentis meis ab iis adiutus es, a quibus debuisti, neque de vi nefaria, qua cum fratre eram domo expulsus; neque hercule in iis ipsis rebus, quae quamquam erant mihi propter rei familiaris naufragia necessariae, tamen a me minimi putabantur, in meis damnis ex auctoritate senatus sarciendis eam voluntatem, quam exspectaram, praestiterunt. Quae cum viderem—neque erant obscura—, non tamen tam acerba mihi haec accidebant, quam erant illa grata, quae fecerant. 6. Itaque quamquam et Pompeio plurimum, te quidem ipso praedicatore ac teste, debebam et eum non solum beneficio, sed amore etiam et perpetuo quodam iudicio meo diligebam, tamen non reputans, quid ille vellet, in omnibus meis sententiis de re publica pristinis permanebam. 7. Ego sedente Cn. Pompeio cum ut laudaret P. Sestium introisset in urbem, dixissetque testis Vatinius me fortuna et felicitate C. Caesaris commotum illi amicum esse coepisse, dixi me eam Bibuli fortunam, quam ille adflictam putaret, omnium triumphis victoriisque anteferre; dixique eodem teste alio loco, eosdem esse, qui Bibulum exire domo prohibuissent et qui me coëgissent: tota vero interrogatio mea nihil habuit nisi reprehensionem illius tribunatus; in qua omnia dicta sunt libertate animoque maximo de vi, de auspiciis, de donatione regnorum. 8. Neque vero hac in causa modo, sed constanter saepe in senatu: quin etiam Marcellino et Philippo consulibus Nonis Aprilibus mihi est senatus adsensus, ut de agro Campano frequenti senatu Idibus Maiis referretur. Num potui magis in arcem illius causae invadere aut magis oblivisci temporum meorum, meminisse actionum? hac a me sententia dicta magnus animo-

"doubtful zeal for my cause"
attack by Cordius Nov. 3. 54.

"as you yourself declared & testified"
"not only for past kindnesses, but on the grounds of personal affection & to a certain extent and unwarrantably esteem"

in his hearings

Cat. Tusc. 59.
"his illegal proceedings, his manipulations of the auspices, his corrupt disposal of kingdoms".

my troubles
my past career personal

erum = Trimmons

vident outhust
Mdrum = Optimates

entreat earnestly

had pledged on my behalf is = quintus

"free action" cf. honestum, beatum.

having suffered & done so much in her cause
"to do my duty, show my gratitude & redeem my brother's pledge for me"

a man of honour

speeches

ramuls

rum motus est factus cum eorum, quorum oportuit, tum illorum etiam, quorum numquam putaram. 9. Nam hoc senatus consulto in meam sententiam facto Pompeius, cum mihi nihil ostendisset se esse offensum, in Sardiniam et in Africam profectus est eoque itinere Lucam ad Caesarem venit. Ibi multa de mea sententia questus est Caesar, quippe qui etiam Ravennae Crassum ante vidisset ab eoque in me esset incensus. Sane moleste Pompeium id ferre constabat; quod ego, cum audissem ex aliis, maxime ex meo fratre cognovi. Quem cum in Sardinia Pompeius paucis post diebus, quam Luca discesserat, convenisset, 'te' inquit 'ipsum cupio; nihil opportunius potuit accidere: nisi cum Marco fratre diligenter egeris, dependendum tibi est, quod mihi pro illo spopondisti.' Quid multa? questus est graviter; sua merita commemoravit; quid egisset saepissime de actis Caesaris cum ipso meo fratre quidque sibi is de me recepisset, in memoriam redegit seque, quae de mea salute egisset, voluntate Caesaris egisse ipsum meum fratrem testatus est; cuius causam dignitatemque mihi ut commendaret, rogavit ut eam ne oppugnarem, si nollem aut non possem tueri. 10. Haec cum ad me frater pertulisset et cum tamen Pompeius ad me cum mandatis Vibullium misisset, ut integrum mihi de causa Campana ad suum reditum reservarem, collegi ipse me et cum ipsa quasi re publica collocutus sum, ut mihi tam multa pro se perpesso atque perfuncto concederet, ut officium meum memoremque in bene meritos animum fidemque fratris mei praestarem, eumque, quem bonum civem semper habuisset, bonum virum esse pateretur. In illis autem meis actionibus sententiisque omnibus, quae Pompeium videbantur offendere, certorum hominum, quos iam debes suspicari, sermones

referebantur ad me; qui cum illa sentirent in re publica, quae ego agebam, semperque sensissent, me tamen non satis facere Pompeio Caesaremque inimicissimum mihi futurum gaudere se aiebant. Erat hoc mihi dolendum, sed multo illud magis, quod inimicum meum—meum autem? immo vero legum, iudiciorum, otii, patriae, bonorum omnium—sic amplexabantur, sic in manibus habebant, sic fovebant, sic me praesente osculabantur, non illi quidem ut mihi stomachum facerent quem ego funditus perdidi, sed certe ut facere se arbitrarentur. Hic ego, quantum humano consilio efficere potui, circumspectis rebus meis omnibus rationibusque subductis summam feci cogitationum mearum omnium, quam tibi, si potero, breviter exponam. 11. Ego, si ab improbis et perditis civibus rem publicam teneri viderem, sicut et meis temporibus scimus et non nullis aliis accidisse, non modo praemiis, quae apud me minimum valent, sed ne periculis quidem compulsus ullis, quibus tamen moventur etiam fortissimi viri, ad eorum causam me adiungerem, ne si summa quidem eorum in me merita constarent. Cum autem in re publica Cn. Pompeius princeps esset, vir is, qui hanc potentiam et gloriam maximis in rem publicam meritis praestantissimisque rebus gestis esset consecutus cuiusque ego dignitatis ab adulescentia fautor, in praetura autem et in consulatu adiutor etiam exstitissem, cumque idem auctoritate et sententia per se, consiliis et studiis tecum, me adiuvisset meumque inimicum unum in civitate haberet inimicum, non putavi famam inconstantiae mihi pertimescendam, si quibusdam in sententiis paulum me immutassem meamque voluntatem ad summi viri de me que optime meriti dignitatem adgregassem. 12. In hac sententia complectendus erat mihi Caesar, ut vides, in coniuncta et causa

this was enough to annoy me
chodins

treated tenderly
fondled.

"I did all that human wisdom could do."
"after examining the items & casting up the accounts, I made up a balance sheet."

M has ~~ ~~ et.... meis. If "meis" meant within my
Harleian" Cimeis". memory "nonnullorum alicrum" must have followed.
"which I count but dross."
"though danger has power to move the boldest hearts"

brilliant exploits
"stood forth as his supporter"

"slightly changed my tone"
advancement
"I could not exclude Cicero"

MSS. have "in hac mente"
$M^2$ has in hanc mentem.
hanc mentem in MSS. is written hac mente

was all but unanimous.

as an effle of discord

et dignitate. Hic multum valuit cum vetus amicitia, quam tu non ignoras mihi et Quinto fratri cum Caesare fuisse, tum humanitas eius ac liberalitas brevi tempore et litteris et officiis perspecta nobis et cognita. Vehementer etiam res ipsa publica me movit, quae mihi videbatur contentionem, praesertim maximis rebus a Caesare gestis, cum illis viris nolle fieri et, ne fieret, vehementer recusare. Gravissime autem me in hanc mentem impulit et Pompeii fides, quam de me Caesari dederat, et fratris mei, quam Pompeio. Erant praeterea haec animadvertenda in civitate, quae sunt apud Platonem nostrum scripta divinitus, quales in re publica principes essent, tales reliquos solere esse cives. Tenebam memoria nobis consulibus ea fundamenta iacta iam ex Kalendis Ianuariis confirmandi senatus, ut neminem mirari oporteret Nonis Decembr. tantum vel animi fuisse in illo ordine vel auctoritatis; idemque memineram nobis privatis usque ad Caesarem et Bibulum consules, cum sententiae nostrae magnum in senatu pondus haberent, unum fere sensum fuisse bonorum omnium. 13. Postea, cum tu Hispaniam citeriorem cum imperio obtineres neque res publica consules haberet, sed mercatores provinciarum et seditionum servos ac ministros, iecit quidam casus caput meum quasi certaminis causa in mediam contentionem dissensionemque civilem; quo in discrimine cum mirifica senatus, incredibilis Italiae totius, singularis omnium bonorum consensio in me tuendo exstitisset, non dicam, quid acciderit— multorum est enim et varia culpa—, tantum dicam brevi, non mihi exercitum sed duces defuisse. In quo, ut iam sit in iis culpa, qui me non defenderunt, non minor est in iis, qui reliquerunt, et, si accusandi sunt, si qui pertimuerunt, magis etiam reprehendendi, si qui se timere simularunt:

illud quidem certe nostrum consilium iure laudandum est, qui meos cives et a me conservatos et me servare cupientes, spoliatos ducibus servis armatis obiici noluerim declararique maluerim, quanta vis esse potuisset in consensu bonorum, si iis pro me stante pugnare licuisset, cum adflictum excitare potuissent; quorum quidem animum tu non perspexisti solum, cum de me ageres, sed etiam confirmasti atque tenuisti. 14. Qua in causa— non modo non negabo, sed etiam semper et meminero et praedicabo libenter—usus es quibusdam nobilissimis hominibus fortioribus in me restituendo, quam fuerant idem in tenendo; qua in sententia si constare voluissent, suam auctoritatem simul cum salute mea recuperassent. Recreatis enim bonis viris consulatu tuo et constantissimis atque optimis actionibus tuis excitatis, Cn. Pompeio praesertim ad causam adiuncto, cum etiam Caesar rebus maximis gestis singularibus ornatus et novis honoribus ac iudiciis senatus ad auctoritatem eius ordinis adiungeretur, nulli improbo civi locus ad rem publicam violandam esse potuisset. 15. Sed attende, quaeso, quae sint consecuta: primum illa furia muliebrium religionum, qui non pluris fecerat Bonam deam quam tres sorores, impunitatem est illorum sententiis adsecutus, qui, cum tribunus pl. poenas a seditioso civi per bonos viros iudicio persequi vellet, exemplum praeclarissimum in posterum vindicandae seditionis de re publica sustulerunt; idemque postea non meum monumentum — non enim illae manubiae meae, sed operis locatio mea fuerat—, monumentum vero senatus hostili nomine et cruentis inustum litteris esse passi sunt. Qui me homines quod salvum esse voluerunt, est mihi gratissimum; sed vellem non solum salutis meae, quem ad modum medici, sed, ut aliptae,

that the world should see
from the dust
asserted & maintained

if they had been willing to persevere in that attitude

honours & acknowledgements
"friend who intruded among women at worship"
MSS. ille furta. Lamb. ille fur.

spirits
"- that in letters of blood"

"like trainers who look to one's muscles & healthy complexion"

"with consummate art" but

"they have to prove that." Bracket is not needed.

cheerfulness

that I should be humbled for the future

Ern. reads grace.

joining in the effort

my only ambition

outward offenders

etiam virium et coloris rationem habere voluissent: nunc, ut Apelles Veneris caput et summa pectoris politissima arte perfecit, reliquam partem corporis inchoatam reliquit, sic quidam homines in capite meo solum elaborarunt, reliquum corpus imperfectum ac rude reliquerunt. 16. In quo ego spem fefelli non modo invidorum, sed etiam inimicorum meorum, qui de uno acerrimo et fortissimo viro meoque iudicio omnium magnitudine animi et constantia praestantissimo Q. Metello L. f. quondam falsam opinionem acceperunt, quem post reditum dictitant fracto animo et demisso fuisse; [est vero probandum,] qui et summa voluntate cesserit et egregia animi alacritate afuerit neque sane redire curarit, eum ob id ipsum fractum fuisse, in quo cum omnes homines tum M. illum Scaurum singularem virum constantia et gravitate superasset! sed, quod de illo acceperant aut etiam suspicabantur, de me idem cogitabant, abiectiore animo me futurum cum res publica maiorem etiam mihi animum, quam umquam habuissem, daret, cum declarasset se non potuisse me uno civi carere; cumque Metellum unius tribuni pl. rogatio, me universa res publica, duce senatu, comitante Italia, promulgantibus octo tribunis, referente consule comitiis centuriatis, cunctis ordinibus, hominibus incumbentibus, omnibus denique suis viribus reciperavisset. 17. Neque vero ego mihi postea quicquam adsumpsi neque hodie adsumo, quod quemquam malevolentissimum iure possit offendere: tantum enitor, ut neque amicis neque etiam alienioribus opera, consilio, labore desim. Hic meae vitae cursus offendit eos fortasse, qui splendorem et speciem huius vitae intuentur, sollicitudinem autem et laborem perspicere non possunt. Illud vero non obscure queruntur, in meis sententiis, quibus ornem

Caesarem, quasi desciscere me *a* pristina causa. Ego autem cum illa sequor, quae paulo ante proposui, tum hoc non in postremis, de quo coeperam exponere. Non offendes eundem bonorum sensum, Lentule, quem reliquisti, qui confirmatus consulatu nostro, *non* numquam postea interruptus, adflictus ante te consulem, recreatus abs te, totus est nunc ab iis, a quibus tuendus fuerat, derelictus; idque non solum fronte atque voltu, quibus simulatio facillime sustinetur, declarant ii, qui tum nostro illo statu optimates nominabantur, sed etiam sententia saepe iam tabellaque docuerunt. 18. Itaque tota iam sapientium civium, qualem me et esse et numerari volo, et sententia et voluntas mutata esse debet; id enim iubet idem ille Plato, quem ego vehementer auctorem sequor, tantum contendere in re publica, quantum probare tuis civibus possis; vim neque parenti nec patriae adferre oportere. Atque hanc quidem ille causam sibi ait non attingendae rei publicae fuisse, quod, cum offendisset populum Atheniensem prope iam desipientem senectute, [cumque eum nec persuadendo nec cogendo regi posse vidisset,] cum persuaderi posse diffideret, cogi fas esse non arbitraretur. Mea ratio fuit alia, quod neque desipiente populo nec integra re mihi ad consulendum capesseremne rem publicam implicatus tenebar; sed laetatus tamen sum, quod mihi liceret in eadem causa et mihi utilia et cuivis bono recta defendere. Huc accessit commemoranda quaedam et divina Caesaris in me fratremque meum liberalitas: qui mihi, quascumque res gereret, tuendus esset; nunc in tanta felicitate tantisque victoriis, etiam si in nos non is esset, qui est, tamen ornandus videretur. Sic enim te existimare velim, cum a vobis meae salutis auctoribus discesserim, neminem esse, cuius officiis me tam esse devinctum

"& not least the following consideration which I
pud "was beginning to discuss."

impaired quickened

by its natural supporters.

the natural cloak of hypocrisy

votes in the Senate & in the law-courts.

MSS. all have "senous" "; ed. inward feelings" as opposed to "fronte". Otherwise we should need sententiis tabellisque

policy & attitude should be modified

"falling into its dotage"

Found in all MSS. Insert nisi after second nec.
nisi would be written n'

"I was already committed & had no power of freely considering the question whether I should take part in politics":

Continuation of Caesar's command.

aestae.

Pompey's son married a daughter of Appius.

i.c. in 55

scathing

most urgent representations

in fine do you give her tit for tat to (~~[illegible]~~), tease her

to my disgust

warmly greet

buttonholed him with a serious air.

gave them a little prod

non solum confitear, sed etiam gaudeam. 19. Quod quoniam tibi exposui, facilia sunt ea, quae a me de Vatinio et de Crasso requiris; nam de Appio quod scribis sicuti de Caesare te non reprehendere, gaudeo tibi consilium probari meum. De Vatinio autem, primum reditus intercesserat in gratiam per Pompeium, statim ut ille praetor est factus, cum quidem ego eius petitionem gravissimis in senatu sententiis oppugnassem, neque tam illius laedendi causa quam defendendi atque ornandi Catonis. Post autem Caesaris, ut illum defenderem, mira contentio est consecuta. Cur autem laudarim, peto a te, ut id a me neve in hoc reo neve in aliis requiras, ne tibi ego idem reponam, cum veneris: tametsi possum vel absenti; recordare enim, quibus laudationem ex ultimis terris miseris. Nec hoc pertimueris; nam a me ipso laudantur et laudabuntur iidem. Sed tamen defendendi Vatinii fuit etiam ille stimulus, de quo in iudicio, cum illum defenderem, dixi me facere quiddam, quod in Eunucho parasitus suaderet militi:

> ubi nominabit Phaedriam, tu Pamphilam continuo. Si quando illa dicet 'Phaedriam intro mittamus comissatum,' Pamphilam cantatum provocemus. Si laudabit haec illius formam, tu huius contra; denique par pro pari referto, quod eam mordeat.

sic petivi a iudicibus ut, quoniam quidam nobiles homines et de me optime meriti nimis amarent inimicum meum meque inspectante saepe eum in senatu modo severe seducerent, modo familiariter atque hilare amplexarentur, quoniamque illi haberent suum Publium, darent mihi ipsi alium Publium, in quo possem illorum animos mediocriter lacessitus leviter repungere; neque solum dixi, sed etiam

saepe facio deis hominibusque adprobantibus. Habes de Vatinio, cognosce de Crasso. 20. Ego, cum mihi cum illo magna iam gratia esset, quod eius omnes gravissimas iniurias communis concordiae causa voluntaria quadam oblivione contriveram, repentinam eius defensionem Gabinii, quem proximis [superioribus] diebus acerrime oppugnasset, tamen, si sine ulla mea contumelia suscepisset, tulissem; sed, cum me disputantem, non lacessentem laesisset, exarsi non solum praesenti, credo, iracundia—nam ea tam vehemens fortasse non fuisset —, sed, cum inclusum illud odium multarum eius in me iniuriarum, quod ego effudisse me omne arbitrabar, residuum tamen insciente me fuisset, omne repente apparuit. Quo quidem tempore ipso quidam homines, et iidem illi, quos saepe *nutu* significationeque appello, cum se maximum fructum cepisse dicerent ex libertate mea meque tum denique sibi esse visum rei publicae, qualis fuissem, restitutum, cumque ea contentio mihi magnum etiam foris fructum tulisset, gaudere se dicebant mihi et illum inimicum et eos, qui in eadem causa essent, numquam amicos futuros: quorum iniqui sermones cum ad me per homines honestissimos perferrentur cumque Pompeius ita contendisset, ut nihil umquam magis, ut cum Crasso redirem in gratiam, Caesarque per litteras maxima se molestia ex illa contentione adfectum ostenderet, habui non temporum solum rationem meorum, sed etiam naturae, Crassusque, ut quasi testata populo Romano esset nostra gratia, paene a meis Laribus in provinciam est profectus; nam, cum mihi condixisset, cenavit apud me in mei generi Crassipedis hortis. Quam ob rem eius causam, quod te scribis audisse, magna illius commendatione susceptam defendi in senatu, sicut mea fides postulabat. 21. Accepisti,

So much for V.

effaced    Mr 56

I fired up

pent up

rose to the surface

signs

like my old self
with the public

plain-speaking

spiteful gossip

had offered to visit me

honour

particular measures or causes

superior strength

pre-eminence
veins

unvarying
make the port weather the storm

though I were quite untrammelled

so marked = a credit

quibus rebus adductus quamque rem causamque defenderim, quique meus in re publica sit pro mea parte capessenda status; de quo sic velim statuas, me haec eadem sensurum fuisse, si mihi integra omnia ac libera fuissent: nam neque pugnandum arbitrarer contra tantas opes neque delendum, etiam si id fieri posset, summorum civium principatum nec permanendum in una sententia conversis rebus ac bonorum voluntatibus mutatis, sed temporibus adsentiendum. Numquam enim *in* praestantibus in re publica gubernanda viris laudata est in una sententia perpetua permansio, sed, ut in navigando tempestati obsequi artis est, etiam si portum tenere non queas, cum vero id possis mutata velificatione adsequi, stultum est eum tenere cum periculo cursum, quem ceperis, potius quam eo commutato quo velis tamen pervenire, sic, cum omnibus nobis in administranda re publica propositum esse debeat id, quod a me saepissime dictum est, cum dignitate otium, non idem semper dicere, sed idem semper spectare debemus. Quam ob rem, ut paulo ante posui, si essent omnia mihi solutissima, tamen in re publica non alius essem atque nunc sum: cum vero in hunc sensum et adliciar beneficiis hominum et compellar iniuriis, facile patior ea me de re publica sentire ac dicere quae maxime cum mihi tum etiam rei publicae rationibus putem conducere. Apertius autem haec ago ac saepius, quod et Quintus, frater meus, legatus est Caesaris et nullum meum minimum dictum, non modo factum, pro Caesare intercessit, quod ille non ita illustri gratia exceperit, ut ego eum mihi devinctum putarem. Itaque eius omni et gratia, quae summa est, et opibus, quas intellegis esse maximas, sic fruor ut meis; nec mihi aliter potuisse videor hominum perditorum de me consilia

frangere, nisi cum praesidiis iis, quae semper habui, nunc etiam potentium benevolentiam coniunxissem. 22. His ego consiliis, si te praesentem habuissem, ut opinio mea fert, essem usus eisdem; novi enim temperantiam et moderationem naturae tuae, novi animum cum mihi amicissimum, tum nulla in ceteros malevolentia suffusum, contraque cum magnum et excelsum, tum etiam apertum et simplicem. Vidi ego quosdam in te tales, quales tu eosdem in me videre potuisti: quae me moverunt, movissent eadem te profecto. Sed, quocumque tempore mihi potestas praesentis tui fuerit, tu eris omnium moderator consiliorum meorum; tibi erit eidem, cui salus mea fuit, etiam dignitas curae. Me quidem certe tuarum actionum, sententiarum, voluntatum, rerum denique omnium socium comitemque habebis, neque mihi in omni vita res tam erit ulla proposita, quam ut quotidie vehementius te de me optime meritum esse laetere. 23. Quod rogas, ut mea tibi scripta mittam, quae post discessum tuum scripserim, sunt orationes quaedam, quas Menocrito dabo, neque ita multae; ne pertimescas. Scripsi etiam—nam me iam ab orationibus diiungo fere referoque ad mansuetiores Musas, quae me maxime sicut iam a prima adulescentia delectarunt—scripsi igitur Aristotelio more, quem ad modum quidem volui, tres libros [in disputatione ac dialogo] 'de oratore,' quos arbitror Lentulo tuo fore non inutiles; abhorrent enim a communibus praeceptis et omnem antiquorum et Aristoteliam et Isocratiam rationem oratoriam complectuntur. Scripsi etiam versibus tres libros de temporibus meis, quos iam pridem ad te misissem, si esse edendos putassem; sunt enim testes et erunt sempiterni meritorum erga me tuorum meaeque pietatis; sed [quia] verebar non eos, qui se laesos arbitra-

scatter the intrigues

with no pale cast of spite
sublime

guide

divorce myself

hackneyed rules
principles

my troubles
had I had the idea of publishing them
while time lasts

(1) Either expunge quia
(2). after nominare se. retini divulgare
(3). Postulate before quia a harsh ellipse = [illegible]

literary > philosophical work

subject unreservedly to your critical work

make an arrangement with. Cf. Comic usage of "favors" with "at"

rentur—etenim id feci parce et molliter—, sed eos, quos erat infinitum bene de me meritos omnes nominare; quos tamen ipsos libros, si quem cui recte committam invenero, curabo ad te perferendos. Atque istam quidem partem vitae consuetudinisque nostrae totam ad te defero: quantum litteris, quantum studiis, veteribus nostris delectationibus, consequi poterimus, id omne ad arbitrium tuum, qui haec semper amasti, libentissime conferemus. 24. Quae ad me de tuis rebus domesticis scribis, quaeque mihi commendas, ea tantae mihi curae sunt, ut me nolim admoneri, rogari vero sine magno dolore vix possim. Quod de Quinti fratris negotio scribis te priore aestate, quod morbo impeditus in Ciliciam non transieris, conficere non potuisse, nunc autem omnia facturum, ut conficias, id scito esse eius modi, ut frater meus vere existimet adiuncto isto fundo patrimonium fore suum per te constitutum. Tu me de tuis rebus omnibus et de Lentuli tui nostrique studiis et exercitationibus velim quam familiarissime certiorem et quam saepissime facias existumesque neminem cuiquam neque cariorem neque iucundiorem umquam fuisse quam te mihi, idque me non modo ut tu sentias, sed ut omnes gentes, etiam ut posteritas omnis intellegat, esse facturum. 25. Appius in sermonibus antea dictitabat, postea dixit etiam in senatu palam, sese, si licitum esset legem curiatam ferre, sortiturum esse cum collega provincias; si curiata lex non esset, se paraturum cum collega tibique successurum; legem curiatam consuli ferri opus esse, necesse non esse; se, quoniam ex senatus consulto provinciam haberet, lege Cornelia imperium habiturum, quoad in urbem introisset. Ego, quid ad te tuorum quisque necessariorum scribat, nescio; varias esse opiniones intellego: sunt qui putant posse te non decedere,

quod sine lege curiata tibi succedatur; sunt etiam, qui, si decedas, a te relinqui posse qui provinciae praesit. Mihi non tam de iure certum est—quamquam ne id quidem valde dubium est—quam illud, ad tuam summam amplitudinem, dignitatem, libertatem, qua te scio libentissime frui solere, pertinere te sine ulla mora provinciam successori concedere, praesertim cum sine suspitione tuae cupiditatis non possis illius cupiditatem refutare. Ego utrumque meum puto esse, et quid sentiam ostendere et quod feceris defendere.

26. Scripta iam epistola superiore accepi tuas litteras de publicanis, *in* quibus aequitatem tuam non potui non probare; facilitate quidem vellem consequi potuisses, ne eius ordinis, quem semper ornasti, rem aut voluntatem offenderes. Equidem non desinam tua decreta defendere; sed nosti consuetudinem hominum; scis quam graviter inimici ipsi illi Q. Scaevolae fuerint; tibi tamen sum auctor, ut, si quibus rebus possis, eum tibi ordinem aut reconcilies aut mitiges: id etsi difficile est, tamen mihi videtur esse prudentiae tuae.

## 30. AD FAMILIARES II. 6.

SCR. ROMAE A.U.C. 701.

M. CICERO S. D. C. CURIONI.

1. NONDUM erat auditum te ad Italiam adventare, cum Sex. Villium, Milonis mei familiarem, cum his ad te litteris misi; sed tamen cum adpropinquare tuus adventus putaretur et te iam ex Asia Romam versus profectum esse constaret, magnitudo rei fecit, ut non vereremur ne nimis cito mitteremus, cum has quam primum ad te perferri litteras magno opere vellemus. Ego, si mea in te essent officia solum, Curio, tanta, quanta magis a te ipso prae-

resist

by readiness to oblige. M & T have "felicitate" "I can only
M has quidam wish you a kind of luck to escape
gen. quadam. running counter to their wishes or
feeling."

99

"within the reach of your sagacity"

Curio was quaestor in Asia.

of fine feelings

debt paid
kindness conferred

'that my heart cannot receive it with appreciation
& repay it with interest that shall be famous"

have entered & invested
satisfaction of doing my duty
earn distinction

lower classes
M 54.

in that line

activity

may carry some weight

dicari quam a me ponderari solent, verecundius a te, si quae magna res mihi petenda esset, contenderem; grave est enim homini pudenti petere aliquid magnum ab eo, de quo se bene meritum putet, ne id, quod petat, exigere magis quam rogare et in mercedis potius quam beneficii loco numerare videatur. 2. Sed quia tua in me vel nota omnibus vel ipsa novitate meorum temporum clarissima et maxima beneficia exstiterunt, estque animi ingenui, cui multum debeas, eidem plurimum velle debere, non dubitavi id a te per litteras petere, quod mihi omnium esset maximum maximeque necessarium; neque enim sum veritus ne sustinere tua in me vel innumerabilia non possem, cum praesertim confiderem nullam esse gratiam tantam, quam non vel capere animus meus in accipiendo vel in remunerando cumulare atque illustrare posset. 3. Ego omnia mea studia, omnem operam, curam, industriam, cogitationem, mentem denique omnem in Milonis consulatu fixi et locavi, statuique in eo me non officii solum fructum sed etiam pietatis laudem debere quaerere; neque vero cuiquam salutem ac fortunas suas tantae curae fuisse umquam puto, quantae mihi est honos eius, in quo omnia mea posita esse decrevi. Huic te unum tanto adiumento esse, si volueris, posse intellego, ut nihil sit praeterea nobis requirendum. Habemus haec omnia: bonorum studium conciliatum ex tribunatu propter nostram, ut spero te intellegere, causam; volgi ac multitudinis propter magnificentiam munerum liberalitatemque naturae; iuventutis et gratiosorum in suffragiis studia propter ipsius excellentem in eo genere vel gratiam vel diligentiam; nostram suffragationem, si minus potentem, at probatam tamen et iustam et debitam et propterea fortasse etiam gratiosam. 4. Dux nobis et auctor opus est et eo-

rum ventorum, quos proposui, moderator quidam et quasi gubernator; qui si ex omnibus unus optandus esset, quem tecum conferre possemus, non haberemus. Quam ob rem, si me memorem, si gratum, si bonum virum vel ex hoc ipso, quod tam vehementer de Milone laborem, existimare potes, si dignum denique tuis beneficiis iudicas, hoc a te peto, ut subvenias huic meae sollicitudini et huic meae laudi vel, ut verius dicam, prope saluti tuum studium dices. De ipso T. Annio tantum tibi polliceor, te maioris animi, gravitatis, constantiae benevolentiaeque erga te, si complecti hominem volueris, habiturum esse neminem; mihi vero tantum decoris, tantum dignitatis adiunxeris, ut eundem te facile agnoscam fuisse in laude mea, qui fueris in salute. 5. Ego, ni te videre scirem, cum ad te haec scriberem, quantum officii sustinerem, quanto opere mihi esset in hac petitione Milonis omni non modo contentione, sed etiam dimicatione elaborandum, plura scriberem: nunc tibi omnem rem atque causam meque totum commendo atque trado. Unum hoc sic habeto: si a te hanc rem impetraro, me paene plus tibi quam ipsi Miloni debiturum; non enim mihi tam mea salus cara fuit, in qua praecipue sum ab illo adiutus, quam pietas erit in referenda gratia iucunda; eam autem unius tui studio me adsequi posse confido.

## 31. AD ATTICUM V. 11.

SCR. ATHENIS PR. NONAS QUINTILES A.U.C. 703.

CICERO ATTICO SAL.

1. HUI, totiensne me litteras dedisse Romam, cum ad te nullas darem? At vero posthac frustra potius dabo, quam, si recte dari potuerint, committam ut non dem. Ne provincia nobis prorogetur, per fortunas! dum ades, quicquid provideri *potest*, provide: non dici potest, quam

"I set before you" influences

~~declare your support~~ dedicate your support from dico

Plautius Hypsaeus - Metellus Scipio, Milo's competitors were Clodians, who was now seeking the praetor-ship.

under what a load of obligation I am to Milo

I must exert myself

trial

conflicts

rem = the whole case

causam = cause of Milo

Cf. "Alexandrina re causaque regia".

51 B.C. Consuls. M. Claudius Marcellus
Servius Sulpicius Rufus.

be prolonged

"now I can scarcely bear the insipidity of things here."

supposing he was not a magistrate

Pompey's legate for Spain

put on pressure

precisely ten

L. Mescinius Rufus "Levis libidinosus" undecked vessels
tagax"
biremes
shining boats
for the future

"what my attitude is & on what terms they are on my staff."

devote themselves to
... τοῖα χή κύων
"tel maître"

"that I have studied the role of ἀνεκτός" M "singuli"
ἀνεξία = ἀνεξικακία

d'[illegible]
transcendental

Praefecti have exemption from service as jurymen. "Any praefecture you may confer on whomsoever you please". Only thus found in Appian.
"ad excusatio non sit" unless my excuse intervenes" i.e. the man is a negotiator.
this ni sit" unless they are barred by my exclusion"

flagrem desiderio urbis, quam vix harum rerum insulsitatem feram. 2. Marcellus foede in Comensi: etsi ille magistratum non gesserit, erat tamen Transpadanus. Ita mihi videtur non minus stomachi nostro *quam* Caesari fecisse; sed hoc ipse viderit. 3. Pompeius mihi quoque videbatur, quod scribis Varronem dicere, in Hispaniam certe iturus: id ego minime probabam, qui quidem Theophani facile persuasi nihil esse melius quam illum nusquam discedere. Ergo Graecus incumbet; valet autem auctoritas eius apud illum plurimum. 4. Ego has pr. Nonas Quinctiles proficiscens Athenis dedi, cum ibi decem ipsos fuissem dies. Venerat Pomptinus; una Cn. Volusius, aderat quaestor; tuus unus Tullius aberat. Aphracta Rhodiorum et dicrota Mytilenaeorum habebam et aliquid ἐπικώπων. De Parthis erat silentium. Quod superest, di iuvent! 5. Nos adhuc iter per Graeciam summa cum admiratione fecimus, nec mehercule habeo quod adhuc quem accusem meorum: videntur mihi nosse [nos,] nostram causam et condicionem profectionis suae; plane serviunt existimationi meae. Quod superest, si verum illud est οἷαπερ ἡ δέσποινα, certe permanebunt; nihil enim a me fieri ita videbunt, ut sibi sit delinquendi locus: sin id parum profuerit, fiet aliquid a nobis severius; nam adhuc lenitate dulces sumus et, ut spero, proficimus aliquantum. Sed ego hanc, ut Siculi dicunt, ἀνεξίαν in unum annum meditatus sum: proinde pugna, ne, si quid prorogatum sit, turpis inveniar. 6. Nunc redeo ad quae mihi mandas: † in praefectis excusatio iis, quos voles, deferto: non ero tam μετέωρος, quam in Appuleio fui. Xenonem tam diligo quam tu, quod ipsum sentire certo scio. Apud Patronem et reliquos barones te in maxima gratia posui, et hercule merito tuo feci; nam mihi is ter

dixit te scripsisse ad se, mihi ex illius litteris rem illam curae fuisse, quod ei pergratum erat. Sed cum Patron mecum egisset, ut peterem a vestro Ariopago, *ὑπομνηματισμὸν* tollerent, quem Polycharmo praetore fecerant, commodius visum est et Xenoni et post ipsi Patroni, me ad Memmium scribere, qui pridie, quam ego Athenas veni, Mytilenas profectus erat, ut is ad suos scriberet posse id sua voluntate fieri; non enim dubitabat Xeno quin ab Ariopagitis invito Memmio impetrari non posset. Memmius autem aedificandi consilium abiecerat, sed erat Patroni iratus: itaque scripsi ad eum accurate, cuius epistolae misi ad te exemplum. 7. Tu velim Piliam meis verbis consolere; indicabo enim tibi; tu illi nihil dixeris: accepi fasciculum, in quo erat epistola Piliae; abstuli, aperui, legi; valde scripta est *συμπαθῶς*. Brundisio quae tibi epistolae redditae sunt sine mea, tum videlicet datae sunt, cum ego me non belle haberem; nam † illam *νομανδρία* me excusationem ne acceperis. Cura ut omnia sciam, sed maxime ut valeas.

## 32. AD ATTICUM V. 16.

SCR. IN ITINERE A SYNNADE AD PHILOMELIUM A. D. III. IDUS SEXTILES A.U.C. 703.

CICERO ATTICO SAL.

1. ETSI in ipso itinere et via discedebant publicanorum tabellarii et eramus in cursu, tamen surripiendum aliquid putavi spatii, ne me immemorem mandati tui putares; itaque subsedi in ipsa via, dum haec, quae longiorem desiderant orationem, summatim tibi perscriberem. 2. Maxima exspectatione in perditam et plane eversam in perpetuum provinciam nos venisse scito pridie Kal. Sextiles, moratos triduum Laodiceae, triduum Apameae, totidem dies Synnade. Audivimus

"minute"

M. convicted of bribery in 51.

in careful terms

"in very moving terms".
when I was far from well.
MSS. tum videlicet datas. Here as in Comic poets videlicet = videre licet and governs a case
"NOMANAPIA" mc. M.
νομαρίαν ἀιτίαν κτλ.
Schütz νομαρχίας.
Tyrrell "νομαρίαν ἀργίας a me excusationum" briness the conventional excuse of illness".
Casaubon "ἀδρανίας from ἀδρανής "slack".
while I am on the march = indeed on the road
are just about to leave

listed
which require fuller detail

"imposition of field-taxes".
affair of L. Lucullus "τέλη δ' ἐπὶ τοῖς θεράπουσιν καὶ ταῖς οἰκίαις ὥρισε".
ὠνὰς lit. = "investments" i.e. everyone is forced to realise his capital.

"direful conduct"

M has "omnium nos vitae".

Βοώνης ομινιμμμμος = very rich.

i.e. lifting up their heads

i.e. wood, salt & hay

expectations

holds a court

sc. suis faciundis. Kept Sibylline books.

L. Lent. Crus consul 49 Opposed Caesar.

nihil aliud nisi imperata ἐπικεφάλια [solvere non posse,] ὠνὰς omnium venditas, civitatum gemitus, ploratus, monstra quaedam non hominis, sed ferae nescio cuius immanis. Quid quaeris? taedet omnino vitae. 3. Levantur tamen miserae civitates, quod nullus fit sumptus in nos neque in legatos neque in quaestorem neque in quemquam; scito non modo nos foenum aut quod de lege Iulia dari solet non accipere, sed ne ligna quidem, nec praeter quattuor lectos et tectum quemquam accipere quicquam, multis locis ne tectum quidem, et in tabernaculo manere plerumque: itaque incredibilem in modum concursus fiunt ex agris, ex vicis, ex domibus omnibus; mehercule etiam adventu nostro reviviscunt, iustitia, abstinentia, clementia tui Ciceronis: ita opiniones omnium superavit. 4. Appius, ut audivit nos venire, in ultimam provinciam se coniecit Tarsum usque; ibi forum agit. De Partho silentium est, sed tamen concisos equites nostros a barbaris nuntiabant ii, qui veniebant. Bibulus ne cogitabat quidem etiam nunc in provinciam suam accedere; id autem facere ob eam causam dicebant, quod tardius vellet decedere. Nos in castra properabamus, quae aberant bidui.

## 33. AD FAMILIARES VIII. 4.

SCR. ROMAE KALENDIS SEXTILIBUS A.U.C. 703.

CAELIUS CICERONI SAL.

1. INVIDEO tibi: tam multa quotidie, quae mirere, istoc perferuntur: primum illud, absolutum Messallam; deinde eundem condemnatum; C. Marcellum consulem factum; M. Calidium ab repulsa postulatum a Galliis duobus; P. Dolabellam xv. virum factum. Hoc tibi non invideo, caruisse te pulcherrimo spectaculo et Lentuli

Cruris repulsi voltum non vidisse. At qua spe, quam certa opinione descenderat! quam ipso diffidente Dolabella! et hercules, nisi nostri equites acutius vidissent, paene concedente adversario superasset. 2. Illud te non arbitror miratum, Servaeum, designatum tribunum pl., condemnatum, *in* cuius locum C. Curio petit. Sane quam incutit multis, qui eum facilitatemque eius non norunt, magnum metum; sed, ut spero et volo et ut se fert ipse, bonos et senatum malet; totus, ut nunc est, hoc scaturit. Huius autem voluntatis initium et causa est, quod eum non mediocriter Caesar, qui solet infimorum hominum amicitiam sibi qualibet impensa adiungere, valde contempsit; qua in re mihi videtur illud perquam venuste cecidisse, quod a reliquis quoque [usque eo] est animadversum, ut Curio, qui nihil consilio facit, ratione et insidiis usus videretur in evitandis iis consiliis, * * qui se intenderant adversarios in eius tribunatum: Laelios et Antonios et id genus valentes dico. 3. Has ego tibi litteras eo maiore misi intervallo, quod comitiorum dilationes occupatiorem me habebant et exspectare in dies exitum cogebant, ut confectis omnibus te facerem certiorem. Ad Kalendas Sext. usque exspectavi. Praetoriis morae quaedam inciderunt. Mea porro comitia quem eventum sint habitura, nescio; opinionem quidem, quod ad Hirrum attinet, incredibilem aedilium pl. comitiis nacta sunt. Nam M. Coelium Vinicianum mentio illa fatua, quam deriseramus olim, et promulgatio de dictatore subito deiecit et deiectum magno clamore insecuta est; inde Hirrum cuncti iam non faciendum flagitare. Spero te celeriter et de nobis, quod sperasti, et de illo, quod vix sperare ausus es, auditurum. 4. De re publica iam novi quicquam exspectare desieramus;

from his adversary retiring

an archaism " It is quite true that". "he alarms"

is bubbling over with loyalty ~~[illegible]~~

1. - cong. [illegible] which would "desires to be the senate". cf. [illegible]

"prime cause".

showed very marked contempt

"a neat fall of the cards" a dicing metaphor".

We might well transpose "modiis" & "consiliis".

Tyrrell omits "iis" with # & understands "eiMus"

"kept me employed more than usual."

"wonderful hopes of success, so far as the opposition of tribunes is concerned".

Tribunes proposed in 53 that Pompey should be dictator.

his stupid suggestion

Boot cong. "magni clamores consecuti sunt"

what place it held in whose contingent it was lent

MSS. Quo appeteretur "what it was being wanted for."

Leave out second Pompeius

"but not till some time after the question had been moved & his opponents had taunted him."

The temple of Apollo was outside the walls.

there is nothing to which I look forward so much

Hunters from Cibyra

Who is the regent? Ptolemy XII acceded in 55.

It was Pothinus a eunuch

Probably Caelius held Egyptian bonds.

sed cum senatus habitus esset ad Apollinis a. d. XI. Kal. Sext. et referretur de stipendio Cn. Pompeii, mentio facta est de legione ea, quam expensam tulit C. Caesari Pompeius, quo numero esset, quoad peteretur. † Cum Pompeius 'esse in Gallia,' coactus est dicere Pompeius se legionem abducturum, sed non statim sub mentionem et convitium obtrectatorum; inde interrogatus *est* de successione C. Caesaris, de qua [hoc est de provinciis] placitum est, ut quam primum ad urbem reverteretur Cn. Pompeius, ut coram eo de successione provinciarum ageretur; nam Ariminum ad exercitum Pompeius erat iturus, et statim iit. Puto Idibus Sext. de ea re actum iri. Profecto aut transigetur aliquid, aut turpiter intercedetur. Nam in disputando coniecit illam vocem Cn. Pompeius, omnes oportere senatui dicto audientes esse. Ego tamen sic nihil exspecto, quo modo Paulum, consulem designatum, primum sententiam dicentem. 5. Saepius te admoneo de syngrapha Sittiana; cupio enim te intellegere eam rem ad me valde pertinere; item de pantheris, ut Cibyratas arcessas curesque, ut mihi vehantur; praeterea nuntiatum nobis *est* et pro certo iam habetur, regem Alexandrinum mortuum; quid mihi suadeas, quo modo regnum illud se habeat, quis procuret, diligenter mihi perscribas. K. Sext.

## 34. AD FAMILIARES VIII. 8.

SCR. ROMAE INEUNTE MENSE OCTOBRI A.U.C. 703.

CAELIUS CICERONI SAL.

1. ETSI de re publica quae tibi scribam habeo, tamen nihil quod magis gavisurum te putem habeo quam hoc: scito C. Sempronium Rufum, [Rufum,] mel ac delicias tuas, calumniam maximo plausu tulisse. Quaeris

'qua in causa?' M. Tuccium, accusatorem suum, post ludos Romanos reum lege Plotia de vi fecit hoc consilio, quod videbat, si extraordinarius reus nemo accessisset, sibi hoc anno causam esse dicendam; dubium porro illi non erat, quid futurum esset. Nemini hoc deferre munusculum maluit quam suo accusatori. Itaque sine ullo subscriptore descendit et Tuccium reum fecit. At ego, simul atque audivi, invocatus ad subsellia rei occurro; surgo, neque verbum de re facio: totum Sempronium usque eo perago, ut Vestorium quoque interponam et illam fabulam narrem, quem ad modum tibi pro beneficio dederit, † si quod iniuriis suis esset, ut Vestorius teneret. 2. Haec quoque magna nunc contentio forum tenet: M. Servilius postquam, ut coeperat, omnibus in rebus turbarat nec quod non venderet quicquam reliquerat maximaque nobis traditus erat invidia, neque Laterensis praetor expostulante Pausania, nobis patronis, QVO EA PECVNIA PERVENISSET, recipere voluit, Q. Pilius, necessarius Attici nostri, de repetundis eum postulavit: magna ilico fama surrexit et de damnatione ferventer loqui est coeptum. Quo vento proiicitur Appius minor, ut indicaret pecuniam ex bonis patris pervenisse ad Servilium praevaricationisque causa diceret depositum HS. LXXXI. Admiraris amentiam: immo si actionem stultissimasque de se, nefarias de patre confessiones audisses? 3. Mittit in consilium eosdem illos, qui lites aestimarant, iudices. Cum aequo numero sententiae fuissent, Laterensis leges ignorans pronuntiavit, quid singuli ordines iudicassent, et ad extremum, ut solent, NON REDIGAM. Postquam discessit et pro absoluto Servilius haberi coeptus est legisque unum et centesimum caput legit, in quo ita erat, QVOD

the games lasted 4–19 Sept. after them there would only be a few days left for judicial business a defendant who could claim precedence i.e. in a case "de vi".
He had same device as Verres.
"little compliment" i.e. conviction.

pitch into
introduce
Ques. si quid injuria ipsius esset – "whatever he (Rufus) possessed wrongfully".
Lamb. "si quid juris sui esset".
had run amuck
M has "maxime quae ... invidiae"
Becher has "maxime – invidiae" "" and he had unfortunately (nobis ethical dat.) incurred the most violent unpopularity"
"In spite of the representations of father-in-law
storm . praetore postulante. MH.

£40,000

"I will not call in the money"

MA have transegisset relationum.
Hence Tyrrell transegisse et rem relationum dixit = said that he
had arranged with R. & would return the facts of the case.'

they are a well-matched pair

entered in the minutes
Committee for drafting

verba fecit

EORVM IVDICVM MAIOR PARS IVDICARIT, ID IVS RATVMQVE ESTO, in tabulas absolutum non rettulit, ordinum iudicia perscripsit; postulante rursus Appio cum L. Lollio transegit et se relaturum dixit. Sic nunc neque absolutus neque damnatus Servilius de repetundis saucius Pilio tradetur. Nam de divinatione Appius, cum calumniam iurasset, contendere ausus non est Pilioque cessit, et ipse de pecuniis repetundis a Serviliis est postulatus et praeterea de vi reus a quodam suo emissario, Sex. Tettio, factus. Recte hoc par habet. 4. Quod ad rem publicam pertinet, omnino multis diebus exspectatione Galliarum actum nihil est; aliquando tamen, saepe re dilata et graviter acta et plane perspecta Cn. Pompeii voluntate in eam partem, ut eum decedere post Kalendas Martias placeret, senatus consultum, quod tibi misi, factum est auctoritatesque perscriptae.

5. S. C. Auctoritates. Pr. Kal. Octobres in aede Apollinis scrib. adfuerunt L. Domitius Cn. f. Fab. Ahenobarbus, Q. Caecilius Q. f. Fab. Metellus Pius Scipio, L. Villius L. F. Pom. Annalis, C. Septimius T. f. Quirina, C. Lucilius C. f. Pup. Hirrus, C. Scribonius C. f. Pop. Curio, L. Ateius L. f. An. Capito, M. Eppius M. f. Ter. Quod M. Marcellus cos. v. f. de provinciis consularibus, d. e. r. i. c., uti L. Paulus C. Marcellus coss., cum magistratum inissent, ex Kal. Mart., quae in suo magistratu futurae essent, de consularibus provinciis ad senatum referrent, neve quid prius ex Kal. Mart. ad senatum referrent, neve quid coniunctim de ea re referretur a consulibus, utique eius rei causa per dies comitiales senatum haberent senatusque cons. facerent, et, cum de ea re ad senatum

referretur a consulibus, qui eorum in ccc. iudicibus essent, eos adducere liceret. Si quid de ea re ad populum plebemve lato opus esset, uti Ser. Sulpicius M. Marcellus coss., praetores tribunique pl., quibus eorum videretur, ad populum plebemve ferrent: quod *si* ii non tulissent, uti, quicumque deinceps essent, ad populum plebemve ferrent. i. n.

6. Pr. Kal. Octobres in aede Apollinis scrib. adfuerunt L. Domitius Cn. f. Fab. Ahenobarbus, Q. *Caecilius* Q. f. *Fab.* Metellus Pius Scipio, L. Villius L. f. Pom. Annalis C. Septimius T. f. Quirina, *C. Lucilius C. f. Pup. Hirrus*, C. Scribonius C. f. Pop. Curio, L. Ateius L. f. An. Capito, M. Eppius M. f. Teretina. Quod M. Marcellus cos. v. f. de provinciis, d. e. r. i. c., senatum existimare neminem eorum, qui potestatem habent intercedendi, impediendi, moram adferre oportere, quo minus de r. p. p. R. Q. ad senatum referri senatique consultum fieri possit: qui impedierit, prohibuerit, eum senatum existimare contra rem publicam fecisse. Si quis huic s. c. intercesserit, senatui placere auctoritatem perscribi et de ea re ad senatum populumque referri. Huic s. c. intercessit C. Caelius, L. Vinicius, P. Cornelius, C. Vibius Pansa, *tribuni pl.*

7. Item senatui placere de militibus, qui in exercitu C. Caesaris sunt: qui eorum stipendia emerita aut causas, quibus de causis missi fieri debeant, habeant, ad hunc ordinem referri, ut eorum ratio habeatur causaeque cognoscantur. Si quis huic s. c. intercessisset, senatui placere

MSS. have sqs. Hirschfeld brilliantly conj. s. f. s. = "sine fraude sua".

"If any enactment were required by the people assembled by centuries or tribes" -

This must be omitted."
Senate had auctoritatem = "moral weight" & nothing else.

Reconnaissance

auctoritatem perscribi et de ea re ad hunc ordinem referri. Huic s. c. intercessit *C.* Caelius, C. Pansa, tribuni pl.

8. Itemque senatui placere in Ciliciam provinciam, in VIII reliquas provincias, quas praetorii pro praetore obtinerent, eos, qui praetores fuerunt neque in provinciam cum imperio fuerunt, quos eorum, ex s. c. cum imperio in provincias pro praetore mitti oporteret, eos sortito in provincias mitti placere; si ex eo numero, quos *ex* s. c. in provincias ire oporteret, ad numerum non essent, qui in eas provincias proficiscerentur, tum uti quodque collegium primum praetorum fuisset neque in provincias profecti essent, ita sorte in provincias proficiscerentur; si ii ad numerum non essent, tunc deinceps proximi cuiusque collegii, qui praetores fuissent neque in provincias profecti essent, in sortem coniicerentur, quoad is numerus effectus esset, quem ad numerum in provincias mitti oporteret; si quis huic s. c. intercessisset, auctoritas perscriberetur. Huic s. c. intercessit C. Caelius, C. Pansa, tribuni pl.

9. Illa praeterea Cn. Pompeii sunt animadversa, quae maxime confidentiam attulerunt hominibus, ut diceret se ante Kal. Martias non posse sine iniuria de provinciis Caesaris statuere, post Kal. Martias se non dubitaturum. Cum interrogaretur, si qui tum intercederent, dixit hoc nihil interesse, utrum C. Caesar senatui dicto audiens futurus non esset an pararet qui senatum decernere non pateretur. 'Quid, si' inquit alius 'et consul esse et exercitum habere volet?' At ille quam clementer:

'quid, si filius meus fustem mihi impingere volet?' His vocibus, ut existimarent homines Pompeio cum Caesare esse negotium, effecit; itaque iam, ut video, alteram utram ad condicionem descendere volt Caesar, ut aut maneat neque hoc anno sua ratio habeatur, aut, si designari poterit, decedat. 10. Curio se contra eum totum parat; quid adsequi possit, nescio: illud video, bene sentientem, etsi nihil effecerit, cadere non posse. Me tractat liberaliter Curio et mihi suo munere negotium imposuit; nam si mihi non dedisset feras, quae ad ludos ei advectae erant Africanae, potuit supersederi. Nunc, quoniam dare necesse est, velim tibi curae sit, quod a te semper petii, ut aliquid istinc bestiarum habeamus, Sittianamque syngrapham tibi commendo. Libertum Philonem istoc misi et Diogenem Graecum, quibus mandata et litteras ad te dedi: eos tibi et rem, de qua misi, velim curae habeas; nam, quam vehementer ad me pertineat, in iis, quas tibi illi reddent, litteris descripsi.

## 35. AD FAMILIARES VIII. 6.

SCR. MENSE FEBRUARIO A.U.C. 704.

CAELIUS CICERONI SAL.

1. NON dubito quin perlatum ad te sit, Appium a Dolabella reum factum, sane quam non ea, qua existimaveram, invidia: neque enim stulte Appius; qui, simul atque Dolabella accessit ad tribunal, introierat in urbem triumphique postulationem abiecerat, quo facto rettudit sermones paratiorque visus est, quam speraverat accusator. Is nunc in te maximam spem habet. Scio tibi eum non esse odio: quam velis eum obligare, in tua manu est; cum quo *si* simultas tibi non fuisset, liberius

quam clementer is ironical

give me the rod.

i.e. a quarrel.

either 50 or "the year in question" i.e. 49.

jail

"it might have been dispensed with".

epistolary "I am sending".

for "majestas" in his province.
defended by Hortensius & Brutus & acquitted.

the Phil. derides antlermen.

You could have acted more independently in the whole matter.

"Suppose if you wish to exact your full legal rights according to the standard of 'absolute rectitude'".

match.

Denique seems out of place; perhaps read "deinde".

it will become clearer then will suit either your credit or your interest.

which will bring more glory on him while the business is being carried through

Gnaeus killed at Munda (45)
Sextus " in 35.

screened

" is making a fossil of Curio.
"But words cannot express the stagnation of everything here."
"shop-keepers & water-companies" "lethargy."
Caelius was aedile.
we are getting rather dull
a few poor cohorts.

tibi de tota re esset. Nunc, si ad illam summam veritatem legitimum ius exegeris, cavendum tibi erit ne parum simpliciter et candide *de*posuisse inimicitias videaris. In hanc partem porro tutum tibi erit, si quid volueris, gratificari; nemo enim necessitudine et amicitia te deterritum ab officio dicet. Illud mihi occurrit, quod inter postulationem et nominis delationem uxor a Dolabella discessit. 2. Quid mihi discedens mandaris, memini; quid ego tibi scripserim, te non arbitror oblitum. Non est iam tempus plura narrandi. Unum illud monere te possum: si res tibi non displicebit, tamen hoc tempore nihil de tua voluntate ostendas, et exspectes quem ad modum exeat ex hac causa; denique invidiosum tibi sit, si emanarit; porro, *si* significatio ulla intercesserit, clarius, quam deceat aut expediat, fiat. Neque ille tacere eam rem poterit, quae suae spei tam opportuna acciderit quaeque in negotio conficiendo tanto illustrior erit; cum praesertim is sit, qui, si perniciosum sciret esse loqui de hac re, vix tamen se contineret. 3. Pompeius dicitur valde pro Appio laborare, ut etiam putent alterum utrum de filiis ad te missurum. Hic nos omnes absolvimus; et hercules consaepta omnia foeda et inhonesta sunt. Consules autem habemus summa diligentia; adhuc senatus consultum nisi de feriis Latinis nullum facere potuerunt. Curioni nostro tribunatus conglaciat. 4. Sed dici non potest, quo modo hic omnia iaceant: nisi ego cum tabernariis et aquariis pugnarem, veternus civitatem occupasset. Si Parthi vos nihil calficiunt, nos *non* nihil frigore rigescimus. Tamen, quoquo modo potuit, sine Parthis Bibulus in Amano nescio quid cohorticularum amisit. Hoc sic nuntiatum est. 5. Quod tibi supra scripsi Curionem valde frigere, iam

calet; nam ferventissime concerpitur; levissime enim, quia de intercalando non obtinuerat, transfugit ad populum et pro Caesare loqui coepit, legemque viariam, non dissimilem agrariae Rulli, et alimentariam, qua iubet aediles metiri, iactavit: hoc nondum fecerat, cum priorem partem epistolae scripsi. Amabo te, si quid, quod opus fuerit, Appio facies, ponito me *ei* in gratia. De Dolabella integrum tibi reserves, suadeo; et huic rei, de qua loquor, et dignitati tuae aequitatisque opinioni hoc ita facere expedit. Turpe tibi erit pantheras Graecas me non habere.

## 36. AD ATTICUM V. 21.

SCR. LAODICEAE IDIBUS FEBRUARIIS A.U.C. 704.

CICERO ATTICO SAL.

1. TE in Epirum salvum venisse et, ut scribis, ex sententia navigasse vehementer gaudeo, non esse Romae meo tempore pernecessario submoleste fero, hoc me tamen consolor: non spero te istic iucunde hiemare et libenter requiescere. 2. *C.* Cassius, frater Q. Cassii, familiaris tui, pudentiores illas litteras miserat — de quibus tu ex me requiris, quid sibi voluerint — quam eas, quas postea misit, quibus per se scribit confectum esse Parthicum bellum: recesserant illi quidem ab Antiochia ante Bibuli adventum, sed nullo nostro εὐημερήματι, hodie vero hiemant in Cyrrhestica maximumque bellum impendet; nam et Orodi, regis Parthorum, filius in provincia nostra est, nec dubitat Deiotarus, cuius filio pacta est Artavasdis filia, (ex quo sciri potest,) quin cum omnibus copiis ipse prima aestate Euphraten transiturus sit. Quo autem die Cassii litterae victrices in senatu recitatae sunt, id est Nonis Octobribus, eodem meae tumultum

"they are slashing at him with great vigour"
Manutius here says "Jure sordes sutrinum in Caelio damnavit antiquitas."
a law for repair of roads

put ostentatiously forward.

i.e. marriage of Tullia
"reputation for integrity"
Asia Minor was Hellenized now.
Lehmann thinks this a gloss on "Κιβυράτας."

We must read with Madv. consolor uno: spero.

He was 'quaestor' to M. Crassus in Syria & commanded his army till arrival of Bibulus.

not in consequence of any "coup-de-main" on our part.
i.e. Pacorus.
A. = king of Armenia D. = tetrarch of Galatia.
(& the information may come from him)
Orodes. or a good authority
Hofmann conj. "datae" for this as in Sep. Cic. had not heard of successes of Cassius ∴ how could a letter from Cassius have reached Rome by Oct. 4.

produced a great impression

no respect is paid to the demands of Caesar.

in such troublous times

= ἐπέχειν "bring to a dead-lock" I quake to think
am piling up the agony

I cannot help it; hope you may be right
Lehmann conj. ut peteret." I am reduced to hoping that
it may be so". a pretty finale

You put fresh sugar on the pill

Hermonis centurionis canule M. how few
Canulae codd. 'but'
Canulei margin of ~~Cent. edition~~ Lamb. edition.
Gron. caculae = 'a soldier's servant,' seems right.

will show my value for

give a decided No.

nuntiantes. Axius noster ait nostras auctoritatis plenas fuisse, illis negat creditum. Bibuli nondum erant allatae, quas certo scio plenas timoris fore. 3. Ex iis rebus hoc vereor, ne, cum Pompeius propter metum rerum novarum nusquam dimittatur, Caesari nullus honos a senatu habeatur, dum hic nodus expediatur, non putet senatus nos, antequam successum sit, oportere decedere nec in tanto motu rerum tantis provinciis singulos legatos praeesse. Hic, ne quid mihi prorogetur, quod ne intercessor quidem sustinere possit, horreo, atque eo magis, quod tu abes, qui consilio, gratia, studio multis rebus occurreres. [Sed] dices me ipsum mihi sollicitudinem struere: cogor, et velim ita sit. Sed omnia metuo. Etsi bellum ἀκροτελεύτιον habet illa tua epistola, quam dedisti nauseans Buthroto: 'tibi, ut video et spero, nulla ad decedendum mora.' Mallem 'ut video;' nihil opus fuit 'ut spero.' 4. Acceperam autem satis celeriter Iconii per publicanorum tabellarios a Lentuli triumpho datas. In his γλυκύπικρον illud confirmas, moram mihi nullam fore, deinde addis, si quid secus, te ad me esse venturum. Angunt me dubitationes tuae; simul et vides, quas acceperim litteras. Nam quas Hermoni, centurionis Canuleii, ipse scribis te dedisse, non accepi. Laenii pueris te dedisse saepe ad me scripseras: eas Laodiceae denique, cum eo venissem, tertio Idus Februar. Laenius mihi reddidit, datas a. d. x. Kal. Octobres. Laenio tuas commendationes et statim verbis et reliquo tempore *re* probabo. 5. Eae litterae cetera vetera habebant, unum hoc novum, de Cibyratis pantheris. Multum te amo, quod respondisti M. Octavio te non putare; sed posthac omnia, quae certa non erunt, pro certo negato. Nos enim et nostra sponte bene firmi

et mehercule auctoritate tua inflammati vicimus omnes —hoc tu ita reperies— cum abstinentia, tum iustitia, facilitate, clementia. Cave putes quicquam homines magis umquam esse miratos quam nullum teruncium me obtinente provinciam sumptus factum esse nec in rem publicam nec in quemquam meorum, praeterquam in L. Tullium legatum. Is, ceteroqui abstinens, [sed] Iulia lege transita, semel tamen in diem, non, ut alii solebant, omnibus vicis, [praeter eum semel nemo accepit] facit ut mihi excipiendus sit, cum teruncium nego sumptus factum; praeter eum accepit nemo. 6. Has a nostro Q. Titinio sordes accepimus. Ego aestivis confectis Quintum fratrem hibernis et Ciliciae praefeci; Q. Volusium, tui Tiberii generum, certum hominem et mirifice abstinentem, misi in Cyprum, ut ibi pauculos dies esset, ne cives Romani pauci, qui illic negotiantur, ius sibi dictum negarent; nam evocari ex insula Cyprios non licet. 7. Ipse in Asiam profectus sum Tarso Nonis Ianuariis, non mehercule dici potest, qua admiratione Ciliciae civitatum maximeque Tarsensium; postea vero quam Taurum transgressus sum, mirifica exspectatio Asiae nostrarum dioecesium, quae sex mensibus imperii mei nullas meas acceperat litteras, numquam hospitem viderat. Illud autem tempus quotannis ante me fuerat in hoc quaestu: civitates locupletes, ne in hiberna milites reciperent, magnas pecunias dabant, Cyprii talenta Attica cc., qua ex insula—non ὑπερβολικῶς, sed verissimè loquor —nummus nullus me obtinente erogabatur. Ob haec beneficia, quibus illi obstupescunt, nullos honores mihi nisi verborum decerni sino; statuas, fana, τέθριππα prohibeo, nec sum in ulla re alia molestus civitatibus, sed fortasse tibi, qui haec praedicem de me. Perfer, si me

"there has not been a farthing of defense either on public objects or". . . .

M has transitans. Acc. transita which cannot = violata. Besides the Julian law was not transgressed.
Tyrrell thinks that under "transitans" lurks "in transitu" an interlinear gloss for ἐν πορείᾳ = in my progress through the provinces under the provisions of the Julian law, fully once, however, for the days needs."
disgrace after the summer campaign
a safe.

districts
letters of requisition
"that part of every year was spent in the following profitable way"
nearly £50,000 I am not drawing the long bow
was drawn.

Chaints with statues in them.

I had reason to be glad of

had stood

greatly

if I am not obliged to extend my years of office

July 30

wife of Severino Salfriano

amas; tu enim me haec facere voluisti. 8. Iter igitur ita per Asiam feci, ut etiam fames, qua nihil miserius est, quae tum erat in hac mea Asia—messis enim nulla fuerat—, mihi optanda fuerit: quacumque iter feci, nulla vi, nullo iudicio, nulla contumelia, auctoritate et cohortatione perfeci, ut et Graeci et cives Romani, qui frumentum compresserant, magnum numerum populis pollicerentur. 9. Idibus Februariis, quo die has litteras dedi, forum institueram agere Laodiceae Cibyraticum et Apamense, ex Idibus Martiis ibidem Synnadense, Pamphylium — tum Phemio dispiciam κέρας—, Lycaonium, Isauricum; ex Idibus Maiis in Ciliciam, ut ibi Iunius consumatur, velim tranquille a Parthis. Quinctilis, si erit, ut volumus, in itinere est per provinciam redeuntibus consumendus: venimus enim *in* provinciam [Laodiceam] Sulpicio et Marcello consulibus, pridie Kalendas Sextiles; inde nos oportet decedere a. d. III. Kalendas Sextiles. Primum contendam a Quinto fratre, ut se praefici patiatur, quod et illo et me invitissimo fiet; sed aliter honeste fieri non potest, praesertim cum virum optimum, Pomptinum, ne nunc quidem retinere possim: rapit hominem [enim] Postumius Romam, fortasse etiam Postumia. Habes consilia nostra. Nunc cognosce de Bruto. 10. Familiares habet Brutus tuus quosdam creditores Salaminiorum ex Cypro, M. Scaptium et P. Matinium, quos mihi maiorem in modum commendavit. Matinium non novi; Scaptius ad me in castra venit: pollicitus sum curaturum me Bruti causa, ut ei Salaminii pecuniam solverent; egit gratias. Praefecturam petivit: negavi me cuiquam negotianti dare, quod idem tibi ostenderam. Cn. Pompeio petenti probaram institutum meum, quid dicam? Torquato de M. Laenio

tuo, multis aliis: si praefectus vellet esse syngraphae causa, me curaturum ut exigeret. Gratias egit, discessit. Appius noster turmas aliquot equitum dederat huic Scaptio, per quas Salaminios coërceret, et eundem habuerat praefectum; vexabat Salaminios. Ego equites ex Cypro decedere iussi: moleste tulit Scaptius. 11. Quid multa? ut ei fidem meam praestarem, cum ad me Salaminii Tarsum venissent et in iis Scaptius, imperavi ut pecuniam solverent. Multa de syngrapha, de Scaptii iniuriis: negavi me audire. Hortatus sum, petivi etiam pro meis in civitatem beneficiis, ut negotium conficerent; denique dixi me coacturum. Homines non modo non recusare, sed etiam hoc dicere, se a me solvere; quod enim praetori dare consuessent, (quoniam ego non acceperam,) se a me quodam modo dare, atque etiam minus esse aliquanto in Scaptii nomine quam in vectigali praetorio. Collaudavi homines. 'Recte,' inquit Scaptius 'sed subducamus summam.' Interim cum ego in edicto tralaticio centesimas me observaturum haberem cum anatocismo anniversario, ille ex syngrapha postulabat quaternas. 'Quid ais?' inquam 'possumne contra meum edictum?' At ille profert senatus consultum Lentulo Philippoque consulibus, VT QVI CILICIAM OBTINERET IVS EX ILLA SYNGRAPHA DICERET. 12. Cohorrui primo; etenim erat interitus civitatis: reperio duo senatus consulta isdem consulibus de eadem syngrapha; Salaminii cum Romae versuram facere vellent, non poterant, quod lex Gabinia vetebat. Tum iis Bruti familiares, freti gratia Bruti, dare volebant quaternis, si sibi senatus consulto caveretur. Fit gratia Bruti senatus consultum, VT NEVE SALAMINIIS NEVE QVI EIS DEDISSET FRAVDI ESSET: pecuniam numerarunt. [Et] postea venit,

should get his debt paid

governors
were paying out of my pocket
" Indeed. Because a pithe remark to atticus.
"they the exactions of governors had usually cost them".

I thanked them heartily

let us enter into the accounts
find the rate of interest at 12 % at compound
interest reckoned yearly, he demanded on his
bond 48 %.

should treat the bond as a legal document

U/68-64 when G. was tribune.

excluded the bond from being good in law at all

Boot fills up "pro diceretur; non ut alio jure ex syngrapha".
He is justified by the logic of the passage. explained

induce them to pay

all we want then is for you to compare accounts

the accounts agree to a penny

I indulged him

with compound interest

"For other he fell back on 12% on good security".
Clarke would insert "non" before "contentus". Being allowed
Tyrrell thinks "bono nomine" = his claim
to be good by the Salaminians i.e. claim of 200 talents.

M. Cato

12% simple interest should be the standard rate

en passant

of our coming to a general repudiation

allowed a little postponement of day of payment
So called in De Nat. Deor.

sc. periculum

in mentem faeneratoribus nihil se iuvare illud senatus consultum, quod ex syngrapha ius dici lex Gabinia vetaret. Tum fit senatus consultum, VT EX EA SYNGRAPHA * * * esset quam ceterae, sed ut eodem. Cum haec disseruissem, seducit me Scaptius; ait se nihil contra dicere, sed illos putare talenta cc. se debere; ea se velle accipere, debere autem illos paulo minus; rogat, ut eos ad ducenta perducam. 'Optime' inquam. Voco illos ad me, remoto Scaptio. 'Quid vos? quantum' inquam 'debetis?' Respondent 'CVI.' Refero ad Scaptium. Homo clamare. 'Quid opus est' inquam 'quam *ut* rationes conferatis?' Adsidunt, subducunt; *ad* nummum convenit. Illi se numerare velle, urgere, ut acciperet. Scaptius me rursus seducit, rogat, ut rem sic relinquam. Dedi veniam homini impudenter petenti; Graecis querentibus, ut in fano deponerent postulantibus, non concessi. Clamare omnes qui aderant, nihil impudentius Scaptio, qui centesimis cum anatocismo contentus non esset; alii, nihil stultius. Mihi autem impudens magis quam stultus videbatur: nam aut bono nomine centesimis contentus erat aut non bono quaternas centesimas sperabat.

13. Habes meam causam, quae si Bruto non probatur, nescio, cur illum amemus, sed avunculo eius certe probabitur, praesertim cum senatus consultum modo factum sit, puto, postquam tu es profectus, in creditorum causa, ut centesimae perpetuo faenore ducerentur; hoc quid intersit, si tuos digitos novi, certe habes subductum. In quo quidem, δδοῦ πάρεργον, *L.* Lucceius M. f. queritur apud me per litteras summum esse periculum, ne culpa senatus his decretis res ad tabulas novas perveniat; commemorat, quid olim mali C. Iulius fecerit, cum dieculam duxerit; numquam rei publicae plus. Sed ad

rem redeo. Meditare adversus Brutum causam meam, si haec causa est, contra quam nihil honeste dici potest, praesertim cum integram rem et causam reliquerim. 14. Reliqua sunt domestica. De ἐνδομύχῳ probo idem, quod tu, Postumiae filio, quoniam Pontidia nugatur; sed vellem adesses. A Quinto fratre his mensibus nihil exspectaris; nam Taurus propter nives ante mensem Iunium transiri non potest. Thermum, ut rogas, creberrimis litteris fulcio. P. Valerium negat habere quicquam Deiotarus rex, eumque ait se sustentare. Cum scies, Romae intercalatum sit necne, velim ad me scribas certum, quo die mysteria futura sint. Litteras tuas minus paulo exspecto, quam si Romae esses, sed tamen exspecto.

## 37. AD FAMILIARES II. 13.

SCR. LAODICEAE MENSE MAIO INEUNTE A.U.C. 704.

M. CICERO IMP. S. D. M. CAELIO AEDILI CUR.

1. RARAS tuas quidem—fortasse enim non perferuntur —, sed suaves accipio litteras, vel quas proxime acceperam, quam prudentes! quam multi et officii et consilii! etsi omnia sic constitueram mihi agenda, ut tu admonebas, tamen confirmantur nostra consilia, cum sentimus prudentibus fideliterque suadentibus idem videri. 2. Ego Appium—ut saepe tecum locutus sum—valde diligo meque ab eo diligi statim coeptum esse, ut simultatem deposuimus, sensi; nam et honorificus in me consul fuit et suavis amicus et studiosus studiorum etiam meorum. Mea vero officia ei non defuisse tu es testis, cui iam κωμικὸς μίστης, ut opinor, accedit Phania, et mehercule etiam pluris eum feci, quod te amari ab eo sensi. Iam me Pompeii totum esse scis; Brutum a me amari intellegis.

"affaire de famille" betrothal of Tullia
Pontidia was for Dolabella. Sulpicius the younger
Postumia was for Servius

I keep jogging Gov. Asia as proprætor 53-50.

Rites of "Bona Dea" usually held at
beginning of May.

charming
By instance the letter I received last, how sensible
it was! What kindness & judgement it displayed!
"I am strengthened in purpose".

He wrote a book on the Augur's office.
"a witness in a comedy" Cf. Cic. Sen. 36 "comicos stultos
senes". The ref is to t[illegible] up in the nick of time
cf. V Liv. "Rather he comes like the catastrophe in
the old comedy."

attach myself to

Consul 54 Censor in 50

Cn. Pompey & Brutus, sons-in-law as augur.

"his kernel panegyric of our body."

Caelius said "scio tibi eum non esse odio"

my principles of practice

cf. "monstra quaedam non hominis, sed ferae nescio cujus immanis."

from a spirit of opposition not a difference of opinion"

had grown inactive

circuit

improved the finances of" the arrears

M has militaremque.

Vidi militemque "I got the soldiers properly posted".

H also reads "militemque".

Quid est causae, cur mihi non in optatis sit complecti hominem florentem aetate, opibus, honoribus, ingenio, liberis, propinquis, adfinibus, amicis collegam meum praesertim et in ipsa collegii laude et scientia studiosum mei? haec eo pluribus scripsi, quod *non* nihil significabant tuae litterae subdubitare *te*, qua essem erga illum voluntate. Credo te audisse aliquid: falsum est, mihi crede, si quid audisti. Genus institutorum et rationum mearum dissimilitudinem non nullam habet cum illius administratione provinciae: ex eo quidam suspicati fortasse sunt, animorum contentione, non opinionum dissensione me ab eo discrepare; nihil autem feci umquam neque dixi, quod contra illius existimationem esse vellem. Post hoc negotium autem et temeritatem nostri Dolabellae deprecatorem me pro illius periculo praebeo. 3. Erat in eadem epistola 'veternus civitatis:' gaudebam sane et congelasse nostrum amicum laetabar otio. Extrema pagella pupugit me tuo chirographo. Quid ais? Caesarem nunc defendit Curio? quis hoc putarat praeter me? nam, ita vivam, putavi. Di immortales! quam ego risum nostrum desidero! Mihi erat in animo, quoniam iurisdictionem confeceram, civitates locupletaram, publicanis etiam superioris lustri reliqua sine sociorum ulla querela conservaram, privatis summis infimis fueram iucundus, proficisci in Ciliciam Nonis Maiis et, cum prima aestiva attigissem *rem* militaremque conlocassem, decedere ex senatus consulto. Cupio te aedilem videre miroque desiderio me urbs adficit et omnes mei tuque in primis.

## 38. AD ATTICUM VI, 2.

SCR. LAODICEAE INEUNTE MENSE MAIO A.U.C. 704.

CICERO ATTICO SAL.

1. CUM Philogenes, libertus tuus, Laodiceam ad me salutandi causa venisset et se statim ad te navigaturum esse diceret, has ei litteras dedi, quibus ad eas rescripsi, quas acceperam a Bruti tabellario; et respondebo primum postremae tuae paginae, quae mihi magnae molestiae fuit, quod ad te scriptum est a Cincio de Statii sermone, in quo hoc molestissimum est, Statium dicere a me quoque id consilium probari. *Probari* autem? de isto hactenus. Dixerim me vel plurima vincla tecum summae coniunctionis optare, etsi sunt amoris artissima; tantum abest, ut ego ex eo, quo astricti sumus, laxari aliquid velim. 2. Illum autem multa de istis rebus asperius solere loqui saepe sum expertus, saepe etiam lenivi iratum: id scire te arbitror; in hac autem peregrinatione militiave nostra saepe incensum ira vidi, saepe placatum. Quid ad Statium scripserit, nescio: quicquid acturus de tali re fuit, scribendum tamen ad libertum non fuit. Mihi autem erit maximae curae, ne quid fiat secus, quam volumus quamque oportet; nec satis est in eius modi re se quemque praestare, ac maximae partes istius officii sunt pueri Ciceronis sive iam adulescentis; quod quidem illum soleo hortari. Ac mihi videtur matrem valde, ut debet, amare teque mirifice. Sed est magnum illud quidem, verum tamen multiplex pueri ingenium, *in* quo ego regendo habeo negotii satis. 3. Quoniam respondi postremae tuae paginae prima mea, nunc ad primam revertar tuam. Peloponnesias civitates omnes maritimas esse, hominis non nequam, sed etiam tuo iudicio probati, Dicaearchi

divorce of Pomponia.
no more of that. Let me say

which already connects us.

tour or shall I say campaign

"limit his responsibilities to himself"

a ruined one he was now 14 years old.

Refers to ability not character
Gell. opposes it to "fugi", "non malus sed inutilis."

a banking firm.
the cave & oracle of Trophonius in Lebadea, Boeotia.    atlas on many grounds

beau-ideal of a historian

Cic. puns "my Dicaearchus commanded my confidence in geography as completely as your Dicaearchians do in business matters."

transferred the passage bodily from
an uncorrected copy was found by Cardinal Mai in a Vatican palimpsest in 1822.

at this session
I have worked wonders

Two ways

have got their heads above water

they pleaded guilty

tabulis credidi: is multis nominibus in Trophoniana Chaeronis narratione Graecos in eo reprehendit, quod mare tantum secuti sunt, nec ullum in Peloponneso locum excipit. Cum mihi auctor placeret—etenim erat ἱστορικώτατος et vixerat in Peloponneso—, admirabar tamen et vix adcredens communicavi cum Dionysio; atque is primo est commotus, deinde, quod de isto Dicaearcho non minus bene existumabat quam tu de C. Vestorio, ego de M. Cluvio, non dubitabat quin ei crederemus: Arcadiae censebat esse Lepreon quoddam maritimum; Tenea autem et Aliphera et Tritia νεόκτιστα ei videbantur, idque τῷ τῶν νεῶν καταλόγῳ confirmabat, ubi mentio non fit istorum. Itaque istum ego locum totidem verbis a Dicaearcho transtuli. Phliasios autem dici sciebam, et ita fac ut habeas; nos quidem sic habemus. Sed primo me ἀναλογία deceperat, Φλιοῦς, Ὀποῦς, Σιπoῦς, quod Ὀπούντιοι, Σιπούντιοι. Sed hoc continuo correximus. 4. Laetari te nostra moderatione et continentia video: tum id magis faceres, si adesses. Atque hoc foro, quod egi ex Idibus Februariis Laodiceae ad Kal. Maias omnium dioecesium praeter Ciliciae, mirabilia quaedam effecimus: ita multae civitates omni aere alieno liberatae, multae valde levatae sunt; omnes suis legibus et iudiciis usae, αὐτονομίαν adeptae, revixerunt. His ego duobus generibus facultatem ad se aere alieno liberandas aut levandas dedi: uno, quod omnino nullus in imperio meo sumptus factus est—nullum cum dico, non loquor ὑπερβολικῶς—nullus, inquam, ne teruncius quidem. Hac autem re incredibile est quantum civitates emerserint. 5. Accessit altera. Mira erant in civitatibus ipsorum furta Graecorum, quae magistratus sui fecerant: quaesivi ipse de iis, qui annis decem proximis magistratum gesserant; aperte fatebantur.

Itaque sine ulla ignominia suis humeris pecunias populis rettulerunt; populi autem nullo gemitu publicanis, quibus hoc ipso lustro nihil solverant, etiam superioris lustri *reliqua* reddiderunt; itaque publicanis in oculis sumus. 'Gratis' inquis 'viris!' Sensimus. Iam cetera iuris dictio nec imperita et clemens cum admirabili facilitate; aditus autem ad me minime provinciales; nihil per cubicularium; ante lucem inambulabam domi, ut olim candidatus. Grata haec et magna mihique nondum laboriosa ex illa vetere militia. 6. Nonis Maiis in Ciliciam cogitabam; ibi cum Iunium mensem consumpsissem—atque utinam in pace! magnum enim bellum impendet a Parthis—, Quinctilem in reditu ponere; annuae enim mihi operae a. d. III. Kal. Sextil. emerentur: magna autem in spe sum mihi nihil temporis prorogatum iri. Habebam acta urbana usque ad Nonas Martias, e quibus intellegebam Curionis nostri constantia omnia potius actum iri quam de provinciis: ergo, ut spero, propediem te videbo. 7. Venio ad Brutum tuum, immo nostrum; sic enim mavis: equidem omnia feci, quae potui aut in mea provincia perficere aut in regno experiri. Omni igitur modo egi cum rege et ago quotidie, per litteras scilicet; ipsum enim triduum quadriduumve mecum habui turbulentis in rebus, quibus eum liberavi. Sed et tum praesens et postea creberrumis *litteris* non destiti rogare et petere mea causa, suadere et hortari sua: multum profeci, sed quantum, non plane, quia longe absum, scio. Salaminios autem—hos enim poteram coërcere—adduxi, ut totum nomen Scaptio vellent solvere, sed centesimis ductis a proxuma quidem syngrapha, nec perpetuis, sed renovatis quotannis. Numerabantur nummi: noluit Scaptius. Tu, qui ais Brutum cupere aliquid perdere?

expense out of their own pockets.

"without being incompetent"
chamberlain

"my years service expires."

attempt  i.e. Cappadocia.

i.e. Revolt of the Ariobarzanes prime-priest Archelaus.

not a simple but compound interest.
renovatis quotannis = cum anatocismo anniversario
I yield really quis quoi ais "What kind of figure do you cut now, you who say that Brutus is anxious to make a sacrifice".

validity

"correctly"

"Seriously now, Atticus, you who delight to praise
my righteousness & purity"

with those very lips

tortured

have [illegible]

inventing
is becoming

quaternas habebat in syngrapha. Fieri non poterat, nec, si posset, ego pati possem. Audio omnino Scaptium paenitere; nam quod senatus consultum esse dicebat, ut ius ex syngrapha diceretur, eo consilio factum est, quod pecuniam Salaminii contra legem Gabiniam sumpserant; vetabat autem Auli lex ius dici de ita sumpta pecunia: decrevit igitur senatus, ut ius diceretur *ex* ista syngrapha. Nunc ista habet iuris idem, quod ceterae, nihil praecipui. 8. Haec a me ordine facta puto me Bruto probaturum, tibi nescio; Catoni certe probabo. Sed iam ad te ipsum revertor: ain tandem, Attice, laudator integritatis et elegantiae nostrae,

ausus es hoc ex ore tuo — —.

inquit Ennius, ut equites Scaptio ad pecuniam cogendam darem, me rogare? an tu si mecum esses, qui scribis morderi te interdum, quod non simul sis, paterere me id facere, si vellem? 'non amplius' inquis 'quinquaginta.' Cum Spartaco minus multi primo fuerunt: quid tandem isti mali in tam tenera insula non fecissent? non fecissent autem? immo quid ante adventum meum non fecerunt? Inclusum in curia senatum habuerunt Salaminium ita multos dies, ut interierint non nulli fame; erat enim praefectus Appii Scaptius et habebat turmas ab Appio. Id me igitur tu, cuius mehercule os mihi ante oculos solet versari, cum de aliquo officio ac laude cogito, tu me, inquam, rogas, praefectus ut Scaptius sit? alias hoc statueramus, ut negotiatorem neminem, idque Bruto probaveramus. Habeat is turmas? cur potius quam cohortes? sumptu iam nepos evadit Scaptius. 9. 'Volunt' inquit 'principes.' Scio: nam ad me Ephesum usque venerunt flentesque equitum scelera et miserias suas detulerunt; itaque statim dedi litteras, ut ex Cypro

equites ante certam diem decederent, ob eamque causam, tum ob ceteras Salaminii nos in caelum decretis suis sustulerunt. Sed iam quid opus equitatu? solvunt enim Salaminii: nisi forte id volumus armis efficere, ut faenus quaternis centesimis ducant. Et ego audebo legere umquam aut attingere eos libros, quos tu dilaudas, si tale quid fecero? Nimis, *nimis*, inquam, in isto Brutum amasti, dulcissime Attice, nos vereor ne parum. Atque haec scripsi ego ad Brutum scripsisse te ad me. 10. Cognosce nunc cetera. Pro Appio nos hic omnia facimus, honeste tamen, sed plane libenter; nec enim ipsum odimus et Brutum amamus, et Pompeius mirifice a me contendit, quem mehercule plus plusque in dies diligo. C. Caelium quaestorem huc venire audisti. Nescio, quid sit; sed Pammenia illa mihi non placent. Ego me spero Athenis fore mense Septembri. Tuorum itinerum tempora scire sane velim. Εὐήθειαν Sempronii Rufi cognovi ex epistola Corcyraea: quid quaeris? invideo potentiae Vestorii. Cupiebam etiam nunc plura garrire, sed lucet: urget turba, festinat Philogenes. Valebis igitur et valere Piliam et Caeciliam nostram iubebis litteris et salvebis a meo Cicerone.

## 39. AD FAMILIARES XV. 5.

SCR. ROMAE A.U.C. 704.

M. CATO S. D. M. CICERONI IMP.

1. QUOD et res publica me et nostra amicitia hortatur, libenter facio, ut tuam virtutem, innocentiam, diligentiam cognitam in maximis rebus domi togati, armati foris pari industria administrare gaudeam: itaque, quod pro meo iudicio facere potui, ut innocentia consilioque tuo defensam provinciam, servatum Ariobarzanis cum ipso rege

naïveté

MSS. administrari = "is practised with equal solicitude by you as a general on foreign service".
Better to supply hem after administrare; written as ẽ it would easily drop out

consummate wisdom & self-control. hunts

prelude

supported that measure

continue in the path you have chosen

From Lucius' Auctor Proficiscens.

the greatest honour & pleasure
with a clear conscience

regnum, sociorum revocatam ad studium imperii nostri voluntatem sententia mea et decreto laudarem, feci. 2. Supplicationem decretam, si tu, qua in re nihil fortuito, sed summa tua ratione et continentia rei publicae provisum est, dis immortalibus gratulari nos quam tibi referre acceptum mavis, gaudeo: quod si triumphi praerogativam putas supplicationem et idcirco casum potius quam te laudari mavis, neque supplicationem sequitur semper triumphus et triumpho multo clarius est senatum iudicare potius mansuetudine et innocentia imperatoris provinciam quam vi militum aut benignitate deorum retentam atque conservatam esse; quod ego mea sententia censebam. 3. Atque haec ego idcirco ad te contra consuetudinem meam pluribus scripsi, ut, quod maxime volo, existimes me laborare, ut tibi persuadeam me et voluisse de tua maiestate, quod amplissimum sim arbitratus, et, quod tu maluisti, factum esse gaudere. Vale et nos dilige et instituto itinere severitatem diligentiamque sociis et rei publicae praesta.

## 40. AD FAMILIARES XV. 6.

SCR. IN CILICIA MENSE QUINTILI (?) A.U.C. 704.

M CICERO S. D. M. CATONI.

1. 'LAETUS sum laudari me' inquit Hector, opinor apud Naevium, 'abs te, pater, a laudato viro;' ea est enim profecto iucunda laus, quae ab iis proficiscitur, qui ipsi in laude vixerunt. Ego vero vel gratulatione litterarum tuarum vel testimoniis sententiae dictae nihil est quod me non adsecutum putem; idque mihi cum amplissimum, tum gratissimum est, te libenter amicitiae dedisse, quod liquido veritati dares. Et, si non modo omnes, verum etiam multi Catones essent in civitate nostra, in

qua unum exstitisse mirabile est, quem ego currum aut quam lauream cum tua laudatione conferrem? nam ad meum sensum et ad illud sincerum ac subtile iudicium nihil potest esse laudabilius quam ea tua oratio, quae est ad me perscripta a meis necessariis. 2. Sed causam meae voluntatis, non enim dicam cupiditatis, exposui tibi superioribus litteris, quae etiamsi parum iusta tibi visa est, hanc tamen habet rationem, non ut nimis concupiscendus honos, sed tamen, si deferatur a senatu, minime aspernandus esse videatur. Spero autem illum ordinem pro meis ob rem publicam susceptis laboribus me non indignum honore, usitato praesertim, existimaturum. Quod si ita erit, tantum ex te peto, quod amicissime scribis, ut, cum tuo iudicio, quod amplissimum esse arbitraris, mihi tribueris, si id, quod maluero, acciderit, gaudeas: sic enim fecisse te et sensisse et scripsisse video, resque ipsa declarat tibi illum honorem nostrum supplicationis iucundum fuisse, quod scribendo adfuisti; haec enim senatus consulta non ignoro ab amicissimis eius, cuius honor agitur, scribi solere. Ego, ut spero, te propediem videbo, atque utinam re publica meliore quam timeo!

## 41. AD FAMILIARES VIII. 14.

SCR. ROMAE MENSE SEPTEMBRI (?) A.U.C. 704.

CAELIUS CICERONI SAL.

1. TANTI non fuit Arsacen capere et Seleuceam expugnare, ut earum rerum, quae hic gestae sunt, spectaculo careres: numquam tibi oculi doluissent, si in repulsa Domitii voltum vidisses. Magna illa comitia fuerunt et plane studia ex partium sensu apparuerunt; perpauci necessitudinem secuti officium praestiterunt. Itaque mihi est Domitius inimicissimus, ut ne familiarem quidem

"in accordance with that ideally conscientious & discerning judgment of yours."

that as in your judgment you would be willing to grant me

the 1st king of Parthia in 256 B.C.
all other kings had this title like the Roman Augustus.
Mr. antony was elected mainly through Curio.

few were guided by personal feelings & satisfied obligations of duty

The archaic "quoius" is used by M.
It should be kept as in Caelius' style.
Virtually obligé "of which on his theory I was the author".
M has "unumquemque magis studiosiorem"
Tyrrell suggests "vivere" for "more" = "so that a single man should live who was more devoted to Ant. than to him" as is proved by his own accusing act.

Usual alteration for corrupt "non expectationem incert etiam in bona spe".

annuam Btr. annum M. ad annum Wes. "till a year has passed".
The point in question is

compromise
thus their love for one another & their devoted union has not drifted into secret bickering

making up your mind
the Pompeians.
MSS give necessitudinem cum. Perhaps "necessitudo intima"
sc. Caesaris
MSS. have unde for non. Perhaps "minime."
"with constitutional weapons"

The jurors. Often coupled with Senate

suum quemquam tam oderit quam me, atque eo magis, quod per iniuriam sibi putat *auguratum* ereptum, cuius ego auctor fuerim. Nunc furit tam gavisos homines suum dolorem unumque modo me studiosiorem Antonii: nam Cn. Saturninum adulescentem ipse Cn. Domitius reum fecit, sane quam superiore a vita invidiosum; quod iudicium nunc in exspectatione est, etiam in bona spe, post Sex. Peducaei absolutionem. 2. De summa re publica saepe tibi scripsi, me annuam pacem non videre, et quo propius ea contentio, quam fieri necesse est, accedit, eo clarius id periculum apparet. Propositum hoc est, de quo, qui rerum potiuntur, sunt dimicaturi, quod Cn. Pompeius constituit non pati C. Caesarem consulem aliter fieri, nisi exercitum et provincias tradiderit; Caesari autem persuasum est se salvum esse non posse, *si* ab exercitu recesserit. Fert illam tamen condicionem, ut ambo exercitus tradant. Sic illi amores et invidiosa coniunctio non ad occultam recidit obtrectationem, sed ad bellum se erupit; neque, mearum rerum quid consilii capiam, reperio; quod non dubito, quin te quoque haec deliberatio sit perturbatura. Nam mihi cum hominibus his et gratia et necessitudo est: causam illam, non homines odi. 3. Illud te non arbitror fugere, quin homines in dissensione domestica debeant, quam diu civiliter sine armis certetur, honestiorem sequi partem, ubi ad bellum et castra ventum sit, firmiorem, et id melius statuere, quod tutius sit. In hac discordia video Cn. Pompeium senatum quique res iudicant secum habiturum, ad Caesarem omnes, qui cum timore aut mala spe vivant, accessuros, exercitum conferendum non esse. Omnino satis spatii est ad considerandas utriusque copias et eligendam partem. 4. Prope oblitus sum, quod maxime

fuit scribendum: scis Appium censorem hic ostenta facere? de signis et tabulis, de agri modo, de aere alieno acerrime agere? persuasum est ei censuram lomentum aut nitrum esse: errare mihi videtur; nam *dum* sordes eluere volt, venas sibi omnes et viscera aperit. Curre, per deos atque homines! et quam primum haec risum veni, legis Scantiniae iudicium apud Drusum fieri, Appium de tabulis et signis agere; crede mihi, est properandum. Curio noster sapienter id, quod remisit de stipendio Pompeii, fecisse existimatur. Ad summam, quaeris, quid putem futurum: si alteruter eorum ad Parthicum bellum non eat, video magnas impendere discordias, quas ferrum et vis *di*iudicabit: uterque et animo et copiis est paratus. Si sine tuo periculo fieri posset, magnum et iucundum tibi Fortuna spectaculum parabat.

## 42. AD ATTICUM VI. 6.

SCR. SIDAE INEUNTE MENSE SEXTILI A.U.C. 704.

CICERO ATTICO SAL.

1. EGO, dum in provincia omnibus rebus Appium orno, subito sum factus accusatoris eius socer. 'Id quidem' inquis 'di adprobent!' Ita velim, teque ita cupere certo scio; sed crede mihi, nihil minus putaram ego, qui de Ti. Nerone, qui mecum egerat, certos homines ad mulieres miseram, qui Romam venerunt factis sponsalibus. Sed hoc spero melius; mulieres quidem valde intellego delectari obsequio et comitate adulescentis: cetera noli ἐξακανθίζειν. 2. Sed heus tu, πυροὺς εἰς δῆμον Athenis? placet hoc tibi? etsi non impediebant mei certe libri; non enim ista largitio fuit in cives, sed in hospites liberalitas. Me tamen de Academiae προπύλῳ iubes cogitare, cum iam Appius de Eleusine non cogitet? De Hortensio

"is doing marvels"
amount of
soap or nitre (washing soda)
stains on his character
come to laugh at this.
in eos qui nefanda venere utebantur

= winter

M has sine suo. Read with Klotz "sine summo".
Fortune is preparing

deference
"we must not look our gift-horse in the mouth".

gilly somewhat corrupt

you were quite "balancé"

balancement

Z Tomaesiunus had "tenderem".

violence of temper & language

& such things will happen

headstrong

"would not part with him & was annoyed with you for saying that he should."

Quod egerit M, Quod egeret C

for text: "I do not discuss his antecedents"

ehmann points out that there is an aposiopesis - non actum

quod egerit "I do not say let bygones be bygones"

Tyrrell inserts non before quid & points at egerit & renders

"I do not say I am indifferent to his antecedents but much less concerned about them".

"back-bone" & make him a spy on

te certo scio dolere, equidem excrucior; decreram enim cum eo valde familiariter vivere. 3. Nos provinciae praefecimus Caelium: 'puerum' inquies 'et fortasse fatuum et non gravem et non continentem.' Adsentior: fieri non potuit aliter. Nam quas multo ante tuas acceperam litteras, in quibus ἐπέχειν te scripseras, quid esset mihi faciendum de relinquendo, eae me pungebant; videbam enim, quae tibi essent ἐποχῆς causae, et erant eaedem mihi: puero tradere? fratri autem? illud non utile nobis; nam praeter fratrem nemo erat, quem sine contumelia quaestori, nobili praesertim, anteferrem. Tamen, dum impendere Parthi videbantur, statueram fratrem relinquere aut etiam rei publicae causa contra senatus consultum ipse remanere, qui posteaquam incredibili felicitate discesserunt, sublata dubitatio est. Videbam sermones: 'hui, fratrem reliquit! num est hoc non plus annum obtinere provinciam? quid, quod senatus eos voluit praeesse provinciis, qui non praefuissent? at hic triennium.' 4. Ergo haec ad populum. Quid, quae tecum? Numquam essem sine cura, si quid iracundius aut contumeliosius aut neglegentius, quae fert vita hominum. Quid, si quid filius puer et puer bene sibi fidens? qui esset dolor? quem pater non dimittebat teque id censere moleste ferebat. At nunc Caelius, non dico equidem quid egerit, sed tamen multo minus laboro. Adde illud: Pompeius, eo robore vir, iis radicibus, Q. Cassium sine sorte delegit, Caesar Antonium; ego sorte datum offenderem, ut etiam inquireret in eum, quem reliquissem? Hoc melius, et huius rei plura exempla, senectuti quidem nostrae profecto aptius. At te apud eum, di boni! quanta in gratia posui, eique legi litteras non tuas, sed librarii tui. Amicorum litterae me ad triumphum vocant, rem a nobis, ut

ego arbitror, propter hanc παλιγγενεσίαν nostram non neglegendam: qua re tu quoque, mi Attice, incipe id cupere, quo nos minus inepti videamur.

## 43. AD FAMILIARES XIV. 5.

SCR. ATHENIS A. D. XV. KAL. NOVEMB. A.U.C. 704.

TULLIUS S. D. TERENTIAE SUAE.

1. Si tu et Tullia, lux nostra, valetis, ego et suavissimus Cicero valemus. Pr. Idus Oct. Athenas venimus, cum sane adversis ventis usi essemus tardeque et incommode navigassemus. De nave exeuntibus nobis Acastus cum litteris praesto fuit uno et vicensimo die, sane strenue. Accepi tuas litteras, quibus intellexi te vereri ne superiores mihi redditae non essent: omnes sunt redditae diligentissimeque a te perscripta sunt omnia; idque mihi gratissimum fuit. Neque sum admiratus hanc epistolam, quam Acastus attulit, brevem fuisse; iam enim me ipsum exspectas sive nos ipsos, qui quidem quam primum ad vos venire cupimus, etsi, in quam rem publicam veniamus, intellego: cognovi enim ex multorum amicorum litteris, quas attulit Acastus, ad arma rem spectare, ut mihi, cum venero, dissimulare non liceat, quid sentiam. Sed, quoniam subeunda fortuna est, eo citius dabimus operam, ut veniamus, quo facilius de tota re deliberemus. Tu velim, quod commodo valetudinis tuae fiat, quam longissime poteris obviam nobis prodeas. 2. De hereditate Preciana, quae quidem mihi magno dolori est—valde enim illum amavi—, sed hoc velim cures: si auctio ante meum adventum fiet, ut Pomponius aut, si is minus poterit, Camillus nostrum negotium curet. Nos cum salvi venerimus, reliqua per nos agemus; sin tu iam Roma profecta eris, tamen curabis, ut hoc ita fiat.

"renaissance"

."that war is looming in the distance"

d. Precius is mentioned in Bellines as a Roman knight at Panormus.

For vos where only one is mentioned
cf. Aen. I 140 "vestras, Eure, domos".

So M. Boot cong. "of Platina" Bosius" puts tu" "there's one thing
I must call your attention to"
Tyrrell "puts te me" or some Greek word like πατητὸν
"I acknowledged"

has paid

will recover his health

return of the quartan ague "accès"

I look upon the whole thing with equanimity

Nos, si di adiuvabant, circiter Idus Novembres in Italia speramus fore. Vos, mea suavissima et optatissima Terentia, si nos amatis, curate ut valeatis. [Vale.] Athenis a. d. xv. Kal. Novemb.

## 44. AD ATTICUM VII. 7.

SCR. XIII. KAL. IANUARIAS A.U.C. 704.

CICERO ATTICO SAL.

1. 'DIONYSIUS, vir optimus, ut mihi quoque est perspectus, et doctissimus tuique amantissimus, Romam venit xv. Kalend. Ian. et litteras a te mihi reddidit:' tot enim verba sunt de Dionysio in epistola tua. Illud † putato non adscribis 'et tibi gratias egit:' atqui certe ille agere debuit, et, si esset factum, quae tua est humanitas, adscripsisses. Mihi autem nulla de eo *παλινῳδία* datur propter superioris epistolae testimonium. Sit igitur sane bonus vir; hoc enim ipsum bene fecit, quod mihi sui cognoscendi penitus etiam istam facultatem dedit. 2. Philogenes recte ad te scripsit; curavit enim quod debuit. Eum ego uti ea pecunia volui, quoad liceret; itaque usus est menses XIIII. 3. Pomptinum cupio valere, et, quod scribis in urbem introisse, vereor quid sit; nam id nisi gravi de causa non fecisset. Ego, quoniam III. Non. Ian. compitalicius dies est, nolo eo die in Albanum [venire], *ne* molestus familiae veniam: tertio Non [Ian.] igitur; inde ad urbem pridie Nonas. Tua λῆψις quem in diem incurrat, nescio, sed prorsus te commoveri incommodo valetudinis tuae nolo. 4. De honore nostro, nisi quid occulte Caesar per suos tribunos molitus erit, cetera videntur esse tranquilla; tranquillissimus autem animus meus, qui totum istuc aequi boni facit, et eo magis, quod iam a multis audio constitutum esse Pompeio et eius

consilio in Siciliam me mittere, quod imperium habeam. Id est 'Αβδηριτικόν. Nec enim senatus decrevit nec populus iussit me imperium in Sicilia habere; sin hoc res publica ad Pompeium defert, qui me magis quam privatum aliquem mittat? itaque, si hoc imperium mihi molestum erit, utar ea porta, quam primam videro. 5. Nam, quod scribis mirificam exspectationem esse mei neque tamen quemquam bonorum aut satis bonorum dubitare, quid facturus sim, ego, quos tu bonos esse dicas, non intellego—ipse nullos novi—, sed ita, si ordines bonorum quaerimus. Nam singulares sunt boni viri, verum in dissensionibus ordines bonorum et genera quaerenda sunt. Senatum bonum putas, per quem sine imperio provinciae sunt?—numquam enim Curio sustinuisset, si cum eo agi coeptum esset, quam sententiam senatus sequi noluit, ex quo factum est ut Caesari non succederetur—an publicanos? qui numquam firmi, sed nunc Caesari sunt amicissimi,—an faeneratores? an agricolas? quibus optatissimum est otium, nisi eos timere putas, ne sub regno sint, qui id numquam, dum modo otiosi essent, recusarunt. 6. Quid ergo? exercitum retinentis, cum legis dies transierit, rationem haberi placet? Mihi vero ne absentis quidem. Sed, cum id datum est, illud una datum est. 'Annorum enim decem imperium et ita latum *placet?*' Placet igitur etiam me expulsum et agrum Campanum perisse et adoptatum patricium a plebeio, Gaditanum a Mytilenaeo, et Labieni divitiae et Mamurrae placent et Balbi horti et Tusculanum. Sed horum omnium fons unus est: imbecillo resistendum fuit, et id erat facile; nunc legiones XI., equitatus tantus, quantum volet, Transpadani, plebes urbana, tot tribuni pl., tam perdita iuventus, tanta auctoritate dux, tanta audacia. Cum hoc aut depugnandum est aut

Because I have military command
"sheer lunacy"

"I shall avail myself of the first gate I see"
whi often means put up with as a last resort Q. ato vi

"let me tell you I do not know whom you mean by the right side"
parties honest for parties which may be said to be on the right side
assuming that we are looking
Ordines = political
genera = social

negotiated persevered in opposition
Sententiam of the consul Marcellus.

shall we allow to stand
When the one was given the other went into it
"Why then (Atticus says) do you approve of the 10 years term of command in Gaul & the unconstitutional way of obtaining." ~~[illegible]~~ I approve of my banishment

59
L. Cornelius Balbus & Theophanes.

weak

Proposed by Tribunes of 52.

Thes. corrects to "factorus".

in our sad straits / even to ruin

it is required, as being in Oratio Obliqua. Thes.

this & ἐμπολιτεύομαι of M are equally unknown in this sense.

Adulescens from 15–30.

" he was bidding fair to do so."

denoting a compound object which can be repeated or counted.

Asconius says " via Appia est prope urbem monumentum Basili, qui locus latrociniis fuit perinfamis"

you must decide

habenda e lege ratio. 7. 'Depugna' inquis 'potius quam servias.' Ut quid? si victus eris, proscribare? si viceris, tamen servias? 'Quid ergo' inquis 'acturus es?' idem quod pecudes, quae dispulsae sui generis sequuntur greges: ut bos armenta, sic ego bonos viros aut eos, quicumque dicentur boni, sequar, etiam si ruent. Quid sit optimum male contractis rebus plane video: nemini est enim exploratum, cum ad arma ventum est, quid futurum sit, at illud omnibus, si boni victi sint, nec in caede principum clementiorem hunc fore, quam Cinna fuerit, nec moderatiorem quam Sulla in pecuniis locupletium. Συμπολιτεύομαί σοι iam dudum, et facerem diutius, nisi me lucerna desereret. Ad summam, 'DIC M. TVLLI.' 'Adsentior Cn. Pompeio,' id est T. Pomponio. Alexim, humanissimum puerum, nisi forte, dum ego absum, adulescens factus est—id enim agere videbatur—, salvere iubeas velim.

## 45. AD ATTICUM VII. 9.

SCR. IN FORMIANO EXEUNTE MENSE DECEMBRI A.U.C. 704.

CICERO ATTICO SAL.

1. 'QUOTIDIENE' inquis 'a te accipiendae litterae sunt?' si habebo, cui dem, quotidie. 'At iam ipse ades.' Tum igitur, cum venero, desinam. Unas video mihi a te non esse redditas, quas L. Quinctius, familiaris meus, cum ferret, ad bustum Basili volneratus et spoliatus est. 2. Videbis igitur, num quid fuerit in iis, quod me scire opus sit, et simul hoc διευκρινήσεις πρόβλημα sane πολιτικόν: cum sit necesse aut[1] haberi Caesaris rationem, illo exercitum vel per senatum vel per tribunos pl. obtinente, aut[2] persuaderi Caesari, ut tradat provinciam atque exercitum et ita consul fiat, aut,[3] si id ei non persuadeatur, haberi comitia sine illius ratione, illo patiente atque obtinente

provinciam, aut, si per tribunos pl. non patiatur, tamen quiescat, rem adduci ad interregnum, aut, si ob eam causam, quod ratio eius non habeatur, exercitum adducat, armis cum eo contendere, illum autem initium facere armorum aut statim nobis minus paratis aut tum, cum comitiis, amicis eius postulantibus, ut e lege ratio habeatur, impetratum non sit, ire autem ad arma aut hanc unam ob causam, quod ratio non habeatur, aut addita causa, si forte tribunus pl. senatum impediens aut populum incitans notatus aut senatus consulto circumscriptus aut sublatus aut expulsus sit dicensve se expulsum ad illum confugerit, suscepto autem bello aut tenenda sit urbs aut ea relicta ille commeatu et reliquis copiis intercludendus,—quod horum malorum, quorum aliquod certe subeundum est, minimum putes: 3. dices profecto persuaderi illi, ut tradat exercitum et ita consul fiat. Est omnino id eius modi, ut, si ille eo descendat, contra dici nihil possit, idque eum, si non obtineat, ut ratio habeatur retinentis exercitum, non facere mirer; nobis autem, ut quidam putant, nihil est timendum magis quam ille consul. 'At sic malo' inquies 'quam cum exercitu.' Certe. Sed istud ipsum, dico, magnum malum putat aliquis, neque ei remedium est ullum. 'Cedendum est, si id volet.' Vide consulem illum iterum, quem vidisti consulatu priore. 'At tum imbecillus plus' inquit 'valuit quam tota res publica.' Quid nunc putas? et eo consule Pompeio certum est esse in Hispania. O rem miseram! si quidem id ipsum deterrimum est, quod recusari non potest, et quod ille si faciat, iamiam *a* bonis omnibus summam ineat gratiam. 4. Tollamus igitur hoc, quo illum posse adduci negant: de reliquis quid est deterrimum? concedere illi, quod, ut idem dicit, impudentissime

Declared thus:–
C. "ea quae facta essent contra rempublicam facta esse"
1 censured
2 limited in powers C. Si quis aliter fecisset eum contra rempub. fecturum
3 { suspended / deprived } of office C. videant consules ne quid detrimenti resp. capiat
9. Met. Nepos = sublatus in 62 B.C.

"would stoop so low."
M has obtinet – pueros. Tyrrell " & since he is not carrying his point... I wonder he does not take this course." The indic. in antecedent of a conditional clause is defended by Hoffman.

[Md] voted ponns sic. M", ponam, dico Em. This ought to be ingnam. Tyrrell prefers" sic malo" "The very attitude of mind which makes you say", sic malo" is what seems to some-one (Pompey) so deplorable".
Cic. saw Pompey on Dec. 25 & Jan. 14. 49.

"Let us put this alternative out of the question."

his unblushing request

capice

Cic. anticipates as commander was not up till March 1. 49.
cf. invidia senatoria hatred felt for Senate. Clement. 44.

death before dishonour

"the thoughts be applied in it (struggle) depends on the circumstances of the time when it begins."

I am on the rack.

Ultimum decretum on Jan. 6.
Caesar crossed Rubicon Jan. 12.

postulat. Nam quid impudentius? Tenuisti provinciam per decem annos, non tibi a senatu, sed a te ipso per vim et per factionem datos; praeteriit tempus non legis, sed libidinis tuae, fac tamen, legis; ut succedatur, decernitur; impedis et ais 'habe meam rationem.' Habe nostrum. Exercitum tu habeas diutius, quam populus iussit, invito senatu? 'depugnes oportet, nisi concedis.' Cum bona quidem spe, ut ait idem, vel vincendi vel in libertate moriendi. Iam si pugnandum est, quo tempore, in casu, quo consilio, in temporibus situm est; itaque te in ea quaestione non exerceo. Ad ea, quae dixi, adfer, si quid habes; equidem dies noctesque torqueor.

# M. TULLII CICERONIS

## EPISTOLAE SELECTAE.

## PARS III.

### 46. AD ATTICUM VII. 10.

SCR. AD URBEM XIV. KAL. FEBRUARIAS A.U.C. 705.

CICERO ATTICO SAL.

SUBITO consilium cepi, ut ante quam luceret exirem, ne qui conspectus fieret aut sermo, lictoribus praesertim laureatis. De reliquo neque hercule quid agam nec quid acturus sim scio; ita sum perturbatus temeritate nostri amentissimi consilii. Tibi vero quid suadeam, cuius ipse consilium exspecto? Gnaeus noster quid consilii ceperit capiatve nescio, adhuc in oppidis coartatus et stupens. Omnes, si in Italia consistat, erimus una; sin cedet, consilii res est. Adhuc certe, nisi ego insanio, stulte omnia et incaute. Tu, quaeso, crebro ad me scribe vel quod in buccam venerit.

### 47. AD ATTICUM VII. 11.

SCR. IN CAMPANIA MENSE IANUARIO A.U.C. 705.

CICERO ATTICO SAL.

1. QUAESO, quid hoc est? aut quid agitur? mihi enim tenebrae sunt: 'Cingulum' inquit 'nos tenemus, Anconem amisimus; Labienus discessit a Caesare.' Utrum de imperatore populi Romani an de Hannibale loquimur? o hominem amentem et miserum, qui ne umbram quidem

umquam τοῦ καλοῦ viderit! Atque haec ait omnia facere se dignitatis causa. Ubi est autem dignitas nisi ubi honestas? honestum igitur habere exercitum nullo publico consilio? occupare urbes civium, quo facilior sit aditus ad patriam? χρεῶν ἀποκοπάς, φυγάδων καθόδους, sescenta alia scelera moliri,

τὴν θεῶν μεγίστην ὥστ' ἔχειν τυραννίδα—?

Sibi habeat suam fortunam! unam mehercule tecum apricationem in illo lucrativo tuo sole malim quam omnia istius modi regna, vel potius mori millies quam semel istius modi quicquam cogitare. 2. 'Quid si tu velis?' inquis. Age quis est, cui velle non liceat? Sed ego hoc ipsum velle miserius esse duco quam in crucem tolli; una res est ea miserior, adipisci quod ita volueris. Sed haec hactenus; libenter enim in his molestiis ἐνσχολάζω † *cocon.* 3. Redeamus ad nostrum: per fortunas! quale tibi consilium Pompeii videtur? hoc quaero, quod urbem reliquerit. Ego enim ἀπορῶ. Tum nihil absurdius. Urbem tu relinquas? ergo idem, si Galli venirent. 'Non est' inquit 'in parietibus res publica.' At in aris et focis. 'Fecit Themistocles; fluctum enim totius barbariae ferre urbs una non poterat.' At idem Pericles non fecit, annum fere post quinquagesimum, cum praeter moenia nihil teneret, *et* nostri olim urbe reliqua capta arcem tamen retinuerunt:

οὕτω που τῶν πρόσθεν ἐπευθόμεθα κλέα ἀνδρῶν.

4. Rursus autem ex dolore municipali sermonibusque eorum, quos convenio, videtur hoc consilium exitum habiturum: mira hominum querela est—nescio istic, sed facies ut sciam—, sine magistratibus urbem esse, sine senatu; fugiens denique Pompeius mirabiliter homines movet: quid quaeris? alia causa facta est; nihil iam

concedendum putant Caesari. Haec tu mihi explica qualia sint. 5. Ego negotio praesum non turbulento; volt enim me Pompeius esse, quem tota haec Campania et maritima ora habeat ἐπίσκοπον, ad quem dilectus et summa negotii referatur; itaque vagus esse cogitabam. Te puto iam videre, quae sit ὁρμὴ Caesaris, qui populus, qui totius negotii status: ea velim scribas ad me, et quidem, quoniam mutabilia sunt, quam saepissime; acquiesco enim et scribens ad te et legens tua.

## 48. AD ATTICUM VII. 13.

SCR. CALIBUS VII. KALENDAS FEBRUARIAS A.U.C. 705.

CICERO ATTICO SAL.

1. DE Vennonianis rebus tibi assentior. Labienum ἥρωα iudico; facinus iam diu nullum civile praeclarius, qui, ut aliud nihil, hoc tamen profecit: dedit illi dolorem; sed etiam ad summam profectum aliquid puto. Amo etiam Pisonem, cuius iudicium de genero suspicor visum iri grave. Quamquam genus belli quod sit vides: ita civile est, ut non ex civium dissensione, sed ex unius perditi civis audacia natum sit. Is autem valet exercitu, tenet multos spe et promissis, omnia omnium concupivit. Huic tradita urbs est, nuda praesidio, referta copiis: quid est, quod ab eo non metuas, qui illa templa et tecta non patriam, sed praedam putet? quid autem sit acturus aut quo modo, nescio, sine senatu, sine magistratibus: ne simulare quidem poterit quicquam πολιτικῶς. Nos autem ubi exsurgere poterimus aut quando? quorum dux quam ἀστρατήγητος, tu quoque animadvertis, cui ne Picena quidem nota fuerint, quam autem sine consilio, res testis: ut enim alia omittam decem annorum peccata, quae condicio non huic fugae praestitit? 2. Nec vero nunc quid

cogitet scio, ac non desino per litteras sciscitari. Nihil esse timidius constat, nihil perturbatius; itaque nec praesidium, cuius parandi causa ad urbem retentus est, nec locum ac sedem praesidii ullam video: spes omnis in duabus insidiose retentis, paene alienis legionibus. Nam dilectus adhuc quidem invitorum est et a pugnando abhorrentium; condicionum autem amissum tempus est. Quid futurum sit, non video; commissum quidem a nobis certe est sive a nostro duce, ut e portu sine gubernaculis egressi tempestati nos traderemus. 3. Itaque de Ciceronibus nostris dubito quid agam; nam mihi interdum amandandi videntur in Graeciam; de Tullia autem et Terentia, cum mihi barbarorum adventus ad urbem proponitur, omnia timeo, cum autem Dolabellae venit in mentem, paulum respiro. Sed velim consideres, quid faciendum putes: primum πρὸς τὸ ἀσφαλές—aliter enim mihi de illis ac de me ipso consulendum est—, deinde ad opiniones, ne reprehendamur, quod eas Romae velimus esse in communi bonorum fuga. Quin etiam tibi et Peducaeo—scripsit enim ad me—quid faciatis videndum est; is enim splendor est vestrum, ut eadem postulentur a vobis, quae ab amplissimis civibus. Sed de hoc tu videbis, quippe cum de me ipso ac de meis te considerare velim. 4. Reliquum est ut et quid agatur, quoad poteris, explores scribasque ad me, et quid ipse coniectura assequare, quod etiam a te magis exspecto; nam acta omnibus nuntiantibus a te exspecto futura. Μάντις δ' ἄριστος—. Loquacitati ignosces, quae et me levat ad te quidem scribentem et elicit tuas litteras.

## 49. AD ATTICUM VIII. 11 A.

SCR. LUCERIAE A.D. IV. IDUS FEBRUARIAS A.U.C. 705.

CN. POMPEIUS PROCOS. S. D. M. CICERONI IMP.

Q. FABIUS ad me venit a. d. III. Idus Febr. Is nuntiat L. Domitium cum suis cohortibus XI. et cohortibus XIII., quas Vibullius adduxit, ad me iter habere; habuisse in animo proficisci Corfinio a. d. v. Idus Febr., C. Hirrum cum v. cohortibus subsequi. Censeo, ad nos Luceriam venias; nam te hic tutissime puto fore.

## 50. AD ATTICUM VIII. 11 B.

SCR. FORMIIS A. D. XIV. KALENDAS MARTIAS A.U.C. 705.

M. CICERO IMP. S. D. CN. MAGNO PROCOS.

1. A. D. XV. Kalend. Martias Formiis accepi tuas litteras, ex quibus ea, quae in agro Piceno gesta erant, cognovi commodiora esse multo, quam ut erat nobis nuntiatum, Vibulliique virtutem industriamque libenter agnovi. Nos adhuc in ea ora, cui praepositi sumus, ita fuimus, ut navem paratam haberemus; ea enim audiebamus et ea verebamur, ut, quodcumque tu consilium cepisses, id nobis persequendum putaremus. Nunc quoniam auctoritate et consilio tuo in spe firmiore sumus, si teneri posse putas Tarracinam *et* oram maritimam, in ea manebo, etsi praesidia in oppidis nulla sunt; nemo enim nostri ordinis in his locis est praeter M. Eppium, quem ego Minturnis esse volui, vigilantem hominem et industrium: nam L. Torquatum, virum fortem et cum auctoritate, Formiis non habemus, ad te profectum arbitramur. 2. Ego omnino, ut proxime tibi placuerat, Capuam veni eo ipso die, quo tu Teano Sidicino es profectus; volueras enim me cum M. Considio pro praetore illa

negotia tueri. Cum eo venissem, vidi T. Ampium dilectum habere diligentissime, ab eo accipere Libonem, summa item diligentia et in illa colonia auctoritate. Fui Capuae, quoad consules. Iterum, ut erat edictum a consulibus, veni Capuam ad Nonas Februar. Cum fuissem triduum, recepi me Formias. 3. Nunc, quod tuum consilium aut quae ratio belli sit, ignoro: si tenendam hanc oram putas, quae et opportunitatem et dignitatem habet et egregios cives, et, ut arbitror, teneri potest, opus est esse qui praesit; sin omnia unum in locum contrahenda sunt, non dubito quin ad te statim veniam, quo mihi nihil optatius est, idque tecum, quo die ab urbe discessimus, locutus sum. Ego, si cui adhuc videor segnior fuisse, dum ne tibi videar, non laboro, et tamen, si, ut video bellum gerendum est, confido me omnibus facile satis facturum. 4. M. Tullium, meum necessarium, ad te misi, cui tu, si tibi videretur, ad me litteras dares.

## 51. AD ATTICUM VIII. 12 D.

SCR. LUCERIAE A. D. XIII. KAL. MARTIAS A.U.C. 705.

CN. MAGNUS PROCOS. S. D. L. DOMITIO PROCOS.

1. LITTERAE mihi a te redditae sunt a. d. XIII. Kal. Martias, in quibus scribis Caesarem apud Corfinium castra posuisse. Quod putavi et praemonui fit, ut nec in praesentia committere tecum proelium velit et omnibus copiis conductis te implicet, ne ad me iter tibi expeditum sit atque istas copias coniungere optimorum civium possis cum iis legionibus, de quarum voluntate dubitamus: quo etiam magis tuis litteris sum commotus; neque enim eorum militum, quos mecum habeo, voluntate satis confido, ut de omnibus fortunis rei publicae dimicem, neque etiam, qui ex dilectibus conscripti sunt *a* consulibus,

convenerunt. 2. Qua re da operam, si ulla ratione etiam nunc efficere potes, ut te explices, huc quam primum venias, ante quam omnes copiae *ad* adversarium conveniant; neque enim celeriter ex dilectibus huc homines convenire possunt, et, si convenirent, quantum iis committendum sit, qui inter se ne noti *quidem* sunt, contra veteranas legiones non te praeterit.

## 52. AD FAMILIARES XVI. 12.

SCR. CAPUAE IV. KAL. FEBRUARIAS A.U.C. 705.

TULLIUS S. D. TIRONI SUO.

1. Quo in discrimine versetur salus mea et bonorum omnium atque universae rei publicae, ex eo scire potes, quod domos nostras et patriam ipsam vel diripiendam vel inflammandam reliquimus: in eum locum res deducta est, ut, nisi qui deus vel casus aliqui subvenerit, salvi esse nequeamus. 2. Equidem, ut veni ad urbem, non destiti omnia et sentire et dicere et facere, quae ad concordiam pertinerent; sed mirus invaserat furor non solum improbis, sed etiam iis qui boni habentur ut pugnare cuperent, me clamante nihil esse bello civili miserius. Itaque cum Caesar amentia quadam raperetur et oblitus nominis atque honorum suorum Ariminum, Pisaurum, Anconam, Arretium occupavisset, urbem reliquimus; quam sapienter aut quam fortiter, nihil attinet disputari; quo quidem in casu simus, vides. 3. Feruntur omnino condiciones ab illo, ut Pompeius eat in Hispaniam; dilectus, qui sunt habiti, et praesidia nostra dimittantur; se ulteriorem Galliam Domitio, citeriorem Considio Noniano — his enim obtigerunt — traditurum; ad consulatus petitionem se venturum, neque se iam velle absente se rationem haberi suam; se praesentem trinum nundinum petiturum.

Accepimus condiciones, sed ita, ut removeat praesidia ex iis locis, quae occupavit, ut sine metu de his ipsis condicionibus Romae senatus haberi possit. 4. Id ille si fecerit, spes est pacis, non honestae—leges enim imponuntur—, sed quidvis est melius quam sic esse ut sumus. Sin autem ille suis condicionibus stare noluerit, bellum paratum est, eius modi tamen, quod sustinere ille non possit, praesertim cum a suis condicionibus ipse fugerit, tantum modo ut eum intercludamus, ne ad urbem possit accedere, quod sperabamus fieri posse; dilectus enim magnos habebamus putabamusque illum metuere, si ad urbem ire coepisset, ne Gallias amitteret, quas ambas habet inimicissimas praeter Transpadanos, ex Hispaniaque sex legiones et magna auxilia Afranio et Petreio ducibus habet a tergo: videtur, si insaniet, posse opprimi, modo ut urbe salva. Maximam autem plagam accepit, quod is, qui summam auctoritatem in illius exercitu habebat, T. Labienus, socius sceleris esse noluit: reliquit illum et *est* nobiscum, multique idem facturi esse dicuntur. 5. Ego adhuc orae maritimae praesum a Formiis. Nullum maius negotium suscipere volui, quo plus apud illum meae litterae cohortationesque ad pacem valerent; sin autem erit bellum, video me castris et certis legionibus praefuturum. Habeo etiam illam molestiam, quod Dolabella noster apud Caesarem est. Haec tibi nota esse volui, quae cave ne te perturbent et impediant valetudinem tuam. 6. Ego A. Varroni, quem cum amantissimum mei cognovi, tum etiam valde tui studiosum, diligentissime te commendavi, ut et valetudinis tuae rationem haberet et navigationis et totum te susciperet ac tueretur: quem omnia facturum confido; recepit enim et mecum locutus est suavissime. Tu, quoniam eo tempore mecum esse

non potuisti, quo ego maxime operam et fidelitatem desideravi tuam, cave festines aut committas, ut aut aeger aut hieme naviges: numquam sero te venisse putabo, si salvus veneris. Adhuc neminem videram, qui te postea vidisset quam M. Volusius, a quo tuas litteras accepi: quod non mirabar; neque enim meas puto ad te litteras tanta hieme perferri. Sed da operam, ut valeas et, si valebis, cum recte navigari poterit, tum naviges. Cicero meus in Formiano erat, Terentia et Tullia Romae. Cura, ut valeas. IIII. K. Februar. Capua.

## 53. AD FAMILIARES XVI. 15.

SCR. ANNO INCERTO.

TULLIUS TIRONI SAL.

1. AEGYPTA ad me venit pr. Idus Apr. Is etsi mihi nuntiavit te plane febri carere et belle habere, tamen, quod negavit te potuisse ad me scribere, curam mihi attulit, et eo magis, quod Hermia, quem eodem die venire oportuerat, non venerat. Incredibili sum sollicitudine de tua valetudine, qua si me liberaris, ego te omni cura liberabo. Plura scriberem, si iam putarem lubenter te legere posse. Ingenium tuum, quod ego maximi facio, confer ad te mihi tibique conservandum. Cura te etiam atque etiam diligenter. Vale.

2. Scripta iam epistola Hermia venit. Accepi tuam epistolam vacillantibus litterulis, nec mirum, tam gravi morbo. Ego ad te Aegyptam misi, quod nec inhumanus est et te visus est mihi diligere, ut is tecum esset, et cum eo coquum, quo uterere. Vale.

## 54. AD ATTICUM VIII. 3.

SCR. IN AGRO CALENO A. D. XI. KALENDAS MARTIAS A.U.C. 705.

CICERO ATTICO SAL.

1. MAXIMIS et miserrimis rebus perturbatus, cum coram tecum mihi potestas deliberandi non esset, uti tamen tuo consilio volui; deliberatio autem omnis haec est, si Pompeius Italia cedat, quod eum facturum esse suspicor, quid mihi agendum putes, et, quo facilius consilium dare possis, quid in utramque partem mihi in mentem veniat, explicabo brevi. 2. Cum merita Pompeii summa erga salutem meam familiaritasque, quae mihi cum eo est, tum ipsa rei publicae causa me adducit, ut mihi vel consilium meum cum illius consilio, vel fortuna *mea cum illius fortuna* coniungenda esse videatur. Accedit illud: si maneo et illum comitatum optimorum et clarissimorum civium desero, cadendum est in unius potestatem, qui, etsi multis rebus significat se nobis esse amicum, et ut esset, a me est—tute scis—propter suspitionem huius impendentis tempestatis multo ante provisum, tamen utrumque considerandum est, et quanta fides ei sit habenda et, si maxime exploratum sit eum nobis amicum fore, sitne viri fortis et boni civis esse in ea urbe in qua, cum summis honoribus imperiisque usus sit, res maximas gesserit, sacerdotio sit amplissimo praeditus, nomen futurus, subeundumque periculum sit, cum aliquo fore dedecore, si quando Pompeius rem publicam recuperarit. 3. In hac parte haec sunt; vide nunc, quae sint in altera: nihil actum est a Pompeio nostro sapienter, nihil fortiter; addo etiam, nihil nisi contra consilium auctoritatemque meam. Omitto illa vetera, quod istum in rem publicam ille aluit auxit, armavit, ille legibus per vim et contra auspicia

ferendis auctor, ille Galliae ulterioris adiunctor, ille gener, ille in adoptando P. Clodio augur, ille restituendi mei quam retinendi studiosior, ille provinciae propagator, ille absentis in omnibus adiutor, idem etiam tertio consulatu, postquam esse defensor rei publicae coepit, contendit, ut decem tribuni pl. ferrent, ut absentis ratio haberetur, quod idem ipse sanxit lege quadam sua, Marcoque Marcello consuli finienti provincias Gallias Kalendarum Martiarum die restitit: sed, ut haec omittam, quid foedius, quid perturbatius hoc ab urbe discessu sive potius turpissima fuga? quae condicio non accipienda fuit potius quam relinquenda patria? malae condiciones erant; fateor, sed num quid hoc peius? 4. 'At recuperabit rem publicam.' Quando? aut quid ad eam spem est parati? Non ager Picenus amissus? Non patefactum iter ad urbem? non pecunia omnis et publica et privata adversario tradita? Denique nulla causa, nullae vires, nulla sedes, quo concurrant qui rem publicam defensam velint: Apulia delecta est, inanissima pars Italiae et ab impetu huius belli remotissima; fuga et maritima opportunitas visa quaeri desperatione. † In te cepi Capuam, non quo munus illud defugerem, sed in ea causa, in qua nullus esset ordinum, nullus apertus privatorum dolor, bonorum autem esset aliquis, sed hebes, ut solet, et, ut ipse sensissem, multitudo et infimus quisque propensus in alteram partem, multi mutationis rerum cupidi, dixi ipsi me nihil suscepturum sine praesidio et sine pecunia; 5. itaque habui nihil omnino negotii, quod ab initio vidi nihil quaeri praeter fugam: eam si nunc sequor, quonam? Cum illo non; ad quem cum essem profectus, cognovi in iis locis esse Caesarem, ut tuto Luceriam venire non possem. Infero mari nobis, incerto cursu, hieme maxima navigandum est.

Age iam, cum fratre an sine eo cum filio? an quo modo? in utraque enim re summa difficultas erit, summus animi dolor. Qui autem impetus illius erit in nos absentes fortunasque nostras? Acrior quam in ceterorum, quod putabit fortasse in nobis violandis aliquid se habere populare. Age iam, has compedes, fasces, inquam, hos laureatos efferre ex Italia quam molestum est! Qui autem locus erit nobis tutus, ut iam placatis utamur fluctibus, ante quam ad illum venerimus? qua autem aut quo, nihil scimus. 6. At si restitero et fuerit nobis in hac parte locus, idem fecero, quod in Cinnae dominatione Philippus, quod L. Flaccus, quod Q. Mucius, quoquo modo ea res huic quidem cecidit, qui tamen ita dicere solebat, se id fore videre, quod factum est, sed malle quam armatum ad patriae moenia accedere. Aliter Thrasybulus, et fortasse melius; sed est certa quaedam illa Mucii ratio atque sententia, est illa etiam [Philippi], et, cum sit necesse, servire tempori et non amittere tempus, cum sit datum. Sed in hoc ipso habent tamen idem fasces molestiam: sit enim nobis amicus, quod incertum est, sed sit: deferet triumphum. Non accipere, † ne periculosum sit, invidiosum ad bonos. O rem, inquis, difficilem et inexplicabilem! atqui explicanda est. Quid enim fieri potest? ac ne me existimaris ad manendum esse propensiorem, quod plura in eam partem verba fecerim, potest fieri, quod fit in multis quaestionibus, ut res verbosior haec fuerit, illa verior. Quam ob rem ut maxima de re aequo animo deliberanti, ita mihi des consilium velim. Navis et in Caieta est parata nobis et Brundisii. 7. Sed ecce nuntii scribente me haec ipsa noctu in Caleno, ecce litterae, Caesarem ad Corfinium, Domitium Corfinii cum firmo exercitu et pugnare cupiente. Non puto etiam hoc

Gnaeum nostrum commissurum, ut Domitium relinquat, etsi Brundisium Scipionem cum cohortibus duabus praemiserat, legionem *a* Fausto conscriptam in Siciliam sibi placere a consule duci scripserat ad consules; sed turpe Domitium deseri implorantem eius auxilium. Est quaedam spes, mihi quidem non magna, sed in his locis firma, Afranium in Pyrenaeo cum Trebonio pugnasse, pulsum Trebonium, etiam Fabium tuum transisse cum cohortibus, summa autem, Afranium cum magnis copiis adventare: id si est, in Italia fortasse manebitur. Ego autem, cum esset incertum iter Caesaris, quod vel ad Capuam vel ad Luceriam iturus putabatur, Leptam ad Pompeium misi *et* litteras, ipse, ne quo inciderem, reverti Formias. Haec te scire volui scripsique sedatiore animo, quam proxime scripseram, nullum meum iudicium interponens, sed exquirens tuum.

## 55. AD ATTICUM VIII. 9.

SCR. IN FORMIANO A. D. V. KALENDAS MARTIAS A.U.C. 705.

CICERO ATTICO SAL.

1. EPISTOLAM meam quod pervolgatam scribis esse, non fero moleste: quin etiam ipse multis dedi describendam; ea enim et acciderunt iam et impendent, ut testatum esse velim, de pace quid senserim. Cum autem ad eam hortarer eum praesertim hominem, non videbar ullo modo facilius moturus, quam si id, quod eum hortarer, convenire eius sapientiae dicerem. Eam si 'admirabilem' dixi, quoniam eum ad salutem patriae hortabar, non sum veritus ne viderer adsentari, cui tali in re lubenter me ad pedes abiecissem. Qua autem est 'aliquid impertias temporis,' non est de pace, sed de me ipso et de meo officio ut aliquid cogitet; nam quod testificor me expertem

belli fuisse, etsi id re perspectum est, tamen eo scripsi, quo in suadendo plus auctoritatis haberem, eodemque pertinet, quod causam eius probo. 2. Sed quid haec nunc? utinam aliquid profectum esset! ne ego istas litteras in contione recitari velim, si quidem ille ipse ad eundem scribens in publico proposuit epistolam illam, in qua est 'pro tuis rebus gestis amplissimis.' Amplioribusne quam suis, quam Africani? Ita tempus ferebat; si quidem etiam vos duo tales ad quintum miliarium,—quid nunc ipsum unde se recipienti, quid agenti, quid acturo? quanto autem ferocius ille causae suae confidet, cum vos, cum vestri similes non modo frequentes, sed laeto voltu gratulantes viderit? 'Num igitur peccamus?' minime vos quidem; sed tamen signa conturbantur, quibus voluntas a simulatione distingui posset. Quae vero senatus consulta video? sed apertius, quam proposueram. 3. Ego Arpini volo esse pridie Kal., deinde circum villulas nostras errare, quas visurum me postea desperavi. Εὐγενῆ tua consilia et tamen pro temporibus non incauta mihi valde probantur. Lepido quidem—nam fere συνδιημερεύομεν, quod gratissimum illi est—numquam placuit ex Italia exire, Tullo multo minus; crebro enim illius litterae ab aliis ad nos commeant. Sed me illorum sententiae minus movebant; minus multa dederant illi rei publicae pignora: tua me hercule auctoritas vehementer movet; adfert enim et reliqui temporis recuperandi rationem et praesentis tuendi. Sed, obsecro te, quid hoc miserius quam alterum plausus in foedissima causa quaerere, alterum offensiones in optima? alterum existimari conservatorem inimicorum, alterum desertorem amicorum? et mehercule quamvis amemus Gnaeum nostrum, ut et facimus et debemus, tamen hoc, quod talibus viris non subvenit,

laudare non possum; nam sive timuit, quid ignavius? sive, ut quidam putant, meliorem suam causam illorum caede fore putavit, quid iniustius? sed haec omittamus; augemus enim dolorem retractando. 4. VI. Kal. vesperi Balbus minor ad me venit, occulta via currens ad Lentulum consulem, missu Caesaris, cum litteris, cum mandatis, cum promissione provinciae, Romam ut redeat, cui persuaderi posse non arbitror, nisi erit conventus. Idem aiebat nihil malle Caesarem, quam ut Pompeium adsequeretur—id credo—et rediret in gratiam: id non credo et metuo ne omnis haec clementia ad † unam illam crudelitatem colligatur. Balbus quidem maior ad me scribit nihil malle Caesarem quam principe Pompeio sine metu vivere: tu puto haec credis. Sed, cum haec scribebam v. Kalend., Pompeius iam Brundisium venisse poterat; expeditus enim antecesserat legiones XI. *Kal.* Luceria. Sed hoc τέρας horribili vigilantia, celeritate, diligentia est. Plane quid futurum sit nescio.

## 56. AD ATTICUM VIII. 11.

SCR. IN FORMIANO A. D. III. KALENDAS MARTIAS A.U.C. 705.

CICERO ATTICO SAL.

1. QUOD me magno animi motu perturbatum putas, sum equidem, sed non tam magno quam tibi fortasse videor; levatur enim omnis cura, cum aut constitit consilium aut cogitando nihil explicatur; lamentari autem licet. Illud tamen totos dies; sed vereor ne, nihil cum proficiam, etiam dedecori sim studiis ac litteris nostris. Consumo igitur omne tempus considerans, quanta vis sit illius viri, quem nostris libris satis diligenter, ut tibi quidem videmur, expressimus. Tenesne igitur, moderatorem illum rei publicae quo referre velimus omnia? nam sic quinto, ut opinor, in libro loquitur Scipio: 'ut enim guber-

natori cursus secundus, medico salus, imperatori victoria, sic huic moderatori rei publicae beata civium vita proposita est, ut opibus firma, copiis locuples, gloria ampla, virtute honesta sit; huius enim operis maximi inter homines atque optimi illum esse perfectorem volo.' 2. Hoc Gnaeus noster cum antea numquam, tum in hac causa minime cogitavit: dominatio quaesita ab utroque est non id actum, beata et honesta civitas ut esset. Nec vero ille urbem reliquit, quod eam tueri non posset, nec Italiam, quod ea pelleretur, sed hoc a primo cogitavit, omnes terras, omnia maria movere, reges barbaros incitare, gentes feras armatas in Italiam adducere, exercitus conficere maximos. Genus illud Sullani regni iam pridem appetitur, multis, qui una sunt, cupientibus. An censes nihil inter eos convenire, nullam pactionem fieri potuisse? hodie potest; sed neutri σκοπὸς est ille, ut nos beati simus: uterque regnare volt. 3. Haec a te invitatus breviter exposui; voluisti enim me, quid de his malis sentirem, ostendere. Προθεσπίζω igitur, noster Attice, non hariolans, ut illa, cui nemo credidit, sed coniectura prospiciens:

iamque mari magno ....

Non multo, inquam, secus possum vaticinari; tanta malorum impendet Ἰλιάς. Atque hoc nostra gravior est causa, qui domi sumus, quam illorum, qui una transierunt, quod illi alterum metuunt, nos utrumque. 4. Cur igitur, inquis, remansimus? vel tibi paruimus vel non occurrimus vel hoc fuit rectius. Conculcari, inquam, miseram Italiam videbis proxima aestate † aut utriusque in mancipiis ex omni genere collectis, nec tam *proscri*ptio pertimescenda, quae Luceriae multis sermonibus denuntiata esse dicitur, quam † universam interitus: tantas in confligendo utriusque vires video futuras. Habes coniecturam meam;

tu autem consolationis fortasse aliquid exspectasti: nihil invenio, nihil fieri potest miserius, nihil perditius, nihil foedius. 5. Quod quaeris, quid Caesar ad me scripserit, quod saepe, gratissimum sibi esse quod quierim, oratque in eo ut perseverem. Balbus minor haec eadem mandat. Iter autem eius erat ad Lentulum consulem cum litteris Caesaris praemiorumque promissis, si Romam revertisset; verum, cum habeo rationem dierum, ante puto tramissurum, quam potuerit conveniri. 6. Epistolarum Pompeii duarum, quas ad me misit, neglegentiam meamque in rescribendo diligentiam volui tibi notam esse: earum exempla ad te misi. 7. Caesaris hic per Apuliam ad Brundisium cursus quid efficiat, exspecto: utinam aliquid simile Parthicis rebus! simul aliquid audiero, scribam ad te: tu ad me velim bonorum sermones; Romae frequentes esse dicuntur. Scio equidem te in publicum non prodire, sed tamen audire te multa necesse est. Memini librum tibi adferri a Demetrio Magnete ad te missum [scio] *περὶ ὁμονοίας*. Eum mihi velim mittas. Vides, quam causam mediter.

## 57. AD ATTICUM VIII. 13.

SCR. FORMIIS KALENDIS MARTIIS A.U.C. 705.

CICERO ATTICO SAL.

1. LIPPITUDINIS meae signum tibi sit librarii manus et eadem causa brevitatis, etsi nunc quidem quod scriberem nihil erat: omnis exspectatio nostra erat in nuntiis Brundisinis. Si nactus hic esset Gnaeum nostrum, spes dubia pacis, sin ille ante tramisisset, exitiosi belli metus. Sed videsne, in quem hominem inciderit res publica? quam acutum, quam vigilantem, quam paratum? si mehercule neminem occiderit nec cuiquam quicquam ademerit, ab

iis, qui eum maxime timuerant, maxime diligetur. 2. Multum mecum municipales homines loquuntur, multum rusticani: nihil prorsus aliud curant nisi agros, nisi villulas, nisi nummulos suos. Et vide, quam conversa res sit; illum, quo antea confidebant, metuunt, hunc amant, quem timebant. Id quantis nostris peccatis vitiisque evenerit, non possum sine molestia cogitare. Quae autem impendere putarem, scripseram ad te, et iam tuas litteras exspectabam.

## 58. AD ATTICUM VIII. 15 A.

BALBUS CICERONI IMP. SAL.

1. Obsecro te, Cicero, suscipe curam et cogitationem dignissimam tuae virtutis, ut Caesarem et Pompeium perfidia hominum distractos rursus in pristinam concordiam reducas. Crede mihi Caesarem non solum in tua potestate, sed etiam maximum beneficium te sibi dedisse iudicaturum, si huc te reiicis. Velim idem Pompeius faciat, qui ut adduci tali tempore ad ullam condicionem possit, magis opto quam spero; sed, cum constiterit et timere desierit, tum incipiam non desperare tuam auctoritatem plurimum apud eum valituram. 2. Quod Lentulum [consulem] meum voluisti hic remanere, Caesari gratum, mihi vero gratissimum medius fidius fecisti; nam illum tanti facio, ut non Caesarem magis diligam; qui si passus esset nos secum, ut consueveramus, loqui et non se totum etiam et etiam ab sermone nostro avertisset, minus miser, quam sum, essem. Nam cave putes hoc tempore plus me quemquam cruciari, quod eum, quem ante me diligo, video in consulatu quidvis potius esse quam consulem. Quod si voluerit tibi obtemperare et nobis de Caesare credere et consulatum reliquum Romae peragere, incipiam sperare etiam consilio senatus, auctore te, illo

relatore, Pompeium et Caesarem coniungi posse. Quod si factum erit, me satis vixisse putabo. 3. Factum Caesaris de Corfinio totum te probaturum scio: quo modo in eius modi re, commodius cadere non potuit quam ut res sine sanguine confieret. Balbi mei tuique adventu delectatum te valde gaudeo: is quaecumque tibi de Caesare dixit quaeque Caesar scripsit, scio, re tibi probabit, quaecumque fortuna eius fuerit, verissime scripsisse.

## 59. AD ATTICUM VIII. 16.

SCR. FORMIIS A. D. IV. NONAS MARTIAS A.U.C. 705.

CICERO ATTICO.

1. OMNIA mihi provisa sunt praeter oecultum et tutum iter ad mare superum; hoc enim mari uti non possumus hoc tempore anni: illuc autem, quo spectat animus et quo res vocat, qua veniam? cedendum enim est celeriter, ne forte qua re impediar atque alliger. Nec vero ille me ducit, qui videtur, quem ego hominem ἀπολιτικώτατον omnium iam ante cognoram, nunc vero etiam ἀστρατηγικώτατον. Non me igitur is ducit, sed sermo hominum, qui ad me *a* Philotimo scribitur; is enim me ab optimatibus ait conscindi. Quibus optimatibus, di boni! qui nunc quo modo occurrunt! quo modo autem se venditant Caesari! Municipia vero deum, nec simulant, ut cum de illo aegroto vota faciebant. 2. Sed plane, quicquid mali hic Pisistratus non fecerit, tam gratum est, quam si alium facere prohibuerit; *hunc* propitium sperant, illum iratum putant. Quas fieri censes ἀπαντήσεις ex oppidis! quos honores! 'Metuunt' inquies. Credo, sed mehercule illum magis: huius insidiosa clementia delectantur, illius iracundiam formidant. Iudices de CCCLX., qui praecipue Gnaeo nostro delectabantur, ex quibus quotidie aliquem

video, nescio quas eius Lucerias horrent: itaque quaero, qui sint isti optimates, qui me exturbent, cum ipsi domi maneant. Sed tamen, quicumque sunt, *αἰδέομαι Τρῶας*. Etsi, qua spe proficiscar video, coniungoque me cum homine magis ad vastandam Italiam quam ad vincendum parato. † domum quem exspecto. Et quidem, cum haec scribebam, III. Nonas, iam exspectabam aliquid a Brundisio. Quid autem aliquid? quam inde turpiter fugisset et victor hic qua se referret et quo; quod ubi audissem, si ille Appia veniret, ego Arpinum cogitabam.

## 60. AD ATTICUM IX. 6 A.

CAESAR IMP. S. D. CICERONI IMP.

Cum Furnium nostrum tantum vidissem, neque loqui neque audire meo commodo potuissem, properarem atque essem in itinere, praemissis iam legionibus, praeterire tamen non potui, quin et scriberem ad te et illum mitterem gratiasque agerem, etsi hoc et feci saepe et saepius mihi facturus videor: ita de me mereris. Imprimis a te peto, quoniam confido me celeriter ad urbem venturum, ut te ibi videam, ut tuo consilio, gratia, dignitate, ope omnium rerum uti possim. Ad propositum revertar: festinationi meae brevitatique litterarum ignosces; reliqua ex Furnio cognosces.

## 61. AD ATTICUM IX. 7.

Scr. Formiis a. d. III. Idus Martias a.u.c. 705.

CICERO ATTICO SAL.

1. Scripseram ad te epistolam, quam darem IIII. Idus; sed eo die is, cui dare volueram, non est profectus. Venit autem eo ipso die ille 'celeripes,' quem Salvius dixerat: attulit uberrimas tuas litteras, quae mihi quiddam quasi

'animulae stillarunt;' recreatum enim me non queo dicere. Sed plane τὸ συνέχον effecisti; ego enim non iam id ago, mihi crede, ut prosperos exitus consequar: sic enim video, nec duobus his vivis nec hoc uno nos umquam rem publicam habituros. Ita neque de otio nostro spero iam nec ullam acerbitatem recuso. Unum illud extimescebam, ne quid turpiter facerem, vel dicam, iam fecissem. 2. Sic ergo habeto, salutares te mihi litteras misisse, neque solum has longiores, quibus nihil potest esse explicatius, nihil perfectius, sed etiam illas breviores, in quibus hoc mihi iucundissimum fuit, consilium factumque nostrum a Sexto probari, pergratumque mihi tu fecisti, a quo diligi me et, quid rectum sit, intellegi scio. Longior vero tua epistola non me solum, sed meos omnes aegritudine levavit; itaque utar tuo consilio et ero in Formiano, ne aut ad urbem ἀπάντησις mea animadvertatur aut, si nec hic nec illic eum videro, devitatum se a me putet. 3. Quod autem suades, ut ab eo petam ut mihi concedat ut idem tribuam Pompeio, quod ipsi tribuerim, id me iam pridem agere intelleges ex litteris Balbi et Oppii, quarum exempla tibi misi; misi etiam Caesaris ad eos sana mente scriptas, quo modo in tanta insania. Sin mihi Caesar hoc non concedat, video tibi placere illud, me πολίτευμα de pace suscipere, in quo non extimesco periculum: cum enim tot impendeant, cur non honestissimo depecisci velim? Sed vereor ne Pompeio quid oneris imponam,

μή μοι γοργείην κεφαλὴν δεινοῖο πελώρου

intorqueat; mirandum enim in modum Gnaeus noster Sullani regni similitudinem concupivit. Εἰδώς σοι λέγω. Nihil ille umquam minus obscure tulit. 'Cum hoccine igitur' inquies 'esse vis?' Beneficium sequor, mihi crede,

non causam [ut in Milone, ut in . . . sed *haec* hactenus]. 4. 'Causa igitur non bona est?' Immo optima, sed agetur, memento, foedissime: primum consilium est suffocare urbem et Italiam fame, deinde agros vastare, urere, pecuniis locupletium *non* abstinere; sed cum eadem metuam ab hac parte, si illim beneficium non sit, rectius putem quidvis domi perpeti. Sed ita meruisse illum de me puto, ut ἀχαριστίας crimen subire non audeam: quamquam a te eius quoque rei iusta defensio est explicata. 5. De triumpho tibi adsentior, quem quidem totum facile et libenter abiecero: egregie probo fore ut, dum vagamur, ὁ πλόος ὡραῖος obrepat. 'Si modo' inquis 'satis ille erit firmus.' Est firmior etiam quam putabamus; de isto licet bene speres: promitto tibi, si valebit, tegulam illum in Italia nullam relicturum. 'Tene igitur socio?' Contra mehercule meum iudicium et contra omnium antiquorum auctoritatem, nec tam ut illa adiuvem quam ut haec ne videam cupio discedere; noli enim putare tolerabiles horum insanias nec unius modi fore: etsi quid te horum fugit, legibus, iudiciis, senatu sublato, libidines, audacias, sumptus, egestates tot egentissimorum hominum nec privatas posse res nec rem publicam sustinere? Abeamus igitur inde qualibet navigatione, etsi id quidem, ut tibi videbitur, sed certe abeamus; sciemus enim, id quod exspectas, quid Brundisii actum sit. 6. Bonis viris quod ais probari quae adhuc fecerimus, scirique ab iis *nos* non profectos, valde gaudeo, si est nunc ullus gaudendi locus. De Lentulo investigabo diligentius: id mandavi Philotimo, homini forti ac nimium optimati. 7. Extremum est, ut tibi argumentum ad scribendum fortasse iam desit—nec enim alia de re nunc ulla scribi potest; et de hac quid iam amplius inveniri potest?—sed quoniam et ingenium

suppeditat—dico mehercule ut sentio—et amor, quo et meum ingenium incitatur, perge, ut facis, et scribe quantum potes. In Epirum quod me non invitas, comitem non molestum, subirascor, sed vale: nam ut tibi ambulandum, ungendum, sic mihi dormiendum; etenim litterae tuae mihi somnum attulerunt.

## 62. AD ATTICUM IX. 9.

SCR. IN FORMIANO A. D. XVI. KALENDAS APRILES A.U.C. 705.

CICERO ATTICO SAL.

1. TRES epistolas tuas accepi postridie Idus; erant autem III., III., pridie Idus datae; igitur antiquissimae cuique primum respondebo. Adsentior tibi, ut in Formiano potissimum commorer, etiam de supero mari, *tem*ptaboque, ut antea ad te scripsi, ecquonam modo possim voluntate eius nullam rei publicae partem attingere. Quod laudas, quia oblivisci me scripsi ante facta et delicta nostri amici, ego vero ita facio: quin ea ipsa, quae a te commemorantur, secus ab eo in me ipsum facta esse non memini; tanto plus apud me valere beneficii gratiam quam iniuriae dolorem volo. Faciamus igitur, ut censes, colligamusque nos: σοφιστεύω enim, simul ut rus decurro, atque in decursu θέσεις meas commentari non desino; sed sunt quaedam earum perdifficiles ad iudicandum. De optimatibus sit sane ita, ut vis, sed nosti illud Διονύσιος ἐν Κορίνθῳ. Titinii filius apud Caesarem est. Quod autem quasi vereri videris ne mihi tua consilia displiceant, me vero nihil delectat aliud nisi consilium et litterae tuae; qua re fac, ut ostendis: ne destiteris ad me quicquid tibi in mentem venerit scribere: mihi nihil potest esse gratius. 2. Venio ad alteram nunc epistolam.

Recte non credis de numero militum: ipso dimidio plus scripsit Clodia. Falsum etiam de corruptis navibus. Quod consules laudas, ego quoque animum laudo, sed consilium reprehendo; discessu enim illorum actio de pace sublata est, quam quidem ego meditabar. Itaque postea Demetrii librum de concordia tibi remisi et Philotimo dedi; nec vero dubito quin exitiosum bellum impendeat, cuius initium ducetur a fame. Et me tamen doleo non interesse huic bello! in quo tanta vis sceleris futura est, ut, cum parentes non alere nefarium sit, nostri principes antiquissimam et sanctissimam parentem, patriam, fame necandam putent. Atque hoc non opinione timeo, sed interfui sermonibus: omnis haec classis Alexandria, Colchis, Tyro, Sidone, Arado, Cypro, Pamphylia, Lycia, Rhodo, Chio, Byzantio, Lesbo, Smyrna, Mileto, Coo ad intercludendos commeatus Italiae et ad occupandas frumentarias provincias comparatur. At quam veniet iratus! et iis quidem maxime, qui eum maxime salvum volebant, quasi relictus ab iis, quos reliquit. Itaque mihi dubitanti, quid me facere par sit, permagnum pondus adfert benevolentia erga illum, qua dempta perire melius esset in patria quam patriam servando evertere. De septemtrione plane ita est; metuo ne vexetur Epirus. Sed quem tu locum Graeciae non direptum iri putas? Praedicat enim palam et militibus ostendit se largitione ipsa superiorem quam hunc fore. Illud me praeclare admones, cum illum videro, ne nimis indulgenter et ut cum gravitate potius loquar: plane sic faciendum. Arpinum, cum eum convenero, cogito, ne forte aut absim, cum veniet, aut cursem huc illuc via deterrima. Bibulum, ut scribis, audio venisse et redisse pridie Idus. 3. Philotimum, ut ais epistola tertia, exspectabas; at ille

Idibus a me profectus est: eo serius ad tuam illam epistolam, cui ego statim rescripseram, redditae sunt meae litterae. De Domitio, ut scribis, ita opinor esse, ut et in Cosano sit et consilium eius ignoretur. Iste omnium turpissimus et sordidissimus, qui consularia comitia a praetore ait haberi posse, est idem, qui semper in re publica fuit. Itaque nimirum hoc illud est, quod Caesar scribit in ea epistola, cuius exemplum ad te misi, se velle uti 'consilio' meo; age, esto: hoc commune est; 'gratia;' ineptum id quidem, sed, puto, hoc simulat ad quasdam senatorum sententias; 'dignitate;' fortasse sententia consulari. Illud extremum est, 'ope omnium rerum;' id ego suspicari coepi tum ex tuis litteris aut hoc ipsum esse aut non multo secus: nam permagni eius interest rem ad interregnum non venire; id adsequitur, si per praetorem consules creantur. Nos autem in libris habemus non modo consules a praetore, sed ne praetores quidem creari ius esse, idque factum esse numquam; consules eo non esse ius, quod maius imperium a minore rogari non sit ius, praetores autem, cum ita rogentur, ut collegae consulibus sint, quorum est maius imperium. Aberit non longe quin hoc a me decerni velit neque sit contentus Galba, Scaevola, Cassio, Antonio:

τότε μοι χάνοι εὐρεῖα χθών!

sed quanta tempestas impendeat, vides. 4. Qui transierint senatores, scribam ad te, cum certum habebo. De re frumentaria recte intellegis, quae nullo modo administrari sine vectigalibus potest, nec sine causa et eos, qui circum illum sunt, omnia postulantes et bellum nefarium times. Trebatium nostrum, etsi, ut scribis, nihil bene sperat, tamen videre sane velim; quem fac horteris ut properet; opportune enim ad me ante adventum Caesaris

venerit. De Lanuvino statim, ut audivi Phameam mortuum, optavi, si modo esset futura res publica, ut id aliquis meorum, neque tamen de te, qui maxime meus *es*, cogitavi; sciebam enim te quoto anno et quantum in solo solere quaerere, neque solum Romae, sed etiam Deli tuum digamma videram: verum tamen ego illud, quamquam est bellum, minoris aestimo, quam aestimabatur Marcellino consule, cum ego istos hortulos propter domum Antii quam tum habebam, iucundiores mihi fore putabam et minore impensa, quam si Tusculanum refecissem. Volui † .NSQ. Egi per praedem, ille daret, Antii cum haberet venale: noluit. Sed nunc omnia ista iacere puto propter nummorum caritatem. Mihi quidem erit aptissimum vel nobis potius, si tu emeris. Sed eius dementias cave contemnas: valde est venustum. Quamquam mihi ista omnia iam addicta vastitati videntur. Respondi epistolis tribus, sed exspecto alias; nam me adhuc tuae litterae sustentarunt. D. Liberalibus.

## 63. AD ATTICUM IX. 10.

SCR. IN FORMIANO A. D. XV. KALENDAS APRILES A.U.C. 705.

CICERO ATTICO SAL.

1. NIHIL habebam, quod scriberem; neque enim novi quicquam audieram et ad tuas omnes rescripseram pridie; sed, cum me aegritudo non solum somno privaret, verum ne vigilare quidem sine summo dolore pateretur, tecum ut quasi loquerer, in quo uno acquiesco, hoc nescio quid nullo argumento proposito scribere institui. 2. Amens mihi fuisse videor a principio et me una haec res torquet, quod non omnibus in rebus labentem vel potius ruentem Pompeium tamquam unus manipularis secutus sim. Vidi

hominem XIIII. *Kal.* Febr. plenum formidinis: illo ipso die sensi, quid ageret; numquam mihi postea placuit, nec umquam aliud ex alio peccare destitit. Nihil interim ad me scribere, nihil nisi fugam cogitare. Quid quaeris? sicut ἐν τοῖς ἐρωτικοῖς alienant immundae, insulsae, indecorae, sic me illius fugae neglegentiaeque deformitas avertit ab amore; nihil enim dignum faciebat, qua re eius fugae comitem me adiungerem. Nunc emergit amor, nunc desiderium ferre non possum, nunc mihi nihil libri, nihil litterae, nihil doctrina prodest: ita dies et noctes tamquam avis illa, mare prospecto, evolare cupio; do, do poenas temeritatis meae. Etsi quae fuit illa temeritas? quid feci non consideratissime? Si enim nihil praeter fugam quaereretur, fugissem libentissime, sed genus belli crudelissimi et maximi, quod nondum vident homines quale futurum sit, perhorrui. Quae minae municipiis! quae nominatim viris bonis! quae denique omnibus, qui remansissent! quam crebro illud 'Sulla potuit, ego non potero?' 3. Mihi autem haeserunt illa: male Tarquinius, qui Porsenam, qui Octavium Mamilium contra patriam, impie Coriolanus, *qui* auxilium petiit a Volscis, recte Themistocles, qui mori maluit, nefarius Hippias, Pisistrati filius, qui in Marathonia pugna cecidit arma contra patriam ferens. At Sulla, at Marius, at Cinna recte. Immo iure fortasse; sed quid eorum victoria crudelius? quid funestius? Huius belli genus fugi, et eo magis, quod crudeliora etiam cogitari et parari videbam. Me, quem non nulli conservatorem istius urbis, quem parentem esse dixerunt, Getarum et Armeniorum et Colchorum copias ad eam adducere? me meis civibus famem, vastitatem inferre Italiae? hunc primum mortalem esse, deinde etiam multis modis posse exstingui

cogitabam, urbem autem et populum nostrum servandum ad immortalitatem, quantum in nobis esset, putabam, et tamen spes quaedam me oblectabat fore, ut aliquid conveniret potius, quam aut hic tantum sceleris aut ille tantum flagitii admitteret. Alia res nunc tota est, alia mens mea: sol, ut est in tua quadam epistola, excidisse mihi e mundo videtur. Ut aegroto, dum anima est, spes esse dicitur, sic ego, quoad Pompeius in Italia fuit, sperare non destiti: haec me fefellerunt, et, ut verum loquar, aetas iam a diuturnis laboribus devexa ad otium domesticarum me rerum delectatione mollivit. Nunc, si vel periculose experiundum erit, experiar certe, ut hinc avolem. Ante oportuit fortasse; sed ea, quae scripsi, me tardarunt et auctoritas maxime tua. 4. Nam cum ad hunc locum venissem, evolvi volumen epistolarum tuarum, quod ego *sub* signo habeo servoque diligentissime. Erat igitur in ea, quam x. K. Febr. dederas, hoc modo: 'sed videamus, et Gnaeus quid agat et illius rationes quorsum fluant: quod si iste Italiam relinquet, faciet omnino male et, ut ego existimo, *ἀλογίστως*: sed tum demum consilia nostra commutanda erunt.' Hoc scribis post diem quartum, quam ab urbe discessimus. Deinde VIII. K. Febr.: 'tantum modo Gnaeus noster ne, ut urbem *ἀλογίστως* reliquit, sic Italiam relinquat.' Eodem die das alteras litteras, quibus mihi consulenti planissime respondes; est enim sic: 'sed venio ad consultationem tuam. Si Gnaeus Italia cedit, in urbem redeundum puto; quae enim finis peregrinationis?' Hoc mihi plane haesit, et nunc ita video, infinitum bellum iunctum miserrima fuga, quam tu peregrinationem *ὑποκορίζῃ*. 5. Sequitur *χρησμὸς* VI. *K.* Februarias: 'ego, si Pompeius manet in Italia nec res ad pactionem venit, longius bellum puto fore; sin Italiam

relinquit, ad posterum bellum ἄσπονδον strui existimo.' Huius igitur belli ego particeps et socius et adiutor esse cogor, quod et ἄσπονδον est *et* cum civibus. Deinde VII. Idus Febr., cum iam plura audires de Pompeii consilio, concludis epistolam quandam hoc modo: 'ego quidem tibi non sim auctor, si Pompeius Italiam relinquit, te quoque profugere; summo enim periculo facies nec rei publicae proderis, cui quidem posterius poteris prodesse, si manseris.' Quem φιλόπατριν ac πολιτικὸν hominis prudentis et amici tali admonitu non moveret auctoritas? 6. Deinceps III. Idus Febr. iterum mihi respondes consulenti sic: 'quod quaeris a me fugamne † fidam an moram desidem utiliorem putem, ego vero in praesentia subitum discessum et praecipitem profectionem cum tibi, tum ipsi Gnaeo inutilem et periculosam puto, et satius esse existimo vos dispertitos et in speculis esse; sed medius fidius turpe nobis puto esse de fuga cogitare.' Hoc turpe Gnaeus noster biennio ante cogitavit; ita sullaturit animus eius et proscripturit iam diu. Inde, ut opinor, cum tu ad me quaedam γενικώτερον scripsisses et ego mihi a te [quaedam] significari putassem, ut Italia cederem, detestaris hoc diligenter XI. K. Mart.: 'ego vero nulla epistola significavi, si Gnaeus Italia cederet, ut tu una cederes, aut, *si* significavi, non dico fui inconstans, sed demens.' In eadem epistola alio loco: 'nihil relinquitur nisi fuga, cui te socium neutiquam puto esse oportere nec umquam putavi.' 7. Totam autem hanc deliberationem evolvis accuratius in litteris VIII. Kal. Mart. datis: 'si M'. Lepidus et L. Volcatius remanent, manendum puto, ita ut, si salvus sit Pompeius et constiterit alicubi, hanc νεκυίαν relinquas et te in certamine vinci cum illo facilius patiaris quam cum hoc in ea, quae perspicitur futura, colluvie

regnare.' Multa disputas huic sententiae convenientia; inde ad extremum 'quid si' inquis 'Lepidus et Volcatius discedunt? plane ἀπορῶ. Quod evenerit igitur et quod egeris, id στερκτέον putabo.' Si tum dubitaras, nunc certe non dubitas, istis manentibus. 8. Deinde in ipsa fuga v. Kal. Martias: 'interea non dubito quin in Formiano mansurus sis; commodissime enim τὸ μέλλον ibi καραδοκήσεις.' Ad K. Martias, cum ille quintum iam diem Brundisii esset: 'tum poterimus deliberare, non scilicet integra re, sed certe minus infracta, quam si una proieceris te.' Deinde III. Non. Martias ὑπὸ τὴν λῆψιν cum breviter scriberes, tamen ponis hoc: 'cras scribam plura et ad omnia; hoc tamen dicam, non paenitere me consilii de tua mansione, et, quamquam magna sollicitudine, tamen, quia minus mali puto esse quam in illa profectione, maneo in sententia et gaudeo te mansisse.' 9. Cum vero iam angerer et timerem, ne quid a me dedecoris esset admissum, III. Nonas Mart.: 'tamen te non esse una cum Pompeio non fero moleste; postea si opus fuerit, non erit difficile, et illi, quoquo tempore fiet, erit ἀσμένιστον. Sed hoc ita dico, si hic, qua ratione initium fecit, eadem cetera aget, sincere, temperate, prudenter, valde videro et consideratius utilitati nostrae consuluero.' 10. VII. Idus Martias scribis Peducaeo quoque nostro probari, quod quierim, cuius auctoritas multum apud me valet. His ego tuis scriptis me consolor, ut nihil a me adhuc delictum putem. Tu modo auctoritatem tuam defendito: adversus me nihil opus est, sed consciis egeo aliis. Ego, si nihil peccavi, reliqua tuebor: ad ea tu te hortare et me omnino tua cogitatione adiuva. Hic nihildum de reditu Caesaris audiebatur. Ego his litteris hoc tamen profeci: perlegi omnes tuas et in eo acquievi.

## 64. AD ATTICUM IX. 11 A.

SCR. IN FORMIANO A.D. XV. (?) KALENDAS APRILES A.U.C. 705.

CICERO IMP. S. D. CAESARI IMP.

1. UT legi tuas litteras, quas a Furnio nostro acceperam, quibus mecum agebas, ut ad urbem essem, te velle uti consilio et dignitate mea, minus sum admiratus: de gratia et de ope quid significares, mecum ipse quaerebam, spe tamen deducebar ad eam cogitationem, ut te pro tua admirabili ac singulari sapientia de otio, de pace, de concordia civium agi velle arbitrarer, et ad eam rationem existimabam satis aptam esse et naturam et personam meam. 2. Quod si ita est et si qua de Pompeio nostro tuendo et tibi ac rei publicae reconciliando cura te attingit, magis idoneum, quam ego sum, ad eam causam profecto reperies neminem, qui et illi semper et senatui, cum primum potui, pacis auctor fui, nec sumptis armis belli ullam partem attigi, iudicavique eo bello te violari, contra cuius honorem populi Romani beneficio concessum inimici atque invidi niterentur. Sed ut eo tempore non modo ipse fautor dignitatis tuae fui, verum etiam ceteris auctor ad te adiuvandum, sic me nunc Pompeii dignitas vehementer movet; aliquot enim sunt anni, cum vos duo delegi, quos praecipue colerem et quibus essem, sicut sum, amicissimus. 3. Quam ob rem a te peto vel potius omnibus te precibus oro et obtestor, ut in tuis maximis curis aliquid impertias temporis huic quoque cogitationi, ut tuo beneficio bonus vir, gratus, pius denique esse in maximi beneficii memoria possim; quae si tantum ad me ipsum pertinerent, sperarem me a te tamen impetraturum, sed, ut arbitror, et ad tuam fidem et ad rem publicam pertinet, me ex paucis et *ad* utriusque vestrum et ad civium

concordiam per te quam accommodatissimum conservari. Ego, cum antea tibi de Lentulo gratias egissem, quod ei saluti, qui mihi fuerat, fuisses, tamen lectis eius litteris, quas ad me gratissimo animo de tua liberalitate beneficioque misit, eandem me salutem a te accepisse *putavi* quam ille; in quem si me intellegis esse gratum, cura, obsecro, ut etiam in Pompeium esse possim.

## 65. AD ATTICUM IX. 12.

SCR. IN FORMIANO A. D. XII. KALENDAS APRILES A.U.C. 705.

CICERO ATTICO SAL.

1. LEGERAM tuas litteras XIII. K., cum mihi epistola adfertur a Lepta, circumvallatum esse Pompeium, ratibus etiam exitus portus teneri: non medius fidius prae lacrimis possum reliqua nec cogitare nec scribere. Misi ad te exemplum. Miseros nos! cur non omnes fatum illius una exsecuti sumus? Ecce autem a Matio et Trebatio eadem, quibus Minturnis obvii Caesaris tabellarii. Torqueor infelix, ut iam illum Mucianum exitum exoptem. At quam honesta, at quam expedita tua consilia, quam evigilata tuis cogitationibus qua itineris, qua navigationis, qua congressus sermonisque cum Caesare! omnia cum honesta, tum cauta. In Epirum vero invitatio quam suavis, quam liberalis, quam fraterna! 2. De Dionysio sum admiratus, qui apud me honoratior fuit quam apud Scipionem Panaetius, a quo impurissime haec nostra fortuna despecta est. Odi hominem et odero; utinam ulcisci possem! sed illum ulciscentur mores sui.

3. Tu, quaeso, nunc vel maxime, quid agendum nobis sit, cogita. Populi Romani exercitus Cn. Pompeium circumsedet, fossa et vallo saeptum tenet, fuga prohibet: nos vivimus et stat urbs ista; praetores ius dicunt; aediles

ludos parant; viri boni usuras perscribunt; ego ipse sedeo. Coner illuc ire, ut insanus? implorare fidem municipiorum? boni non sequentur; leves irridebunt; rerum novarum cupidi, victores praesertim et armati, vim et manus adferent. 4. Quid censes igitur? ecquidnam est tui consilii ad finem huius miserrimae vitae? Nunc doleo, nunc torqueor, cum cuidam aut sapiens videor, quod una non ierim, aut felix fuisse. Mihi contra; numquam enim illius victoriae socius esse volui; calamitatis mallem fuissem. Quid ego nunc tuas litteras, quid tuam prudentiam aut benevolentiam implorem? actum est: nulla re iam possum iuvari, qui ne quod optem quidem iam habeo nisi ut aliqua inimici misericordia liberemur.

## 66. AD ATTICUM IX. 16.

SCR. IN FORMIANO A. D. VII. KALENDAS APRILES A.U.C. 705.

CICERO ATTICO SAL.

1. CUM quod scriberem ad te nihil haberem, ne quem diem intermitterem, has dedi litteras. A. d. VI. K. Caesarem Sinuessae mansurum nuntiabant; ab eo mihi litterae redditae sunt a. d. VII. K., quibus iam 'opes' meas, non, ut superioribus [litteris], 'opem' exspectat. Cum eius clementiam Corfiniensem illam per litteras collaudavissem, rescripsit hoc exemplo:

'CAESAR IMP. CICERONI IMP. SAL. DIC.

2. Recte auguraris de me—bene enim tibi cognitus sum—nihil a me abesse longius crudelitate; atque ego cum ex ipsa re magnam capio voluptatem, tum meum factum probari abs te triumpho gaudio. Neque illud me movet, quod ii, qui a me dimissi sunt, discessisse dicuntur, ut mihi rursus bellum inferrent; nihil enim malo quam et

me mei similem esse et illos sui. 3. Tu velim mihi ad urbem praesto sis, ut tuis consiliis atque opibus, ut consuevi, in omnibus rebus utar. Dolabella tuo nihil scito mihi esse iucundius. Hanc adeo habebo gratiam illi; neque enim aliter facere poterit: tanta eius humanitas, is sensus, ea in me est benevolentia.'

## 67. AD ATTICUM IX. 18.

SCR. ARPINI A. D. IV. KALENDAS APRILES A.U.C. 705.

CICERO ATTICO SAL.

1. UTRUMQUE ex tuo consilio: nam et oratio fuit ea nostra, ut bene potius ille de nobis existimaret, quam gratias ageret, et in eo mansimus, ne ad urbem. Illa fefellerunt, facilem quod putaramus: nihil vidi minus. Damnari se nostro iudicio, tardiores fore reliquos, si nos non venerimus, dicere; ego, dissimilem illorum esse causam. Cum multa: 'veni igitur et age de pace.' Meone, inquam, arbitratu? 'An tibi' inquit 'ego praescribam?' Sic, inquam, agam, senatui non placere in Hispanias iri nec exercitus in Graeciam transportari, multaque, inquam, de Gnaeo deplorabo. Tum ille: 'ego vero ista dici nolo.' Ita putabam, inquam, sed ego eo nolo adesse, quod aut sic mihi dicendum est multaque, quae nullo modo possem silere, si adessem, aut non veniendum. Summa fuit, ut ille, quasi exitum quaerens, 'ut deliberarem.' Non fuit negandum. Ita discessimus. Credo igitur hunc me non amare; at ego me amavi, quod mihi iam pridem usu non venit. 2. Reliqua, o di! qui comitatus! quae, ut tu soles dicere, νεκυία! in qua erat † ero sceleri! o rem perditam! o copias desperatas! Quid, *quod* Servii filius, *quod* Titinii in iis castris fuerunt, quibus Pompeius circumsederetur! sex legiones; multum vigilat, audet: nullum video finem

mali. Nunc certe promenda tibi sunt consilia: hoc fuerat extremum. 3. Illa tamen κατακλεὶς illius est odiosa, quam paene praeterii, si sibi consiliis nostris uti non liceret, usurum, quorum posset, ad omniaque esse descensurum. 'Vidisti igitur virum, ut scripseras? ingemuisti?' Certe. 'Cedo reliqua.' Quid? continuo ipse in Pedanum, ego Arpinum; inde exspecto equidem λαλαγεῦσαν illam tuam. 'Tu, malum,' inquies 'actum ne agas.' Etiam illum ipsum, quem sequimur, multa fefellerunt. 4. Sed ego tuas litteras exspecto; nihil est enim iam, ut antea, 'videamus, hoc quorsum evadat:' extremum fuit de congressu nostro, quo quidem non dubito quin istum offenderim; eo maturius agendum est. Amabo te, epistolam et πολιτικήν! valde tuas litteras nunc exspecto.

## 68. AD ATTICUM X. 1.

SCR. IN LATERIO QUINTI FRATRIS A. D. III. NONAS APRILES A.U.C. 705.

CICERO ATTICO SAL.

1. III. NONAS cum in Laterium fratris venissem, accepi litteras et paulum respiravi, quod post has ruinas mihi non acciderat: per enim magni aestimo tibi firmitudinem animi nostri et factum nostrum probari; Sexto enim nostro quod scribis probari, ita laetor, ut me quasi patris eius, cui semper uni plurimum tribui, iudicio comprobari putem, qui mihi, quod saepe soleo recordari, dixit olim, Nonis illis Decembribus, cum ego 'Sexte, quidnam ergo?'

'μὴ μάν, inquit ille, ἀσπουδί γε καὶ ἀκλειῶς [ἀπολοίμην],
ἀλλὰ μέγα ῥέξας τι καὶ ἐσσομένοισι πυθέσθαι.'

eius igitur mihi vivit auctoritas, et simillimus eius filius eodem est apud me pondere, quo fuit ille; quem salvere

velim iubeas plurimum. 2. Tu tuum consilium etsi non in longinquum tempus differs—iam enim illum emptum pacificatorem perorasse puto, iam actum aliquid esse in consessu senatorum—*senatum* enim non puto—, tamen suspensum me inde tenes, sed eo minus, quod non dubito, quid nobis agendum putes. Qui enim Flavio legionem et Siciliam dari scribas et id iam fieri, quae tu scelera partim parari iam et cogitari, partim ex tempore futura censes? Ego vero Solonis, popularis tui, ut puto etiam mei, legem neglegam, qui capite sanxit, si qui in seditione non alterius utrius partis fuisset, *et*, nisi si tu aliter censes, et hinc abero et illim; sed alterum mihi est certius, nec praecipiam tamen: exspectabo tuum consilium et eas litteras, nisi alias iam dedisti, quas scripsi ut Cephalioni dares. 3. Quod scribis, non quo aliunde audieris, sed te ipsum putare me attractum iri, si de pace agatur, mihi omnino non venit in mentem, quae possit actio esse de pace, cum illi certissimum sit, si possit, exspoliare exercitu et provincia Pompeium, nisi forte iste nummarius ei potest persuadere, ut, dum oratores eant et redeant, quiescat. Nihil video, quod sperem aut quod iam putem fieri posse; sed tamen hominis hoc ipsum probi est. Magnum est et *τῶν πολιτικωτάτων σκεμμάτων*, veniendumne sit in consilium tyranni, si is aliqua de re bona deliberaturus sit; qua re, si quid eius modi evenerit, ut arcessamur—quod equidem non curo; quid enim essem de pace dicturus, dixi; ipse valde repudiavit—, sed tamen, si quid acciderit, quid censeas mihi faciendum, utique scribito; nihil enim mihi adhuc accidit, quod maioris consilii esset. Trebatii, boni viri et civis, verbis te gaudeo delectatum, tuaque ista crebra *ἐκφώνησις* '*ὑπέρευ*' me sola adhuc delectavit. Litteras tuas vehementer exspecto, quas quidem credo iam

datas esse. 4. Tu cum Sexto servasti gravitatem eandem, quam mihi praecipis. Celer tuus disertus magis est quam sapiens. De iuvenibus quae ex Tullia audisti vera sunt. † Maconi istud, quod scribis, non mihi videtur tam re esse triste quam verbo: haec est ἄλη, in qua nunc sumus, mortis instar: aut enim mihi libere inter malos πολιτευτέον fuit aut vel periculose cum bonis; aut nos temeritatem bonorum sequamur aut audaciam improborum insectemur. Utrumque periculosum est, at hoc, quod agimus, turpe, nec tamen tutum. Istum, qui filium Brundisium de pace misit—de pace idem sentio, quod tu, simulationem esse apertam, parari autem bellum acerrime—, me legatum iri non arbitror, cuius adhuc, ut optavi, mentio facta nulla sit: eo minus habeo necesse scribere aut etiam cogitare, quid sim facturus, si acciderit, ut leger.

## 69. AD FAMILIARES VIII. 16.

SCR. MENSE APRILI A.U.C. 705.

CAELIUS CICERONI SAL.

1. EXANIMATUS tuis litteris, quibus te nihil nisi triste cogitare ostendisti neque id quid esset perscripsisti neque non tamen, quale esset quod cogitares, aperuisti, has ad te ilico litteras scripsi. Per fortunas tuas, Cicero, per liberos te oro et obsecro, ne quid gravius de salute et incolumitate tua consulas. Nam deos hominesque amicitiamque nostram testificor me tibi praedixisse neque temere monuisse, sed postquam Caesarem convenerim sententiamque eius, qualis futura esset parta victoria, cognoverim, te certiorem fecisse. Si existimas eandem rationem fore Caesaris in dimittendis adversariis et condicionibus ferendis, erras: nihil nisi atrox et saevum cogitat atque etiam loquitur: iratus senatui exiit; his

intercessionibus plane incitatus est; non mehercules erit deprecationi locus. 2. Qua re si tibi tu, si filius unicus, si domus, si spes tuae reliquae tibi carae sunt, si aliquid apud te nos, si vir optimus, gener tuus, valemus, quorum fortunam non debes velle conturbare, ut eam causam, in cuius victoria salus nostra est, odisse aut relinquere cogamur aut impiam cupiditatem contra salutem tuam habeamus. Denique illud cogita: quod offensae fuerit in ista cunctatione, te subisse; nunc te contra victorem Caesarem facere, quem dubiis rebus laedere noluisti, et ad eos fugatos accedere, quos resistentes sequi nolueris, summae stultitiae est. Vide ne, dum pudet te parum optimatem esse, parum diligenter, quid optimum sit, eligas. 3. Quod si totum tibi persuadere non possum, saltem, dum, quid de Hispaniis agamus, scitur, exspecta; quas tibi nuntio adventu Caesaris fore nostras. Quam isti spem habeant amissis Hispaniis, nescio; quod porro tuum consilium sit ad desperatos accedere, non medius fidius reperio. 4. Hoc, quod tu non dicendo mihi significasti, Caesar audierat ac, simulatque 'have' mihi dixit, statim, quid de te audisset, exposuit: negavi me scire; sed tamen ab eo petii ut ad te litteras mitteret, quibus maxime ad remanendum commoveri posses. Me secum in Hispaniam ducit; nam, nisi ita faceret, ego prius, quam ad urbem accederem, ubicumque esses, ad te percurrissem et hoc a te praesens contendissem atque omni vi te retinuissem. 5. Etiam atque etiam, Cicero, cogita, ne te tuosque omnes funditus evertas, ne te sciens prudensque eo demittas, unde exitum vides nullum esse. Quod si te aut voces optimatium commovent aut non nullorum hominum insolentiam et iactationem ferre non potes, eligas censeo aliquod oppidum vacuum a bello,

dum haec decernuntur, quae iam erunt confecta. Id si feceris, et ego te sapienter fecisse iudicabo et Caesarem non offendes.

## 70. AD FAMILIARES II. 16.

SCR. IN CUMANO MENSE APRILI A.U.C. 705.

M. CICERO IMP. S. D. M. CAELIO.

1. MAGNO dolore me adfecissent tuae litterae, nisi iam et ratio ipsa depulisset omnes molestias et diuturna desperatione rerum obduruisset animus ad dolorem novum; sed tamen, qua re acciderit ut ex meis superioribus litteris id suspicarere, quod scribis, nescio: quid enim in illis fuit praeter querelam temporum? quae non meum animum magis sollicitum habent quam tuum. Nam non eam cognovi aciem ingenii tui, quod ipse videam, te id ut non putem videre: illud miror, adduci potuisse te, qui me penitus nosse deberes, ut existimares aut me tam improvidum, qui ab excitata fortuna ad inclinatam et prope iacentem desciscerem, aut tam inconstantem, ut collectam gratiam florentissimi hominis effunderem a meque ipse deficerem et, quod initio semperque fugi, civili bello interessem. 2. Quod est igitur meum 'triste consilium'? ut discederem fortasse in aliquas solitudines? nosti enim non modo stomachi mei, cuius tu similem quondam habebas, sed etiam oculorum in hominum insolentium indignitate fastidium; accedit etiam molesta haec pompa lictorum meorum nomenque imperii, quo appellor: eo si onere carerem, quamvis parvis Italiae latebris contentus essem. Sed incurrit haec nostra laurus non solum in oculos, sed iam etiam in voculas malevolorum. Quod cum ita esset, nil tamen umquam de profectione nisi vobis adprobantibus cogitavi. Sed mea praediola tibi

nota sunt; in his mihi necesse est esse, ne amicis molestus sim. Quod autem in maritimis facillime sum, moveo non nullis suspitionem velle me navigare; quod tamen fortasse non nollem, si possem ad otium: nam ad bellum quidem qui convenit? praesertim contra eum, cui spero me satis fecisse, ab eo, cui iam satis fieri nullo modo potest. 3. Deinde sententiam meam tu facillime perspicere potuisti iam ab illo tempore, cum in Cumanum mihi obviam venisti: non enim te celavi sermonem T. Ampii; vidisti, quam abhorrerem ab urbe relinquenda, cum audissem. Nonne tibi adfirmavi quidvis me potius perpessurum quam ex Italia ad bellum civile exiturum? Quid ergo accidit, cur consilium mutarem? nonne omnia potius, ut in sententia permanerem? Credas hoc mihi velim, quod puto te existimare, me ex his miseriis nihil aliud quaerere nisi ut homines aliquando intellegant me nihil maluisse quam pacem, ea desperata nihil tam fugisse quam arma civilia: huius me constantiae puto fore ut numquam paeniteat. Etenim memini in hoc genere gloriari solitum esse familiarem nostrum Q. Hortensium, quod numquam bello civili interfuisset: hoc nostra laus erit illustrior, quod illi tribuebatur ignaviae; de nobis id existimari posse non arbitror. 4. Nec me ista terrent, quae mihi a te ad timorem fidissime atque amantissime proponuntur; nulla est enim acerbitas, quae non omnibus hac orbis terrarum perturbatione impendere videatur, quam quidem ego a re publica meis privatis et domesticis incommodis libentissime vel istis ipsis, quae tu me mones ut caveam, redemissem. 5. Filio meo, quem tibi carum esse gaudeo, si erit ulla res publica, satis amplum patrimonium relinquam memoriam nominis mei; si autem nulla erit, nihil accidet ei separatim a reliquis civibus.

Nam quod rogas ut respiciam generum meum, adulescentem optimum mihique carissimum, an dubitas, qui scias, quanti cum illum tum vero Tulliam meam faciam, quin ea me cura vehementissime sollicitet? et eo magis, quod in communibus miseriis hac tamen oblectabar specula, Dolabellam meum vel potius nostrum fore ab iis molestiis, quas liberalitate sua contraxerat, liberum. Velim quaeras, quos ille dies sustinuerit, in urbe dum fuit, quam acerbos sibi, quam mihi ipsi socero non honestos. 6. Itaque neque ego hunc Hispaniensem casum exspecto, de quo mihi exploratum est ita esse, ut tu scribis, neque quicquam astute cogito: si quando erit civitas, erit profecto nobis locus; sin autem non erit, in easdem solitudines tu ipse, ut arbitror, venies, in quibus nos consedisse audies. Sed ego fortasse vaticinor et haec omnia meliores habebunt exitus: recordor enim desperationes eorum, qui senes erant adulescente me; eos ego fortasse nunc imitor et utor aetatis vitio. 7. Velim ita sit. Sed tamen! . . . togam praetextam texi Oppio puto te audisse; nam Curtius noster dibaphum cogitat, sed eum infector moratur. Hoc adspersi, ut scires me tamen in stomacho solere ridere. *De* Dolabella, quod scripsi, suadeo videas, tamquam si tua res agatur. Extremum illud erit: nos nihil turbulenter, nihil temere faciemus; te tamen oramus, quibuscumque erimus in terris, ut nos liberosque nostros ita tueare, ut amicitia nostra et tua fides postulabit.

## 71. AD ATTICUM X. 8.

SCR. IN CUMANO A. D. VI. NONAS MAIAS A.U.C. 705.

CICERO ATTICO SAL.

1. ET res ipsa monebat et tu ostenderas et ego videbam, de iis rebus, quas intercipi periculosum esset, finem

inter nos scribendi fieri tempus esse; sed, cum ad me saepe mea Tullia scribat orans, ut quid in Hispania geratur exspectem, et semper adscribat idem videri tibi idque ipse etiam ex tuis litteris intellexerim, non puto esse alienum me ad te, quid de ea re sentiam, scribere. 2. Consilium istud tunc esset prudens, ut mihi videtur, si nostras rationes ad Hispaniensem casum accommodaturi essemus; quod fieri nequit; necesse est enim aut, id quod maxime velim, pelli istum ab Hispania, aut trahi id bellum, aut istum, ut confidere videtur, apprehendere Hispanias. Si pelletur, quam gratus aut quam honestus tum erit ad Pompeium noster adventus, cum ipsum Curionem ad eum transiturum putem? si trahitur bellum, quid exspectem aut quam diu? relinquitur, ut, si vincimur in Hispania, quiescamus: id ego contra puto; istum enim victorem magis relinquendum puto quam victum et dubitantem, magis quam fidentem suis rebus. Nam caedem video, si vicerit, et impetum in privatorum pecunias et exsulum reditum et tabulas novas et turpissimorum honores et regnum non modo Romano homini, sed ne Persae quidem cuiquam tolerabile. 3. Tacita esse poterit indignitas nostra? pati poterunt oculi me cum Gabinio sententiam dicere? et quidem illum rogari prius? praesto esse clientem tuum Clodium? C. Ateii Plaguleium? ceteros? Sed cur inimicos colligo, qui meos necessarios a me defensos nec videre in curia sine dolore nec versari inter eos sine dedecore potero? quid, si ne id quidem est exploratum, fore, ut mihi liceat—scribunt enim ad me amici eius me illi nullo modo satis fecisse, quod in senatum non venerim—, tamenne dubitemus an ei nos etiam cum periculo venditemus, quicum coniuncti ne cum praemio quidem voluimus esse? 4. Deinde hoc vide, non esse iudicium

de tota contentione in Hispaniis, nisi forte iis amissis arma Pompeium abiecturum putas, cuius omne consilium Themistocleum est; existimat enim, qui mare teneat eum necesse *esse* rerum potiri. Itaque numquam id egit, ut Hispaniae per se tenerentur; navalis apparatus ei semper antiquissima cura fuit. Navigabit igitur, cum erit tempus, maximis classibus et ad Italiam accedet, in qua nos sedentes quid erimus? nam medios esse iam non licebit. [Classibus] adversabimur igitur? quod maius scelus vel tantum denique? quid turpius? An qui † valde hic in absentes solus tuli scelus, eiusdem cum Pompeio et cum reliquis principibus non feram? 5. Quod si iam misso officio periculi ratio habenda est, ab illis est periculum, si peccaro, ab hoc, si recte fecero, nec ullum in his malis consilium periculo vacuum inveniri potest, ut non sit dubium quin [turpiter facere] cum periculo fugiamus, quod fugeremus etiam cum salute. Non simul cum Pompeio mare transiimus. Omnino *non* potuimus: exstat ratio dierum. Sed tamen—fateamur enim quod est—ne contendimus quidem, ut possemus. Fefellit ea me res, quae fortasse non debuit, sed fefellit: pacem putavi fore, quae si esset, iratum mihi Caesarem esse, cum idem amicus esset Pompeio, nolui; senseram enim, quam iidem essent. Hoc verens in hanc tarditatem incidi. Sed assequor omnia, si propero; si cunctor, amitto. 6. Et tamen, mi Attice, auguria quoque me incitant quadam spe non dubia, non haec collegii nostri ab Atto, sed illa Platonis de tyrannis: nullo enim modo posse video stare istum diutius, quin ipse per se etiam languentibus nobis concidat, quippe qui florentissimus ac novus VI. VII. diebus ipsi illi egenti ac perditae multitudini in odium acerbissimum venerit, qui duarum rerum simula-

tionem tam cito amiserit, mansuetudinis in Metello, divitiarum in aerario. Iam, quibus utatur vel sociis vel ministris, si ii provincias, si ii rem publicam regent, quorum nemo duo menses potuit patrimonium suum gubernare? 7. Non sunt omnia colligenda, quae tu acutissime perspicis, sed tamen ea pone ante oculos: iam intelleges id regnum vix semestre esse posse. Quod si me fefellerit, feram, sicut multi clarissimi homines in re publica excellentes tulerunt, nisi forte me Sardanapali vicem [in suo lectulo] mori malle censueris quam exsilio Themistocleo, qui cum fuisset, ut ait Thucydides, *τῶν μὲν παρόντων δι' ἐλαχίστης βουλῆς κράτιστος γνώμων, τῶν δὲ μελλόντων ἐς πλεῖστον τοῦ γενησομένου ἄριστος εἰκαστής*, tamen incidit in eos casus, quos vitasset, si eum nihil fefellisset. Etsi is erat, ut ait idem, qui *τὸ ἄμεινον καὶ τὸ χεῖρον ἐν τῷ ἀφανεῖ ἔτι ἑώρα μάλιστα*, tamen non vidit, nec quo modo Lacedaemoniorum nec quo modo suorum civium invidiam effugeret nec quid Artaxerxi polliceretur. Non fuisset illa nox tam acerba Africano, sapientissimo viro, non tam dirus ille dies Sullanus callidissimo viro C. Mario, si nihil utrumque eorum fefellisset. Nos tamen hoc confirmamus illo augurio, quo diximus, nec nos fallit nec aliter accidet: 8. corruat iste necesse est aut per adversarios aut ipse per se, qui quidem sibi est adversarius unus acerrimus; id spero vivis nobis fore. Quamquam tempus est nos de illa perpetua iam, non de hac exigua vita cogitare. Sin quid acciderit maturius, haud sane mea multum interfuerit, utrum factum videam, an futurum esse multo ante viderim. Quae cum ita sint, non est committendum, ut iis paream, quos contra me senatus, ne quid res publica detrimenti acciperet, armavit. 9. Tibi sunt omnia commendata, quae commendationis

meae pro tuo in nos amore non indigent. Nec hercule ego quidem reperio, quid scribam; sedeo enim πλουδοκῶν: etsi nihil umquam tam fuit scribendum quam nihil mihi umquam ex plurimis tuis iucunditatibus gratius accidisse quam quod meam Tulliam suavissime diligentissimeque coluisti—valde eo ipsa delectata est, ego autem non minus—, cuius quidem virtus mirifica. Quo modo illa fert publicam cladem! quo modo domesticas tricas! quantus autem animus in discessu nostro! est στοργή, est summa σύντηξις: tamen nos recte facere et bene audire volt. 10. Sed hac super re nimis, ne meam ipse συμπάθειαν iam evocem. Tu, si quid de Hispaniis certius et si quid aliud, dum adsumus, scribes et ego fortasse discedens dabo ad te aliquid, eo etiam magis, quod Tullia te non putabat hoc tempore ex Italia. Cum Antonio item est agendum, ut cum Curione, Melitae me velim esse, huic bello nolle interesse: eo velim tam facili uti possim et tam bono in me quam Curione. Is ad Misenum VI. Nonas venturus dicebatur, id est hodie, sed praemisit mihi odiosas litteras hoc exemplo.

## 72. AD ATTICUM X. 8 A.

'ANTONIUS TRIB. PL. PRO. PR. CICERONI IMP. SAL.

1. Nisi te valde amarem, et multo quidem plus, quam tu putas, non extimuissem rumorem, qui de te prolatus est, cum praesertim falsum esse existimarem; sed quia te nimio plus diligo, non possum dissimulare mihi famam quoque, quamvis sit falsa, magni esse. *Te iturum esse* trans mare credere non possum, cum tanti facias Dolabellam *et* Tulliam tuam, feminam lectissimam, tantique ab omnibus nobis fias, quibus mehercule dignitas amplitudoque tua paene carior est quam tibi ipsi; sed tamen

non sum arbitratus esse amici non commoveri etiam improborum sermone, atque eo feci studiosius, quod iudicabam duriores partes mihi impositas esse ab offensione nostra, quae magis a zelotypia mea quam ab iniuria tua nata est. Sic enim volo te tibi persuadere, mihi neminem esse cariorem te excepto Caesare meo, Caesarem maxime in suis M. Ciceronem reponere. 2. Qua re, mi Cicero, te rogo, ut tibi omnia integra serves, eius fidem improbes, qui tibi, ut beneficium daret, prius iniuriam fecit, contra ne profugias, qui te, etsi non amabit—quod accidere non potest—, tamen salvum amplissimumque esse cupiet. Dedita opera ad te Calpurnium, familiarissimum meum, misi, ut mihi magnae curae tuam vitam ac dignitatem esse scires.'

Eodem die a Caesare Philotimus litteras attulit hoc exemplo.

## 73. AD ATTICUM X. 8 B.

'CAESAR IMP. SAL. D. CICERONI IMP.

1. Etsi te nihil temere, nihil imprudenter facturum iudicaram, tamen permotus hominum fama scribendum ad te existimavi et pro nostra benevolentia petendum, ne quo progredereris proclinata iam re, quo integra etiam progrediendum tibi non existimasses; namque et amicitiae graviorem iniuriam feceris et tibi minus commode consulueris, si non fortunae obsecutus videbere—omnia enim secundissima nobis, adversissima illis accidisse videntur—, nec causam secutus—eadem enim tum fuit, cum ab eorum consiliis abesse iudicasti—, sed meum aliquod factum condemnavisse, quo mihi gravius abs te nil accidere potest; quod ne facias, pro iure nostrae amicitiae a te peto. 2. Postremo, quid viro bono et quieto et bono

civi magis convenit quam abesse a civilibus controversiis? quod non nulli cum probarent, periculi causa sequi non potuerunt: tu explorato et vitae meae testimonio et amicitiae iudicio neque tutius neque honestius reperies quicquam quam ab omni contentione abesse. xv. Kal. Maias ex itinere.'

## 74. AD ATTICUM X. 16.

SCR. IN CUMANO PRID. IDUS MAIAS A.U.C. 705.

CICERO ATTICO SAL.

1. COMMODUM ad te dederam litteras de pluribus rebus, cum ad me bene mane Dionysius [fuit], cui quidem ego non modo placabilem me praebuissem, sed totum remisissem, si advenisset, qua mente tu ad me scripseras; erat enim sic in tuis litteris, quas Arpini acceperam, eum venturum facturumque quod ego vellem: ego volebam autem vel cupiebam potius esse eum nobiscum; quod quia plane, cum in Formianum venisset, praeciderat, asperius ad te de eo scribere solebam. At ille perpauca locutus hanc summam habuit orationis, ut sibi ignoscerem, se rebus suis impeditum nobiscum ire non posse. Pauca respondi, magnum accepi dolorem, intellexi fortunam ab eo nostram despectam esse. Quid quaeris? fortasse miraberis: in maximis horum temporum doloribus hunc mihi scito esse. Velim ut tibi amicus sit: hoc cum tibi opto, opto ut beatus sis; erit enim tam diu. 2. Consilium nostrum spero vacuum periculo fore; nam et dissimulavimus et, ut opinor, acerrime adservabimus. Navigatio modo sit, qualem opto, cetera, quae quidem consilio provideri poterunt, cavebuntur. Tu, dum adsumus, non modo quae scieris audierisve, sed etiam quae futura providebis scribas velim. 3. Cato, qui Siciliam tenere nullo

negotio potuit, et, si tenuisset, omnes boni ad eum se contulissent, Syracusis profectus est ante diem VIII. K. Mai., ut ad me Curio scripsit. Utinam, quod aiunt, Cotta Sardiniam teneat! est enim rumor. O, si id fuerit, turpem Catonem! 4. Ego, ut minuerem suspitionem profectionis aut cogitationis meae, profectus sum in Pompeianum a. d. IIII. Idus, ut ibi essem, dum quae ad navigandum opus essent pararentur. Cum ad villam venissem, ventum est ad me: centuriones trium cohortium, quae Pompeiis sunt, me velle postridie [convenire]—haec mecum Ninnius noster—; velle eos mihi se et oppidum tradere. At ego tibi postridie a villa ante lucem, ut me omnino illi ne viderent. Quid enim erat in tribus cohortibus? quid, si plures? quo apparatu? cogitavi eadem illa Caeliana, quae legi in epistola tua, quam accepi, simul et in Cumanum veni, eodem die, et [simul] fieri poterat, ut temptaremur; omnem igitur suspitionem sustuli. 5. Sed dum redeo, Hortensius venerat, et ad Terentiam salutatum deverterat; sermone erat usus honorifico erga me. Tamen eum, ut puto, videbo; misit enim puerum se ad me venire. Hoc quidem melius quam collega noster Antonius, cuius inter lictores lectica mima portatur. 6. Tu, quoniam quartana cares, et nedum novum morbum removisti, sed etiam gravedinem, te vegetum nobis in Graecia siste, et litterarum aliquid interea.

## 75. AD FAMILIARES XIV. 7.

SCR. IN PORTU CAIETANO NAVE CONSCENSA, VII. ID. IUN. A.U.C. 705. TULLIUS TERENTIAE SUAE SAL. PLURIMAM.

1. OMNES molestias et sollicitudines, quibus et te miserrimam habui, id quod mihi molestissimum est, *et*

Tulliolam, quae nobis nostra vita dulcior est, deposui et eieci; quid causae autem fuerit, postridie intellexi, quam a vobis discessi: χολὴν ἄκρατον noctu eieci; statim ita sum levatus, ut mihi deus aliquis medicinam fecisse videatur, cui quidem tu deo, quem ad modum soles, pie et caste satis facies [id est Apollini et Aesculapio]. 2. Navem spero nos valde bonam habere; in eam simulatque conscendi, haec scripsi. Deinde conscribam ad nostros familiares multas epistolas, quibus te et Tulliolam nostram diligentissime commendabo. Cohortarer vos, quo animo fortiore essetis, nisi vos fortiores cognossem quam quemquam virum. Et tamen eius modi spero negotia esse, ut et vos istic commodissime sperem esse et me aliquando cum similibus nostri rem publicam defensuros. 3. Tu primum valetudinem tuam velim cures; deinde, si tibi videbitur, villis iis utere, quae longissime aberunt a militibus. Fundo Arpinati bene poteris uti cum familia urbana, si annona carior fuerit. Cicero bellissimus tibi salutem plurimam dicit. Etiam atque etiam vale. D. VII. Idus Iun.

## 76. AD FAMILIARES VIII. 17.

SCR. ROMAE MENSE MARTIO A.U.C. 706.

CAELIUS CICERONI SAL.

1. ERGO me potius in Hispania fuisse tum quam Formiis, cum tu profectus es ad Pompeium! Quod utinam aut Appius Claudius *in hac parte fuisset aut* in ista parte C. Curio, cuius amicitia me paulatim in hanc perditam causam imposuit; nam mihi sentio bonam mentem iracundia et amore ablatam. Tu porro, cum ad te proficiscens Arimino noctu venissem, dum mihi pacis mandata das ad Caesarem et mirificum civem agis, amici

officium neglexisti neque mihi consuluisti. Neque haec dico, quod diffidam huic causae, sed crede mihi, perire satius est quam hos videre. 2. Quod si timor vestrae crudelitatis non esset, eiecti iam pridem hinc essemus; nam hic nunc praeter faeneratores paucos nec homo nec ordo quisquam est nisi Pompeianus. Equidem iam effeci, ut maxime plebs et, qui antea noster fuit, populus vester esset. 'Cur hoc?' inquis. Immo reliqua exspectate; vos invitos vincere coegero. *Geram* alterum me Catonem: vos dormitis, neque adhuc mihi videmini intellegere, quam nos pateamus et quam simus imbecilli. Atque hoc nullius praemii spe faciam, sed, quod apud me plurimum solet valere, doloris atque indignitatis causa. Quid istic facitis? proelium exspectatis, quod firmissimum habet? Vestras copias non novi; nostri valde depugnare et facile algere et esurire consuerunt.

## 77. AD FAMILIARES IX. 9.

SCR. IN CAESARIS CASTRIS MENSE MAIO A.U.C 706.

DOLABELLA S. D. CICERONI.

1. S. v. g. v. et Tullia nostra recte v. Terentia minus belle habuit, sed certum scio iam convaluisse eam. Praeterea rectissime sunt apud te omnia. Etsi nullo tempore in suspitionem tibi debui venire partium causa potius quam tua tibi suadere, ut te aut cum Caesare nobiscumque coniungeres aut certe in otium referres, praecipue nunc iam inclinata victoria, ne possum quidem in ullam aliam incidere opinionem nisi in eam, in qua scilicet tibi suadere videar, quod pie tacere non possim: tu autem, mi Cicero, sic haec accipies, ut, sive probabuntur tibi sive non probabuntur, ab optimo certe animo ac deditissimo tibi et cogitata et scripta esse iudices. 2. Animadvertis Cn.

Pompeium nec nominis sui nec rerum gestarum gloria neque etiam regum ac nationum clientelis, quas ostentare crebro solebat, esse tutum, et hoc etiam, quod infimo cuique contigit, illi non posse contingere, ut honeste effugere possit, pulso Italia, amissis Hispaniis, capto exercitu veterano, circumvallato nunc denique; quod nescio an nulli umquam nostro acciderit imperatori. Quam ob rem, quid aut ille sperare possit aut tu, animum adverte pro tua prudentia; sic enim facillime quod tibi utilissimum erit consilii capies. Illud autem *a* te peto, ut, si iam ille evitaverit hoc periculum et se abdiderit in classem, tu tuis rebus consulas et aliquando tibi potius quam cuivis sis amicus: satis factum est iam a te vel officio vel familiaritate, satis factum etiam partibus et ei rei publicae, quam tu probabas. 3. Reliquum est *ut*, ubi nunc est res publica, ibi simus potius quam, dum illam veterem sequamur, simus in nulla. Qua re velim, mi iucundissime Cicero, si forte Pompeius pulsus his quoque locis rursus alias regiones petere cogatur, ut tu te vel Athenas vel in quamvis quietam recipias civitatem; quod si eris facturus, velim mihi scribas, ut ego, si ullo modo potero, ad te advolem. Quaecumque de tua dignitate ab imperatore erunt impetranda, qua est humanitate Caesar, facillimum erit ab eo tibi ipsi impetrare; et meas tamen preces apud eum non minimum auctoritatis habituras puto. Erit tuae quoque fidei et humanitatis curare, ut is tabellarius, quem ad te misi, reverti possit ad me et a te mihi litteras referat.

## 78. AD ATTICUM XI. 4.

SCR. IN CASTRIS POMPEII MENSE QUINTILI A.U.C. 706.

CICERO ATTICO SAL.

1. ACCEPI ab Isidoro litteras et postea datas binas: ex proximis cognovi praedia non venisse; videbis ergo, ut sustentetur per te. De Frusinati, si modo futuri sumus, erit mihi res opportuna. Meas litteras quod requiris, impedior inopia rerum, quas nullas habeo litteris dignas, quippe cui nec quae accidunt nec quae aguntur ullo modo probentur. Utinam coram tecum olim potius quam per epistolas! Hic tua, ut possum, tueor apud hos. Cetera Celer. Ipse fugi adhuc omne munus, eo magis, quod ita nihil poterat agi, ut mihi et meis rebus aptum esset.

2. Quid sit gestum novi, quaeris: ex Isidoro scire poteris; reliqua non videntur esse difficiliora. Tu id velim, quod scis me maxime velle, cures, ut scribis, ut facis. Me conficit sollicitudo, ex qua etiam summa infirmitas corporis; qua levata ero una cum eo, qui negotium gerit estque in spe magna. Brutus amicus; in causa versatur acriter. Hactenus fuit quod caute a me scribi posset. Vale. De pensione altera, oro te, omni cura considera, quid faciendum sit, ut scripsi iis litteris, quas Pollex tulit.

# M. TULLII CICERONIS

## EPISTOLAE SELECTAE.

### PARS IV.

### 79. AD ATTICUM XI. 5.

SCR. BRUNDISII PR. NONAS NOVEMBRES A.U.C. 706.

CICERO ATTICO SAL.

1. QUAE me causae moverint, quam acerbae, quam graves, quam novae, coëgerintque impetu magis quodam animi uti quam cogitatione, non possum ad te sine maximo dolore scribere; fuerunt quidem tantae, ut id, quod vides, effecerint. Itaque nec quid ad te scribam de meis rebus nec quid a te petam, reperio. Rem et summam negotii vides. Equidem ex tuis litteris intellexi et iis, quas communiter cum aliis scripsisti, et iis, quas tuo nomine, quod etiam mea sponte videbam, te subita re quasi debilitatum novas rationes tuendi mei quaerere. 2. Quod scribis placere, ut propius accedam iterque per oppida noctu faciam, non sane video, quem ad modum id fieri possit; neque enim ita apta habeo deversoria, ut tota tempora diurna in iis possim consumere, neque ad id, quod quaeris, multum interest, utrum me homines in oppido videant an in via. Sed tamen hoc ipsum, sicut alia, considerabo quem ad modum commodissime fieri posse videatur. 3. Ego propter incredibilem et animi et corporis molestiam conficere plures litteras non potui; iis

tantum rescripsi, a quibus acceperam. Tu velim et Basilo et quibus praeterea videbitur, etiam Servilio conscribas, ut tibi videbitur, meo nomine. Quod tanto intervallo nihil omnino ad vos scripsi, his litteris profecto intelleges rem mihi deesse, de qua scribam, non voluntatem. 4. Quod de Vatinio quaeris, neque illius neque cuiusquam mihi praeterea officium deesset, si reperire possent, qua in re me iuvarent. Quintus aversissimo a me animo Patris fuit; eodem Corcyra filius venit. Inde profectos eos una cum ceteris arbitror.

## 80. AD ATTICUM XI. 6.

SCR. BRUNDISII A. D. IV. KALENDAS DECEMBRES A.U.C. 706.

CICERO ATTICO SAL. DICIT.

1. SOLLICITUM esse te cum de tuis communibusque fortunis, tum maxime de me ac de dolore meo sentio; qui quidem meus dolor non modo non minuitur, cum socium sibi adiungit dolorem tuum, sed etiam augetur. Omnino pro tua prudentia sentis, qua consolatione levari maxime possim; probas enim meum consilium negasque mihi quicquam tali tempore potius faciendum fuisse. Addis etiam—quod etsi mihi levius est quam tuum iudicium, tamen non est leve—ceteris quoque, id est, qui pondus habeant, factum nostrum probari. Id si ita putarem, levius dolerem. 'Crede' inquis 'mihi.' 2. Credo equidem, sed scio, quam cupias minui dolorem meum. Me discessisse ab armis numquam paenituit: tanta erat in illis crudelitas, tanta cum barbaris gentibus coniunctio, ut non nominatim, sed generatim proscriptio esset informata, ut iam omnium iudicio constitutum esset omnium vestrum bona praedam esse illius victoriae. 'Vestrum' plane dico; numquam enim de te ipso nisi crudelissime

cogitatum est. Qua re voluntatis me meae numquam paenitebit; consilii paenitet. In oppido aliquo mallem resedisse, quoad arcesserer: minus sermonis subissem, minus accépissem doloris; ipsum hoc me non angeret. Brundisii iacere in omnes partes est molestum. Propius accedere, ut suades, quo modo sine lictoribus, quos populus dedit, possum? qui mihi incolumi adimi non possunt; quos ego nunc paulisper cum bacillis in turbam conieci ad oppidum accedens, ne quis impetus militum fieret. † Recipio tempore me domo. 3. Te nunc ad oppidum et quoniam his placeret modo propius accedere, ut hac de re considerarent: credo fore auctores. Sic enim recipiunt, Caesari non modo de conservanda, sed etiam de augenda mea dignitate curae fore, meque hortantur, ut magno animo sim, ut omnia summa sperem: ea spondent, confirmant, quae quidem mihi exploratiora essent, si remansissem. Sed ingero praeterita. Vide, quaeso, igitur ea, quae restant, et explora cum istis, et si putabis opus esse et si istis placebit, quo magis factum nostrum Caesar probet quasi de suorum sententia factum, adhibeantur Trebonius, Pansa, si qui alii, scribantque ad Caesarem me, quicquid fecerim, de sua sententia fecisse.

4. Tulliae meae morbus et imbecillitas corporis me exanimat, quam tibi intellego magnae curae esse, quod est mihi gratissimum. 5. De Pompeii exitu mihi dubium numquam fuit; tanta enim desperatio rerum eius omnium regum et populorum animos occuparat, ut, quocumque venisset, hoc putarem futurum. Non possum eius casum non dolere; hominem enim integrum et castum et gravem cognovi. 6. De Fannio consoler te? perniciosa loquebatur de mansione tua; L. vero Lentulus Hortensii domum sibi et Caesaris hortos et Baias despon-

derat. Omnino haec eodem modo ex hac parte fiunt, nisi quod illud erat infinitum; omnes enim, qui in Italia manserant, hostium numero habebantur. Sed velim haec aliquando solutiore animo. 7. Quintum fratrem audio profectum in Asiam, ut deprecaretur; de filio nihil audivi. Sed quaere ex Diochare, Caesaris liberto, quem ego non vidi, qui istas Alexandreas litteras attulit. Is dicitur vidisse [an] euntem, an iam in Asia. Tuas litteras, prout res postulat, exspecto; quas velim cures quam primum ad me perferendas. III. K. Decembr.

## 81. AD ATTICUM XI. 9.

SCR. BRUNDISII A. D. III. NONAS IANUARIAS A.U.C. 707.

CICERO ATTICO SAL.

1. EGO vero et incaute, ut scribis, et celerius, quam oportuit, feci nec in ulla sum spe, quippe qui exceptionibus edictorum retinear; quae si non essent sedulitate effectae et benevolentia tua, liceret mihi abire in solitudines aliquas: nunc ne id quidem licet. Quid autem me iuvat, quod ante initum tribunatum veni, si ipsum, quod veni, nihil iuvat? iam quid sperem ab eo, qui mihi amicus numquam fuit, cum iam lege etiam sim confectus et oppressus? *quoti*die iam Balbi ad me litterae languidiores, multaeque multorum ad illum, fortasse contra me. Meo vitio pereo; nihil mihi mali casus attulit; omnia culpa contracta sunt. Ego enim, cum genus belli viderem, imparata et infirma omnia contra paratissimos, statueram, quid facerem, ceperamque consilium non tam forte quam mihi praeter ceteros concedendum. 2. Cessi meis vel potius parui, ex quibus unus qua mente fuerit, is, quem tu mihi commendas, cognosces ex ipsius litteris, quas ad te et ad alios misit, quas ego numquam aperuissem, nisi

res acta sic esset: delatus est ad me fasciculus; solvi, si quid ad me esset litterarum: nihil erat; epistola Vatinio et Ligurio altera; iussi ad eos deferri; illi ad me statim ardentes dolore venerunt, scelus hominis clamantes; epistolas mihi legerunt plenas omnium in me proborum. Hic Ligurius furere: se enim scire summo illum in odio fuisse Caesari; hunc tamen non modo favisse, sed etiam tantam illi pecuniam dedisse honoris mei causa. Hoc ego dolore accepto volui scire, quid scripsisset ad ceteros; ipsi enim illi putavi perniciosum fore, si eius hoc tantum scelus percrebruisset. Cognovi eiusdem generis, ad te misi; quas si putabis illi ipsi utile esse reddi, reddes; nil me laedet. Nam, quod resignatae sunt, habet, opinor, eius signum Pomponia. Hac ille acerbitate initio navigationis cum usus esset, tanto me dolore adfecit, ut postea iacuerim, neque nunc tam pro se quam contra me laborare dicitur. 3. Ita omnibus rebus urgeor, quas sustinere vix possum vel plane nullo modo possum; quibus in miseriis una est pro omnibus, quod istam miseram patrimonio, fortuna omni spoliatam relinquam: qua re te, *ut* polliceris, videre plane velim; alium enim, cui illam commendem, habeo neminem, quoniam matri quoque eadem intellexi esse parata, quae mihi. Sed, si me non offendes, satis tamen habeto commendatam patruumque in ea, quantum poteris, mitigato. Haec ad te die natali meo scripsi, quo utinam susceptus non essem aut ne quid ex eadem matre postea natum esset! plura scribere fletu prohibeor.

## 82. AD ATTICUM XI. 12.

SCR. BRUNDISII A. D. VIII. IDUS MARTIAS A.U.C. 707.

CICERO ATTICO SAL.

1. CEPHALIO mihi a te litteras reddidit a. d. VIII. Idus Mart. vespere. Eo autem die mane tabellarios miseram, quibus ad te dederam litteras: tuis tamen lectis litteris putavi aliquid rescribendum esse, maxime, quod ostendis te pendere animi, quamnam rationem sim Caesari allaturus profectionis meae tum, cum ex Italia discesserim. Nihil opus est mihi nova ratione; saepe enim ad eum scripsi multisque mandavi me non potuisse, cum cupissem, sermones hominum sustinere, multaque in eam sententiam. Nihil enim erat, quod minus eum vellem existimare, quam me tanta de re non meo consilio usum esse. Posteaque, cum mihi litterae a Balbo Cornelio minore missae essent illum existimare Quintum fratrem lituum meae profectionis fuisse—ita enim scripsit—, qui nondum cognossem, quae de me Quintus scripsisset ad multos, etsi multa praesens in praesentem acerbe dixerat et fecerat, tamen nihilo minus his verbis ad Caesarem scripsi:

2. 'De Quinto fratre meo non minus laboro quam de me ipso, sed eum tibi commendare hoc meo tempore non audeo; illud dumtaxat tamen audebo petere abs te, quod te oro, ne quid existimes ab illo factum esse, quo minus mea in te officia constarent minusve te diligerem, potiusque semper illum auctorem nostrae coniunctionis fuisse meique itineris comitem, non ducem: qua re ceteris in rebus tantum ei tribues, quantum humanitas tua amicitiaque vestra postulat; ego ei ne quid apud te obsim, id te vehementer etiam atque etiam rogo.'

3. Qua re, si quis congressus fuerit mihi cum Caesare, etsi non dubito, quin is lenis in illum futurus sit idque iam declaraverit, ego tamen is ero, qui semper fui. Sed, ut video, multo magis est nobis laborandum de Africa, quam quidem tu scribis confirmari quotidie magis ad condicionis spem quam victoriae. Quod utinam ita esset! sed longe aliter esse intellego, teque ipsum ita existimare arbitror, aliter autem scribere, non fallendi, sed confirmandi mei causa, praesertim cum adiungatur ad Africam etiam Hispania. 4. Quod me admones, ut scribam ad Antonium et ad ceteros, si quid videbitur tibi opus esse, velim facias id, quod saepe fecisti; nihil enim mihi venit in mentem, quod scribendum putem. Quod me audis erectiorem esse animo, quid putas, cum videas accessisse ad superiores aegritudines praeclaras generi actiones? Tu tamen velim ne intermittas, quod eius facere poteris, scribere ad me, etiam si rem, de qua scribas, non habebis; semper enim adferunt aliquid mihi tuae litterae. Galeonis hereditatem crevi; puto enim cretionem simplicem fuisse, quoniam ad me nulla missa est. VIII. Idus Martias.

## 83. AD FAMILIARES XV. 15.

SCR. BRUNDISII A.U.C. 707.

M. CICERO S. D. C. CASSIO.

1. ETSI uterque nostrum spe pacis et odio civilis sanguinis abesse a belli pertinacia voluit, tamen, quoniam eius consilii princeps ego fuisse videor, plus fortasse tibi praestare ipse debeo quam a te exspectare: etsi, ut saepe soleo mecum recordari, sermo familiaris meus tecum et item mecum tuus adduxit utrumque nostrum ad id consilium, ut uno proelio putaremus, si non totam causam,

at certe nostrum iudicium definiri convenire. Neque quisquam hanc nostram sententiam vere umquam reprehendit praeter eos, qui arbitrantur melius esse deleri omnino rem publicam quam imminutam et debilitatam manere: ego autem ex interitu eius nullam spem scilicet mihi proponebam, ex reliquiis magnam. 2. Sed ea sunt consecuta, ut magis mirum sit accidere illa potuisse, quam nos non vidisse ea futura nec, homines cum essemus, divinare potuisse. Equidem fateor meam coniecturam hanc fuisse, ut illo quasi quodam fatali proelio facto et victores communi saluti consuli vellent et victi suae, utrumque autem positum esse arbitrarer in celeritate victoris: quae si fuisset, eandem clementiam experta esset Africa, quam cognovit Asia, quam etiam Achaia te, ut opinor, ipso legato ac deprecatore; amissis autem temporibus, quae plurimum valent, praesertim in bellis civilibus, interpositus annus alios induxit, ut victoriam sperarent, alios, ut ipsum vinci contemnerent. Atque horum malorum omnium culpam fortuna sustinet: quis enim aut Alexandrini belli tantam moram huic bello adiunctum iri aut nescio quem istum Pharnacem Asiae terrorem illaturum putaret? 3. Nos tamen in consilio pari casu dissimili usi sumus: tu enim eam partem petisti, ut et consiliis interesses et, quod maxime curam levat, futura animo prospicere posses: ego, qui festinavi, ut Caesarem in Italia viderem—sic enim arbitrabamur—eumque multis honestissimis viris conservatis redeuntem ad pacem currentem, ut aiunt, incitarem, ab illo longissime et absum et afui. Versor autem in gemitu Italiae et in urbis miserrimis querelis, quibus aliquid opis fortasse ego pro mea, tu pro tua, pro sua quisque parte ferre potuisset, si auctor adfuisset. 4. Qua re velim pro tua

perpetua erga me benevolentia scribas ad me, quid videas, quid sentias, quid exspectandum, quid agendum nobis existimes. Magni erunt mihi tuae litterae; atque utinam primis illis, quas Luceria miseras, paruissem! sine ulla enim molestia dignitatem meam retinuissem.

## 84. AD ATTICUM XII. 1.

SCR. IN ARPINATI A. D. VIII. KALENDAS IUNIAS A.U.C. 708.

CICERO ATTICO SAL.

1. UNDECIMO die postquam a te discesseram, hoc litterularum exaravi egrediens e villa ante lucem, atque eo die cogitabam in Anagnino, postero autem in Tusculano; ibi unum diem. V. Kalend. igitur ad constitutum; atque utinam continuo ad complexum meae Tulliae, ad osculum Atticae possim currere! quod quidem ipsum scribe, quaeso, ad me, ut, dum consisto in Tusculano, sciam, quid garriat, sin rusticatur, quid scribat ad te, eique interea aut scribes salutem aut nuntiabis, itemque Piliae. Et tamen, etsi continuo congressuri sumus, scribes ad me, si quid habebis.

2. Cum complicarem hanc epistolam, noctuabundus ad me venit cum epistola tua tabellarius, qua lecta de Atticae febricula scilicet valde dolui. Reliqua, quae exspectabam, ex tuis litteris cognovi omnia; sed quod scribis 'igniculum matutinum γεροντικόν,' γεροντικώτερον est memoriola vacillare: ego enim III. Kal. Axio dederam, tibi III., Quinto, quo die venissem, id est prid. Kal. Hoc igitur habebis, novi nihil. Quid ergo opus erat epistola? Quid? cum coram sumus et garrimus quicquid in buccam? Est profecto quiddam λέσχη, quae habet, etiam si nihil subest, collocutione ipsa suavitatem.

## 85. AD ATTICUM XII. 2.

SCR. ROMAE EXEUNTE MENSE APRILI A.U.C. 708.

CICERO ATTICO SAL.

1. HIC rumor est Statium Murcum perisse naufragio, Asinium delatum vivum in manus militum, L. naves delatas Uticam reflatu hoc, Pompeium non comparere nec in Baliaribus omnino fuisse, ut Paciaecus adfirmat; sed auctor nullius rei quisquam. Habes quae, dum tu abes, locuti sunt. 2. Ludi interea Praeneste: ibi Hirtius et isti omnes; et quidem ludi dies VIII. Quae cenae! quae deliciae! res interea fortasse transacta est. O miros homines! at Balbus aedificat; *τί γὰρ αὐτῷ μέλει*; verum si quaeris, homini non recta, sed voluptaria quaerenti nonne *βεβίωται*; tu interea dormis. Iam explicandum est *πρόβλημα*, si quid acturus es. Si quaeris quid putem, ego † fructum puto. Sed quid multa? iam te videbo, et quidem, ut spero, de via recte ad me; simul enim et diem Tyrannioni constituemus et si quid aliud.

## 86. AD FAMILIARES IX. 5.

SCR. ROMAE MENSE IUNIO A.U.C. 708.

CICERO VARRONI.

1. MIHI vero ad Nonas bene maturum videtur fore, neque solum propter rei publicae, sed etiam propter anni tempus: qua re istum diem probo; itaque eundem ipse sequar. 2. Consilii nostri, ne si eos quidem, qui id secuti non sunt, non paeniteret, nobis paenitendum putarem; secuti enim sumus non spem, sed officium; reliquimus autem non officium, sed desperationem: ita verecundiores fuimus quam qui se domo non commoverunt, saniores quam qui amissis opibus domum non rever-

terunt. Sed nihil minus fero quam severitatem otiosorum et, quoquo modo se res habet, magis illos vereor, qui in bello occiderunt, quam hos curo, quibus non satis facimus, quia vivimus. 3. Mihi si spatium fuerit in Tusculanum ante Nonas veniendi, istic te videbo; si minus, persequar in Cumanum et ante te certiorem faciam, ut lavatio parata sit.

## 87. AD FAMILIARES IX. 18.

SCR. IN TUSCULANO EXEUNTE MENSE QUINTILI A.U.C. 708.

CICERO S. D. PAETO.

1. CUM essem otiosus in Tusculano, propterea quod discipulos obviam miseram, ut eadem me quam maxime conciliarent familiari suo, accepi tuas litteras plenissimas suavitatis, ex quibus intellexi probari tibi meum consilium, quod, ut Dionysius tyrannus, cum Syracusis pulsus esset, Corinthi dicitur ludum aperuisse, sic ego [sublatis iudiciis] amisso regno forensi ludum quasi habere coeperim. 2. Quid quaeris? me quoque delectat consilium; multa enim consequor: primum, id quod maxime nunc opus est, munio me ad haec tempora. Id cuius modi sit, nescio; tantum video, nullius adhuc consilium me huic anteponere, nisi forte mori melius fuit: in lectulo, fateor, sed non accidit; in acie non fui. Ceteri quidem, Pompeius, Lentulus tuus, Scipio, Afranius foede perierunt. 'At Cato praeclare.' Iam istuc quidem, cum volemus, licebit· demus modo operam ne tam necesse nobis sit quam illi fuit; id quod agimus. 3. Ergo hoc primum. Sequitur illud: ipse melior fio; primum valetudine, quam intermissis exercitationibus amiseram; deinde ipsa illa, si qua fuit in me, facultas orationis, nisi me ad has exercitationes rettulissem, exaruisset. Extremum illud est, quod tu nes-

cio an primum putes: plures iam pavones confeci quam tu pullos columbinos. Tu istic te Hateriano iure delectas; ego me hic Hirtiano. Veni igitur, si vir es, et disce a me προλεγομένας, quas quaeris: etsi sus Minervam. Sed quo modo, videro. 4. Si aestimationes tuas vendere non potes neque ollam denariorum implere, Romam tibi remigrandum est: satius est hic cruditate quam istic fame. Video te bona perdidisse; spero idem istuc familiares tuos. Actum igitur de te est, nisi provides. Potes mulo isto, quem tibi reliquum dicis esse, quoniam cantherium comedisti, Romam pervehi. Sella tibi erit in ludo tamquam hypodidascalo proxima; eam pulvinus sequetur.

## 88. AD FAMILIARES VII. 3.

SCR. ROMAE MENSE QUINTILI A.U.C. 708.

M. CICERO S. D. M. MARIO.

1. PERSAEPE mihi cogitanti de communibus miseriis, in quibus tot annos versamur et, ut video, versabimur, solet in mentem venire illius temporis, quo proxime fuimus una; quin etiam ipsum diem memoria teneo: nam a. d. III. Idus Maias, Lentulo et Marcello consulibus, cum in Pompeianum vesperi venissem, tu mihi sollicito animo praesto fuisti; sollicitum autem te habebat cogitatio cum officii, tum etiam periculi mei: si manerem in Italia, verebare ne officio deessem; si proficiscerer ad bellum, periculum te meum commovebat. Quo tempore vidisti profecto me quoque ita conturbatum, ut non explicarem, quid esset optimum factu; pudori tamen malui famaeque cedere quam salutis meae rationem ducere. 2. Cuius me mei facti paenituit non tam propter periculum meum quam propter vitia multa, quae ibi offendi, quo veneram: primum neque magnas

copias neque bellicosas; deinde, extra ducem paucosque praeterea—de principibus loquor—, reliquos primum in ipso bello rapaces, deinde in oratione ita crudeles, ut ipsam victoriam horrerem; maximum autem aes alienum amplissimorum virorum. Quid quaeris? nihil boni praeter causam. Quae cum vidissem, desperans victoriam primum coepi suadere pacem, cuius fueram semper auctor; deinde, cum ab ea sententia Pompeius valde abhorreret, suadere institui, ut bellum duceret: hoc interdum probabat et in ea sententia videbatur fore et fuisset fortasse, nisi quadam ex pugna coepisset suis militibus confidere. Ex eo tempore vir ille summus nullus imperator fuit: signa tirone et collecticio exercitu cum legionibus robustissimis contulit; victus turpissime amissis etiam castris solus fugit. 3. Hunc ego mihi belli finem feci, nec putavi, cum integri pares non fuissemus, fractos superiores fore; discessi ab eo bello, in quo aut in acie cadendum fuit aut in aliquas insidias incidendum aut deveniendum in victoris manus aut ad Iubam confugiendum aut capiendus tamquam exsilio locus aut consciscenda mors voluntaria: certe nihil fuit praeterea, si te victori nolles aut non auderes committere. Ex omnibus autem iis, quae dixi, incommodis nihil tolerabilius exsilio, praesertim innocenti, ubi nulla adiuncta est turpitudo; addo etiam, cum ea urbe careas, in qua nihil sit, quod videre possis sine dolore: ego cum meis, si quicquam nunc cuiusquam est, etiam in meis esse malui. 4. Quae acciderunt, omnia dixi futura; veni domum, non quo optima vivendi condicio esset, sed tamen, si esset aliqua forma rei publicae, tamquam in patria ut essem, si nulla tamquam in exsilio. Mortem mihi cur consciscerem, causa non visa

est; cur optarem, multae causae; vetus est enim, ubi non sis qui fueris, non esse cur velis vivere. Sed tamen vacare culpa magnum est solacium, praesertim cum habeam duas res, quibus me sustentem, optimarum artium scientiam et maximarum rerum gloriam; quarum altera mihi vivo numquam eripietur, altera ne mortuo quidem. 5. Haec ad te scripsi verbosius et tibi molestus fui, quod te cum mei, tum rei publicae cognovi amantissimum. Notum tibi omne meum consilium esse volui, ut primum scires me numquam voluisse plus quemquam posse quam universam rem publicam; postea autem quam alicuius culpa tantum valeret unus, ut obsisti non posset, me voluisse pacem; amisso exercitu et eo duce, in quo spes fuerat uno, me voluisse etiam reliquis omnibus; postquam non potuerim, mihi ipsi finem fecisse belli; nunc autem, si haec civitas est, civem esse me; si non, exsulem esse non incommodiore loco, quam si Rhodum *me* aut Mytilenas contulissem. 6. Haec tecum coram malueram; sed quia longius fiebat, volui per litteras eadem, ut haberes, quid diceres, si quando in vituperatores meos incidisses; sunt enim qui, cum meus interitus nihil fuerit rei publicae profuturus, criminis loco putent esse, quod vivam, quibus ego certo scio non videri satis multos perisse: qui, si me audissent, quamvis iniqua pace, honeste tamen viverent; armis enim inferiores, non causa fuissent. Habes epistolam verbosiorem fortasse, quam velles: quod tibi ita videri putabo, nisi mihi longiorem remiseris. Ego, si, quae volo, expediero, brevi tempore te, ut spero, videbo.

## 89. AD FAMILIARES IX. 17.

SCR. ROMAE MENSE SEXTILI A.U.C. 708.

CICERO PAETO.

1. NON tu homo ridiculus es, qui, cum Balbus noster apud te fuerit, ex me quaeras, quid de istis municipiis et agris futurum putem? quasi aut ego quicquam sciam, quod iste nesciat, aut, si quid aliquando scio, non ex isto soleam scire. Immo vero, si me amas, tu fac ut sciam, quid de nobis futurum sit; habuisti enim in tua potestate, ex quo vel ex sobrio vel certe ex ebrio scire posses. Sed ego ista, mi Paete, non quaero: primum quia de lucro prope iam quadriennium vivimus, si aut hoc lucrum est aut haec vita, superstitem rei publicae vivere; deinde, quod scire *ego* quoque mihi videor, quid futurum sit: fiet enim quodcumque volent qui valebunt; valebunt autem semper arma. Satis igitur nobis esse debet quicquid conceditur: hoc si qui pati non potuit, mori debuit. 2. Veientem quidem agrum et Capenatem metiuntur; hoc non longe abest a Tusculano. Nihil tamen timeo: fruor, dum licet; opto, ut semper liceat. Si id minus contigerit, tamen, quoniam ego vir fortis idemque philosophus vivere pulcherrimum duxi, non possum eum non diligere, cuius beneficio id consecutus sum: qui si cupiat esse rem publicam, qualem fortasse et ille volt et omnes optare debemus, quid faciat tamen non habet; ita se cum multis colligavit. Sed longius progredior; scribo enim ad te. 3. Hoc tamen scito, non modo me, qui consiliis non intersum, sed ne ipsum quidem principem scire, quid futurum sit; nos enim illi servimus, ipse temporibus: ita nec ille, quid tempora postulatura sint, nec nos, quid ille cogitet, scire possumus.

Haec tibi antea non rescripsi, non quo cessator esse solerem, praesertim in litteris, sed, cum explorati nihil haberem, nec tibi sollicitudinem ex dubitatione mea nec spem ex adfirmatione adferre volui. Illud tamen adscribam, quod est verissimum, me his temporibus adhuc de isto periculo nihil audisse: tu tamen pro tua sapientia debebis optare optima, cogitare difficillima, ferre quaecumque erunt.

## 90. AD FAMILIARES IV. 4.

SCR. ROMAE EXEUNTE MENSE SEPTEMBRI A.U.C. 708.

M. CICERO S. D. SER. SULPICIO.

1. ACCIPIO excusationem tuam, qua usus es, cur saepius ad me litteras uno exemplo dedisses, sed accipio ex ea parte, quatenus aut neglegentia aut improbitate eorum, qui epistolas accipiant, fieri scribis ne ad nos perferantur: illam partem excusationis, qua te scribis orationis paupertate—sic enim appellas—isdem verbis epistolas saepius mittere, nec nosco nec probo; et ego ipse, quem tu per iocum—sic enim accipio—divitias orationis habere dicis, me non esse verborum admodum inopem agnosco: εἰρωνεύεσθαι enim non necesse est: sed tamen idem—nec hoc εἰρωνευόμενος—facile cedo tuorum scriptorum subtilitati et elegantiae. 2. Consilium tuum, quo te usum scribis hoc Achaicum negotium non recusavisse, cum semper probavissem, tum multo magis probavi lectis tuis proximis litteris; omnes enim causae, quas commemoras, iustissimae sunt tuaque et auctoritate et prudentia dignissimae. Quod aliter cecidisse rem existimas atque opinatus sis, id tibi nullo modo adsentior; sed quia tanta perturbatio et confusio est rerum, ita perculsa et prostrata foedissimo bello iacent omnia,

ut is cuique locus, ubi ipse sit, et sibi quisque miserrimus esse videatur, propterea et tui consilii paenitet te et nos, qui domi sumus, tibi beati videmur, at contra nobis non tu quidem vacuus molestiis, sed prae nobis beatus. Atque hoc ipso melior est tua quam nostra condicio, quod tu, quid doleat, scribere audes, nos ne id quidem tuto possumus, nec id victoris vitio, quo nihil moderatius, sed ipsius victoriae, quae civilibus bellis semper est insolens. 3. Uno te vicimus, quod de Marcelli, collegae tui, salute paulo ante quam tu cognovimus, etiam mehercule quod, quem ad modum ea res ageretur, vidimus. Nam sic fac existimes: post has miserias, id est post quam armis disceptari coeptum est de iure publico, nihil esse actum aliud cum dignitate; nam et ipse Caesar accusata acerbitate Marcelli—sic enim appellabat—laudataque honorificentissime et aequitate tua et prudentia repente praeter spem dixit, se senatui roganti de Marcello ne hominis quidem causa negaturum. Fecerat autem hoc senatus, ut, cum a L. Pisone mentio esset facta de Marcello et C. Marcellus se ad Caesaris pedes abiecisset, cunctus consurgeret et ad Caesarem supplex accederet. Noli quaerere: ita mihi pulcher hic dies visus est, ut speciem aliquam viderer videre quasi reviviscentis rei publicae. 4. Itaque cum omnes ante me rogati gratias Caesari egissent praeter Volcatium—is enim, si eo loco esset, negavit se facturum fuisse—, ego rogatus mutavi meum consilium: nam statueram, non mehercule inertia, sed desiderio pristinae dignitatis, in perpetuum tacere. Fregit hoc meum consilium et Caesaris magnitudo animi et senatus officium; itaque pluribus verbis egi Caesari gratias, meque metuo ne etiam in ceteris rebus honesto otio privarim, quod erat

unum solacium in malis. Sed tamen, quoniam effugi eius offensionem, qui fortasse arbitraretur me hanc rem publicam non putare, si perpetuo tacerem, modice hoc faciam aut etiam intra modum, ut et illius voluntati et meis studiis serviam. Nam etsi a prima aetate me omnis ars et doctrina liberalis et maxime philosophia delectavit, tamen hoc studium quotidie ingravescit, credo et aetatis maturitate ad prudentiam et his temporum vitiis, ut nulla res alia levare animum molestiis possit; 5. a quo studio te abduci negotiis intellego ex tuis litteris, sed tamen aliquid iam noctes te adiuvabunt. Servius tuus vel potius noster summa me observantia colit; cuius ego cum omni probitate summaque virtute, tum studiis doctrinaque delector. Is mecum saepe de tua mansione aut decessione communicat: adhuc in hac sum sententia, nihil ut faciamus nisi quod maxime Caesar velle videatur. Res sunt eius modi, ut, si Romae sis, nihil praeter tuos delectare possit. De reliquis, nihil melius ipso est, ceteri et cetera eius modi, ut, si alterum utrum necesse sit, audire ea malis quam videre. Hoc nostrum consilium nobis minime iucundum est, qui te videre cupimus, sed consulimus tibi. Vale.

## 91. AD FAMILIARES VI. 6.

SCR. ROMAE A.U.C. 708.

M. CICERO S. D. A. CAECINAE.

1. VEREOR ne desideres officium meum, quod tibi pro nostra et meritorum multorum et studiorum parium coniunctione deesse non debet, sed tamen vereor ne litterarum a me officium requiras, quas tibi et iam pridem et saepe misissem, nisi quotidie melius exspectans gratulationem quam confirmationem animi tui complecti

litteris maluissem. Nunc, ut spero, brevi gratulabimur; itaque in aliud tempus id argumentum epistolae differo. 2. His autem litteris animum tuum, quem minime imbecillum esse et audio et spero, etsi non sapientissimi, at amicissimi hominis auctoritate confirmandum etiam atque etiam puto; nec iis quidem verbis, quibus te consoler ut adflictum et iam omni spe salutis orbatum, sed ut eum, de cuius incolumitate non plus dubitem quam te memini dubitare de mea. Nam cum me ex re publica expulissent ii, qui illam cadere posse stante me non putarant, memini me ex multis hospitibus, qui ad me ex Asia, in qua tu eras, venerant, audire te de glorioso et celeri reditu meo confirmare. 3. Si te ratio quaedam mira Tuscae disciplinae, quam a patre, nobilissimo atque optimo viro, acceperas, non fefellit, ne nos quidem nostra divinatio fallet, quam cum sapientissimorum virorum monumentis atque praeceptis plurimoque, ut tu scis, doctrinae studio, tum magno etiam usu tractandae rei publicae magnaque nostrorum temporum varietate consecuti sumus; 4. cui quidem divinationi hoc plus confidimus, quod ea nos nihil in his tam obscuris rebus tamque perturbatis umquam omnino fefellit. Dicerem, quae ante futura dixissem, ni vererer ne ex eventis fingere viderer; sed tamen plurimi sunt testes me et initio, ne coniungeret se cum Caesare, monuisse Pompeium, et postea, ne se *di*iungeret: coniunctione frangi senatus opes, diiunctione civile bellum excitari videbam. Atque utebar familiarissime Caesare, Pompeium faciebam plurimi; sed erat meum consilium cum fidele Pompeio, tum salutare utrique. 5. Quae praeterea providerim, praetereo; nolo enim hunc de me optime meritum existimare ea me suasisse Pompeio,

quibus ille si paruisset, esset hic quidem clarus in toga et princeps, sed tantas opes, quantas nunc habet, non haberet: eundum in Hispaniam censui; quod si fecisset, civile bellum nullum omnino fuisset. Rationem haberi absentis non tam pugnavi ut liceret, quam ut, quoniam ipso consule pugnante populus iusserat, haberetur. Causa orta belli est: quid ego praetermisi aut monitorum aut querelarum! cum vel iniquissimam pacem iustissimo bello anteferrem. 6. Victa est auctoritas mea, non tam a Pompeio—nam is movebatur—quam ab iis, qui duce Pompeio freti peropportunam et rebus domesticis et cupiditatibus suis illius belli victoriam fore putabant. Susceptum bellum est quiescente me, depulsum ex Italia manente me, quoad potui; sed valuit apud me plus pudor meus quam timor; veritus sum deesse Pompeii saluti, cum ille aliquando non defuisset meae. Itaque vel officio vel fama bonorum vel pudore victus, ut in fabulis Amphiaraus, sic ego prudens et sciens 'ad pestem ante oculos positam' sum profectus; quo in bello nihil adversi accidit non praedicente me. 7. Qua re quoniam, ut augures et astrologi solent, ego quoque augur publicus ex meis superioribus praedictis constitui apud te auctoritatem augurii et divinationis meae, debebit habere fidem nostra praedictio. Non igitur ex alitis involatu nec e cantu sinistro oscinis, ut in nostra disciplina est, nec ex tripudiis solistimis aut soniviis tibi auguror, sed habeo alia signa, quae observem; quae etsi non sunt certiora illis, minus tamen habent vel obscuritatis vel erroris. 8. Notantur autem mihi ad divinandum signa duplici quadam via, quarum alteram duco e Caesare ipso, alteram e temporum civilium natura atque ratione. In Caesare haec sunt: mitis clemensque natura, qualis

exprimitur praeclaro illo libro Querelarum tuarum; accedit quod mirifice ingeniis excellentibus, quale est tuum, delectatur; praeterea cedit multorum iustis et officio incensis, non inanibus aut ambitiosis, voluntatibus, in quo vehementer eum consentiens Etruria movebit. 9. 'Cur haec igitur adhuc parum profecerunt?' Quia non putat se sustinere causas posse multorum, si tibi, cui iustius videtur irasci posse, concesserit. 'Quae est igitur' inquies 'spes ab irato?' Eodem *e* fonte se hausturum intellegit laudes suas, e quo sit leviter aspersus. Postremo homo valde est acutus et multum providens; intellegit te, hominem in parte Italiae minime contemnenda facile omnium nobilissimum et in communi re publica cuivis summorum tuae aetatis vel ingenio vel gratia vel fama populi Romani parem, non posse prohiberi re publica diutius; nolet hoc temporis potius esse aliquando beneficium quam iam suum. 10. Dixi de Caesare; nunc dicam de temporum rerumque natura: nemo est tam inimicus ei causae, quam Pompeius animatus melius quam paratus susceperat, qui nos malos cives dicere aut homines improbos audeat. In quo admirari soleo gravitatem et iustitiam et sapientiam Caesaris; numquam nisi honorificentissime Pompeium appellat. 'At in eius persona multa fecit asperius.' Armorum ista et victoriae sunt facta, non Caesaris. At nos quem ad modum est complexus! Cassium sibi legavit; Brutum Galliae praefecit, Sulpicium Graeciae; Marcellum, cui maxime succensebat, cum summa illius dignitate restituit. 11. Quo igitur haec spectant? Rerum hoc natura et civilium temporum non patietur, nec manens nec mutata ratio feret primum, ut non in causa pari eadem sit et condicio et

fortuna omnium; deinde, ut in eam civitatem boni viri et boni cives nulla ignominia notati non revertantur, in quam tot nefariorum scelerum condemnati reverterunt. 12. Habes augurium meum, quo, si quid addubitarem, non potius uterer quam illa consolatione, qua facile fortem virum sustentarem: te, si explorata victoria arma sumpsisses pro re publica—ita enim tum putabas—, non nimis esse laudandum; sin propter incertos exitus eventusque bellorum posse accidere, ut vinceremur, putasses, non debere te ad secundam fortunam bene paratum fuisse, adversam ferre nullo modo posse. Disputarem etiam, quanto solacio tibi conscientia tui facti, quantae delectationi in rebus adversis litterae esse deberent; commemorarem non solum veterum, sed horum etiam recentium vel ducum vel comitum tuorum gravissimos casus; etiam externos multos claros viros nominarem; levat enim dolorem communis quasi legis et humanae condicionis recordatio. 13. Exponerem etiam, quem ad modum hic et quanta in turba quantaque in confusione rerum omnium viveremus; necesse est enim minore desiderio perdita re publica carere quam bona. Sed hoc genere nihil opus est: incolumem te cito, ut spero, vel potius, ut perspicio, videbimus. Interea tibi absenti et huic, qui adest, imagini animi et corporis tui, constantissimo atque optimo filio tuo, studium, officium, operam, laborem meum iam pridem et pollicitus sum et detuli; nunc hoc amplius, quod me amicissime quotidie magis Caesar amplectitur, familiares quidem eius, sicuti neminem. Apud quem quicquid valebo vel auctoritate vel gratia, valebo tibi; tu cura ut cum firmitudine te animi, tum etiam spe optima sustentes.

## 92. AD FAMILIARES VI. 7.

SCR. IN SICILIA EXEUNTE ANNO A.U.C. 708.

CAECINA CICERONI PLUR. SAL.

1. QUOD tibi non tam celeriter liber est redditus, ignosce timori nostro et miserere temporis. Filius, ut audio, pertimuit, neque iniuria, si liber exisset, quoniam non tam interest, quo animo scribatur, quam quo accipiatur, ne ea res inepte mihi noceret, cum praesertim adhuc stili poenas dem. Qua quidem in re singulari sum fato; nam cum mendum scripturae litura tollatur, stultitia fama multetur, meus error exsilio corrigitur, cuius summa criminis est, quod armatus adversario male dixi. 2. Nemo nostrum est, ut opinor, quin vota Victoriae suae fecerit; nemo, quin etiam cum de alia re immolaret, tamen eo quidem ipso tempore, ut quam primum Caesar superaretur, optarit: hoc si non cogitat, omnibus rebus felix est; si scit et persuasus est, quid irascitur ei, qui aliquid scripsit contra suam voluntatem, cum ignorit omnibus, qui multa deos venerati sunt contra eius salutem? 3. Sed ut eodem revertar, causa haec fuit timoris: scripsi de te parce medius fidius et timide, non revocans me ipse, sed paene refugiens. Genus autem hoc scripturae non modo liberum, sed incitatum atque elatum esse debere quis ignorat? solutum existimatur esse alteri male dicere —tamen cavendum est, ne in petulantiam incidas—; impeditum, se ipsum laudare, ne vitium adrogantiae subsequatur; solum vero liberum, alterum laudare, de quo quicquid detrahas, necesse est aut infirmitati aut invidiae adsignetur. Ac nescio an tibi gratius opportuniusque acciderit; nam quod praeclare facere non poteram, primum erat, non attingere; secundum [beneficium], quam

parcissime facere. Sed tamen ego quidem me sustinui; multa minui, multa sustuli, complura ne posui quidem. Quem ad modum igitur, scalarum gradus si alios tollas, alios incidas, non nullos male haerentes relinquas, ruinae periculum struas, non ascensum pares, sic tot malis tum vinctum tum fractum studium scribendi quid dignum auribus aut probabile potest adferre? 4. Cum vero ad ipsius Caesaris nomen veni, toto corpore contremesco, non poenae metu, sed illius iudicii: totum enim Caesarem non novi. Quem putas animum esse, ubi secum loquitur? 'hoc probabit: hoc verbum suspitiosum est.' 'Quid, si hoc muto? at vereor, ne peius sit.' 'Age vero, laudo aliquem: num offendo? cum porro offendam, quid, si non volt?' 'Armati stilum persequitur: victi et nondum restituti quid faciet?' Auges etiam tu mihi timorem, qui in Oratore tuo caves tibi per Brutum et ad excusationem socium quaeris: ubi hoc omnium patronus facit, quid me, veterem tuum, nunc omnium clientem sentire oportet? in hac igitur calumnia timoris et caecae suspitionis tormento, cum plurima ad alieni sensus coniecturam, non ad suum iudicium scribantur, quam difficile sit evadere, si minus expertus es, quod te ad omnia summum atque excellens ingenium armavit, nos sentimus. Sed tamen ego filio dixeram, librum tibi legeret et auferret, aut ea condicione daret, si reciperes te correcturum, hoc est, si totum alium faceres. 5. De Asiatico itinere, quamquam summa *me* necessitas premebat, ut imperasti, feci. Te pro me quid horter? vides tempus venisse, quo necesse sit de nobis constitui. Nihil est, mi Cicero, quod filium meum exspectes: adulescens est; omnia excogitare vel studio vel aetate vel metu non potest. Totum negotium tu sustineas oportet; in te mihi omnis spes est. Tu pro tua

prudentia, quibus rebus gaudeat, quibus capiatur Caesar, tenes; a te omnia proficiscantur et per te ad exitum perducantur necesse est; apud ipsum multum, apud eius omnes plurimum potes. 6. Unum tibi si persuaseris, non hoc esse tui muneris, si quid rogatus fueris, ut facias— quamquam id magnum et amplum est—, sed totum tuum esse onus, perficies: nisi forte aut in miseria nimis stulte aut in amicitia nimis impudenter tibi onus impono. Sed utrique rei excusationem tuae vitae consuetudo dat: nam quod ita consuesti pro amicis laborare, non iam sic sperant abs te, sed etiam sic imperant tibi familiares. Quod ad librum attinet, quem tibi filius dabit, peto a te, ne exeat, aut ita corrigas, ne mihi noceat.

## 93. AD FAMILIARES XIII. 11.

SCR. ROMAE A.U.C. 708.

CICERO BRUTO SAL.

1. QUIA semper animadverti studiose te operam dare, ut ne quid meorum tibi esset ignotum, propterea non dubito quin scias, non solum cuius municipii sim, sed etiam, quam diligenter soleam meos municipes [Arpinates] tueri: quorum quidem omnia commoda omnesque facultates, quibus et sacra conficere et sarta tecta aedium sacrarum locorumque communium tueri possint, consistunt in iis vectigalibus, quae habent in provincia Gallia. Ad ea visenda pecuniasque, quae a colonis debentur, exigendas totamque rem et cognoscendam et administrandam legatos equites Romanos misimus, Q. Fufidium Q. f., M. Faucium M. f., Q. Mamercum Q. f. 2. Peto a te in maiorem modum pro nostra necessitudine, ut tibi ea res curae sit operamque des, ut per te quam commodissime negotium municipii administretur quam primumque

conficiatur, ipsosque, quorum nomina scripsi, ut quam honorificentissime pro tua natura et quam liberalissime tractes. 3. Bonos viros ad tuam necessitudinem adiunxeris municipiumque gratissimum beneficio tuo devinxeris, mihi vero etiam gratius feceris, quod cum semper tueri municipes meos consuevi, tum hic annus praecipue ad meam curam officiumque pertinet: nam constituendi municipii causa hoc anno aedilem filium meum fieri volui et fratris filium et M. Caesium, hominem mihi maxime necessarium; is enim magistratus in nostro municipio nec alius ullus creari solet; quos cohonestaris in primisque me, si res publica municipii tuo studio, diligentia bene administrata erit. Quod ut facias, te vehementer etiam atque etiam rogo.

## 94. AD FAMILIARES IV. 14.

SCR. ROMAE A.U.C. 708.

M. CICERO S. D. CN. PLANCIO.

1. BINAS a te accepi litteras, Corcyrae datas; quarum alteris mihi gratulabare, quod audisses me meam pristinam dignitatem obtinere, alteris dicebas te velle, quae egissem, bene et feliciter evenire. Ego autem, si dignitas est bene de re publica sentire et bonis viris probare quod sentias, obtineo dignitatem meam; sin autem in eo dignitas est, si, quod sentias, aut re efficere possis aut denique libera oratione defendere, ne vestigium quidem ullum est reliquum nobis dignitatis, agiturque praeclare, si nosmet ipsos regere possumus, ut ea, quae partim iam adsunt, partim impendent, moderate feramus, quod est difficile in eius modi bello, cuius exitus ex altera parte caedem ostentat, ex altera servitutem. 2. Quo in periculo non nihil me consolatur, cum recordor haec me tum vidisse,

cum secundas etiam res nostras, non modo adversas, pertimescebam, videbamque quanto periculo de iure publico disceptaretur armis; quibus si ii vicissent, ad quos ego pacis spe, non belli cupiditate adductus accesseram, tamen intellegebam, et iratorum hominum et cupidorum et insolentium quam crudelis esset futura victoria, sin autem victi essent, quantus interitus esset futurus civium partim amplissimorum, partim etiam optimorum, qui me haec praedicentem atque optime consulentem saluti suae malebant nimium timidum quam satis prudentem existimari. 3. Quod autem mihi de eo, quod egerim, gratularis, te ita velle certo scio, sed ego tam misero tempore nihil novi consilii cepissem, nisi in reditu meo nihilo meliores res domesticas quam rem publicam offendissem: quibus enim pro meis immortalibus beneficiis carissima mea salus et meae fortunae esse debebant, cum propter eorum scelus nihil mihi intra meos parietes tutum, nihil insidiis vacuum viderem, novarum me necessitudinum fidelitate contra veterum perfidiam muniendum putavi. Sed de nostris rebus satis vel etiam nimium multa. 4. De tuis velim ut eo sis animo, quo debes esse, id est, ut ne quid tibi praecipue timendum putes: si enim status erit aliquis civitatis, quicumque erit, te omnium periculorum video expertem fore; nam alteros tibi iam placatos esse intellego, alteros numquam iratos fuisse. De mea autem in te voluntate sic velim iudices, me, quibuscumque rebus opus esse intellegam, quamquam videam, qui sim hoc tempore et quid possim, opera tamen et consilio, studio quidem certe rei famae saluti tuae praesto futurum. Tu velim, et quid agas et quid acturum te putes, facias me quam diligentissime certiorem.

## 95. AD FAMILIARES IV. 11.

SCR. MYTILENIS EXEUNTE ANNO A.U.C. 708.

MARCELLUS CICERONI S.

1. PLURIMUM valuisse apud me tuam semper auctoritatem cum in omni re tum in hoc maxime negotio potes existimare. Cum mihi C. Marcellus, frater amantissimus mei, non solum consilium daret, sed precibus quoque me obsecraret, non prius mihi persuadere potuit, quam tuis est effectum litteris ut uterer vestro potissimum consilio. Res quem ad modum sit acta, vestrae litterae mihi declarant. Gratulatio tua etsi est mihi probatissima, quod ab optimo fit animo, tamen hoc mihi multo iucundius est et gratius, quod in summa paucitate amicorum, propinquorum ac necessariorum, qui vere meae saluti faverent, te cupidissimum mei singularemque mihi benevolentiam praestitisse cognovi. 2. Reliqua sunt eius modi, quibus ego, quoniam haec erant tempora, facile et aequo animo carebam; hoc vero eius modi esse statuo, ut sine talium virorum et amicorum benevolentia neque in adversa neque in secunda fortuna quisquam vivere possit: itaque in hoc ego mihi gratulor; tu vero ut intellegas homini amicissimo te tribuisse officium, re tibi praestabo. Vale.

## 96. AD ATTICUM XII. 21.

SCR. ASTURAE MENSE MARTIO A.U.C. 709.

CICERO ATTICO SAL.

1. LEGI Bruti epistolam eamque tibi remisi, sane non prudenter rescriptam ad ea, quae requisieras. Sed ipse viderit; quamquam illud turpiter ignorat: Catonem primum sententiam putat de animadversione dixisse, quam omnes ante dixerant praeter Caesarem, et, cum ipsius

Caesaris tam severa fuerit, qui tum praetorio loco dixerit, consularium putat leniores fuisse, Catuli, Servilii, Lucullorum, Curionis, Torquati, Lepidi, Gellii, Volcatii, Figuli, Cottae, L. Caesaris, C. Pisonis, etiam M'. Glabrionis, Silani, Murenae, designatorum consulum. Cur ergo in sententiam Catonis? Quia verbis luculentioribus et pluribus rem eandem comprehenderat. Me autem hic laudat, quod rettulerim, non quod patefecerim, cohortatus sim, quod denique ante, quam consulerem, ipse iudicaverim: quae omnia, quia Cato laudibus extulerat in caelum perscribendaque censuerat, idcirco in eius sententiam est facta discessio. Hic autem se etiam tribuere multum mihi putat, quod scripserit 'optimum consulem.' Quis enim ieiunius dixit inimicus? Ad cetera vero tibi quem ad modum rescripsit! tantum rogat, de senatus consulto ut corrigas. Hoc quidem fecisset, etiam si † rario admonitus esset. 2. Sed haec iterum ipse viderit. De hortis, quoniam probas, effice aliquid: rationes meas nosti. Si vero etiam a Faberio † aliquid recedit, nihil negotii est; sed etiam sine eo posse videor contendere. Venales certe sunt Drusi, fortasse etiam Lamiani et Cassiani: sed coram. 3. De Terentia non possum commodius scribere, quam tu scribis: officium sit nobis antiquissimum; si quid nos fefellerit, illius malo me quam mei paenitere. 4. Oviae C. Lollii curanda sunt HS. c. Negat Eros posse sine me, credo, quod accipienda aliqua sit et danda aestimatio. Vellem tibi dixisset: si enim res est, ut mihi scribit, parata nec in eo ipso mentitur, per te confici potuit; id cognoscas et conficias velim. 5. Quod me in forum vocas, eo vocas, unde etiam bonis meis rebus fugiebam; quid enim mihi cum foro, sine iudiciis, sine curia, in oculos incurrentibus iis, quos aequo animo videre non

possum? quod autem homines a me postulare scribis, *ut Romae sim, neque mihi, ut absim, concedere*, aut † quatenus eos mihi concedere, iam pridem scito esse, cum unum te pluris quam omnes illos putem. Ne me quidem contemno, meoque iudicio multo stare malo quam omnium reliquorum; neque tamen progredior longius, quam mihi doctissimi homines concedunt, quorum scripta omnia, quaecumque sunt in eam sententiam, non legi solum, quod ipsum erat fortis aegroti, accipere medicinam, sed in mea etiam scripta transtuli, quod certe adflicti et fracti animi non fuit. Ab his me remediis noli in istam turbam vocare, ne recidam.

## 97. AD FAMILIARES XIII. 16.

SCR. ASTURAE MENSE APRILI A.U.C. 709.

CICERO CAESARI SAL.

1. P. CRASSUM ex omni nobilitate adulescentem dilexi plurimum, et ex eo cum ab ineunte eius aetate bene speravissem, tum perbene existimare coepi iis iudiciis, quae de eo feceras, cognitis. Eius libertum Apollonium iam tum equidem, cum ille viveret, et magni faciebam et probabam: erat enim et studiosus Crassi et ad eius optima studia vehementer aptus; itaque ab eo admodum diligebatur. 2. Post mortem autem Crassi eo mihi etiam dignior visus est, quem in fidem atque amicitiam meam reciperem, quod eos a se observandos et colendos putabat, quos ille dilexisset et quibus carus fuisset. Itaque et ad me in Ciliciam venit multisque in rebus mihi magno usui fuit et fides eius et prudentia, et, ut opinor, tibi in Alexandrino bello, quantum studio et fidelitate consequi potuit, non defuit: 3. quod cum speraret te quoque ita existimare, in Hispaniam ad te, maxime ille quidem suo

consilio, sed etiam me auctore, est profectus. Cui ego commendationem non sum pollicitus, non quin eam valituram apud te arbitrarer, sed neque egere mihi commendatione videbatur, qui et in bello tecum fuisset et propter memoriam Crassi de tuis unus esset, et, si uti commendationibus vellet, etiam per alios eum videbam id consequi posse; testimonium mei de eo iudicii, quod et ipse magni aestimabat et ego apud te valere eram expertus, ei lubenter dedi. 4. Doctum igitur hominem cognovi et studiis optimis deditum, idque a puero: nam domi meae cum Diodoto Stoico, homine meo iudicio eruditissimo, multum a puero fuit: nunc autem, incensus studio rerum tuarum, eas litteris Graecis mandare cupiebat. Posse arbitror: valet ingenio; habet usum; iam pridem in eo genere studii litterarumque versatur; satis facere immortalitati laudum tuarum mirabiliter cupit. Habes opinionis meae testimonium, sed tu hoc facilius multo pro tua singulari prudentia iudicabis. Et tamen, quod negaveram, commendo tibi eum: quicquid ei commodaveris, erit id maiorem *mihi* in modum gratum.

## 98. AD FAMILIARES IV. 5.

SCR. ATHENIS MENSE APRILI A.U.C. 709.

SERVIUS CICERONI S.

1. POSTEA quam mihi renuntiatum est de obitu Tulliae, filiae tuae, sane quam pro eo ac debui graviter molesteque tuli communemque eam calamitatem existimavi, qui, si istic adfuissem, neque tibi defuissem coramque meum dolorem tibi declarassem. Etsi genus hoc consolationis miserum atque acerbum est, propterea quia, per quos ea confieri debet [propinquos ac familiares], ii ipsi pari molestia adficiuntur neque sine lacrimis multis id conari

possunt, uti magis ipsi videantur aliorum consolatione indigere quam aliis posse suum officium praestare, tamen quae in praesentia in mentem mihi venerunt, decrevi brevi ad te perscribere, non quo ea te fugere existimem, sed quod forsitan dolore impeditus minus ea perspicias. 2. Quid est quod tanto opere te commoveat tuus dolor intestinus? cogita, quem ad modum adhuc fortuna nobiscum egerit: ea nobis erepta esse, quae hominibus non minus quam liberi cara esse debent, patriam, honestatem, dignitatem, honores omnes. Hoc uno incommodo addito quid ad dolorem adiungi potuit? aut qui non in illis rebus exercitatus animus callere iam debet atque omnia minoris existimare? 3. An illius vicem, credo, doles? quotiens in eam cogitationem necesse est et tu veneris et nos saepe incidimus, hisce temporibus non pessime cum iis esse actum, quibus sine dolore licitum est mortem cum vita commutare? Quid autem fuit quod illam hoc tempore ad vivendum magno opere invitare posset? quae res? quae spes? quod animi solacium? Ut cum aliquo adulescente primario coniuncta aetatem gereret? licitum est tibi, credo, pro tua dignitate ex hac iuventute generum deligere, cuius fidei liberos tuos te tuto committere putares! An ut ea liberos ex sese pareret, quos cum florentes videret laetaretur? qui rem a parente traditam per se tenere possent? honores ordinatim petituri essent? in re publica, in amicorum negotiis libertate sua usuri? quid horum fuit quod non prius quam datum est ademptum sit? 'At vero malum est liberos amittere.' Malum: nisi hoc peius est, haec sufferre et perpeti. 4. Quae res mihi non mediocrem consolationem attulerit, volo tibi commemorare, si forte eadem res tibi dolorem minuere possit. Ex Asia rediens, cum ab Aegina Megaram

versus navigarem, coepi regiones circumcirca prospicere: post me erat Aegina, ante me Megara, dextra Piraeus, sinistra Corinthus; quae oppida quodam tempore florentissima fuerunt, nunc prostrata et diruta ante oculos iacent. Coepi egomet mecum sic cogitare: 'hem! nos homunculi indignamur, si quis nostrum interiit aut occisus est, quorum vita brevior esse debet, cum uno loco tot oppidum cadavera proiecta iacent? visne tu te, Servi, cohibere et meminisse hominem te esse natum?' Crede mihi, cogitatione ea non mediocriter sum confirmatus. Hoc idem, si tibi videtur, fac ante oculos tibi proponas: modo uno tempore tot viri clarissimi interierunt; de imperio populi Romani tanta deminutio facta est; omnes provinciae conquassatae sunt: in unius mulierculae animula si iactura facta est, tanto opere commoveris? quae si hoc tempore non diem suum obisset, paucis post annis tamen ei moriendum fuit, quoniam homo nata fuerat. 5. Etiam tu ab hisce rebus animum ac cogitationem tuam avoca atque ea potius reminiscere, quae digna tua persona sunt: illam, quam diu ei opus fuerit, vixisse; una cum re publica fuisse; te, patrem suum, praetorem, consulem, augurem vidisse; adulescentibus primariis nuptam fuisse; omnibus bonis prope perfunctam esse: cum res publica occideret, vita exoessisse. Quid est quod tu aut illa cum fortuna hoc nomine queri possitis? Denique noli te oblivisci Ciceronem esse et eum, qui aliis consueris praecipere et dare consilium, neque imitari malos medicos, qui in alienis morbis profitentur tenere se medicinae scientiam, ipsi se curare non possunt; sed potius, quae aliis tute praecipere soles, ea tute tibi subiice atque apud animum propone. 6. Nullus dolor est, quem non longinquitas temporis minuat ac molliat: hoc te exspectare

tempus tibi turpe est ac non ei rei sapientia tua te occurrere. Quod si qui etiam inferis sensus est, qui illius in te amor fuit pietasque in omnes suos, hoc certe illa te facere non volt. Da hoc illi mortuae; da ceteris amicis ac familiaribus, qui tuo dolore maerent; da patriae, ut, si qua in re opus sit, opera et consilio tuo uti possit. Denique, quoniam in eam fortunam devenimus, ut etiam huic rei nobis serviendum sit, noli committere ut quisquam te putet non tam filiam quam rei publicae tempora et aliorum victoriam lugere. Plura me ad te de hac re scribere pudet, ne videar prudentiae tuae diffidere; qua re, si hoc unum proposuero, finem faciam scribendi: vidimus aliquotiens secundam pulcherrime te ferre fortunam magnamque ex ea re te laudem apisci; fac aliquando intellegamus adversam quoque te aeque ferre posse neque id maius, quam debeat, tibi onus videri, ne ex omnibus virtutibus haec una tibi videatur deesse. Quod ad me attinet, cum te tranquilliore animo esse cognoro, de iis rebus, quae hic geruntur, quemadmodumque se provincia habeat, certiorem faciam. Vale.

## 99. AD FAMILIARES IV. 6.

SCR. ASTURAE MENSE APRILI A.U.C. 709.

M. CICERO S. D. SER. SULPICIO.

1. Ego vero, Servi, vellem, ut scribis, in meo gravissimo casu adfuisses: quantum enim praesens me adiuvare potueris et consolando et prope aeque dolendo, facile ex eo intellego, quod litteris lectis aliquantum acquievi; nam et ea scripsisti, quae levare luctum possent, et in me consolando non mediocrem ipse animi dolorem adhibuisti. Servius tamen tuus omnibus officiis, quae illi tempori tribui potuerunt, declaravit et quanti ipse me

faceret et quam suum talem erga me animum tibi gratum putaret fore; cuius officia iucundiora scilicet saepe mihi fuerunt, numquam tamen gratiora. Me autem non oratio tua solum et societas paene aegritudinis, sed etiam auctoritas consolatur; turpe enim esse existimo me non ita ferre casum meum, ut tu, tali sapientia praeditus, ferendum putas. Sed opprimor interdum et vix resisto dolori, quod ea me solacia deficiunt, quae ceteris, quorum mihi exempla propono, simili in fortuna non defuerunt. Nam et Q. Maximus, qui filium consularem, clarum virum et magnis rebus gestis, amisit, et L. Paulus, qui duo septem diebus, et vester Gallus et M. Cato, qui summo ingenio, summa virtute filium perdidit, iis temporibus fuerunt, ut eorum luctum ipsorum dignitas consolaretur ea, quam ex re publica consequebantur. 2. Mihi autem amissis ornamentis iis, quae ipse commemoras quaeque eram maximis laboribus adeptus, unum manebat illud solacium, quod ereptum est. Non amicorum negotiis, non rei publicae procuratione impediebantur cogitationes meae; nihil in foro agere libebat; aspicere curiam non poteram; existimabam, id quod erat, omnes me et industriae meae fructus et fortunae perdidisse. Sed, cum cogitarem haec mihi tecum et cum quibusdam esse communia, et cum frangerem iam ipse me *et* cogerem illa ferre toleranter, habebam quo confugerem, ubi conquiescerem, cuius in sermone et suavitate omnes curas doloresque deponerem: nunc autem hoc tam gravi volnere etiam illa, quae consanuisse videbantur, recrudescunt; non enim, ut tum me a re publica maestum domus excipiebat, quae levaret, sic nunc domo maerens ad rem publicam confugere possum, ut in eius bonis acquiescam. Itaque et domo absum et foro, quod nec

eum dolorem, quem e re publica capio, domus iam consolari potest nec domesticum res publica. 3. Quo magis te exspecto teque videre quam primum cupio: maior mihi levatio adferri nulla potest quam coniunctio consuetudinis sermonumque nostrorum; quamquam sperabam tuum adventum—sic enim audiebam—adpropinquare. Ego autem cum multis de causis te exopto quam primum videre, tum etiam, ut ante commentemur inter nos, qua ratione nobis traducendum sit hoc tempus, quod est totum ad unius voluntatem accommodandum et prudentis et liberalis et, ut perspexisse videor, nec *a* me alieni et tibi amicissimi. Quod cum ita sit, magnae tamen est deliberationis, quae ratio sit ineunda nobis, non agendi aliquid, sed illius concessu et beneficio quiescendi. Vale.

## 100. AD FAMILIARES VI. 2.

SCR. ASTURAE MENSE APRILI A.U.C. 709.

M. CICERO S. D. A. TORQUATO.

1. PETO a te ne me putes oblivione tui rarius ad te scribere, quam solebam, sed aut gravitate valetudinis, qua tamen iam paulum videor levari, aut quod absim ab urbe, ut, qui ad te proficiscantur, scire non possim; qua re velim ita statutum habeas, me tui memoriam cum summa benevolentia tenere tuasque omnes res non minori mihi curae quam meas esse. 2. Quod maiore in varietate versata est adhuc tua causa, quam homines aut volebant aut opinabantur, mihi crede, non est pro malis temporum quod moleste feras; necesse est enim aut armis urgeri rem publicam sempiternis aut his positis recreari aliquando aut funditus interire. Si arma valebunt, nec eos, a quibus recipieris, vereri debes nec eos, quos adiuvisti; si armis aut condicione positis aut defatigatione abiectis

aut victoria detractis civitas respiraverit, et dignitate tua frui tibi et fortunis licebit; sin omnino interierint omnia fueritque is exitus, quem vir prudentissimus, M. Antonius, iam tum timebat, cum tantum instare malorum suspicabatur, misera est illa quidem consolatio, tali praesertim civi et viro, sed tamen necessaria, nihil esse praecipue cuiquam dolendum in eo, quod accidat universis. 3. Quae vis insit in his paucis verbis—plura enim committenda epistolae non erant—, si attendes, quod facis, profecto etiam sine meis litteris intelleges te aliquid habere, quod speres, nihil, quod aut hoc aut aliquo rei publicae statu timeas; omnia si interierint, cum superstitem te esse rei publicae ne si liceat quidem velis, ferendam esse fortunam, praesertim quae absit a culpa. Sed haec hactenus. Tu velim scribas ad me, quid agas et ubi futurus sis, ut aut quo scribam aut quo veniam scire possim.

## 101. AD FAMILIARES IV. 12.

SCR. ATHENIS PR. KAL. IUNIAS A.U.C. 709.

SERVIUS CICERONI SAL. PLUR.

1. ETSI scio non iucundissimum me nuntium vobis adlaturum, tamen quoniam casus et natura in nobis dominatur, visum est [faciendum], quoquo modo res se haberet, vos certiores facere. A. d. x. Kal. Iun. cum ab Epidauro Piraeum navi advectus essem, ibi *M.* Marcellum, collegam nostrum, conveni eumque diem ibi consumpsi, ut cum eo essem. Postero die cum ab eo digressus essem eo consilio, ut ab Athenis in Boeotiam irem reliquamque iurisdictionem absolverem, ille, ut aiebat, supra Maleas in Italiam versus navigaturus erat. 2. Post diem tertium eius diei, cum ab Athenis proficisci in animo haberem,

circiter hora decima noctis P. Postumius, familiaris eius, ad me venit et mihi nuntiavit M. Marcellum, collegam nostrum, post cenae tempus a P. Magio Cilone, familiare eius, pugione percussum esse et duo volnera accepisse, unum in stomacho, alterum in capite secundum aurem; sperari tamen eum vivere posse; Magium se ipsum interfecisse postea; se a Marcello ad me missum esse, qui haec nuntiaret et rogaret, uti medicos *cogerem*. Coëgi et e vestigio eo sum profectus prima luce. Cum non longe a Piraeo abessem, puer Acidini obviam mihi venit cum codicillis, in quibus erat scriptum, paulo ante lucem Marcellum diem suum obisse. Ita vir clarissimus ab homine deterrimo acerbissima morte est adfectus, et, cui inimici propter dignitatem pepercerant, inventus est amicus, qui ei mortem offerret. 3. Ego tamen ad tabernaculum eius perrexi: inveni duos libertos et pauculos servos; reliquos aiebant profugisse metu perterritos, quod dominus eorum ante tabernaculum interfectus esset. Coactus sum in eadem illa lectica, qua ipse delatus eram, meisque lecticariis in urbem eum referre, ibique pro ea copia, quae Athenis erat, funus ei satis amplum faciendum curavi. Ab Atheniensibus, locum sepulturae intra urbem ut darent, impetrare non potui, quod religione se impediri dicerent; neque tamen id antea cuiquam concesserant: quod proximum fuit, uti in quo vellemus gymnasio eum sepeliremus, nobis permiserunt. Nos in nobilissimo orbi terrarum gymnasio Academiae locum delegimus ibique eum combussimus, posteaque curavimus, ut eidem Athenienses in eodem loco monumentum ei marmoreum faciendum locarent. Ita, quae nostra officia fuerunt, pro collegio et pro propinquitate et vivo et mortuo omnia ei praestitimus. Vale. D. pr. Kal. Iun. Athenis.

## 102. AD FAMILIARES XIII. 4.

SCR. ROMAE MENSE OCTOBRI A.U.C. 709.

M. CICERO S. D. Q. VALERIO Q. F. ORCAE LEGATO PROPR.

1. CUM municipibus Volaterranis mihi summa necessitudo est; magno enim meo beneficio adfecti cumulatissime mihi gratiam rettulerunt; nam nec in honoribus meis *nec in* laboribus umquam defuerunt. Cum quibus si mihi nulla causa intercederet, tamen, quod te vehementissime diligo quodque me a te plurimi fieri sentio, et monerem te et hortarer, ut eorum fortunis consuleres, praesertim cum prope praecipuam causam haberent ad ius obtinendum: primum quod Sullani temporis acerbitatem deorum immortalium benignitate subterfugerunt, deinde, quod summo studio populi Romani a me in consulatu meo defensi sunt. 2. Cum *enim* tribuni plebi legem iniquissimam de eorum agris promulgavissent, facile senatui populoque Romano persuasi, ut eos cives, quibus fortuna pepercisset, salvos esse vellent. Hanc actionem meam C. Caesar primo suo consulatu lege agraria comprobavit agrumque Volaterranum et oppidum omni periculo in perpetuum liberavit, ut mihi dubium non sit quin is, qui novas necessitudines adiungat, vetera sua beneficia conservari velit. Quam ob rem est tuae prudentiae aut sequi eius auctoritatem, cuius sectam atque imperium summa cum tua dignitate secutus es, aut certe illi integram omnem causam reservare; illud vero dubitare non debes, quin tam grave, tam firmum, tam honestum municipium tibi tuo summo beneficio in perpetuum obligari velis. 3. Sed haec, quae supra scripta sunt, eo spectant, ut te horter et suadeam: reliqua sunt, quae pertinent ad rogandum, ut non solum tua causa tibi consilium me dare

putes, sed etiam, quod mihi opus sit, me a te petere et rogare. Gratissimum igitur mihi feceris, si Volaterranos omnibus rebus integros incolumesque esse volueris: eorum ego domicilia, sedes, rem, fortunas, *quae* et a dis immortalibus et a praestantissimis in nostra re publica civibus summo senatus populique Romani studio conservatae sunt, tuae fidei iustitiae bonitatique commendo. 4. Si pro meis pristinis opibus facultatem mihi res hoc tempore daret, ut ita defendere possem Volaterranos, quem ad modum consuevi tueri meos, nullum officium, nullum denique certamen, in quo illis prodesse possem, praetermitterem; sed quoniam apud te nihilo minus hoc tempore valere me confido, quam valuerim semper apud *bonos* omnes, pro nostra summa necessitudine parique inter nos et mutua benevolentia abs te peto, ut ita de Volaterranis mereare, ut existiment eum quasi divino consilio isti negotio praepositum esse, apud quem unum nos eorum perpetui defensores plurimum valere possemus.

## 103. AD FAMILIARES XII. 18.

SCR. ROMAE SUB FINEM A.U.C. 709.

CICERO S. D. CORNIFICIO COLLEGAE.

1. QUOD extremum fuit in ea epistola, quam a te proxime accepi, ad id primum respondebo; animum advorti enim hoc vos magnos oratores facere nonnumquam: epistolas requiris meas; ego autem numquam, cum mihi denuntiatum esset a tuis ire aliquem, non dedi. Quod mihi videor ex tuis litteris intellegere te nihil commissurum esse temere nec ante, quam scisses, quo iste nescio qui Caecilius Bassus erumperet, quicquam certi constituturum, id ego et speraram prudentia tua fretus et, ut confiderem, fecerunt tuae gratissimae mihi litterae;

idque ut facias quam saepissime, ut et quid tu agas et quid agatur scire possim et etiam quid acturus sis, valde te rogo. Etsi periniquo patiebar animo te a me digredi, tamen eo tempore me consolabar, quod et in summum otium te ire arbitrabar et ab impendentibus magnis negotiis discedere: utrumque contra accidit; 2. istic enim bellum est exortum, hic pax consecuta, sed tamen eius modi pax, in qua, si adesses, multa te non delectarent, ea tamen, quae ne ipsum Caesarem quidem delectant; bellorum enim civilium ii semper exitus sunt, ut non ea solum fiant, quae velit victor, sed etiam, ut iis mos gerendus sit, quibus adiutoribus sit parta victoria. Equidem sic iam obdurui, ut ludis Caesaris nostri animo aequissimo viderem T. Plancum, audirem Laberii et Publilii poëmata. Nihil mihi tam deesse scito quam quicum haec familiariter docteque rideam: is tu eris, si quam primum veneris; quod ut facias, non mea solum, sed etiam tua interesse arbitror.

## 104. AD ATTICUM XIII. 52.

SCR. IN PUTEOLANO A. D. XIV. KAL. IANUARIAS A.U.C. 709.

CICERO ATTICO SAL.

1. O HOSPITEM mihi tam gravem ἀμεταμέλητον! fuit enim periucunde. Sed cum secundis Saturnalibus ad Philippum vesperi venisset, villa ita completa militibus est, ut vix triclinium, ubi cenaturus ipse Caesar esset, vacaret; quippe hominum CIↃ CIↃ. Sane sum commotus, quid futurum esset postridie, ac mihi Barba Cassius subvenit: custodes dedit. Castra in agro; villa defensa est. Ille tertiis Saturnalibus apud Philippum ad h. VII., nec quemquam admisit: rationes opinor cum Balbo; inde ambulavit in litore. Post h. VIII. in balneum; tum audivit de

Mamurra; non mutavit. Unctus est, accubuit. Ἐμετικὴν agebat; itaque et edit et bibit ἀδεῶς et iucunde, opipare sane et apparate, nec id solum, sed

bene cocto,
condito, sermone bono et, si quaeri', libenter.

2. Praeterea tribus tricliniis accepti οἱ περὶ αὐτὸν valde copiose; libertis minus lautis servisque nihil defuit: nam lautiores eleganter accepti. Quid multa? homines visi sumus. Hospes tamen non is, cui diceres: 'amabo te, eodem ad me, cum revertere.' Semel satis est. Σπουδαῖον οὐδὲν in sermone, φιλόλογα multa. Quid quaeris? delectatus est et libenter fuit. Puteolis se aiebat unum diem fore, alterum ad Baias. Habes hospitium sive ἐπισταθμείαν odiosam mihi, dixi, non molestam. Ego paulisper hic, deinde in Tusculanum. Dolabellae villam cum praeteriret, omnis armatorum copia dextra sinistra ad equum nec usquam alibi. Hoc ex Nicia.

# M. TULLII CICERONIS

## EPISTOLAE SELECTAE.

### PARS V.

### 105. AD ATTICUM XIV. 1.

SCR. IN SUBURBANO MATII A. D. VII. IDUS APRILES A.U.C. 710.

CICERO ATTICO SAL.

1. DEVERTI ad illum, de quo tecum mane. Nihil perditius: 'explicari rem non posse; etenim si ille tali ingenio exitum non reperiebat, quis nunc reperiet?' Quid quaeris? perisse omnia aiebat, quod haud scio an ita sit; verum ille gaudens, adfirmatque minus diebus XX. tumultum Gallicum, in sermonem se post Idus Martias praeterquam Lepido venisse nemini; ad summam, non posse istaec sic abire. O pudentem Oppium! qui nihilo minus illum desiderat, sed loquitur nihil, quod quemquam bonum offendat. Sed haec hactenus. 2. Tu, quaeso, quicquid novi—multa autem exspecto—scribere ne pigrere; in his, de Sexto satisne certum, maxime autem de Bruto nostro, de quo quidem ille, ad quem deverti, Caesarem solitum dicere, 'magni refert, hic quid velit, sed quicquid volt, valde volt;' idque eum animadvertisse, cum pro Deiotaro Niceae diceret; valde vehementer eum visum et libere dicere; atque etiam—ut enim quidque succurrit, libet scribere—proxime, cum Sestii rogatu apud eum fuissem ex-

spectaremque sedens, quoad vocarer, dixisse eum, 'ego dubitem quin summo in odio sim, cum M. Cicero sedeat nec suo commodo me convenire possit? atqui, si quisquam est facilis, hic est; tamen non dubito quin me male oderit.' Haec et eius modi multa. Sed ad propositum: quicquid erit, non modo magnum, sed etiam parvum, scribes; equidem nihil intermittam.

## 106. AD ATTICUM XIV. 2.

SCR. IN SUBURBANO MATII A. D. VI. IDUS APRILES A.U.C. 710.

CICERO ATTICO SAL. D.

1. DUAS a te accepi epistolas heri: ex priore theatrum Publiliumque cognovi, bona signa consentientis multitudinis; plausus vero L. Cassio datus etiam facetus mihi quidem visus est. 2. Altera epistola de Madaro scripta, apud quem nullum *φαλάκρωμα*, ut putas; processi enim, sed minus diu; eius sermone enim sum retentus. 3. Quod autem ad te scripseram, obscure fortasse, id eius modi est: aiebat Caesarem secum, quo tempore Sestii rogatu veni ad eum, cum exspectarem sedens, dixisse: 'ego nunc tam sim stultus, ut hunc ipsum facilem hominem putem mihi esse amicum, cum tam diu sedens meum commodum exspectet?' Habes igitur *φαλάκρωμα* inimicissimum otii, id est Bruti. 4. In Tusculanum hodie, Lanuvii cras, inde Asturae cogitabam. Piliae paratum est hospitium, sed vellem Atticam; verum tibi ignosco; quarum utrique salutem.

## 107. AD FAMILIARES XI. 1.

SCR. MENSE APRILI A.U.C. 710.

D. BRUTUS BRUTO SUO ET CASSIO SAL.

1. Quo in statu simus, cognoscite: heri vesperi apud me Hirtius fuit; qua mente esset Antonius, demonstravit, pessima scilicet et infidelissima. Nam se neque mihi provinciam dare posse aiebat neque arbitrari tuto in urbe esse quemquam nostrum; adeo esse militum concitatos animos et plebis: quod utrumque esse falsum puto vos animadvertere atque illud esse verum, quod Hirtius demonstrabat, timere eum ne, si mediocre auxilium dignitatis nostrae habuissemus, nullae partes his in re publica relinquerentur. 2. Cum in his angustiis versarer, placitum est mihi ut postularem legationem liberam mihi reliquisque nostris, ut aliqua causa proficiscendi honesta quaereretur. Hanc se impetraturum pollicitus est, nec tamen impetraturum confido: tanta est hominum insolentia et nostri insectatio; ac si dederint quod petimus, tamen paulo post futurum puto ut hostes iudicemur aut aqua et igni nobis interdicatur. 3. Quid ergo est, inquis, tui consilii? Dandus est locus fortunae; cedendum ex Italia, migrandum Rhodum aut aliquo terrarum arbitror: si melior casus fuerit, revertemur Romam; si mediocris, in exsilio vivemus; si pessimus, ad novissima auxilia descendemus. 4. Succurret fortasse hoc loco alicui vestrum, cur novissimum tempus exspectemus potius, quam nunc aliquid moliamur? Quia ubi consistamus non habemus praeter Sex. Pompeium et Bassum Caecilium, qui mihi videntur hoc nuntio de Caesare adlato firmiores futuri; satis tempore ad eos accedemus, ubi quid valeant scierimus. Pro Cassio et te, si quid me velitis recipere,

recipiam; postulat enim hoc Hirtius ut faciam. 5. Rogo vos quam primum mihi rescribatis—nam non dubito quin de his rebus ante horam quartam Hirtius certiorem me sit facturus—; quem in locum convenire possimus, quo me velitis venire, rescribite. Post novissimum Hirtii sermonem placitum est mihi postulare ut liceret nobis Romae esse publico praesidio: quod illos nobis concessuros non puto; magnam enim invidiam iis faciemus. Nihil tamen non postulandum putavi, quod aequum esse statuerem.

## 108. AD ATTICUM XIV. 12.

SCR. PUTEOLIS A. D. X. KALENDAS MAIAS A.U.C. 710.

CICERO ATTICO SAL.

1. O MI Attice, vereor ne nobis Idus Martiae nihil dederint praeter laetitiam et odii poenam ac doloris. Quae mihi istim adferuntur? quae hic video? *ὦ πράξεως καλῆς μέν, ἀτελοῦς δέ!* Scis, quam diligam Siculos et quam illam clientelam honestam iudicem: multa illis Caesar, neque me invito, etsi Latinitas erat non ferenda, verum tamen—. Ecce autem Antonius accepta grandi pecunia fixit legem a dictatore comitiis latam, qua Siculi cives Romani; cuius rei vivo illo mentio nulla. Quid? Deiotari nostri causa non similis? Dignus ille quidem omni regno, sed non per Fulviam. Sescenta similia. Verum illuc refero: tam claram tamque testatam rem tamque iustam, Buthrotiam, non tenebimus aliqua ex parte? et eo quidem magis, quo iste plura? 2. Nobiscum hic perhonorifice et amice Octavius, quem quidem sui Caesarem salutabant, Philippus non *item*, itaque ne nos quidem; quem nego posse *esse* bonum civem: ita multi circumstant, qui quidem nostris mortem minitantur. Negat haec ferri posse. Quid censes, cum Romam puer venerit,

ubi nostri liberatores tuti esse non possunt? *qui* quidem semper erunt clari, conscientia vero facti sui etiam beati; sed nos, nisi me fallit, iacebimus. Itaque exire aveo, 'ubi nec Pelopidarum,' inquit. Haud amo vel hos designatos, qui etiam declamare me coëgerunt, ut ne apud aquas quidem acquiescere liceret. Sed hoc meae nimiae facilitatis: nam id erat quondam quasi necesse; nunc, quoquo modo se res habet, non est item. 3. Quam*quam* dudum nihil habeo, quod ad te scribam, scribo tamen, non ut *te* delectem meis litteris, sed ut eliciam tuas. Tu, si quid erit de ceteris, de Bruto utique, quicquid. Haec conscripsi x. Kal. accubans apud Vestorium, hominem remotum a dialecticis, in arithmeticis satis exercitatum.

## 109. AD ATTICUM XIV. 13 A.

M. ANTONIUS COS. S. D. M. CICERONI.

1. OCCUPATIONIBUS est factum meis et subita tua profectione, ne tecum coram de hac re agerem; quam ob causam vereor ne absentia mea levior sit apud te: quod si bonitas tua responderit iudicio meo, quod semper habui de te, gaudebo. 2. A Caesare petii ut Sex. Clodium restitueret: impetravi. Erat mihi in animo etiam tum sic uti beneficio eius, si tu concessisses; quo magis laboro, ut tua voluntate id per me facere nunc *liceat:* quod si duriorem te eius miserae et adflictae fortunae praebes, non contendam ego adversus te; quamquam videor debere tueri commentarium Caesaris. Sed mehercule, si humaniter et sapienter et amabiliter in me cogitare vis, facilem profecto te praebebis et voles P. Clodium, in optima spe puerum repositum, existimare non te insectatum esse, cum potueris, amicos paternos. 3. Patere, obsecro, te pro re publica videri gessisse simultatem cum

patre eius: non contempseris hanc familiam; honestius enim et libentius deponimus inimicitias rei publicae nomine susceptas quam contumaciae. Me deinde sine ad hanc opinionem iam nunc dirigere puerum et tenero animo eius persuadere non esse tradendas posteris inimicitias. Quamquam tuam fortunam, Cicero, ab omni periculo abesse certum habeo, tamen arbitror malle te quietam senectutem et honorificam potius agere quam sollicitam. Postremo meo iure te hoc beneficium rogo; nihil enim non tua causa feci. Quod si non impetro, per me Clodio daturus non sum, ut intellegas, quanti apud me auctoritas tua sit, atque eo te placabiliorem praebeas.

## 110. AD ATTICUM XIV. 13 B.

CICERO ANTONIO COS. S. D.

1. Quod mecum per litteras agis, unam ob causam mallem coram egisses: non enim solum ex oratione, sed etiam ex voltu et oculis et fronte, ut aiunt, meum erga te amorem perspicere potuisses; nam, cum te semper amavi, primum tuo studio, post etiam beneficio provocatus, tum his temporibus res publica te mihi ita commendavit, ut cariorem habeam neminem. 2. Litterae vero tuae cum amantissime, tum honorificentissime scriptae sic me adfecerunt, ut non dare tibi beneficium viderer, sed accipere a te ita petente, ut inimicum meum, necessarium tuum, me invito servare nolles, cum id nullo negotio facere posses. 3. Ego vero tibi istuc, mi Antoni, remitto, atque ita, ut me a te, cum iis verbis scripseris, liberalissime atque honorificentissime tractatum existimem, idque cum totum, quoquo modo se res haberet, tibi dandum putarem, tum do etiam humanitati et naturae

meae; nihil enim umquam non modo acerbum in me fuit, sed ne paulo quidem tristius aut severius, quam necessitas rei publicae postulavit. Accedit ut ne in ipsum quidem Clodium meum insigne odium fuerit umquam, semperque ita statui, non esse insectandos inimicorum amicos, praesertim humiliores, nec his praesidiis nosmet ipsos esse spoliandos. 4. Nam de puero Clodio tuas partes esse arbitror, ut eius animum tenerum, quem ad modum scribis, iis opinionibus imbuas, ut ne quas inimicitias residere in familiis nostris arbitretur. Contendi cum P. Clodio, cum ego publicam causam, ille suam defenderet: nostras concertationes res publica diiudicavit; si viveret, mihi cum illo nulla contentio iam maneret. 5. Qua re, quoniam hoc a me sic petis, ut, quae tua potestas est, ea neges te me invito usurum, puero quoque hoc a me dabis, si tibi videbitur, non quo aut aetas nostra ab illius aetate quicquam debeat periculi suspicari aut dignitas mea ullam contentionem extimescat, sed ut nosmet ipsi inter nos coniunctiores simus, quam adhuc fuimus; interpellantibus enim his inimicitiis animus tuus magis patuit quam domus. Sed haec hactenus. Illud extremum: ego, quae te velle quaeque ad te pertinere arbitrabor, semper sine ulla dubitatione summo studio faciam; hoc velim tibi penitus persuadeas.

## 111. AD FAMILIARES IX. 14.

SCR. IN POMPEIANO IV. NON. MAIAS A.U.C. 710.

CICERO DOLABELLAE CONSULI SUO S.

1. ETSI contentus eram, mi Dolabella, tua gloria satisque ex ea magnam laetitiam voluptatemque capiebam, tamen non possum non confiteri cumulari me maximo gaudio, quod volgo hominum opinio socium me adscribat

tuis laudibus. Neminem conveni—convenio autem quotidie plurimos; sunt enim permulti optimi viri, qui valetudinis causa in haec loca veniant, praeterea ex municipiis frequentes necessarii mei—, quin omnes, cum te summis laudibus ad caelum extulerunt, mihi continuo maximas gratias agant; negant enim se dubitare quin tu meis praeceptis et consiliis obtemperans praestantissimum te civem et singularem consulem praebeas: 2. quibus ego quamquam verissime possum respondere te, quae facias, tuo iudicio et tua sponte facere nec cuiusquam egere consilio, tamen neque plane adsentior, ne imminuam tuam laudem, si omnis a meis consiliis profecta videatur, neque valde nego—sum enim avidior etiam quam satis est gloriae—; et tamen non alienum est dignitate tua, quod ipsi Agamemnoni, regum regi, fuit honestum, habere aliquem in consiliis capiendis Nestorem; mihi vero gloriosum te iuvenem consulem florere laudibus quasi alumnum disciplinae meae. 3. L. quidem Caesar, cum ad eum aegrotum Neapolim venissem, quamquam erat oppressus totius corporis doloribus, tamen ante, quam me plane salutavit, 'O mi Cicero,' inquit 'gratulor tibi, cum tantum vales apud Dolabellam, quantum si ego apud sororis filium valerem, iam salvi esse possemus. Dolabellae vero tuo et gratulor et gratias ago; quem quidem post te consulem solum possumus vere consulem dicere.' Deinde multa de facto ac de re gesta; tum nihil magnificentius, nihil praeclarius actum umquam, nihil rei publicae salutarius. Atque haec una vox omnium est. 4. A te autem peto, ut me hanc quasi falsam hereditatem alienae gloriae sinas cernere meque aliqua ex parte in societatem tuarum laudum venire patiare. Quamquam, mi Dolabella—haec enim iocatus sum—, libentius omnes

meas, si modo sunt aliquae meae, laudes ad te transfuderim, quam aliquam partem exhauserim ex tuis: nam cum te semper tantum dilexerim, quantum tu intellegere potuisti, tum his tuis factis sic incensus sum, ut nihil umquam in amore fuerit ardentius; nihil est enim, mihi crede, virtute formosius, nihil pulchrius, nihil amabilius. 5. Semper amavi, ut scis, M. Brutum propter eius summum ingenium, suavissimos mores, singularem probitatem atque constantiam: tamen Idibus Martiis tantum accessit ad amorem, ut mirarer locum fuisse augendi in eo, quod mihi iam pridem cumulatum etiam videbatur. Quis erat qui putaret ad eum amorem, quem erga te habebam, posse aliquid accedere? Tantum accessit, ut mihi nunc denique amare videar, antea dilexisse. 6. Qua re quid est quod ego te horter, ut dignitati et gloriae servias? Proponam tibi claros viros, quod facere solent, qui hortantur? neminem habeo clariorem quam te ipsum; te imitere oportet, tecum ipse certes: ne licet quidem tibi iam tantis rebus gestis non tui similem esse. 7. Quod cum ita sit, hortatio non est necessaria, gratulatione magis utendum est: contigit enim tibi quod haud scio an nemini, ut summa severitas animadversionis non modo non invidiosa, sed etiam popularis esset et cum bonis omnibus tum infimo cuique gratissima. Hoc si tibi fortuna quadam contigisset, gratularer felicitati tuae; sed contigit magnitudine cum animi tum etiam ingenii atque consilii; legi enim contionem tuam: nihil illa sapientius; ita pedetemptim et gradatim tum accessus a te ad causam facti, tum recessus, ut res ipsa maturitatem tibi animadvertendi omnium concessu daret. 8. Liberasti igitur et urbem periculo et civitatem metu, neque solum ad tempus maximam utilitatem attulisti, sed etiam ad exemplum.

Quo facto intellegere debes in te positam esse rem publicam tibique non modo tuendos, sed etiam ornandos esse illos viros, a quibus initium libertatis profectum est. Sed his de rebus coram plura propediem, ut spero: tu quoniam rem publicam nosque conservas, fac ut diligentissime te ipsum, mi Dolabella, custodias.

## 112. AD ATTICUM XIV. 21.

SCR. IN PUTEOLANO A. D. V. IDUS MAIAS A.U.C. 710.

CICERO ATTICO.

1. CUM paulo ante dedissem ad te Cassii tabellario litteras, v. Idus venit noster tabellarius, et quidem, portenti simile, sine tuis litteris; sed cito conieci Lanuvii te fuisse. Eros autem festinavit, ut ad me litterae Dolabellae perferrentur, non de re mea—nondum enim meas acceperat—, sed rescripsit ad eas, quarum exemplum tibi miseram, sane luculente. 2. Ad me autem, cum Cassii tabellarium dimisissem, statim Balbus. O dei boni, quam facile perspiceres timere otium! et nosti virum, quam tectus; sed tamen Antonii consilia narrabat: illum circumire veteranos, ut acta Caesaris sancirent idque se facturos esse iurarent, ut rata omnes haberent eaque duumviri omnibus mensibus inspicerent. Questus est etiam de sua invidia, eaque omnis eius oratio fuit, ut amare videretur Antonium. Quid quaeris? nihil sinceri. 3. Mihi autem non est dubium quin res spectet ad castra; acta enim illa res est animo virili, consilio puerili: quis enim hoc non vidit, regni heredem relictum? quid autem absurdius?

hoc metuere, alterum in metu non ponere?

Quin etiam hoc ipso tempore multa *ὑποσόλοικα*. Pontii Neapolitanum a matre tyrannoctoni possideri? legendus

mihi saepius est 'Cato maior' ad te missus; amariorem enim me senectus facit. Stomachor omnia. Sed mihi quidem βεβίωται. Viderint iuvenes. Tu mea curabis, ut curas. 4. Haec scripsi seu dictavi apposita secunda mensa apud Vestorium. Postridie apud Hirtium cogitabam, et quidem πεντέλοιπον. Sic hominem traducere ad optimates paro. Λῆρος πολύς. Nemo est istorum, qui otium non timeat. Qua re talaria videamus; quidvis enim potius quam castra. Atticae salutem plurimam velim dicas. Exspecto Octavii contionem et si quid aliud, maxime autem, ecquid Dolabella tinniat an in meo nomine tabulas novas fecerit.

## 113. AD FAMILIARES XI. 27.

SCR. IN TUSCULANO V. KAL. IUN. A.U.C. 710.

[M.] CICERO MATIO SAL.

1. NONDUM satis constitui molestiaene plus an voluptatis attulerit mihi Trebatius noster, homo cum plenus officii, tum utriusque nostrum amantissimus: nam cum in Tusculanum vesperi venissem, postridie ille ad me, nondum satis firmo corpore cum esset, mane venit; quem cum obiurgarem, quod parum valetudini parceret, tum ille, nihil sibi longius fuisse, quam ut me videret. 'Num quidnam' inquam 'novi?' Detulit ad me querelam tuam, de qua prius quam respondeo pauca proponam. 2. Quantum memoria repetere praeterita possum, nemo est mihi te amicus antiquior; sed vetustas habet aliquid commune cum multis, amor non habet: dilexi te, quo die cognovi, meque a te diligi iudicavi. Tuus deinde discessus, isque diuturnus, ambitio nostra et vitae dissimilitudo non est passa voluntates nostras consuetudine conglutinari; tuum tamen erga me animum agnovi multis annis

ante bellum civile, cum Caesar esset in Gallia: quod enim vehementer mihi utile esse putabas nec inutile ipsi Caesari, perfecisti, ut ille me diligeret, coleret, haberet in suis. Multa praetereo, quae temporibus illis inter nos familiarissime dicta, scripta, communicata sunt; graviora enim consecuta sunt. 3. Et*enim* initio belli civilis cum Brundisium versus ires ad Caesarem, venisti ad me in Formianum. Primum hoc ipsum quanti, praesertim temporibus illis! Deinde oblitum me putas consilii, sermonis, humanitatis tuae? quibus rebus interesse memini Trebatium. Nec vero sum oblitus litterarum tuarum, quas ad me misisti, cum Caesari obviam venisses in agro, ut arbitror, Trebulano. 4. Secutum illud tempus est, cum me ad Pompeium proficisci sive pudor meus coëgit sive officium sive fortuna: quod officium tuum, quod studium vel in absentem me vel in praesentes meos defuit? quem porro omnes mei et mihi et sibi te amiciorem iudicaverunt? Veni Brundisium: oblitumne me putas, qua celeritate, ut primum audieris, ad me Tarento advolaris? quae tua fuerit adsessio, oratio, confirmatio animi mei fracti communium miseriarum metu? 5. Tandem aliquando Romae esse coepimus: quid defuit nostrae familiaritati? In maximis rebus quonam modo gererem me adversus Caesarem usus tuo consilio sum, in reliquis officio: cui tu tribuisti excepto Caesare praeter me, ut domum ventitares horasque multas saepe suavissimo sermone consumeres? tum, cum etiam, si meministi, ut haec φιλοσοφούμενα scriberem, tu me impulisti. Post Caesaris reditum, quid tibi maiori curae fuit, quam ut essem ego illi quam familiarissimus? quod effeceras. 6. Quorsum igitur haec oratio longior, quam putaram? Quia sum admiratus te, qui haec nosse deberes, quicquam a me

commissum, quod esset alienum nostra amicitia, credidisse: nam praeter haec, quae commemoravi, quae testata sunt et illustria, habeo multa occultiora, quae vix verbis exsequi possum. Omnia me tua delectant, sed maxime [maxima] cum fides in amicitia, consilium, gravitas, constantia, tum lepos, humanitas, litterae. Quapropter redeo nunc ad querelam. 7. Ego te suffragium tulisse in illa lege primum non credidi; deinde, si credidissem, numquam id sine aliqua iusta causa existimarem te fecisse. Dignitas tua facit, ut animadvertatur, quicquid facias; malevolentia autem hominum, ut non nulla durius, quam a te facta sint, proferantur: ea tu si non audis, quid dicam nescio; equidem, si quando audio, tam defendo, quam me scio a te contra iniquos meos solere defendi. Defensio autem est duplex: alia sunt, quae liquido negare soleam, ut de isto ipso suffragio; alia, quae defendam a te pie fieri et humane, ut de curatione ludorum. 8. Sed te, hominem doctissimum, non fugit, si Caesar rex fuerit—quod mihi quidem videtur—, in utramque partem de tuo officio disputari posse, vel in eam, qua ego soleo uti, laudandam esse fidem et humanitatem tuam, qui amicum etiam mortuum diligas, vel in eam, qua non nulli utuntur, libertatem patriae vitae amici anteponendam. Ex his sermonibus utinam essent delatae ad te disputationes meae! Illa vero duo, quae maxima sunt laudum tuarum, quis aut libentius quam ego commemorat aut saepius? te et non suscipiendi belli civilis gravissimum auctorem fuisse et moderandae victoriae, in quo, qui mihi non adsentiretur, inveni neminem. Qua re habeo gratiam Trebatio, familiari nostro, qui mihi dedit causam harum litterarum, quibus nisi credideris, me omnis officii et humanitatis expertem iudicaris; quo nec mihi gravius quicquam potest esse nec te alienius.

## 114. AD FAMILIARES XI. 28.

SCR. ROMAE EXEUNTE MENSE MAIO A.U.C. 710.

MATIUS CICERONI SAL.

1 MAGNAM voluptatem ex tuis litteris cepi, quod, quam speraram atque optaram, habere te de me opinionem cognovi; de qua etsi non dubitabam, tamen, quia maximi aestimabam, ut incorrupta maneret, laborabam. Conscius autem mihi eram nihil a me commissum esse, quod boni cuiusquam offenderet animum: eo minus credebam plurimis atque optimis artibus ornato tibi temere quicquam persuaderi potuisse, praesertim in quem mea propensa et perpetua fuisset atque esset benevolentia; quod quoniam, ut volui, scio esse, respondebo criminibus, quibus tu pro me, ut par erat tua singulari bonitate et amicitia nostra, saepe restitisti. 2. Nota enim mihi sunt, quae in me post Caesaris mortem contulerint: vitio mihi dant, quod mortem hominis necessarii graviter fero atque eum, quem dilexi, perisse indignor; aiunt enim patriam amicitiae praeponendam esse, proinde ac si iam vicerint obitum eius rei publicae fuisse utilem. Sed non agam astute: fateor me ad istum gradum sapientiae non pervenisse; neque enim Caesarem in dissensione civili sum secutus, sed amicum, quamquam re offendebar, tamen non deserui, neque bellum umquam civile aut etiam causam dissensionis probavi, quam etiam nascentem exstingui summe studui. Itaque in victoria hominis necessarii neque honoris neque pecuniae dulcedine sum captus, quibus praemiis reliqui, minus apud eum quam ego cum possent, immoderate sunt abusi. Atque etiam res familiaris mea lege Caesaris deminuta est, cuius beneficio plerique, qui Caesaris morte laetantur,

remanserunt in civitate. Civibus victis ut parceretur, aeque ac pro mea salute laboravi. 3. Possum igitur, qui omnes voluerim incolumes, eum, a quo id impetratum est, perisse non indignari? cum praesertim idem homines illi et invidiae et exitio fuerint. 'Plecteris ergo,' inquiunt 'quoniam factum nostrum improbare audes.' O superbiam inauditam, alios in facinore gloriari, aliis ne dolere quidem impunite licere! at haec etiam servis semper libera fuerunt, *ut* timerent, gauderent, dolerent suo potius quam alterius arbitrio; quae nunc, ut quidem isti dictitant libertatis auctores, metu nobis extorquere conantur. Sed nihil agunt. 4. Nullius umquam periculi terroribus ab officio aut ab humanitate desciscam; numquam enim honestam mortem fugiendam, saepe etiam oppetendam putavi. Sed quid mihi succensent, si id opto, ut paeniteat eos sui facti? cupio enim Caesaris mortem omnibus esse acerbam. 'At debeo pro civili parte rem publicam velle salvam.' Id quidem me cupere, nisi et ante acta vita et reliqua mea spes tacente me probat, dicendo vincere non postulo. 5. Qua re maiorem in modum te rogo, ut rem potiorem oratione ducas mihique, si sentis expedire recte fieri, credas nullam communionem cum improbis esse posse. An, quod adulescens praestiti, cum etiam errare cum excusatione possem, id nunc, aetate praecipitata, commutem ac me ipse retexam? Non faciam, neque quod displiceat committam, praeterquam quod hominis mihi coniunctissimi ac viri amplissimi doleo gravem casum. Quod si aliter essem animatus, numquam quod facerem negarem, ne et in peccando improbus et in dissimulando timidus ac vanus existimarer. 6. 'At ludos, quos Caesaris victoriae Caesar adulescens fecit, curavi.' At id ad privatum officium, non ad statum rei publicae pertinet;

quod tamen munus et hominis amicissimi memoriae atque honoribus praestare etiam mortui debui, et optimae spei adulescenti ac dignissimo Caesare petenti negare non potui. 7. Veni etiam consulis Antonii domum saepe salutandi causa; ad quem qui me parum patriae amantem esse existimant rogandi quidem aliquid aut auferendi causa frequentes ventitare reperies. Sed quae haec est adrogantia, quod Caesar numquam interpellavit, quin, quibus vellem atque etiam quos ipse non diligebat, tamen iis uterer, eos, qui mihi amicum eripuerunt, carpendo me efficere conari, ne, quos velim, diligam? 8. Sed non vereor ne aut meae vitae modestia parum valitura sit in posterum contra falsos rumores, aut ne etiam ii, qui me non amant propter meam in Caesarem constantiam, non malint mei quam sui similes amicos habere. Mihi quidem si optata contingent, quod reliquum est vitae, in otio Rhodi degam; sin casus aliquis interpellarit, ita ero Romae, ut recte fieri semper cupiam. Trebatio nostro magnas ago gratias, quod tuum erga me animum simplicem atque amicum aperuit et quod eum, quem semper libenter dilexi, quo magis iure colere atque observare deberem, fecit. Bene vale et me dilige.

## 115. AD FAMILIARES XII. 1.

SCR. EXEUNTE MENSE MAIO A.U.C. 710.

CICERO CASSIO SAL.

1. FINEM nullam facio, mihi crede, Cassi, de te et Bruto nostro, id est de tota re publica, cogitandi, cuius omnis spes in vobis est et in D. Bruto; quam quidem iam habeo ipse meliorem, re publica a Dolabella meo praeclarissime gesta: manabat enim illud malum urbanum et ita conroborabatur quotidie, ut ego quidem et

urbi et otio diffiderem urbano ; sed ita compressa *res* est, ut mihi videamur omne iam ad tempus ab illo dumtaxat sordidissimo periculo tuti futuri. Reliqua magna sunt ac multa, sed posita omnia in vobis: quamquam primum quidque explicemus. Nam, ut adhuc quidem actum est, non regno, sed rege liberati videmur; interfecto enim rege regios omnis nutus tuemur. Neque vero id solum, sed etiam, quae ipse ille, si viveret, non faceret, ea nos quasi cogitata ab illo probamus. Nec eius quidem rei finem video: tabulae figuntur; immunitates dantur; pecuniae maximae discribuntur; exsules reducuntur ; senatus consulta falsa referuntur: ut tantum modo odium illud hominis impuri et servitutis dolor depulsus esse videatur, res publica iaceat in iis perturbationibus, in quas eam ille coniecit. 2. Haec omnia vobis sunt expedienda, nec hoc cogitandum, satis iam habere rem publicam a vobis: habet illa quidem tantum, quantum numquam mihi in mentem venit optare, sed contenta non est et pro magnitudine et animi et beneficii vestri a vobis magna desiderat adhuc. Ulta suas iniurias est per vos interitu tyranni; nihil amplius: ornamenta vero sua quae reciperavit? an quod ei mortuo paret, quem vivum ferre non poterat? cuius aera refigere debebamus, eius etiam chirographa defendimus? 'At enim ita decrevimus.' Fecimus id quidem temporibus cedentes, quae valent in re publica plurimum; sed immoderate quidem et ingrate nostra facilitate abutuntur. Verum haec propediem et multa alia coram: interim velim sic tibi persuadeas, mihi cum rei publicae, quam semper habui carissimam, tum amoris nostri causa maximae curae esse tuam dignitatem. Da operam, ut valeas. [Vale.]

## 116. AD FAMILIARES XI. 3.

SCR. PRID. NON. SEXT. A.U.C. 710.

BRUTUS ET CASSIUS PR. S. D. ANTONIO COS.

1. S. V. B. Litteras tuas legimus simillimas edicti tui, contumeliosas, minaces, minime dignas quae a te nobis mitterentur. Nos, Antoni, te nulla lacessiimus iniuria neque miraturum credidimus, si praetores et ea dignitate homines aliquid edicto postulassemus a consule: quod si indignaris ausos esse id facere, concede nobis ut doleamus ne hoc quidem abs te Bruto et Cassio tribui. 2. Nam de dilectibus habitis et pecuniis imperatis, exercitibus sollicitatis et nuntiis trans mare missis quod te questum esse negas, nos quidem tibi credimus optimo animo te fecisse, sed tamen neque agnoscimus quicquam eorum et te miramur, cum haec reticueris, non potuisse continere iracundiam tuam, quin nobis de morte Caesaris obiiceres. 3. Illud vero quem ad modum ferundum sit, tute cogita, non licere praetoribus concordiae ac libertatis causa per edictum de suo iure decedere, quin consul arma minetur. Quorum fiducia nihil est quod nos terreas; neque enim decet aut convenit nobis periculo ulli submittere animum nostrum neque est Antonio postulandum, ut iis imperet, quorum opera liber est. Nos si alia hortarentur, ut bellum civile suscitare vellemus, litterae tuae nihil proficerent; nulla enim minantis auctoritas apud liberos est: sed pulchre intellegis non posse nos quoquam impelli, et fortassis ea re minaciter agis, ut iudicium nostrum metus videatur. 4. Nos in hac sententia sumus, ut te cupiamus in libera re publica magnum atque honestum esse, vocemus te ad nullas inimicitias, sed tamen pluris nostram libertatem quam tuam amicitiam aestimemus. Tu etiam

atque etiam vide, quid suscipias, quid sustinere possis, neque quam diu vixerit Caesar, sed quam non diu regnarit, fac cogites. Deos quaesumus, consilia tua rei publicae salutaria sint ac tibi; si minus, ut salva atque honesta re publica tibi quam minimum noceant, optamus. Pridie Nonas Sext.

## 117. AD ATTICUM XVI. 7.

SCRIPSIT NAVIGANS AD POMPEIANUM A. D. XIV. KALENDAS SEPTEMBRES A.U.C. 710.

CICERO ATTICO SAL.

1. VIII. IDUS Sextil. cum a Leucopetra profectus—inde enim tramittebam—stadia circiter ccc. processissem, reiectus sum austro vehementi ad eandem Leucopetram. Ibi cum ventum exspectarem—erat enim villa Valerii nostri, ut familiariter essem et libenter—Regini quidam, illustres homines, eo venerunt, Roma sane recentes, in iis Bruti nostri hospes, qui Brutum Neapoli reliquisset. Haec adferebant: edictum Bruti et Cassii, et fore frequentem senatum Kalendis, a Bruto et Cassio litteras missas ad consulares et praetorios, ut adessent, rogare. Summam spem nuntiabant fore ut Antonius cederet, res conveniret, nostri Romam redirent; addebant etiam me desiderari, subaccusari. Quae cum audissem, sine ulla dubitatione abieci consilium profectionis, quo mehercule ne antea quidem delectabar; 2. lectis vero tuis litteris admiratus equidem sum te tam vehementer sententiam commutasse, sed non sine causa arbitrabar: etsi, quamvis non fueris suasor et impulsor profectionis meae, adprobator certe fuisti, dum modo Kal. Ian. Romae essem; ita fiebat ut, dum minus periculi videretur, abessem, in flammam ipsam venirem. Sed haec, etiamsi non

prudenter, tamen *ἀνεμέσητα* sunt, primum quod de mea sententia acta sunt, deinde etiam si te auctore, quid debet qui consilium dat praestare praeter fidem? 3. Illud admirari satis non potui, quod scripsisti his verbis: 'bene igitur tu, qui *εὐθανασίαν*, bene relinque patriam.' An ego relinquebam aut tibi tum relinquere videbar? tu id non modo non prohibebas, verum etiam adprobabas. Graviora, quae restant: 'velim *σχόλιον* aliquod elimes ad me, oportuisse te istuc facere.' Itane, mi Attice? defensione eget meum factum, praesertim apud te, qui id mirabiliter adprobasti? Ego vero istum *ἀπολογισμὸν συντάξομαι*, sed ad eorum aliquem, quibus invitis et dissuadentibus profectus sum: etsi quid iam opus est *σχολίῳ*? si perseverassem, opus fuisset. 'At hoc ipsum non constanter.' Nemo doctus umquam—multa autem de hoc genere scripta sunt—mutationem consilii inconstantiam dixit esse. 4. Deinceps igitur haec: 'nam si a Phaedro nostro esset, expedita excusatio esset: nunc quid respondemus?' ergo id erat meum factum, quod Catoni probare non possem? flagitii scilicet plenum et dedecoris. Utinam a primo ita tibi esset visum? tu mihi, sicut esse soles, fuisses Cato. 5. Extremum illud vel molestissimum: 'nam Brutus noster silet,' hoc est, non audet hominem id aetatis monere. Aliud nihil habeo, quod iis a te verbis significari putem, et hercule ita est. Nam XVI. Kal. Sept. cum venissem Veliam, Brutus audivit; erat enim cum suis navibus apud Haletem fluvium, citra Veliam milia passuum III; pedibus ad me statim: dei immortales, quam valde ille reditu vel potius reversione mea laetatus effudit illa omnia, quae tacuerat! ut recordarer illud tuum 'nam Brutus noster silet.' Maxime autem dolebat me Kal. Sext. in senatu non fuisse.

Pisonem ferebat in caelum, se autem laetari, quod effugissem duas maximas vituperationes: unam, quam itinere faciendo me intellegebam suscipere, desperationis ac relictionis rei publicae, flentes mecum vulgo querebantur, quibus de meo celeri reditu non probabam; alteram, de qua Brutus et qui una erant—multi autem erant—laetabantur, quod eam vituperationem effugissem, me existimari ad Olympia. Hoc vero nihil turpius quovis rei publicae tempore, sed hoc *ἀναπολόγητον*. Ego vero austro gratias miras, qui me a tanta infamia averterit. 6. Reversionis has [speciosas] causas habes, iustas illas quidem et magnas, sed nulla iustior, quam quod tu idem aliis litteris: 'provide, si cui quid debetur, ut sit unde par pari respondeatur; mirifica enim *δυσχρηστία* est propter metum armorum.' In freto medio hanc epistolam legi, ut, quid possem providere, in mentem mihi non veniret, nisi quod praesens me ipse defenderem. Sed haec hactenus; reliqua coram. 7. Antonii edictum legi a Bruto, et horum contra: scriptum praeclare. Sed quid ista edicta valeant aut quo spectent, plane non video, nec ego nunc, ut Brutus censebat, istuc ad rem publicam capessendam venio; quid enim fieri potest? num quis Pisoni est adsensus? num rediit ipse postridie? Sed abesse hanc aetatem longe a sepulcro negant oportere. 8. Sed obsecro te, quid est quod audivi de Bruto? Piliam *πειράζεσθαι παραλύσει* te scripsisse aiebat: valde sum commotus; etsi idem te scribere sperare melius. Ita plane velim et *εἰ* dicas plurimam salutem et suavissimae Atticae. Haec scripsi navigans, cum Pompeianum accederem, XIII. Kal.

## 118. AD FAMILIARES XII. 2.

SCR. ROMAE EXEUNTE MENSE SEPTEMBRI A.U.C. 710.

CICERO CASSIO SAL.

1. VEHEMENTER laetor tibi probari sententiam et orationem meam; qua si saepius uti liceret, nihil esset negotii libertatem et rem publicam reciperare. Sed homo amens et perditus multoque nequior quam ille ipse, quem tu nequissimum occisum esse dixisti, caedis initium quaerit, nullamque aliam ob causam me auctorem fuisse Caesaris interficiendi criminatur, nisi ut in me veterani incitentur: quod ego periculum non extimesco; modo vestri facti gloriam cum mea laude communicet. Ita nec Pisoni, qui in eum primus invectus est nullo adsentiente, nec mihi, qui idem tricensimo post die feci, nec P. Servilio, qui me est consecutus, tuto in senatum venire licet: caedem enim gladiator quaerit eiusque initium a. d. XIII. Kal. Octobr. a me se facturum putavit, ad quem paratus venerat, cum in villa Metelli complures dies commentatus esset. Quae autem in lustris et in vino commentatio potuit esse? itaque omnibus est visus, ut ad te antea scripsi, vomere suo more, non dicere. 2. Qua re, quod scribis te confidere auctoritate et eloquentia nostra aliquid profici posse, non nihil, ut in tantis malis, est profectum: intellegit enim populus Romanus tres esse consulares, qui quia, *quae* de re publica bene senserint, libere locuti sint, tuto in senatum venire non possint. Nec est praeterea quod quicquam exspectes; tuus enim necessarius adfinitate nova delectatur: itaque iam non est studiosus ludorum infinitoque fratris tui plausu dirumpitur. Alter item adfinis novis commentariis Caesaris delenitus est. Sed haec tolerabilia: illud non ferendum, quod est, qui

vestro anno filium suum consulem futurum putet ob eamque causam se huic latroni deservire prae se ferat. 3. Nam L. Cotta familiaris meus fatali quadam desperatione, ut ait, minus in senatum venit; L. Caesar, optimus et fortissimus civis, valetudine impeditur; Ser. Sulpicius et summa auctoritate et optime sentiens non adest. Reliquos exceptis designatis ignosce mihi si non numero consulares. Habes auctores consilii publici: qui numerus etiam bonis rebus exiguus esset, quid censes perditis? qua re spes est omnis in vobis, qui si idcirco abestis, ut sitis in tuto, ne in vobis quidem: sin aliquid dignum vestra gloria cogitatis, velim salvis nobis; sin id minus, res tamen publica per vos brevi tempore ius suum reciperabit. Ego tuis neque desum neque deero: qui sive ad me referent *sive non referent*, mea tibi tamen benevolentia fidesque praestabitur. Vale.

## 119. AD FAMILIARES XII. 23.

SCR. ROMAE MEDIO MENSE OCTOBRI A.U.C. 710.

CICERO CORNIFICIO SAL.

1. OMNEM condicionem imperii tui statumque provinciae mihi demonstravit Tratorius. O multa intolerabilia locis omnibus! Sed quo tua maior dignitas *est*, eo, quae tibi acciderunt, minus ferenda; neque enim, quae tu propter magnitudinem et animi *et* ingenii moderate fers, ea non ulciscenda sunt, etiam si non sunt dolenda. Sed haec posterius. 2. Rerum urbanarum acta tibi mitti certo scio; quod ni ita putarem, ipse perscriberem, in primisque Caesaris Octaviani conatum; de quo multitudini fictum ab Antonio crimen videtur, ut in pecuniam adulescentis impetum faceret; prudentes autem et boni viri et credunt factum et probant. Quid quaeris? magna

spes est in eo: nihil est, quod non existimetur laudis et gloriae causa facturus. Antonius autem, noster familiaris, tanto se odio esse intellegit, ut, cum interfectores suos domi conprehenderit, rem proferre non audeat. A. d. VII. Id. Oct. Brundisium erat profectus obviam legionibus Macedonicis quattuor, quas sibi conciliare pecunia cogitabat easque ad urbem adducere et in cervicibus nostris conlocare. 3. Habes formam rei publicae, si in castris potest esse res publica; in quo tuam vicem saepe doleo, quod nullam partem per aetatem sanae et salvae rei publicae gustare potuisti. Atque antehac quidem sperare saltem licebat; nunc etiam id ereptum est: quae enim est spes, cum in contione dicere ausus sit Antonius Cannutium apud eos locum sibi quaerere, quibus se salvo locus in civitate esse non posset? 4. Equidem et haec et omnia, quae homini accidere possunt, sic fero, ut philosophiae magnam habeam gratiam, quae me non modo ab sollicitudine abducit, sed etiam contra omnes fortunae impetus armat, tibique idem censeo faciendum nec, a quo culpa absit, quicquam in malis numerandum. Sed haec tu melius. Tratorium nostrum cum semper probassem, tum maxime in tuis rebus summam eius fidem diligentiam prudentiamque cognovi. Da operam, ut valeas; hoc mihi gratius facere nihil potes.

## 120. AD FAMILIARES XI. 4.

SCR. IN GALLIA CITERIORE EXEUNTE MENSE NOVEMBRI A.U.C. 710.

D. BRUTUS IMP. COS. DESIG. S. D. M. CICERONI.

1. Si de tua in me voluntate dubitarem, multis a te verbis peterem, ut dignitatem meam tuerere, sed profecto est ita, ut mihi persuasi, me tibi esse curae. Progressus

sum ad Inalpinos cum exercitu, non tam nomen imperatorium captans quam cupiens militibus satis facere firmosque eos ad tuendas nostras res efficere: quod mihi videor consecutus; 2. nam et liberalitatem nostram et animum sunt experti. Cum omnium bellicosissimis bellum gessi; multa castella cepi, multa vastavi; non sine causa ad senatum litteras misi. Adiuva nos tua sententia; quod cum facies, ex magna parte communi commodo inservieris.

## 121. AD ATTICUM XVI. 8.

SCR. IN PUTEOLANO A. D. IV. NONAS NOVEMBRES A.U.C. 710.

CICERO ATTICO SAL.

1. CUM sciam, quo die venturus sim, faciam ut scias. Impedimenta exspectanda sunt, quae Anagnia veniunt, et familia aegra est. Kal. vesperi litterae mihi ab Octaviano: magna molitur. Veteranos, qui Casilini et Calatiae *sunt*, perduxit ad suam sententiam; nec mirum: quingenos denarios dat. Cogitat reliquas colonias obire; plane hoc spectat, ut se duce bellum geratur cum Antonio. Itaque video paucis diebus nos in armis fore. Quem autem sequamur? vide nomen, vide aetatem. Atque a me postulat, primum ut clam colloquatur mecum vel Capuae *vel non longe a Capua:* puerile hoc quidem, si id putat clam fieri posse; docui per litteras id nec opus esse nec fieri posse. 2. Misit ad me Caecinam quendam Volaterranum, familiarem suum, qui haec pertulit, Antonium cum legione Alaudarum ad urbem pergere, pecunias municipiis imperare, legionem sub signis ducere. Consultabat, utrum Romam cum CIↃ CIↃ CIↃ. veteranorum proficisceretur, an Capuam teneret et Antonium venientem excluderet, an iret ad tres legiones Macedonicas, quae iter secundum mare

superum faciunt, quas sperat suas esse: eae congiarium ab Antonio accipere noluerunt, ut hic quidem narrat, et ei convitium grave fecerunt contionantemque reliquerunt. Quid quaeris? ducem se profitetur nec nos sibi putat deesse oportere. Equidem suasi, ut Romam pergeret; videtur enim mihi et plebeculam urbanam et, si fidem fecerit, etiam bonos viros secum habiturus. O Brute, ubi es? quantam εὐκαιρίαν amittis! non equidem hoc divinavi, sed aliquid tale putavi fore. Nunc tuum consilium exquiro. Romamne venio, an hic maneo, an Arpinum— ἀσφάλειαν habet is locus — fugiam? Romam, ne desideremur, si quid actum videbitur. Hoc igitur explica: numquam in maiore ἀπορίᾳ fui.

## 122. AD ATTICUM XVI. 11.

SCR. IN PUTEOLANO NONIS NOVEMBRIBUS A.U.C. 710.

CICERO ATTICO SAL.

1. NONIS accepi a te duas epistolas, quarum alteram Kal. dederas, alteram pridie: igitur prius ad superiorem. Nostrum opus tibi probari laetor, ex quo ἄνθη ipsa posuisti, quae mihi florentiora sunt visa tuo iudicio; cerulas enim tuas miniatas illas extimescebam. De Sicca ita est, ut scribis; † asta ea aegre me tenui. Itaque perstringam sine ulla contumelia Siccae aut Septimiae, tantum ut sciant παῖδες παίδων, sine vallo Luciliano, eum ex Galli Fadii filia liberos habuisse. Atque utinam eum diem videam, cum ista oratio ita libere vagetur, *ut* etiam in Siccae domum introeat! sed illo tempore opus est, quod fuit illis III. viris. Moriar, nisi facete! Tu vero leges Sexto eiusque iudicium mihi perscribes. Εἷς ἐμοὶ μύριοι. Caleni interventum et Calvenae cavebis. 2. Quod vereris ne ἀδόλεσχος mihi tu, quis minus? cui, ut Aristophani

Archilochi iambus, sic epistola *tua* longissima quaeque optima videtur. Quod me admones, tu vero etiam si reprehenderes, non modo facile paterer, sed etiam laetarer, quippe cum in reprehensione sit prudentia cum εὐμενείᾳ. Ita libenter ea corrigam, quae a te animadversa sunt. 'Eodem iure, quo Rubriana' potius, quam 'quo Scipionis,' et de laudibus Dolabellae deruam cumulum. Ac tamen est isto loco bella, ut mihi videtur, εἰρωνεία, quod eum ter contra cives in acie. Illud etiam malo '† indignius esse hunc vivere' quam 'quid indignius?' 3. περιλογραφίαν Varronis tibi probari non moleste fero, a quo adhuc 'Ηρακλείδειον illud non abstuli. Quod me hortaris ad scribendum, amice tu quidem, sed me scito agere nihil aliud. Gravedo tua mihi molesta est: quaeso, adhibe, quam soles, diligentiam. 'O Tite' tibi prodesse laetor. Anagnini sunt Mustela ταξιάρχης et Laco, qui plurimum bibit. Librum, quem rogas, perpoliam et mittam. 4. Haec ad posteriorem. Τὰ περὶ τοῦ καθήκοντος, quatenus Panaetius, absolvi duobus: illius tres sunt, sed cum initio divisisset ita, tria genera exquirendi officii esse, unum, cum deliberemus, honestum an turpe sit, alterum, utile an inutile, tertium, cum haec inter se pugnare videantur, quo modo iudicandum sit, qualis causa Reguli, redire honestum, manere utile, de duobus primis praeclare disseruit, de tertio pollicetur se deinceps, sed nihil scripsit. Eum locum Posidonius persecutus *est;* ego autem et eius librum arcessivi et ad Athenodorum Calvum scripsi, ut ad me τὰ κεφάλαια mitteret, quae exspecto; quem velim cohortere et roges, ut quam primum. In eo est περὶ τοῦ κατὰ περίστασιν καθήκοντος. Quod de inscriptione quaeris, non dubito quin καθῆκον 'officium' sit, nisi quid tu aliud, sed inscriptio plenior 'de officiis.' Προσφωνῶ autem

Ciceroni filio; visum est non *ἀνοίκειον*. 5. De Myrtilo dilucide. O quales tu semper istos! itane in D. Brutum? di istis! 6. Ego me, ut scripseram, in Pompeianum non abdidi, primo tempestatibus, quibus nil taetrius; deinde ab Octaviano quotidie litterae, ut negotium susciperem, Capuam venirem, iterum rem publicam servarem, Romam utique statim.

*αἴδεσθεν μὲν ἀνῆνασθαι, δεῖσαν δ' ὑποδέχθαι.*

Is tamen egit sane strenue et agit; Romam veniet cum manu magna, sed est plane puer: putat senatum statim. Quis veniet? si venerit, quis incertis rebus offendet Antonium? Kal. Ianuar. erit fortasse praesidio, aut quidem ante depugnabitur. Puero municipia mire favent; iter enim faciens in Samnium venit Cales, mansit Teani: mirifica *ἀπάντησις* et cohortatio. Hoc tu putares? ob hoc ego citius Romam, quam constitueram. Simul et constituero, scribam. 7. Etsi nondum stipulationes legeram— nec enim Eros venerat—, tamen rem pridie Idus velim conficias. Epistolas Catinam, Tauromenium, Syracusas commodius mittere potero, si Valerius interpres ad me nomina gratiosorum scripserit; alii enim sunt alias, nostrique familiares fere demortui: publice tamen scripsi, si uti vellet eis Valerius, aut mihi nomina mitteret. 8. De Lepidianis feriis Balbus ad me, usque ad III. Kal. Expectabo tuas litteras, meque *de* Torquati negotiolo sciturum puto. Quinti litteras ad te misi, ut scires, quam valde eum amaret, quem dolet a te minus amari. Atticae, quoniam, quod optimum in pueris est, hilarula est, meis verbis suavium des volo.

## 123. AD FAMILIARES XI. 5.

SCR. ROMAE MEDIO MENSE DECEMBRI A.U.C. 710.

M. CICERO S. D. D. BRUTO IMP. COS. DESIG.

1. LUPUS familiaris noster cum a te venisset cumque Romae quosdam dies commoraretur, ego eram in iis locis, in quibus maxime tuto me esse arbitrabar; eo factum est ut ad te Lupus sine meis litteris rediret, cum tamen curasset, tuas ad me perferendas. Romam autem veni a. d. v. Idus Dec., nec habui quicquam antiquius, quam ut Pansam statim convenirem; ex quo ea de te cognovi, quae maxime optabam. Qua re hortatione tu quidem non eges, si ne in illa quidem re, quae a te gesta est post hominum memoriam maxima, hortatorem desiderasti. 2. Illud tamen breviter significandum videtur, populum Romanum omnia a te exspectare atque in te aliquando reciperandae libertatis omnem spem ponere. Tu, si dies noctesque memineris, quod te facere certo scio, quantam rem gesseris, non obliviscere profecto, quantae tibi etiam nunc gerendae sint: si enim iste provinciam nactus erit, cui quidem ego semper amicus fui ante, quam illum intellexi non modo aperte, sed etiam libenter cum re publica bellum gerere, spem reliquam nullam video salutis. 3. Quam ob rem te obsecro iisdem precibus, quibus senatus populusque Romanus, ut in perpetuum rem publicam dominatu regio liberes, ut principiis consentiant exitus. Tuum est hoc munus, tuae partes; a te hoc civitas vel omnes potius gentes non exspectant solum, sed etiam postulant: quamquam, cum hortatione non egeas, ut supra scripsi, non utar ea pluribus verbis; faciam illud, quod meum est, ut tibi omnia mea

officia, studia, curas, cogitationes pollicear, quae ad tuam laudem et gloriam pertinebunt. Quam ob rem velim tibi ita persuadeas, me cum rei publicae causa, quae mihi vita mea est carior, tum quod tibi ipsi faveam tuamque dignitatem amplificari velim, tuis optimis consiliis, amplitudini, gloriae nullo loco defuturum.

## 124. AD FAMILIARES XII. 22.

SCR. ROMAE EXEUNTE MENSE DECEMBRI A.U.C. 710.

CICERO CORNIFICIO SAL.

1. Nos hic cum homine gladiatore omnium nequissimo, collega nostro, Antonio, bellum gerimus, sed non pari condicione, contra arma verbis. At etiam de te contionatur, nec impune; nam sentiet, quos lacessierit. Ego autem acta ad te omnia arbitror perscribi ab aliis; a me futura debes cognoscere, quorum quidem non est difficilis coniectura: 2. oppressa omnia sunt, nec habent ducem boni, nostrique tyrannoctoni longe gentium absunt. Pansa et sentit bene et loquitur fortiter; Hirtius noster tardius convalescit. Quid futurum sit, plane nescio; spes tamen una est aliquando populum Romanum maiorum similem fore. Ego certe rei publicae non deero et, quicquid acciderit, a quo mea culpa absit, animo forti feram; illud profecto, quoad potero: tuam famam et dignitatem tuebor. 3. A. d. XIII. K. Ian. senatus haud *in*frequens mihi est adsensus cum de ceteris rebus magnis et necessariis, tum de provinciis ab iis, qui obtinerent, retinendis neque cuiquam tradendis, nisi qui ex senatus consulto successisset. Hoc ego cum rei publicae causa censui, tum mehercule in primis retinendae dignitatis tuae; quam ob rem te amoris nostri causa rogo, rei publicae causa hortor,

ut ne cui quicquam iuris in tua provincia esse patiare atque ut omnia referas ad dignitatem, qua nihil esse potest praestantius. 4. Vere tecum agam, ut necessitudo nostra postulat: in Sempronio, si meis litteris obtemperasses, maximam ab omnibus laudem adeptus esses; sed illud et praeteriit et levius est, haec magna res est: fac ut provinciam retineas in potestate rei publicae. Plura scripsissem, nisi tui festinarent. Itaque Chaerippo nostro me velim excuses.

## 125. AD FAMILIARES XI. 8.

SCR. ROMAE MENSE IANUARIO A.U.C. 711.

M. CICERO S. D. D. BRUTO IMP. COS. DESIG.

1. Eo tempore Polla tua misit, ut ad te, si quid vellem, darem litterarum, cum, quid scriberem, non habebam; omnia enim erant suspensa propter exspectationem legatorum, qui quid egissent, nihildum nuntiabatur. Haec tamen scribenda existimavi: primum senatum populumque Romanum de te laborare non solum salutis suae causa, sed etiam dignitatis tuae; admirabilis enim est quaedam tui nominis caritas amorque in te singularis omnium civium: ita enim sperant atque confidunt, ut antea rege, sic hoc tempore regno te rem publicam liberaturum. 2. Romae dilectus habetur totaque Italia, si hic dilectus appellandus est, cum ultro se offerunt omnes: tantus ardor animos hominum occupavit desiderio libertatis odioque diutinae servitutis. De reliquis rebus a te iam exspectare litteras debemus, quid ipse agas, quid noster Hirtius, quid Caesar meus, quos spero brevi tempore societate victoriae tecum copulatos fore. Reliquum est ut de me id scribam, quod te ex tuorum litteris et spero et malo cognoscere, me neque deesse ulla in re neque umquam defuturum dignitati tuae.

## 126. AD FAMILIARES XII. 4.

SCR. ROMAE MENSE IANUARIO A.U.C. 711.

CICERO CASSIO SAL.

1. VELLEM Idibus Martiis me ad cenam invitasses: reliquiarum nihil fuisset. Nunc me reliquiae vestrae exercent, et quidem praeter ceteros me: quamquam egregios consules habemus, sed turpissimos consulares; senatum fortem, sed infimo quemque honore fortissimum. Populo vero nihil fortius, nihil melius, Italiaque universa; nihil autem foedius Philippo et Pisone legatis, nihil flagitiosius; qui cum essent missi, ut Antonio ex senatus sententia certas res denuntiarent, cum ille earum rerum nulli paruisset, ultro ab illo ad nos intolerabilia postulata rettulerunt: itaque ad nos concurritur, factique iam in re salutari populares sumus. 2. Sed tu quid ageres, quid acturus, ubi denique esses, nesciebam: fama nuntiabat te isse in Syriam; auctor erat nemo. De Bruto, quo propius est, eo firmiora videntur esse quae nuntiantur. Dolabella valde vituperabatur ab hominibus non insulsis, quod tibi tam cito succederet, cum tu vixdum XXX. dies in Syria fuisses; itaque constabat eum recipi in Syriam non oportere. Summa laus et tua et Bruti est, quod exercitum praeter spem existimamini comparasse. Scriberem plura, si rem causamque nossem: nunc quae scribo, scribo ex opinione hominum atque fama. Tuas litteras avide exspecto. Vale.

## 127. AD FAMILIARES X. 28.

SCR. ROMAE MENSE FEBRUARIO A.U.C. 711.

CICERO TREBONIO SAL.

1. QUAM vellem ad illas pulcherrimas epulas me Idibus Martiis invitasses! reliquiarum nihil haberemus: at nunc

cum iis tantum negotii est, ut vestrum illud divinum in rem publicam beneficium non nullam habeat querelam. Quod vero a te, viro optimo, seductus est tuoque beneficio adhuc vivit haec pestis, interdum, quod mihi vix fas est, tibi subirascor: mihi enim negotii plus reliquisti uni quam praeter me omnibus. Ut enim primum post Antonii foedissimum discessum senatus haberi libere potuit, ad illum animum meum reverti pristinum, quem tu cum civi acerrimo, patre tuo, in ore et amore semper habuisti. 2. Nam cum senatum a. d. XIII. Kalendas Ianuarias tribuni pl. vocavissent deque alia re referrent, totam rem publicam sum complexus egique acerrime senatumque iam languentem et defessum ad pristinam virtutem consuetudinemque revocavi magis animi quam ingenii viribus. Hic dies meaque contentio atque actio spem primum populo Romano attulit libertatis recuperandae; nec vero ipse postea tempus ullum intermisi de re publica non cogitandi solum, sed etiam agendi. 3. Quod nisi res urbanas actaque omnia ad te perferri arbitrarer, ipse perscriberem, quamquam eram maximis occupationibus impeditus. Sed illa cognosces ex aliis; a me pauca, et ea summatim: habemus fortem senatum, consulares partim timidos, partim male sentientes. Magnum damnum factum est in Servio. L. Caesar optime sentit, sed, quod avunculus est, non acerrimas dicit sententias. Consules egregii; praeclarus D. Brutus; egregius puer Caesar, de quo spero equidem reliqua. Hoc vero certum habeto, nisi ille veteranos celeriter conscripsisset legionesque duae de exercitu Antonii ad eius se auctoritatem contulissent atque is oppositus esset terror Antonio, nihil Antonium sceleris, nihil crudelitatis praeteriturum fuisse. Haec tibi, etsi audita esse arbitrabar,

volui tamen notiora esse. Plura scribam, si plus otii habuero.

## 128. AD FAMILIARES XII. 5.

SCR. ROMAE MENSE FEBRUARIO A.U.C. 711.

CICERO CASSIO SAL.

1. HIEMEM credo adhuc prohibuisse, quo minus de te certum haberemus, quid ageres maximeque ubi esses; loquebantur omnes tamen—credo, quod volebant—in Syria te esse, habere copias. Id autem eo facilius credebatur, quia simile veri videbatur. Brutus quidem noster egregiam laudem est consecutus; res enim tantas gessit tamque inopinatas, ut eae cum per se gratae essent, tum ornatiores propter celeritatem. Quod si tu ea tenes, quae putamus, magnis subsidiis fulta res publica est; a prima enim ora Graeciae usque ad Aegyptum optimorum civium imperiis muniti erimus et copiis: 2. quamquam, nisi me fallebat, res se sic habebat, ut totius belli omne discrimen in D. Bruto positum videretur, qui si, ut sperabamus, erupisset Mutina, nihil belli reliquum fore videbatur. Parvis omnino iam copiis obsidebatur, quod magno praesidio Bononiam tenebat Antonius. Erat autem Claternae noster Hirtius, ad Forum Cornelium Caesar, uterque cum firmo exercitu; magnasque Romae Pansa copias ex dilectu Italiae comparat. Hiems adhuc rem geri prohibuerat. Hirtius nihil nisi considerate, ut mihi crebris litteris significat, acturus videbatur. Praeter Bononiam, Regium Lepidi, Parmam, totam Galliam tenebamus studiosissimam rei publicae; tuos etiam clientes Transpadanos mirifice coniunctos cum causa habebamus. Erat firmissimus senatus exceptis consularibus, ex quibus unus L. Caesar

firmus est et rectus. Ser. Sulpicii morte magnum praesidium amisimus. 3. Reliqui partim inertes, partim improbi; non nulli invident eorum laudi, quos in re publica probari vident; populi vero Romani totiusque Italiae mira consensio est. Haec erant fere, quae tibi nota esse vellem; nunc autem opto, ut ab istis Orientis partibus virtutis tuae lumen eluceat. Vale.

## 129. AD FAMILIARES X. 31.

SCR. CORDUBAE XVII. KAL. APRILES A.U.C. 711.

C. ASINIUS POLLIO CICERONI S. D.

1. MINIME mirum tibi debet videri nihil me scripsisse de re publica, posteaquam itum est ad arma; nam saltus Castulonensis, qui semper tenuit nostros tabellarios, etsi nunc frequentioribus latrociniis infestior factus est, tamen nequaquam tanta in mora est, quanta qui locis omnibus dispositi ab utraque parte scrutantur tabellarios et retinent. Itaque nisi nave perlatae litterae essent, omnino nescirem, quid istic fieret. Nunc vero nactus occasionem, postea quam navigari coeptum est, cupidissime et quam creberrime potero scribam ad te. 2. Ne movear eius sermonibus, quem tametsi nemo est qui videre velit, tamen nequaquam proinde ac dignus est oderunt homines, periculum non est: adeo est enim invisus mihi, ut nihil non acerbum putem, quod commune cum illo sit; natura autem mea et studia trahunt me ad pacis et libertatis cupiditatem. Itaque illud initium civilis belli saepe deflevi; cum vero non liceret mihi nullius partis esse, quia utrubique magnos inimicos habebam, ea castra fugi, in quibus plane tutum me ab insidiis inimici sciebam non futurum; compulsus eo, quo minime volebam, ne in extremis essem, plane pericula non dubitanter adii.

3. Caesarem vero, quod me in tanta fortuna modo cognitum vetustissimorum familiarium loco habuit, dilexi summa cum pietate et fide. Quae mea sententia gerere mihi licuit, ita feci, ut optimus quisque maxime probarit; quod iussus sum, eo tempore atque ita feci, ut appareret invito imperatum esse. Cuius facti iniustissima invidia erudire me potuit, quam iucunda libertas et quam misera sub dominatione vita esset. Ita, si id agitur, ut rursus in potestate omnia unius sint, quicumque is est, ei me profiteor inimicum; nec periculum est ullum, quod pro libertate aut refugiam aut deprecer. 4. Sed consules neque senatus consulto neque litteris suis praeceperant mihi, quid facerem; unas enim post Idus Martias demum a Pansa litteras accepi, in quibus hortatur me, ut senatui scribam me et exercitum in potestate eius futurum: quod, cum Lepidus contionaretur atque omnibus scriberet se consentire cum Antonio, maxime contrarium fuit; nam quibus commeatibus invito illo per illius provinciam legiones ducerem? aut, si cetera transissem, num etiam Alpes poteram transvolare, quae praesidio illius tenentur? Adde huc, quod perferri litterae nulla condicione potuerunt; sescentis enim locis excutiuntur, deinde etiam retinentur ab Lepido tabellarii. 5. Illud me Cordubae pro contione dixisse nemo vocabit in dubium, provinciam me nulli, nisi qui ab senatu missus venisset, traditurum: nam de legione tricensima tradenda quantas contentiones habuerim quid ego scribam? qua tradita quanto pro re publica infirmior futurus fuerim, quis ignorat? hac enim legione noli acrius aut pugnacius quicquam putare esse. Qua re eum me existima esse, qui primum pacis cupidissimus sim—omnes enim cives plane studeo esse salvos—,

deinde qui et me et rem publicam vindicare in libertatem paratus sim. 6. Quod familiarem meum *in* tuorum numero habes, opinione tua mihi gratius est; invideo illi tamen, quod ambulat et iocatur tecum. Quaeres, quanti *id* aestimem? Si umquam licuerit vivere in otio, experieris; nullum enim vestigium abs te discessurus sum. Illud vehementer admiror, non scripsisse te mihi, manendo in provincia an ducendo exercitum in Italiam rei publicae magis satis facere possim: ego quidem, etsi mihi tutius ac minus laboriosum est manere, tamen, quia video tali tempore multo magis legionibus opus esse quam provinciis, quae praesertim reciperari nullo negotio possint, constitui, ut nunc est, cum exercitu proficisci. Deinde ex litteris, quas Pansae misi, cognosces omnia; nam tibi earum exemplar misi. XVII. Kal. April. Corduba.

## 130. AD FAMILIARES X. 6.

SCR. ROMAE XIII. KAL. APRILES A.U.C. 711.

CICERO PLANCO.

1. QUAE locutus est Furnius noster de animo tuo in rem publicam, ea gratissima fuerunt senatui populoque Romano probatissima; quae autem recitatae litterae sunt in senatu nequaquam consentire cum Furnii oratione visae sunt: pacis enim auctor eras, cum collega tuus, vir clarissimus, a foedissimis latronibus obsideretur, qui aut positis armis pacem petere debent aut, si pugnantes eam postulant, victoria pax, non pactione parienda est. Sed de pace litterae vel Lepidi vel tuae quam in partem acceptae sint, ex viro optimo, fratre tuo, et ex C. Furnio poteris cognoscere. 2. Me autem impulit tui caritas ut, quamquam nec tibi ipsi consilium deesset et fratris Furniique benevolentia fidelisque prudentia tibi praesto

esset futura, vellem tamen meae quoque auctoritatis pro plurimis nostris necessitudinibus praeceptum ad te aliquod pervenire. Crede igitur mihi, Plance, omnes, quos adhuc gradus dignitatis consecutus sis—es autem adeptus amplissimos—, eos honorum vocabula habituros, non dignitatis insignia, nisi te cum libertate populi Romani et cum senatus auctoritate coniunxeris. Seiunge te, quaeso, aliquando ab iis, cum quibus te non tuum iudicium, sed temporum vincla coniunxerunt. 3. Complures in perturbatione rei publicae consulares dicti, quorum nemo consularis habitus *est* nisi qui animo exstitit in rem publicam consulari. Talem igitur te esse oportet, qui primum te ab impiorum civium tui dissimillimorum societate seiungas, deinde te senatui bonisque omnibus auctorem, principem, ducem praebeas, postremo [ut] pacem esse iudices non in armis positis, sed in abiecto armorum et servitutis metu. Haec si et ages et senties, tum eris non modo consul et consularis, sed magnus etiam consul et consularis; sin aliter, tum in istis amplissimis nominibus honorum non modo dignitas nulla erit, sed erit summa deformitas. Haec impulsus benevolentia scripsi paulo severius, quae tu in experiendo ea ratione, quae te digna est, vera esse cognosces. D. XIII. Kal. Apr.

## 131. AD FAMILIARES X. 27.

SCR. ROMAE MENSE MARTIO A.U.C. 711.

CICERO LEPIDO SAL.

1. QUOD mihi pro summa *mea* erga te benevolentia magnae curae est, ut quam amplissima dignitate sis, moleste tuli te senatui gratias non egisse, cum esses ab eo ordine ornatus summis honoribus. Pacis inter cives

conciliandae te cupidum esse laetor: eam si a servitute seiungis, consules et rei publicae et dignitati tuae; sin ista pax perditum hominem in possessionem impotentissimi dominatus restitutura est, hoc animo scito omnes sanos, ut mortem servituti anteponant. 2. Itaque sapientius, meo quidem iudicio, facies, si te in istam pacificationem non interpones, quae neque senatui neque populo nec cuiquam bono probatur. Sed haec audies ex aliis aut certior fies litteris: tupro tua prudentia, quid optimum factu sit, videbis.

## 132. AD FAMILIARES X. 8.

SCR. IN GALLIA MENSE MARTIO A.U.C. 711.

PLANCUS IMP. COS. DESIG. S. D. COSS. PR. TR. PL. SENATUI POPULO PLEBIQUE ROMANAE.

1. SI cui forte videor diutius et hominum exspectationem et spem rei publicae de mea voluntate tenuisse suspensam, huic prius excusandum me esse arbitror quam de insequenti officio quicquam ulli pollicendum; non enim praeteritam culpam videri volo redemisse, sed optimae mentis cogitata iam pridem maturo tempore enuntiare. 2. Non me praeteribat in tanta sollicitudine hominum et tam perturbato statu civitatis fructuosissimam esse professionem bonae voluntatis, magnosque honores ex ea re complures consecutos videbam; sed, cum in eum casum me fortuna demisisset, ut aut celeriter pollicendo magna mihi ipse ad proficiendum impedimenta opponerem aut, si in eo mihi temperavissem, maiores occasiones ad opitulandum haberem, expeditius iter communis salutis quam meae laudis esse volui. Nam quis in ea fortuna, quae mea est, et ab ea vita, quam in me cognitam hominibus arbitror, et cum ea spe, quam in manibus habeo,

aut sordidum quicquam pati aut perniciosum concupiscere potest? 3. Sed aliquantum nobis temporis et magni labores et multae impensae opus fuerunt, ut, quae rei publicae bonisque omnibus polliceremur, exitu praestaremus neque ad auxilium patriae nudi cum bona voluntate, sed cum facultatibus accederemus. Confirmandus erat exercitus nobis, magnis saepe praemiis sollicitatus, ut ab re publica potius moderata quam ab uno infinita speraret; confirmandae complures civitates, quae superiore anno largitionibus concessionibusque praemiorum erant obligatae, ut et illa vana putarent et eadem a melioribus auctoribus petenda existimarent; eliciendae etiam voluntates reliquorum, qui finitimis provinciis exercitibusque praefuerunt, ut potius cum pluribus societatem defendendae libertatis iniremus, quam cum paucioribus funestam orbi terrarum victoriam partiremur. 4. Muniendi vero nosmet ipsi fuimus aucto exercitu auxiliisque multiplicatis, ut, cum praeferremus sensus aperte, tum etiam invitis quibusdam sciri, quid defensuri essemus, non esset periculosum. Ita numquam diffitebor multa me, ut ad effectum horum consiliorum pervenirem, et simulasse invitum et dissimulasse cum dolore, quod, praematura denuntiatio boni civis imparati quam periculosa esset, ex casu collegae videbam. 5. Quo nomine etiam C. Furnio legato, viro forti atque strenuo, plura etiam verbo quam scriptura mandata dedimus, ut et tectius ad vos perferrentur et nos essemus tutiores, quibusque rebus et communem salutem muniri et nos armari cenveniret praecepimus. Ex quo intellegi potest curam rei publicae summe defendendae iam pridem apud nos excubare. 6. Nunc, cum deum benignitate ab omni re sumus paratiores, non solum bene sperare de nobis homines, sed

explorate iudicare volumus: legiones habeo quinque sub signis et sua fide virtuteque rei publicae coniunctissimas et nostra liberalitate nobis obsequentes, provinciam omnium civitatium consensu paratissimam et summa contentione ad officia certantem, equitatus auxiliorumque tantas copias, quantas hae gentes ad defendendam suam salutem libertatemque conficere possunt; ipse ita sum animo paratus, *ut* vel provinciam tueri vel ire, quo res publica vocet, vel tradere exercitum, auxilia provinciamque vel omnem impetum belli in me convertere non recusem, si modo meo casu aut confirmare patriae salutem aut periculum possim morari. 7. Haec si iam expeditis omnibus rebus tranquilloque statu civitatis polliceor, in damno meae laudis rei publicae commodo laetabor; sin ad societatem integerrimorum et maximorum periculorum accedam, consilia mea aequis iudicibus ab obtrectatione invidorum defendenda commendo. Mihi quidem ipsi fructus meritorum meorum in rei publicae incolumitate satis magnus est paratus; eos vero, qui meam auctoritatem et multo magis vestram fidem secuti nec ulla spe decipi nec ullo metu terreri potuerunt, ut commendatos vobis habeatis, petendum videtur.

## 133. AD FAMILIARES X. 10.

SCR. ROMAE III. KAL. APRILES A.U.C. 711.

CICERO PLANCO.

1. ETSI satis ex Furnio nostro cognoram, quae tua voluntas, quod consilium de re publica esset, tamen tuis litteris lectis liquidius de toto sensu tuo iudicavi. Quam ob rem, quamquam in uno proelio omnis fortuna rei publicae disceptat—quod quidem, cum haec legeres, iam decretum arbitrabar fore—, tamen ipsa fama, quae de tua

voluntate percrebruit, magnam es laudem consecutus; itaque si consulem Romae habuissemus, declaratum esset ab senatu cum tuis magnis honoribus, quam gratus esset conatus et apparatus tuus: cuius rei non modo non praeteriit tempus, sed ne maturum quidem etiam nunc meo quidem iudicio fuit; is enim denique honos mihi videri solet, qui non propter spem futuri beneficii, sed propter magna merita claris viris defertur [et datur]. 2. Qua re, sit modo aliqua res publica, in qua honos elucere possit, omnibus, mihi crede, amplissimis honoribus abundabis; is autem, qui vere appellari potest honos, non invitamentum ad tempus, sed perpetuae virtutis est praemium. Quam ob rem, mi Plance, incumbe toto pectore ad laudem, subveni patriae, opitulare collegae, omnium gentium consensum et incredibilem conspirationem adiuva. Me tuorum consiliorum adiutorem, dignitatis fautorem, omnibus in rebus tibi amicissimum fidelissimumque cognosces; ad eas enim causas, quibus inter nos amore sumus, officiis, vetustate coniuncti, patriae caritas accessit, eaque effecit ut tuam vitam anteferrem meae. III. K. Apr.

## 134. AD FAMILIARES XII. 6.

SCR. ROMAE MENSE APRILI A.U.C. 711.

CICERO CASSIO SAL.

1. QUI status rerum fuerit tum, cum has litteras dedi, scire poteris ex C. Titio Strabone, viro bono et optime de re publica sentiente; nam quid dicam 'cupidissimo tui,' qui domo et fortunis relictis ad te potissimum profectus sit? Itaque eum tibi ne commendo quidem; adventus ipsius ad te satis eum commendabit. 2. Tu velim sic existimes tibique persuadeas, omne perfugium bonorum in te et Bruto esse positum, si, quod nolim, adversi quid

evenerit. Res, cum haec scribebam, erat in extremum adducta discrimen; Brutus enim Mutinae vix iam sustinebat: qui si conservatus erit, vicimus; sin—quod di omen avertant!—, omnis omnium cursus est ad vos. Proinde fac animum tantum habeas tantumque apparatum, quanto opus est ad universam rem publicam recuperandam. Vale.

## 135. AD FAMILIARES X. 30.

SCR. IN CASTRIS AD MUTINAM A. D. XVI. KAL. MAIAS A.U.C. 711.

GALBA CICERONI SAL.

1. A. D. XVII. Kal. Maias, quo die Pansa in castris Hirtii erat futurus, cum quo ego eram—nam ei obviam processeram milia passuum centum, quo maturius veniret —, Antonius legiones eduxit duas, secundam et quintam tricensimam et cohortes praetorias duas, unam suam, alteram Silani, *et* evocatorum partem: ita obviam venit nobis, quod nos quattuor legiones tironum habere solum arbitrabatur. Sed noctu, quo tutius venire in castra possemus, legionem Martiam, cui ego praeesse solebam, et duas cohortes praetorias miserat Hirtius nobis. 2. Cum equites Antonii apparuissent, contineri neque legio Martia neque cohortes praetoriae potuerunt; quas sequi coepimus coacti, quoniam retinere eas non potueramus. Antonius ad Forum Gallorum suas copias continebat neque sciri volebat se legiones habere; tantum equitatum et levem armaturam ostendebat. Postea quam vidit se invito legionem ire Pansa, sequi se duas legiones iussit tironum. Postea quam angustias paludis et silvarum transiimus, acies est instructa a nobis XII. cohortium; 3. nondum venerant legiones duae: repente Antonius in

aciem suas copias de vico produxit et sine mora concurrit. Primo ita pugnatum est, ut acrius non posset ex utraque parte pugnari; etsi dexterius cornu, in quo ego eram cum Martiae legionis cohortibus octo, impetu primo fugaverat legionem xxxv. Antonii, ut amplius passus * ultra aciem [quo loco steterat] processerit. Itaque cum equites nostrum cornu circumire vellent, recipere me coepi et levem armaturam opponere Maurorum equitibus, ne aversos nostros adgrederentur. Interim video me esse inter Antonianos Antoniumque post me esse aliquanto. Repente equum immisi ad eam legionem tironum, quae veniebat ex castris, scuto reiecto. Antoniani me insequi; nostri pila coniicere velle: ita nescio quo fato sum servatus, quod sum cito a nostris cognitus. 4. In ipsa Aemilia, ubi cohors Caesaris praetoria erat, diu pugnatum est. Cornu sinisterius, quod erat infirmius, ubi Martiae legionis duae cohortes erant et cohors praetoria, pedem referre coeperunt, quod ab equitatu circumibantur, quo vel plurimum valet Antonius. Cum omnes se recepissent nostri ordines, recipere me novissimus coepi ad castra; Antonius tamquam victor castra putavit se posse capere: quo cum venit, complures ibi amisit nec egit quicquam. Audita re Hirtius cum cohortibus xx. veteranis redeunti Antonio in sua castra occurrit copiasque eius omnes delevit fugavitque eodem loco, ubi erat pugnatum, ad Forum Gallorum; Antonius cum equitibus hora noctis quarta se in castra sua ad Mutinam recepit; 5. Hirtius in ea castra rediit, unde Pansa exierat, ubi duas legiones reliquerat, quae ab Antonio erant oppugnatae. Sic partem maiorem suarum copiarum Antonius amisit veteranarum; nec id tamen sine aliqua iactura cohortium praetorianarum nostrarum et legionis Martiae fieri potuit. Aquilae

duae, signa LX. sunt relata Antonii. Res bene gesta est. A. d. XVI. K. Mai. ex castris.

## 136. AD FAMILIARES XI. 9.

SCR. IN CASTRIS REGII III. KAL. MAIAS A.U.C. 711.

D. BRUTUS S. D. M. CICERONI.

1. PANSA amisso quantum detrimenti res publica acceperit, non te praeterit: nunc auctoritate et prudentia tua prospicias oportet, ne inimici nostri consulibus sublatis sperent se convalescere posse. Ego, ne consistere possit in Italia Antonius, dabo operam; sequar eum confestim: utrumque me praestaturum spero, ne aut Ventidius elabatur aut Antonius in Italia moretur. In primis rogo te, ad hominem ventosissimum, Lepidum, mittas, ne bellum nobis redintegrare possit Antonio sibi coniuncto: nam de Pollione Asinio puto te perspicere, quid facturus sit. Multae et bonae et firmae sunt legiones Lepidi et Asinii. 2. Neque haec idcirco tibi scribo, quo te non eadem animadvertere sciam, sed quod mihi persuasissimum est Lepidum recte facturum numquam, si forte vobis id de hoc dubium est. Plancum quoque confirmetis oro, quem spero pulso Antonio rei publicae non defuturum. Si se Alpes Antonius traiecerit, constitui praesidium in Alpibus conlocare et te de omni re facere certiorem. III. Kal. Maias, ex castris Regii.

## 137. AD FAMILIARES XI. 10.

SCR. IN CASTRIS DERTONAE III. NON. MAIAS A.U.C. 711.

D. BRUTUS S. D. M. CICERONI.

1. NON mihi rem publicam plus debere arbitror quam me tibi. Gratiorem me esse in te posse, quam isti perversi sint in me, exploratum habes; si tamen haec

temporis videantur dici causa, malle me tuum iudicium quam ex altera parte omnium istorum: tu enim a certo sensu et vero iudicas de nobis; quod isti ne faciant, summa malevolentia et livore impediuntur. Interpellent me, quo minus honoratus sim, dum ne interpellent, quo minus res publica a me commode administrari possit; quae quanto sit in periculo, quam potero brevissime exponam. 2. Primum omnium, quantam perturbationem rerum urbanarum adferat obitus consulum quantamque cupiditatem hominibus iniiciat vacuitas, non te fugit: satis me multa scripsisse, quae litteris commendari possint, arbitror; scio enim, cui scribam. 3. Revertor nunc ad Antonium, qui ex fuga cum parvulam manum peditum haberet inermium, ergastula solvendo omneque genus hominum adripiendo satis magnum numerum videtur effecisse; huc accessit manus Ventidii, quae trans Apenninum itinere facto difficillimo ad Vada pervenit atque ibi se cum Antonio coniunxit. Est numerus veteranorum et armatorum satis frequens cum Ventidio. 4. Consilia Antonii haec sint necesse est: aut ad Lepidum ut se conferat, si recipitur; aut Appennino Alpibusque se teneat et decursionibus per equites, quos habet multos, vastet ea loca, in quae incurrerit: aut rursus se in Etruriam referat, quod ea pars Italiae sine exercitu est. Quod si me Caesar audisset atque Appenninum transisset, in tantas angustias Antonium compulissem, ut inopia potius quam ferro conficeretur. Sed neque Caesari imperari potest nec Caesar exercitui suo; quod utrumque pessimum est. Cum haec talia sint, quo minus, quod ad me pertinebit, homines interpellent, ut supra scripsi, non impedio; haec quem ad modum explicari possint aut, a te cum explicabuntur, ne impediantur timeo. 5. Alere iam milites non

possum. Cum ad rem publicam liberandam accessi, HS. mihi fuit pecuniae ·cccc· amplius. Tantum abest, ut meae rei familiaris liberum sit quicquam, ut omnes iam meos amicos aere alieno obstrinxerim. Septem numerum nunc legionum alo; qua difficultate, tu arbitrare: non, si Varronis thesauros haberem, subsistere sumptui possem. Cum primum de Antonio exploratum habuero, faciam te certiorem. Tu me amabis ita, si hoc idem me in te facere senseris. III. Non. Mai. ex castris, Dertona.

## 138. AD FAMILIARES XII. 12.

SCR. IN CASTRIS NONIS MAIIS A.U.C. 711.

C. CASSIUS PROCOS. S. D. M. CICERONI SUO.

1. S. V. B. E. E. Q. V. legi tuas litteras, in quibus mirificum tuum erga me amorem recognovi; videbaris enim non solum favere nobis—id quod et nostra et rei publicae causa semper fecisti—, sed etiam gravem curam suscepisse vehementerque esse de nobis sollicitus. Itaque, quod te primum existimare putabam, nos oppressa re publica quiescere non posse, deinde, cum suspicarere nos moliri, quod te sollicitum esse et de salute nostra et de rerum eventu putabam, simul ac legiones accepi, quas A. Allienus eduxerat ex Aegypto, scripsi ad te tabellariosque complures Romam misi; scripsi etiam ad senatum litteras, quas reddi vetui prius, quam tibi recitatae essent, si forte mei obtemperare mihi voluerunt. Quod si litterae perlatae non sunt, non dubito quin Dolabella, qui nefarie Trebonio occiso Asiam occupavit, tabellarios meos deprehenderit litterasque interceperit. 2. Exercitus omnes, qui in Syria fuerunt, teneo; habui paullulum morae, dum promissa militibus persolvo. Nunc iam sum expeditus. A te peto, ut dignitatem meam commendatam tibi habeas,

si me intellegis nullum neque periculum neque laborem patriae denegasse, si contra importunissimos latrones arma cepi te hortante et auctore, si non solum exercitus ad rem publicam libertatemque defendendam comparavi, sed etiam crudelissimis tyrannis eripui, quos si occupasset Dolabella, non solum adventu, sed etiam opinione et exspectatione exercitus sui Antonium confirmasset. 3. Quas ob res milites tuere, si eos mirifice de re publica meritos esse animadvertis, et effice, ne quem paeniteat rem publicam quam spem praedae et rapinarum sequi maluisse. Item Murci et Crispi imperatorum dignitatem, quantum est in te, tuere: nam Bassus misere noluit mihi legionem tradere; quod nisi milites invito eo legatos ad me misissent, clausam Apameam tenuisset, quoad vi esset expugnata. Haec a te peto non solum rei publicae, quae tibi semper fuit carissima, sed etiam amicitiae nostrae nomine, quam confido apud te plurimum posse. 4. Crede mihi hunc exercitum, quem habeo, senatus atque optimi cuiusque esse maximeque tuum, de cuius voluntate adsidue audiendo mirifice te diligit carumque habet: qui si intellexerit commoda sua curae tibi esse, debere etiam se tibi omnia putabit.

5. Litteris scriptis audivi Dolabellam in Ciliciam venisse cum suis copiis: proficiscar in Ciliciam. Quod egerim, celeriter ut scias, dabo operam; ac velim, ut meremur de re publica, sic felices simus. Fac valeas meque ames. Nonis Maiis ex castris.

## 139. AD FAMILIARES X. 11.

SCR. IN ALLOBROGIBUS VI. IDUS MAIAS A.U.C. 711.

PLANCUS CICERONI.

1. IMMORTALES ago tibi gratias agamque dum vivam; nam relaturum me adfirmare non possum: tantis enim

tuis officiis non videor mihi respondere posse, nisi forte ut tu gravissime disertissimeque scripsisti, ita sensurus es, ut me referre gratiam putes, cum memoria tenebo. Si de filii tui dignitate esset actum, amabilius certe nihil facere, potuisses. Primae tuae sententiae infinitis cum muneribus, posteriores ad tempus arbitriumque amicorum meorum compositae, oratio adsidua et perpetua de me, iurgia cum obtrectatoribus propter me notissima mihi sunt; non mediocris adhibenda mihi est cura, ut rei publicae me civem dignum tuis laudibus praestem, in amicitia tui memorem atque gratum. Quod reliquum est, tuum munus tuere et me, si, quem esse voluisti, eum exitu rebusque cognoscis, defende ac suscipe. 2. Cum Rhodanum copias traiecissem fratremque cum tribus milibus equitum praemisissem, ipse iter ad Mutinam dirigerem, in itinere de proelio facto Brutoque et Mutina obsidione liberatis audivi: animadverti nullum alium receptum Antonium reliquiasque, quae cum eo essent, habere nisi in his partibus, duasque ei spes esse propositas, unam Lepidi ipsius, alteram exercitus. Quod quaedam pars exercitus non minus furiosa est quam qui cum Antonio fuerunt, equitatum revocavi; ipse in Allobrogibus constiti, ut proinde ad omnia paratus essem ac res me moneret. Si nudus huc se Antonius confert, facile mihi videor per me sustinere posse remque publicam ex vestra sententia administrare, quamvis ab exercitu Lepidi recipiatur; si vero copiarum aliquid secum adducet et si decima legio veterana, quae nostra opera revocata cum reliquis est, ad eundem furorem redierit, tamen, ne quid detrimenti fiat, dabitur opera a me, idque me praestaturum spero, dum istinc copiae traiiciantur coniunctaeque nobiscum facilius perditos opprimant. 3. Hoc tibi spondeo, mi Cicero,

neque animum nec diligentiam mihi defuturam. Cupio mehercules nullam residuam sollicitudinem esse; sed si fuerit, nec animo nec benevolentiae nec patientiae cuiusquam pro vobis cedam. Do quidem ego operam, ut etiam Lepidum ad huius rei societatem incitem, omniaque ei obsequia polliceor, si modo rem publicam respicere volet. Utor in hac re adiutoribus interpretibusque fratre meo et Laterense et Furnio nostro. Non me impedient privatae offensiones, quo minus pro rei publicae salute etiam cum inimicissimo consentiam. Quod si nihil profecero, nihilo minus maximo sum animo et maiore fortasse cum mea gloria vobis satis faciam. Fac valeas meque mutuo diligas.

## 140. AD FAMILIARES X. 15.

SCR. IN ALLOBROGIBUS MENSE MAIO A.U.C. 711.

PLANCUS CICERONI.

1. His litteris scriptis quae postea accidissent scire te ad rem publicam putavi pertinere: sedulitas mea, ut spero, et mihi et rei publicae tulit fructum. Namque adsiduis internuntiis cum Lepido egi, ut omissa omni contentione reconciliataque voluntate nostra communi consilio rei publicae succurreret, se, liberos urbemque pluris quam unum perditum abiectumque latronem putaret obsequioque meo, si ita faceret, ad omnes res abuteretur. 2. Profeci: itaque per Laterensem internuntium fidem mihi dedit se Antonium, si prohibere provincia sua non potuisset, bello persecuturum, me ut venirem copiasque coniungerem rogavit, eoque magis, quod et Antonius ab equitatu firmus esse dicebatur et Lepidus ne mediocrem quidem equitatum habebat; nam etiam ex paucitate eius non multis ante diebus decem, qui optimi fuerant, ad me

transierunt. Quibus rebus ego cognitis cunctatus non sum; in cursu bonorum consiliorum Lepidum adiuvandum putavi. 3. Adventus meus quid profecturus esset, vidi; vel quod equitatu meo persequi *Antonium* atque opprimere equitatum eius possem, vel quod exercitus Lepidi eam partem, quae corrupta est et ab re publica alienata, et corrigere et coërcere praesentia mei exercitus posset. Itaque in Isara, flumine maximo, quod in finibus est Allobrogum, ponte uno die facto exercitum a. d. III. Idus Maias traduxi. Cum vero mihi nuntiatum esset L. Antonium praemissum cum equitibus et cohortibus ad Forum Iulii venisse, fratrem cum equitum quattuor milibus, ut occurreret ei, misi a. d. v. Idus Maias; ipse maximis itineribus cum quattuor legionibus expeditis et reliquo equitatu subsequar. 4. Si nos mediocris modo fortuna rei publicae adiuverit, et audaciae perditorum et nostrae sollicitudinis hic finem reperiemus. Quid si latro praecognito nostro adventu rursus in Italiam se recipere coeperit, Bruti erit officium occurrere ei, cui scio nec consilium nec animum defuturum. Ego tamen, si id acciderit, fratrem cum equitatu mittam, qui sequatur, Italiam a vastatione defendat. Fac valeas meque mutuo diligas.

## 141. AD FAMILIARES X. 34 (I. 2).

SCR. IN CASTRIS AD PONTEM ARGENTEUM XI. KAL. IUN. A.U.C. 711.

M. LEPIDUS IMP. ITER. PONT. MAX. S. D. M. TULLIO CICERONI.

1. S. V. B E. E. V. Cum audissem Antonium cum suis copiis, praemisso L. Antonio cum parte equitatus, in provinciam meam venire, cum exercitu meo ab confluente [ab Rhodano] castra movi ac contra eos venire institui.

Itaque continuis itineribus ad Forum Vocónii veni et ultra castra ad flumen Argenteum contra Antonianos feci. P. Ventidius suas legiones tres coniunxit cum eo et ultra me castra posuit; habebat antea legionem quintam et ex reliquis legionibus magnam multitudinem, sed inermorum. Equitatum habet magnum: nam omnis ex proelio integer discessit, ita ut sint amplius equitum milia quinque. Ad me complures milites et equites ab eo transierunt et in dies singulos eius copiae minuuntur; Silanus et Culleo ab eo discesserunt. 2. Nos etsi graviter ab iis laesi eramus, quod contra nostram voluntatem ad Antonium ierant, tamen nostrae humanitatis et necessitudinis causa eorum salutis rationem habuimus; nec tamen eorum opera utimur neque in castris habemus neque ulli negotio praefecimus. Quod ad bellum hoc attinet, nec senatui nec rei publicae deerimus. Quae postea egerimus, faciam te certiorem.

## 142. AD FAMILIARES X. 13.

SCR. ROMAE MENSE MAIO A.U.C. 711.

CICERO PLANCO.

1. UT primum potestas data est augendae dignitatis tuae, nihil praetermisi in te ornando, quod positum esset aut in praemio virtutis aut in honore verborum: id ex ipso senatus consulto poteris cognoscere; ita enim est perscriptum, ut a me de scripto dicta sententia est, quam senatus frequens secutus est summo studio magnoque consensu. 2. Ego quamquam ex tuis litteris, quas mihi misisti, perspexeram te magis iudicio bonorum quam insignibus gloriae delectari, tamen considerandum nobis existimavi, etiamsi tu nihil postulares, quantum tibi a re publica deberetur. Tu contexes extrema cum primis:

qui enim M. Antonium oppresserit, is bellum confecerit; itaque Homerus non Aiacem nec Achillem, sed Ulixem appellavit πτολιπόρθιον.

## 143. AD FAMILIARES XI. 23.

SCR. EPOREDIAE VIII. KAL. IUNIAS A.U.C. 711.

D. BRUTUS S. D. M. CICERONI.

1. Nos hic valemus recte et, quo melius valeamus, operam dabimus. Lepidus commode nobis sentire videtur. Omni timore deposito debemus libere rei publicae consulere. Quod si omnia essent aliena, tamen tribus tantis exercitibus, propriis rei publicae, valentibus, magnum animum habere debebas, quem et semper habuisti et nunc fortuna adiuvante augere potes. 2. Quae tibi superioribus litteris mea manu scripsi, terrendi tui causa homines loquuntur: si frenum momorderis, peream, si te omnes, quot sunt, conantem loqui ferre poterunt. Ego, tibi ut antea scripsi, dum mihi a te litterae veniant, in Italia morabor. VIII. K. Iunias Eporedia.

## 144. AD FAMILIARES X. 35.

DATA EST A PONTE ARGENTEO III. KAL. IUN. A.U.C. 711.

M. LEPIDUS IMP. ITER. PONTIFEX MAX. S. D. SENATUI POPULO PLEBIQUE ROMANAE.

S. v. liberique vestri v. b. e. e. q. v. Deos hominesque testor, patres conscripti, qua mente et quo animo semper in rem publicam fuerim et quam nihil antiquius communi salute ac libertate iudicarim; quod vobis brevi probassem, nisi mihi fortuna proprium consilium extorsisset: nam exercitus cunctus consuetudinem suam in civibus conservandis communique pace, seditione facta, retinuit meque tantae multitudinis civium Romanorum salutis atque

incolumitatis causam suscipere, ut vere dicam, coëgit. 2. In qua re ego vos, patres conscripti, oro atque obsecro, ut privatis offensionibus omissis summae rei publicae consulatis neve misericordiam nostram exercitusque nostri in civili dissensione sceleris loco ponatis. Quod si salutis omnium ac dignitatis rationem habueritis, melius et vobis et rei publicae consuletis. D. III. Kal. *Iun.* a Ponte Argenteo.

## 145. AD FAMILIARES XI. 13 a.

D. BRUTUS IMP. COS. DESIG. S. D. M. CICERONI.

1. Iam non ago tibi gratias; cui enim re vix referre possum, huic verbis non patitur res satis fieri: attendere te volo, quae in manibus sunt; qua enim prudentia es, nihil te fugiet, si meas litteras diligenter legeris. Sequi confestim Antonium his de causis, Cicero, non potui: eram sine equitibus, sine iumentis; Hirtium perisse nesciebam; Caesari non credebam prius, quam convenissem et collocutus essem. 2. Hic dies hoc modo abiit. Postero die mane a Pansa sum arcessitus Bononiam. Cum in itinere essem, nuntiatum mihi est eum mortuum esse. Recurri ad meas copiolas; sic enim vere eas appellare possum: sunt extenuatissimae et inopia omnium rerum pessime acceptae. Biduo me Antonius antecessit, itinera multo maiora fugiens quam ego sequens: ille enim iit passim, ego ordinatim. Quacumque iit, ergastula solvit, homines adripuit, constitit nusquam prius, quam ad Vada venit; quem locum volo tibi esse notum: iacet inter Appenninum et Alpes, inpeditissimus ad iter faciendum.. 3. Cum abessem ab eo milia passuum xxx. et se *ei* iam Ventidius coniunxisset, contio eius ad me est adlata, in qua petere coepit a militibus, ut se trans Alpes sequerentur;

sibi cum M. Lepido convenire. Succlamatum est ei frequenter a militibus Ventidianis—nam suos valde quam paucos habet—, sibi aut in Italia pereundum esse aut vincendum; et orare coeperunt, ut Pollentiam iter facerent. Cum sustinere eos non posset, in posterum diem iter suum contulit. 4. Hac re mihi nuntiata statim quinque cohortes Pollentiam praemisi meumque iter eo contuli: hora ante praesidium meum Pollentiam venit quam Trebellius cum equitibus. Sane quam sum gavisus; in hoc enim victoriam puto consistere. In spem venerant, quod neque Planci quattuor legiones omnibus suis copiis pares arbitrabantur neque ex Italia tam celeriter exercitum traiici posse credebant. Quos ipsi adhuc satis adroganter Allobroges equitatusque omnis, qui eo praemissus erat a nobis, sustinebant, nostroque adventu sustineri facilius posse confidimus. Tamen, si quo etiam casu Isaram se traiecerint, ne quod detrimentum rei publicae iniungant, summa a nobis dabitur opera. 5. Vos magnum animum optimamque spem de summa re publica habere volumus, cum et nos et exercitus nostros singulari concordia coniunctos ad omnia pro vobis videatis paratos. Sed tamen nihil de diligentia remittere debetis dareque operam, ut quam paratissimi et ab exercitu reliquisque rebus pro vestra salute contra sceleratissimam conspirationem hostium confligamus; qui quidem eas copias, quas diu simulatione rei publicae comparabant, subito ad patriae periculum converterunt.

## 146. AD FAMILIARES X. 23.

SCR. CULARONE IN FINIBUS ALLOBROGUM VIII. IDUS IUNIAS A.U.C. 711.

PLANCUS CICERONI.

1. NUMQUAM mehercules, mi Cicero, me paenitebit maxima pericula pro patria subire, dum, si quid acciderit mihi, a reprehensione temeritatis absim. Confiterer imprudentia me lapsum, si umquam Lepido ex animo credidissem; credulitas enim error est magis quam culpa, et quidem in optimi cuiusque mentem facillime inrepit: sed ego non hoc vitio paene sum deceptus; Lepidum enim pulchre noram. Quid ergo est? pudor me, qui in bello maxime est periculosus, hunc casum coëgit subire; nam, *ni*si uno loco essem, verebar ne cui obtrectatorum viderer et nimium pertinaciter Lepido offensus et mea patientia etiam alere bellum. 2. Itaque copias prope in conspectum Lepidi Antoniique adduxi quadragintaque milium passuum spatio relicto consedi eo consilio, ut vel celeriter accedere vel salutariter recipere me possem. Adiunxi haec in loco eligendo, flumen oppositum ut haberem, in quo mora transitus esset, Vocontii sub manu ut essent, per quorum loca fideliter mihi pateret iter. Lepidus desperato adventu meo, quem non mediocriter captabat, se cum Antonio coniunxit a. d. III. Kal. Iunias, eodemque die ad me castra moverunt; viginti milia passuum cum abessent, res mihi nuntiata est. 3. Dedi operam deum benignitate, ut et celeriter me reciperem et hic discessus nihil fugae simile haberet, non miles ullus, non eques, non quicquam impedimentorum amitteretur aut ab illis ferventibus latronibus interciperetur. Itaque pridie Nonas Iunias omnes copias Isaram traieci pontesque, quos

feceram, interrupi, ut spatium ad colligendum se homines haberent et ego me interea cum collega coniungerem, quem triduo, cum has dabam litteras, exspectabam. 4. Laterensis nostri et fidem et animum singularem in rem publicam semper fatebor; sed certe nimia eius indulgentia in Lepidum ad haec pericula perspicienda fecit eum minus sagacem. Qui quidem cum in fraudem se deductum videret, manus, quas iustius in Lepidi perniciem armasset, sibi adferre conatus est; in quo casu tamen interpellatus et adhuc vivit et dicitur victurus. Sed tamen de hoc parum mihi certum est. 5. Ego magno cum dolore parricidarum elapsus sum iis; veniebant enim eodem furore in me, quo in patriam, incitati. Iracundias autem harum rerum recentes habebant: quod Lepidum castigare non destiteram, ut exstingueret bellum; quod colloquia facta improbabam; quod legatos fide Lepidi missos ad me in conspectum venire vetueram; quod C. Catium Vestinum, tribunum mil., missum ab Antonio ad eum cum litteris exceperam: in quo hanc capio voluptatem, quod certe, quo magis me petiverunt, tanto maiorem iis frustratio dolorem attulit. 6. Tu, mi Cicero, quod adhuc fecisti, idem praesta, ut vigilanter nervoseque nos, qui stamus in acie, subornes. Veniat Caesar cum copiis, quas habet firmissimas, aut, si ipsum aliqua res impedit, exercitus mittatur; cuius ipsius magnum periculum agitur: quicquid aliquando futurum fuit in castris perditorum contra patriam, huc omne iam convenit. Pro urbis vero salute cur non omnibus facultatibus, quas habemus, utamur? Quod si vos istic non defueritis, profecto, quod ad me attinet, omnibus rebus abunde rei publicae satis faciam. 7. Te quidem, mi Cicero, in dies mehercules habeo cariorem sollicitudinesque meas quotidie magis tua

merita exacuunt, ne quid aut ex amore aut ex iudicio tuo perdam. Opto ut mihi liceat iam praesenti pietate meorum officiorum tua beneficia tibi facere iucundiora. VIII. Idus Iun. Cularone, ex finibus Allobrogum.

## 147. AD FAMILIARES XII. 10.

SCR. ROMAE INEUNTE MENSE QUINTILI A.U.C. 711.

CICERO CASSIO SAL.

1. LEPIDUS, tuus adfinis, meus familiaris, pr. K. Quinctiles sententiis omnibus hostis a senatu iudicatus est ceterique, qui una cum illo a re publica defecerunt; quibus tamen ad sanitatem redeundi ante K. Sept. potestas facta est. Fortis sane senatus, sed maxime spe subsidii tui. Bellum quidem, cum haec scribebam, sane magnum erat scelere et levitate Lepidi. Nos de Dolabella quotidie, quae volumus, audimus, sed adhuc sine capite, sine auctore, rumore nuntio. 2. Quod cum ita esset, tamen litteris tuis, quas Nonis Maiis ex castris datas acceperamus, ita persuasum erat civitati, ut illum iam oppressum omnes arbitrarentur, te autem in Italiam venire cum exercitu, ut, si haec ex sententia confecta essent, consilio atque auctoritate tua, sin quid forte titubatum, ut fit in bello, exercitu tuo niteremur; quem quidem ego exercitum quibuscumque potuero rebus ornabo; cuius rei tum tempus erit, cum, quid opis rei publicae laturus is exercitus sit aut quid iam tulerit, notum esse coeperit: nam adhuc tantum conatus audiuntur, optimi illi quidem et praeclarissimi, sed gesta res exspectatur, quam quidem aut iam esse aliquam aut adpropinquare confido. 3. Tua virtute *et* magnitudine animi nihil est nobilius; itaque optamus, ut quam primum te in Italia videamus: rem publicam nos habere arbitrabimur, si vos habebimus. Praeclare viceramus,

nisi spoliatum, inermem, fugientem Lepidus recepisset Antonium; itaque numquam tanto odio civitati Antonius fuit, quanto est Lepidus: ille enim ex turbulenta re publica, hic ex pace et victoria bellum excitavit. Huic oppositos consules designatos habemus, in quibus est magna illa quidem spes, sed anceps cura propter incertos exitus proeliorum. 4. Persuade tibi igitur, in te et in Bruto tuo esse omnia, vos exspectari, Brutum quidem iam iamque. Quod si, ut spero, victis hostibus nostris veneritis, tamen auctoritate vestra res publica exsurget et in aliquo statu tolerabili consistet; sunt enim permulta, quibus erit medendum, etiam si res publica satis esse videbitur sceleribus hostium liberata. Vale.

## 148. AD FAMILIARES X. 24.

SCR. IN CASTRIS V. KAL. SEXTILES A.U.C. 711.

PLANCUS IMP. COS. DESIG. S. D. CICERONI.

1. FACERE non possum, quin in singulas res meritaque tua tibi gratias agam, sed mehercules facio cum pudore; neque enim tanta necessitudo, quantam tu mihi tecum esse voluisti, desiderare videtur gratiarum actionem, neque ego libenter pro maximis tuis beneficiis tam vili munere defungor orationis, et malo praesens observantia, indulgentia, adsiduitate memorem me tibi probare. Quod si mihi vita contigerit, omnes gratas amicitias atque etiam pias propinquitates † in tua observantia, indulgentia, adsiduitate vincam; amor enim tuus ac iudicium de me utrum mihi plus dignitatis in perpetuum an voluptatis quotidie sit adlaturus, non facile dixerim. 2. De militum commodis fuit tibi curae; quos ego non potentiae meae causa—nihil enim me non salutariter cogitare scio—nari volui a senatu, sed primum, quod ita meritos iudi-

cabam, deinde, quod ad omnes casus coniunctiores rei publicae esse volebam, novissime, ut ab omni omnium sollicitatione aversos eos tales vobis praestare possem, quales adhuc fuerunt. 3. Nos adhuc hic omnia integra sustinuimus. Quod consilium nostrum, etsi quanta sit aviditas hominum non sine causa † talis victoriae scio, tamen vobis probari spero. Non enim, si quid in his exercitibus sit offensum, magna subsidia res publica habet expedita, quibus subito impetu ac latrocinio parricidarum resistat. Copias vero nostras notas tibi esse arbitror: in castris meis legiones sunt veteranae tres, tironum vel luculentissima ex omnibus una; in castris Bruti una veterana legio, altera bima, octo tironum: ita universus exercitus numero amplissimus est, firmitate exiguus; quantum autem in acie tironi sit committendum, nimium saepe expertum habemus. 4. Ad hoc robur nostrorum exercituum sive Africanus exercitus, qui est veteranus, sive Caesaris accessisset, aequo animo summam rem publicam in discrimen deduceremus. Aliquanto autem propius esse quod Caesarem videbamus, nihil destiti eum litteris hortari, neque ille intermisit adfirmare se sine mora venire; cum interim aversum illum ab hac cogitatione ad alia consilia video se contulisse. Ego tamen ad eum Furnium nostrum cum mandatis litterisque misi, si quid forte proficere posset. 5. Scis tu, mi Cicero, quod ad Caesaris amorem attinet, societatem mihi esse tecum: vel quod in familiaritate Caesaris vivo illo iam tueri eum et diligere fuit mihi necesse; vel quod ipse, quoad ego nosse potui, moderatissimi atque humanissimi fuit sensus; vel quod ex tam insigni amicitia mea atque Caesaris hunc filii loco et illius et vestro iudicio substitutum non proinde habere turpe mihi videtur.

6. Sed—quicquid tibi scribo, dolenter mehercule magis quam inimice facio—quod vivit Antonius hodie, quod Lepidus una est, quod exercitus habent non contemnendos, quod sperant, quod audent, omne Caesari acceptum referre possunt. Neque ego superiora repetam; sed ex eo tempore, quo ipse mihi professus est se venire, si venire voluisset, aut oppressum iam bellum esset aut in aversissimam illis Hispaniam cum detrimento eorum maximo extrusum. Quae mens eum, aut quorum consilia, a tanta gloria, sibi vero etiam necessaria ac salutari, avocarit et ad cogitationem consulatus bimestris summo cum terrore hominum et insulsa cum efflagitatione transtulerit, exputare non possum. 7. Multum in hac re mihi videntur necessarii eius et rei publicae et ipsius causa proficere posse; plurimum, ut puto, tu quoque, cuius ille tanta merita habet, quanta nemo praeter me; numquam enim obliviscar maxima ac plurima me tibi debere. De his rebus ut exigeret cum eo, Furnio mandavi. Quod si, quantam debeo, habuero apud eum auctoritatem, plurimum ipsum iuvero. 8. Nos interea duriore condicione bellum sustinemus, quod neque expeditissimam dimicationem putamus neque tamen refugiendo commissuri sumus, ut maius detrimentum res publica accipere possit. Quod si aut Caesar se respexerit aut Africanae legiones celeriter venerint, securos vos ab hac parte reddemus. Tu, ut instituisti, me diligas rogo proprieque tuum esse tibi persuadeas. V. Kal. Sext. ex castris.

# INDEX I.

## NOMINA CLARORUM VIRORUM A QUIBUS VEL AD QUOS SCRIPTAE SUNT EPISTOLAE QUAE HOC LIBRO CONTINENTUR.


| | *Ad eum scriptae.* | *Ab eo scriptae.* |
|---|---|---|
| M. Aemilius Lepidus | 131. | 141; 144. |
| M. Antonius | 110; 116. | 72; 109. |
| C. Asinius Pollio | | 129. |
| Q. Caecilius Metellus Celer | 5. | 4. |
| A. Caecina | 91. | 92. |
| M. Caelius Rufus | 37; 70. | 33; 34; 35; 41; 69; 76. |
| C. Cassius Longinus | 83; 107; 115; 118; 126; 128; 134; 147. | 116; 138. |
| M. Claudius Marcellus | | 95. |
| P. Cornelius Dolabella | 111. | 77. |
| P. Cornelius Lentulus Spinther | 21; 22; 26; 29. | |
| L. Cornelius Balbus | | 58. |
| Q. Cornificius | 103; 119; 124. | |
| C. Iulius Caesar | 27; 64; 97. | 60; 66; 73. |
| D. Iunius Brutus | 123; 125. | 107; 120; 136; 137; 143; 145. |
| M. Iunius Brutus | 93; 107. | 116. |
| A. Manlius Torquatus | 100. | |
| M. Marius | 88. | |
| C. Matius | 113. | 114. |
| L. Munatius Plancus | 130; 133; 142. | 132; 139; 140; 146; 148. |
| L. Papirius Paetus | 87; 89 | |
| Cn. Plancius | 94. | |

| | *Ad eum scriptae.* | *Ab eo scriptae.* |
|---|---|---|
| Cn. Pompeius Magnus | 3; 50. | 49; 51. |
| M. Porcius Cato | 40. | 39. |
| C. Scribonius Curio | 30. | |
| Ser. Sulpicius Galba | | 135. |
| Ser. Sulpicius Rufus | 90; 99. | 98; 101. |
| Terentia | 17; 18; 43; 75. | |
| C. Trebonius | 127. | |
| M. Terentius Varro | 86. | |
| Q. Tullius Cicero | 15; 23; 24. | |
| M. Tullius Tiro | 52; 53. | |
| Q. Valerius Orca | 102. | |


Ceterae omnes epistolae, cum parte LXVI^tae^, scriptae sunt ad T. Pomponium Atticum.

# INDEX II.

## NOMINUM PROPRIORUM.


Ἀβδηριτικόν, 122.
Academia, 118, 215.
Acastus, servus Ciceronis, 120.
Achaia, populi Romani provincia, 185, 193, cp. 198; Achaici, 10.
Achilles, apud Homerum, 272.
Acilius, M'. Glabrio, 206.
Aegina, 209.
Aegypta, libertus Ciceronis, 134.
Aegyptus, 67, 253, 266.
Aelii Lamiae, 62; Lamiani horti, 206.
Aemilia via, 263.
Aemilius, M. Lepidus, praetor A.U.C. 705, consul A.U.C. 706, iii vir. reip. const. A.U.C. 711, 220; necessarius Cassii, 241, 255, 256; pacem cum Antonio suadet, 258; homo ventosissimus, 264; senatui se non defuturum pollicetur, 271; cum Antonio copias coniungit, 272, 275; hostis iudicatus, 277; Lepidianae feriae, 247.
— M'. Lepidus Livianus, cos. A.U.C. 688, 139, 154, 206.
— L. Paulus, Persei regis debellator, 212.
— — cos. A.U.C. 704, 33, 95, 101.
— M. Scaurus, cos. A.U.C. 639, 81.
— — praecedentis filius, 73.
Aesopus, tragoedus, 42.
Afranius, L., cos. A.U.C. 694, 1, 55, 57, 133, 138, 188.
Africa, populi Romani provincia, 184, 185; Africanus exercitus, 279, 280.
Agamemnon, apud Homerum, 227.
Agesilaus, apud Xenophontem, 39.
Aiax, apud Homerum, 272.
Alaudae, 244.
Albanum Pompeii, 121.
Alexandria, 67.
Alexis, 123.
Aliphera, 111.
Allienus, A. 266.
Allobroges, 10, 35, 267–270; 274.
Alpes, 264, 273.
Amalthea, 10, 21, 26; Amaltheum, 21.
Amanus (mons), 101.
Amphiaraus (in fabulis), 197.
Ampius, T. Balbus, 131.
Anagnia, 244; Anagnini, 246.
Anagninum Ciceronis, 186.
Ancon(a), 126.
Annius, T. Milo, de vi reus, 59–60; consularis candidatus A.U.C. 701, 89; cp. 147.
Antiochia, Syriae urbs, 102.
Antiphon, 72.
Antium, 151.
Antonii, 94.
Antonius, C., cos. A.U.C. 691, 1.
— L., Marci triumviri frater, 270.
— M., orator celeberrimus, 214.
— M., triumvir, augur A.U.C. 704, 117; Italiae praefectus a Caesare, 170, 171, 173; eius animus in

Brutum et Cassium, 222; Siculos cives Romanos facit, 223; a Cicerone petit ut Sex. Clodium restitui patiatur, 224; C. Matius domum eius venit, 235; fictos C. Caesaris commentarios profert, 236; eius edictum, 240; legionibus Macedonicis obviam it, 343; cum legione Alaudarum Romam pergit, 244; eius foedissimus discessus, 252; D. Brutum Mutinae obsidet, 253; ad Forum Gallorum pugnat, 263; victus in Galliam Narbonensem fugit, 264, 273; cum M. Lepido in gratiam redit, 275; vid. etiam p. 272.
Antoniani, 263.
Apamea, Phrygiae, 9; 2 Syriae, 267.
Apollinis aedes, 61, 97.
Apollonidenses, 40.
Apollonius, P. Crassi libertus, 207.
Appenninus (mons), 265, 273.
Appia (via), 145.
Appuleius, 91.
— Cn. Saturninus, 117.
Apulia, 136.
Aquilius, C. Gallus, 1.
Aradus, 149.
Arbuscula, 73.
Archias, A. Licinius, 21.
Archilochus, 245.
Argenteus (fluvius), 271; pons, 270, 272.
Ariminum, 95, 132, 174.
Ariobarzanes, Cappadociae rex, 114.
Ariopagus, 92, cp. 13; Ariopagitae, 17, 92.
Aristarchus, 13.
Aristophanes, grammaticus, 245.
Armenii, 152.
Arpinum, 145, 149, 245; Arpinas Ciceronis, 21, 28, 174.
Arretium, 132.
Arsaces, 116.
Artavasdes, Armeniae rex, 102.
Artaxerxes, Persarum rex, ad quem Themistocles fugit, 169.
Asia, populi Romani provincia, 28, 181.
Asinius, C. Pollio, 187, 254–256, 264.
Ateius, C., 167.
— L. Capito, 97, 98.
Athenae, Athenienses, 90, 91, 215.
Athenodorus, Calvus, 246.
Atius, T. Labienus, 122, 126, 128, 133.
Attalus, Hypaepenus, 41.
Attica, Caecilia, 114, 186, 221, 247.
Atticus, vid. Pomponius.
Aufidius, M. Lurco, 20.
Aurelius, L. Cotta, 206, 242.
— M. Cotta, 173.
Autronius, P. Paetus, 26.
Axius, Q., 44, 72, 186.

Baiae, 19, 219.
Balbus, v. Cornelius.
Baliares insulae, 187.
Basilus, v. Minucius.
Basili bustum, 123.
Bassus, v. Caecilius.
Bestia, v. Calpurnius.
Bibulus, v. Calpurnius.
Boeotia, 214.
Bononia, 253, 273.
Britannia, 73.
Brundisium, 54, 180, 231, 243.
Brutus, v. Iunius.
Buthrotus, 103; Buthrotia res, 223.
Byzantium, 149.

Caecilia, v. Attica.
Caecilius, L., 38.
— Q., avunculus Attici, 2, 3, 32.
— Q. Bassus, 217, 222, 267.
— L. Metellus, 169.
— M. Metellus, 22.
— Q. Metellus Celer, 5–9.
— — Nepos, 5–9.
— — Numidicus, 17, 81.
Caecina, 244.
— A., 195–202; praecedentis filius, 199, 202.
Caelius, C., trib. pl. A.U.C. 703, 98, 99.

Caelius, C. Caldus, quaestor Ciceronis, 114, 119.
— M. Rufus, 93–102, 108, 116, 162, 164, 174.
— M. Vinicianus, 94.
Caesius, L., 37.
— M., 203.
Caesonius, M., 1.
Caieta, 137, 173.
Calatia, 244.
Calenum Ciceronis, 137.
Cales, 128, 247.
Calidius, M., 93.
Calpurnius, M. Bibulus, 27, 31, 32, 57, 58, 93, 101, 103, 149.
— C. Piso, cos. A.U.C. 687, 2, 206.
— L. Piso Bestia, 62.
— L. Piso Caesoninus, cos. A.U.C. 697, 128, 194, 240, 241, 251.
— C. Piso Frugi, gener Ciceronis, 34.
Calvena, v. Matius.
Calvus, (M. Crassus), 17.
Campania, 128.
Campanus ager, 26, 27, 76, 122, v. etiam Capua.
Caninius, L. Gallus, 58, 59; Caninianum tempus, 66.
— A. Satyrus, 2, 3.
Cannutius, Ti., 243.
Canuleius, 103.
Capena porta, 54.
Capenas ager, 192.
Capua, 31, 130, 131, 134, 136, 244, 247.
Carbo, v. Papirius.
Carinae, 62.
Cascellius, M., 38.
Casilinum, 244.
Cassiani horti, 206.
Cassius Barba, 218.
— C. Longinus, contra Parthos pugnat, 102; post pugnam Pharsalicam Pompeianos relinquit, 184, 185; Caesar eum sibi legat, 198; D. Bruti ad eum et ad M. Brutum epistola, 222; cum M. Bruto ad M. Antonium rescribit, 237; edictum eius et M. Bruti, 233; in Syria copias parat, 251; omne perfugium est in eo et in M. Bruto, 261, 277; creditur eum in Italiam venire, 277.
Cassius, L., praecedentis frater, 221.
— Q., praecedentis frater, 102, 119, 150.
Castulonensis saltus, 254.
Catienus, T., 38.
Catilina, v. Sergius.
Catina, 247.
Catius, C. Vestinus, 276.
Cato, v. Porcius.
Catulus, v. Lutatius.
Celer, Attici libertus, 162.
Cephalio, servus Attici, 161.
Chaerippus, 250.
Chaeron, 111.
Chios, 149.
Cibyratae, 95; forum Cibyraticum, 105.
Cilicia, populi Romani provincia, 66, 92, 99, 102–108, 111–116, 118, 119, 267.
Cincius, L., 1.
Cingulum, 126.
Claterna, 253.
Claudia, Q. Metelli Celeris uxor, 7, 24.
Claudius, Appius Pulcher, 75, 87, 93, 100, 101, 108, 113, 118.
— Appius Pulcher, minor, 96, 97.
— Ti. Nero, 118.
— C. Marcellus, cos. A.U.C. 704, 93, 194, 205.
— — cos. A.U.C. 705, 131.
— M. Marcellus, cos. A.U.C. 703, 91, 97, 98, 136, 194, 198, 205, 214.
Clodia, L. Metelli socrus, 149.
Clodius, P. Pulcher, apud Caesarem muliebri vestitu, 11; incesti reus, 11–17; absolvitur, 17; altercatio eius cum Cicerone, 19; minitatur Ciceroni, 32; eius tribuni privilegium de exsilio Ciceronis, 451 Ciceroni post reditum inimicus,

55; Milonem accusat, 60; Pompeium insectatur, 60, 61; eius levitas et imbecillitas, 68; Procilium accusat, 72; furia muliebrium religionum, 80; cum optimatibus in gratiam redit, 83; Ciceronis in eum odium numquam insigne, 226.
Clodius, P. Pulcher, praecedentis filius, 224, 226.
— Sex. (?), 167, 224.
— — rhetor, 71.
Cluvius, M. (Puteolanus), 111.
Colchi, 149, 152.
Considius, Q. Gallus, 35.
— M. Nonianus, 130, 132.
Corcyra, 22, 179, 203.
Corduba, 254–256.
Corfinium, 130, 131, 137, 144.
Corinthus, 149, 188, 210.
Cornelius, C., 62.
— M., 9.
— P., 98.
— L. Balbus, maior, 70, 140, 143, 181, 187, 218, 229, 247.
— — minor, 140, 142, 183.
— L. Cinna, cos. A.U.C. 667, 123, 137, 152.
— P. Dolabella, XV vir, 93; Tulliam ducit uxorem, 118; in bello civili Caesarianus, 129, 133, 159, 166; Ciceroni suadet ut Pompeium deserat, 176; post Caesaris mortem in seditiosos cives animum advertit, 226–229; in Ciceronis nomine tabulas novas facit, 230; Ciceronis de eo in Philippica secunda εἰρωνεία, 246; in Syriam pergit, 251; C. Trebonium occidit, 266; in Ciliciam pergit, 267; vincitur, 277; eius villa, 219.
— L. Lentulus Crus, cos. A.U.C. 705, 43, 142, 143, 180, (?) 188.
— Cn. Lentulus Marcellinus, cos. A.U.C. 698, 56, 58, 76.
— L. Lentulus Niger, flamen, 33.
— — praecedentis filius, 33.
Cornelius, P. Lentulus Spinther, cos. 697, A.U.C., 49, 50, 56–61, 65, 74, 103, 157, (?) 188.
— P. Lentulus Spinther, praecedentis filius, 70, 87.
— P. Lentulus Sura, Catilinarius, 19.
— Cn. Lentulus Vatia, 62.
— P. Scipio Africanus maior, 139.
— — minor, 61, 169; apud Ciceronem de re publica, 140.
— P. Scipio, per adoptionem Q. Metellus Scipio, 2, 188; eius bona, 241, 246.
— L. Sulla Felix, 123, 152.
— — — Faustus, praecedentis filius, 138.
Cornificius, Q., 1, 11.
— — praecedentis filius, 217, 242.
Cornutus, C., 15.
Cos, 149.
Cosanus ager, 150.
Cosconius, C., 32.
Cossinius, L., 22.
Cotta, v. Aurelius.
Crassus, v. Licinius.
Cularo, 275.
Curio, v. Scribonius.
Curius, M'., 72.
— Q., 2.
Curtius, Nicias, 219.
— M. Postumus, 166.
Cyprus, 66, 104–107, 113, 149.
Cyrrhestica, 102.
Cyrus, apud Xenophontem, 39.

Deiotarus, Galatiae rex, 102, 108, 220, 223.
— — praecedentis filius, 102.
Demetrius, Magnes, 142.
Demosthenes, 23.
Dertona, 264.
Dicaearchus, 28, 110, 111.
Diochares, 181.
Diodotus, Luculli libertus, 41.
— Stoicus, 208.
Diogenes, 100.
Dionysius, (secundus, Syracusanus) 148, 188.

Dionysius, Attici libertus, 71.
— servus (?) Ciceronis, 74, 111, 121, 157, 172.
Dionysopolitae, 37.
Diphilus, tragoedus, 31.
Dolabella, v. Cornelius.
Domitius, L. Ahenobarbus, cos. 700, A.U.C., 2, 73, 116, 131, 132, 137. 138.
— Cn., praecedentis filius, 117.
— Cn. Calvinus, 62.
Drusus, v. Livius.
Dyrrhachium, 50.

Eleusis, 118.
Ennius, Q., citatus, 113.
Ephesus, 43.
Epidaurus, 214.
Epirus, 10, 49, 148, 149, 157; Epirotici, 10.
Eporedia, 272.
Eppius, M., 97, 130.
Eros, 206, 247.
Etruria, 198, 265.
Euphrates, 102.
Eutychides, 71.

Faberius, 206.
Fabius, 24.
— C., Caesaris legatus, 138.
— C., 38.
— Q. Maximus Cunctator, 212.
— — — praecedentis filius, 212.
— — Vergilianus, 130.
Fadius, C. (vel Q. ?) Gallus, libertus, 245.
Fannius, C., 34, 180.
Faucius, M., 202.
Favonius, M., 14, 25, 60.
Flaccus, v. Valerius.
Flavius, L., 40, 41, 161.
Fonteius, M., 72.
Formiae, 133, 144, 145; Formianum Ciceronis, 134, 145, 148, 150, 151, 231.
Forum Cornelium, 253.
— Gallorum, 262, 263.
— Iulii, 270.
Forum Voconii, 271.
Frusinas Ciceronis, 177.
Fufidius, Q., 202.
Fufius, Q. Calenus, 12, 14-16, 29, 245.
Fulira, M. Antonii uxor, 223.
Fundanius, C., 40.
Furius, C. Camillus, 120.
— Crassipes, 63, 65.
— (L. Philus ?) Cicero se Furium facit, 32.
Furnius, C., 145, 156, 256, 259, 261, 269, 279, 280.

Gabinius, A., 84, 113; lex Gabinia, 106, 107, 113.
Galba, v. Sulpicius.
Galeo, 184.
Gallia, Cisalpina, 2, 5, 253.
— Transalpina, 26, 258.
Gallicus tumultus, 220.
Gallii duo, (M. et Q.), 93.
Gallus, v. Sulpicius.
Gellius, L., cos. 682 A.U.C., 206.
Glabrio, v. Acilius.
Getae, 152.
Graecia, populi Romani provincia, 198, 253, v. etiam Achaia.

Hales, fluvius, 239.
Haterianum ius, 189.
Hector, apud Naevium, 115.
Hephaestus, Apamensis, 37.
Ἡρακλείδειον, 246.
Hermia, 41, 134.
Hermippus, 37.
Hermon, 103.
Hippias, Pisistrati filius, 152.
Hirrus, v. Lucceius, Lucilius.
Hirtius, A., 187, 222, 223, 230, 249, 250, 253, 262, 263, 273; Hirtianum ius, 189.
Hispania, 91, 124, 181.
Hispo, 49.
Homerus, 272.
Hortensius, Q. Hortalus, cos. 685 A.U.C., 10, 14, 15-17, 35, 57, 58, 118, 165.

Hortensius, Q. Hortalus, praecedentis filius, 173.
Hypsaeus, v. Plautius.

Iconium, 103.
Inalpini, 244.
Interamna, ad Lirim, (?) 24; Interamnates ad Nar, 72.
Isara, flumen, 270, 274, 275.
Isauricum forum, 105.
Isidorus, 177.
Isocrates, 22.
Italia, 43, 46, 54, 121, 126, 138, 141, 153, 189, 251, 253, 254, 264, 265, 270, 272, 274, 277.
Iuba, Numidiae rex, 190.
Iulius, C. Caesar, (dictator), apud eum fit Bonae Deae, 11; eius venti sunt secundi, 24; consul A.U.C. 695, 26–43, 124; Lucae cum Pompeio de re publica colloquitur, 77; C. Trebatium ei commendat Cicero, 70; C. Matius perficit ut diligat Ciceronem, 231; in senatu de provinciis eius agitur, 95, 97, 100; Curio eum defendit, 102, 109; fert condicionem ut ipse et Pompeius exercitus tradant, 117; cum eo aut depugnandum aut habenda e lege ratio, 122–125; in Italiam irrumpit, 705 A.U.C., 126–134; ad Corfinium castra ponit, 137; oppido capto P. Lentulum aliosque incolumes dimittit, 144, 157, 158; eius clementia, 142–145, 158; Pompeium Brundisii obsidet, 157; Ciceronis cum eo colloquium, 149; simulationem mansuetudinis et divitiarum amittit, 168; in Hispania contra legatos Pompeii pugnat, 163–168; Pompeium prope Dyrrhachium circumvallat, 176; Cicero pro Quinto fratre iram eius deprecatur, 183; post pugnam Pharsalicam Alexandriae, deinde in Asia bellum gerit, 185; A.U.C. 708 in Africa pugnat, 187; in Italiam redit, ib.; M. Marcello reditum in patriam concedit, 194, 198, 205; eius in victos clementia, 197, 198; Cicero ei P. Crassum commendat, 207; numquam interpellat ne C. Matius quibus velit amicis utatur, 235; in primo consulatu Volaterranis consulit, 216; eius ludi post victoriam Mundensem celebrati, 218; apud Ciceronem Puteolis coenat, 218, 219; eius dicta de M. Bruto, 220; et de Cicerone, 220, 221; multa Siculis concedit, 223; C. Matii in eum constantia, 235; eius commentarii post Idus Martias a M. Antonio prolati, 226.
(Iulius) C. Caesar Octavianus, v. Octavius.
— L. Caesar, cos. 690 A.U.C., 206, 227, 242, 252, 253.
Iunius, D. Brutus, post Caesaris mortem cedendum ex Italia censet, 222; Galliae citerioris rector in Inalpinos pergit, 245; populus Romanus omnia ab eo exspectat, 248; praeclarus, 252; Mutinae obsidetur, 253, 262; liberatus Antonium sequitur, 264, 265; Eporediae castra ponit, 272; de rebus gestis suis Ciceronem facit certiorem, 273; eius copiae, 279.
— L. Brutus, cos. 245 A.U.C., 34.
— M. Brutus per adoptionem Q. Servilius Caepio, nominatus a Vettio, 33; eius avaritia, 105–107; 112–114; Cicero eum amat, 108, 114; Gallia citeriori praefectus a Caesare, 198, 202; eius epistola, de Catilinariis, 205; pro Deiotaro Niceae dicit, 220; Caesaris de eo dictum, 220; Matius eius inimicissimus, 221; Cicero semper eum amavit, 228; litterae et edictum eius et C. Cassii, 237, 238; cum Cicerone Veliae colloquitur, 239; in Macedonia copias parat, 251, 253.

Iunius, L. Paciaecus, 187.
— D. Silanus, cos. 692 A.U.C., 206.
— M. Silanus, 262, 271.
Iuventius, M. Laterensis, 29, 269, 276.

Laberius, D., 218.
Labienus, v. Atius.
Lacedaemonii, Themistocli inimici, 169.
Laco, 246.
Laelii, 94.
Laelius, C. Sapiens, 5.
Laenius, (M. ?), 103.
Lamia, v. Aelius.
Lanuvium, 221; Lanuvinum, 151.
Laodicea, 92.
Laterensis, v. Iuventius.
Laterium Q. Ciceronis, 160.
Latinitas, 223.
Lentulus, v. Cornelius.
Lepidus, v. Aemilius.
Lepreon, 111.
Lepta, Q., 70, 157.
Lesbos, 149.
Leucopetra, 238.
Licinius, plagiarius, 38.
— Aesopi servus, 42.
— M. Crassus, cos. 684, 699 A.U.C., Ciceronem in senatu laudat, 13; iudicium Clodianum corrumpit, 17; Cicero exsul eum metuit, 47; actiones eius A.U.C. 698, 59-62, 77; Cicero cum eo redit in gratiam, 84.
— P. Crassus, praecedentis filius, 207.
— Crassus Dives, 34.
— L. Lucullus, 21, 206.
— M. Lucullus, praecedentis frater, per adoptionem M. Terentius Varro Lucullus, 21, 57, 66, 206.
— Macer, 63.
— L. Murena, cos. 692 A.U.C., 206.
Ligurius, A., 182.
Livius (?), Drusus, 73, 118, 206.
Lollius, L., 97.
— M. Palicanus, 1.
Luca, 77.
Lucceius, L., 15.
— L., M. F., 107.
— seu Lucilius, C. Hirrus, 94, 97, 130.
Luceria, 130, 141, 145, 186.
Lucilianum vallum, 245.
Luciniana domus, 62.
Lucullus, v. Licinius.
Lupus, v. Rutilius.
Lurco, v. Aufidius.
Lutatius, Q. Catulus, 10, 18, 35, 206.
Lycaonium forum, 105.
Lycia, 149.

Macer, v. Licinius.
Madarus, v. Matius, C., 221.
Maecia tribus, 73.
Magius, P. Cilo, 214.
Maleae, 214.
Mamercus, Q., 202.
Mamilius, Octavius, 152.
Mamurra, 122, 219.
Manlius, A. Torquatus, 213, 247 (?).
— L. Torquatus, cos. 689 A.U.C., 206.
— — praecedentis filius, (?) 105, 130, 247 (?).
Marathonia pugna, 152.
Marcellinus, v. Cornelius.
Marcellus, v. Claudius.
Marcius, C. Coriolanus, 152.
— L. Censorinus, 41.
— Q. Crispus, 267.
— C. Figulus, cos. 690 A.U.C., (?) an idem cum Q. Minucio Thermo, 3, 206.
— L. Philippus, cos. 663 A.U.C., 137.
— — praecedentis filius, cos. 698 A.U.C., 76, 218, 223, 251.
— Q. Rex, 19.
Marius, C., 152, 169.
— M., 189.
Martia legio, 262, 263.
Matinius, P., 105.
Matius, C., 157, (Madarus), 220, 221, 231, 232; eius ad Ciceronem litterae, 233; (Calvena), 245.
Maurorum equites, 263.
Megara, 210.
Megaristus, Antandrius, 37.

Melita, 170.
Memmius, C. Gemellus, 43, 73, 92.
Menocritus, 86.
Messalla, v. Valerius.
Messius, C., 55, 73.
Metellus, v. Caecilius.
Miletus, 149.
Milo, v. Annius.
Minturnae, 130.
Minucius, L. Basilus, 179.
— Q. Thermus, 2, (?) 108, v. etiam Marcius, C. Figulus.
Misenum, 11, 170.
Molon, 25.
Mucia, Q. Metelli soror, 7.
Mucius, Q. Scaevola, 137; Mucianus exitus, 157.
— — trib. pl. 700 A.U.C., 150.
Munatius, Cn. Plancus, 268, 269.
— L. Plancus, praecedentis frater, a Cicerone admonitus, 256; Galliae Comatae praeest post Caesaris mortem, 258; senatus partibus se favere profitetur ib.; Cicero eum ut rem publicam defendat hortatur, 256, 260; Rhodanum transit, 268; cum Lepido agit ut rei publicae succurrat, 299; ab eo deceptus, 276; cum D. Bruto copias coniungit, 279; de Octavio queritur, 280.
— T. Plancus Bursa, 218.
Murcus, v. Statius.
Murena, v. Licinius, Terentius.
Mustela, v. Tamisius.
Mutina, 253, 262, 268, v. etiam Antonius, M.; Iunius, D. Brutus.
Myrtilus, 247.

Nacvius, Cn., poeta, citatus a Cicerone, 115.
Navius, Attus, augur, 168.
Neapolis, 227, 238; Neapolitanum Pontii, 229.
Nerius, Cn., index, 61, 62.
Nestor, apud Homerum, 227.
Nicaea, 220.
Nicias, Smyrnaeus, 37.
Nicias, Curtius, 219.
Nigidius, P. Figulus, praetor 696 A.U.C., 43.
Ninnius, L. Quadratus, 173.
Nonius, M. Sufenas, 72.
Numestius, Numerius, 33.
Nymphon, Colophonius, 38.

Octavius, C., 26, 39.
— — praecedentis filius, per adoptionem C. Iulius Caesar, qui et Augustus appellatus est, post Caesaris mortem in Italiam redux, 223; eius contio, 230; eius ludi, 234; in Antonium insidias parat, 242; Ciceronem de re publica consulit, 244, 247; veteranos in suam sententiam perducit, ib.; legiones duae ad eius auctoritatem se conferunt, 252; ad Forum Cornelium castra ponit, 253; Antonium ad Mutinam victum persequi non vult, 265, 280; L. Plancus de eo queritur, 280.
— L. Naso, 40.
— M., 103.
— Mamilius, 152.
Olbiensis epistola, 62.
Olympia, 240.
Oppius, C., 146, 166, 220.
Orodes, Parthorum rex, 102.
Ovia, 206.

Paciaecus, v. Iunius.
Paetus, v. Autronius, Papirius.
Palicanus, v. Olius.
Pammenia, 114.
Pamphylium forum, 105.
Panaetius, philosophus, 157, 246.
Pansa, v. Vibius.
Papirius, C. Carbo, C. Gracchi aequalis, 61.
— L. Paetus, 26, 188, 192.
Parma, 253.
Parthi, 91, 101, 102, 112, 119: Parthicum bellum, 118.
Patrae, 179.
Patron, Epicureus, 42, 92.
Paulus, v. Aemilius.

Pausanias, 96.
Pedanum Caesaris, 160.
Peducaeus, Sextus, Siciliae propraetor 678–679 A.U.C., 160.
— — praecedentis filius, 117, 129, 146, 155, 160, 162, 245.
Pelopidarum fama, 224.
Peloponnesus, 111.
Pericles, 127.
Petreius, M., 133.
Phaedrus, Epicureus, 239.
Phamea, 151.
Phania, 108.
Pharnaces, Mithridatis Eupatoris filius, 185.
Phemius, 105.
Philippus, Macedoniae rex, 20.
— v. Marcius.
Philo, M. Caelii libertus, 100.
Philogenes, 110.
Philotimus, Terentiae libertus, 144, 147.
Phliasii, Φλιοῦς, 111.
Picena, 128; Picenus ager, 130.
Pilia, uxor Attici, 92, 240.
Pilius, Q., 96, 97.
Piraeus, 210, 214, 215.
Pisaurum, 132.
Pisistratus, Caesar cum eo confertur, 144.
Piso, v. Calpurnius, Pupius; Pisonis lucus, 62.
Pituanius, 72.
Plaguleius, 167.
Plancius, Cn., 203.
Plancus, v. Munatius.
Plato, Socratis discipulus, 79, 82; Platonis πολιτεία, 25.
— Sardianus, Epicureus, 42.
Plautius, P. Hypsaeus, 57.
Plautus, iudex e consilio Clodiano, 18.
Polla, D. Bruti uxor, 250.
Pollentia, 274.
Pollio, v. Asinius.
Polycharmus, praetor Atheniensis, 92.
Pompeia, C. Caesaris uxor, 11.
Pompeianum Ciceronis, 26, 173, 189, 240, 247.
Pompeius, Cn. Magnus. Cicero litteris eius parum contentus, 4, 5; eius Romam ex Asia reducis prima contio, 12; μάλ' ἀριστοκρατικῶς loquitur, ib., cp. 13; eodem anno trudit L. Afranium, consularem candidatum, 20; Cn. Cicero appellatus, ib.; Cicero de eius familiaritate se excusat, 24; Caesaris primum consulis leges probat, 27, 136; Caesaris gener, ib.; Cicero eum monet ne se coniungat cum Caesare, 196; Diphilus tragoedus in eum invehitur, 31; Bibulus facit eum certiorem ut caveat insidias, 33; iubet Ciceronem sine cura de Clodio esse, 35; L. Flavii rem Q. Ciceroni commendat, 41; privatus dictator appellatus, 42; Ciceroni omnia polliceturi (exeunte anno 695 A.U.C.), 43; in adoptando P. Clodio augur, 136; eius minus liberale responsum, (696 A.U.C.), 45; restituendi quam retinendi Ciceronis studiosior, 136; eius ratio de Ciceronis reditu, 50; ei omnis rei frumentariae potestas per quinquennium datur, 55; regis Alexandrini reducendi curam sibi committi cupit, 56–57, (A.U.C. 698); Cicero apud eum cenat, 59; Miloni advocatus venit, ib.; eius cum Clodio et C. Catone inimicitiae, 60, 61; in Sardiniam et in Africam proficiscitur, 77; a Crasso in Ciceronem incensus, ib.; Lucae cum Caesare colloquitur, ib.; princeps in re publica, 78; Ciceronem cum Vatinio et Crasso reconciliat, 83, 84; Cicero de eius auctoritate ad P. Lentulum scribit, 66; proconsul Hispaniae in Italia commoratur, 70, (A.U.C. 700); Scauro, consulari candidato, studet, 73; eius in Hispaniam eundi consilium non probatum a Cicerone (A.U.C. 703), 91; M. Marcelli factum de Comensi ei displicet, ib.; omnes oportere so-

natui dicto audientes esse dicit, 95: eius cum C. Caesare inimicitiae, 97–100, 117, 120; dicitur valde pro Appio laborare, (A.U.C. 704), 101, cp. 108, 114; Cicero eum monet ne se diiungat a Caesare, 196, 197; ei ut eat in Hispaniam suadet, 197; Cicero totus eius est, 108; Q. Cassium sine sorte quaestorem deligit, 119; A.U.C. 705 urbem relinquit, 126–128; Ciceronem Campaniae praeficit, 128; Ciceronem ad se Luceriam venire cupit, 130; L. Domitio opem ferre non vult, 131; eius multorum annorum peccata, 135, 136; Brundisium se confert, 140, 142, 157; eius ad Caesarem epistola, 139; dominatio quaesita ab eo, 141; iracundia eius timetur, 144; Sullani regni similitudinem concupiscit, 146, cp. 149, 152, 154, 179–181; Brundisii circumvallatus, 157; Cicero in eius castra se confert, 173–176; prope Dyrrhachium circumvallatus, 176; bene rem gerit, 177; suis militibus confidere coepit, 190; victus fugit, ib.; exitus eius, 180, 188.

Pompeius, Cn. Magnus, praecedentis filius, 101, 187.

— — Sextus, praecedentis frater, 101, 220, 222.

Pomponia, Q. Ciceronis uxor, 26, 110, 182.

Pomponius, T. Atticus; Ciceroni (A.U.C. 689) reditu eius opus est maturo, 4; Roma in Epirum (?A.U.C. 693) proficiscitur, 10; Cicero eum ut celeriter Romam redeat (A.U.C. 695) rogat, 33; Cicero exsul se tectis eius credit, 46; in Epirum (A.U.C. 696) redisse videtur, 53; Romam redux (A.U.C. 698) uxorem ducit, 62; in Asiam (A.U.C. 700) proficiscitur, 71; in Italiam redux, 90, 102; Ciceronem ne Pompeium ex Italia fugientem comitetur admonet, 153–155; v. etiam Ciceronis ad eum epistolas passim.

Pomptina tribus, 73.

Pomptinus, C., 91, 105, 121.

Pontidia, 108.

Pontius, L. Aquila, 2, 229.

Porcius, C. Cato, 42, 59–61, 72.

— M. Cato, censorius, 212; 'Cato maior,' Ciceronis opus, 230.

— — — 'Uticensis,' praetor A.U.C. 700; in Lentulum et socios eius animadvertendum censet, 205, 206; rogationem de P. Clodio promulgatam probat, 11, cp. 14; duo senatus consulta eo postulante facta sunt, 20; dicit tamquam in Platonis πολιτείᾳ sententiam, 25; nimia severitas eius equites a senatu abalienat, ib.; summa fide erga Ciceronem A.U.C. 696 se gerit, 44; supplicationem Ciceroni negandam censet, 115, 116; Siciliam ei a Pompeio commissam deserit 172, 173; mors eius, 188; Atticus Ciceroni Cato, 239.

Porsena, 152.

Posidonius, philosophus, 22, 246.

Postumia, 105, 108; filius eius, 108.

Postumius, 105.

— P., 215.

Praeneste, 187.

Preciana hereditas, 120.

Procilius, 72.

Ptolemaeus, xii., Auletes, rex Alexandrinus, 27, 56–58, 66, 67.

Ptolemais, 67.

Publicius, Q., 42.

Publilius (Syrus), 218, 221.

Pupius, M. Piso, cos. A.U.C. 693, 10, 11, 14.

Puteoli, 11, 219; Puteolanum Ciceronis, 218, 244, 245.

Quinctius, L., 123.

Rabirius, C., 23.

Racilius, L., trib. pleb. 698 A.U.C., 66.

Ravenna, 77.
Reatini, 72.
Regini, 238.
Regium Lepidi, 253, 264.
Reguli causa, 246.
Rex, v. Marcius.
Rhodanus, 268.
Rhodus, 149, 191, 235.
Roscius, L. Otho, 23; Roscia lex, 31.
Rosia sive Rosea, 72.
Rubriana, (praedia), 246.
Rullus, v. Servilius.
Rutilius, P. Lupus, trib. pleb. 698 A.U.C., 57, 58, 248.

Salaminii ex Cypro, 105, 106, 112–114.
Samnium, 247.
Sampsiceramus, (Cn. Pompeius ita appellatus), 27.
Sardanapalus, 169.
Sardinia, 62, 77.
Saturninus, v. Appuleius.
Scaevola, v. Mucius.
Scaptius, M., 105–107, 112, 113.
Scaurus, v. Aemilius.
Scipio, v. Cornelius.
Scribonius, C. Curio, cos. 678 A.U.C., 14, 33, 206.
— — praecedentis filius, A.U.C. 693 P. Clodio opem fert, 14; A.U.C. 695 palam adversatur iii viris, 29, 31; nominatus a Vettio, 33, 34; rogatus a Cicerone ut Miloni, consulari candidato, auxilio sit, 89; Caesar eum valde contemnit, 94; senatus partes secuturus videtur, ib.; tribunus pleb. design. se contra Caesarem parat, 100; trib. pleb. A.U.C. 704 transfugit ad populum, 102, 109; A.U.C. 705 eo facili et bono utitur Cicero, 170; amicitia eius in Caesaris partes M. Caelium trahit, 174.
— L. Libo, 57, 131.
Seleucea, (ad Tigrim), 116.
Sempronius, C. Rufus, 95, 114, (?) 250.
Septem aquae, 72.
Septimia, 245.
Septimius, C., 97.
Sergius, L. Catilina, consularis candidatus, 1; (?) defensus a Cicerone A.U.C. 689, 3–4; bis absolutus 19; coniuratio eius, 13, 20, 23, 35; orationes Ciceronis in eum, 23; animadversio senatus in socios eius, 205, 206.
Servaeus, Q., 94.
Servilia, mater tyrannoctoni, 229.
Servilli, 97.
Servilius, M., 96, 97.
— C. Ahala, 34.
— Q. Caepio, cp. Iunius, M. Brutus.
— P. Rullus, 102.
— P. Vatia Isauricus, cos. A.U.C. 675, 57, 206.
— — praecedentis filius, cos. A.U.C. 706, 26, 241.
Sestius, P., 61–63, 220, 221.
Sicca, 245.
Sicilia, Siculi, 22, 91.
Sicyon, 10; Sicyonii, 25.
Sidon, 149.
Sinuessa, 158.
Sittiana syngrapha, 95, 100.
Smyrna, 149.
Solon, 161.
Spartacus, 113.
Spongia, 18.
Statius, Q., Ciceronis libertus, 30, 36, 37, 39, 110.
— L. Murcus, 187, 267.
Sufenas, v. Nonius.
Sulla, nomenclator, 40.
— v. Cornelius.
Sulpicius, P. Galba, 1.
— Ser. Galba, 150, pugnam ad Forum Gallorum factum narrat, 262–264.
— C. Gallus, 212.
— Ser. Rufus, cos. 703 A.U.C. Achaiae praefectus a Caesare, 193, 198; Caesar eum laudat, 194; Ciceronem consolatur mortua Tullia, 208–211; Ciceroni necem

M. Marcelli nuntiat, 214, 215; A.U.C. 710 Romae non adest, 242; mors eius, 252, 254.
Sulpicius, Ser. Rufus, praecedentis filius, 159, 195, 211.
Synnada seu Synnas, Phrygiae urbs, 92; forum Synnadense, 105.
Syracusae, 247.
Syria, populi Romani provincia, 251, 266, 267.
Tamisius Mustela, 246.
Tarentum, 231.
Tarquinius, L. Superbus, rex Romanus, 152.
Tarracina, 130.
Tarsus, 93, 104.
Tauromenium, 247.
Taurus, Mons, 104.
Teanum Sidicinum, 130, 247.
Tenea, 111.
Terentia, M. Ciceronis uxor, summa fide erga maritum exsulem agit, 47–50; eam Attico commendat Cicero, 52; Tulliam filiam P. Dolabellae despondet, 118; Ciceronis ad eam litterae, Athenis scriptae, 120; Cicero pro ea omnia timet post Caesaris in Italiam irruptionem, 129, cp. 134; Cicero ad castra Pompeii profecturus ad eam litteras mittit, 173; minus belle habet, 175; a marito repudiata, 206, cp. 204.
Terentius, Q. Afer, poeta, citatus a Cicerone, 83.
— — Culleo, 45, 271.
— M. Varro, 33, 44, 187, 246, 266.
— — Lucullus, v. Licinius Lucullus.
— A. Varro Murena, 133.
Tettius, Sex., 97.
Teucris, 12, cp. 15.
Thalna, 18.
Themistocles, 127, 152, 169; Themistocleum consilium, 168.
Theophanes, Mytilenaeus, 91, cp. 122.
Theophrastus, Eresius, Aristotelis discipulus, 28.
— Amisenus, v. Tyrannion.
Theopompus, unus de cohorte Q. Ciceronis, 40.
Thermus, v. Minucius.
Thessalonica, 46, 48.
Thrasybulus, Atheniensis, 137.
Thucydides, scriptor historicus, 169.
Thyillus, 21.
Tiro, v. Tullius.
Titinius, Q., 104.
— praecedentis filius, 148, 159.
Titius, C. Strabo, 261.
Torquatus, v. Manlius.
Transpadani, 91, 122, 133, 253.
Tratorius, 242, 243.
Trebatius, C. Testa, 70, 150, 230, 231, 235.
Trebellius, L. Fides, 274.
Trebonius, C., 251–253, 266.
Trebulanus ager, 231.
Tritia, Peloponnesi urbs, 111.
Tuccius, M., 96.
Tullia, M. Ciceronis filia, 47–50; patri post exsilium reduci obviam it, 54; eam Furio Crassipedi despondet pater, 63; cp. 65; 'pusilla' laborat, 72; P. Dolabellae nubit, 118, cp. 101; 'lux nostra,' 120; patris pro ea sollicitudo, 129, 166; A.U.C. 705 Romae manet, 134, 162; patrem orat ut quid in Hispania geratur exspectet, 167; eius virtus mirifica, 170; patri vita dulcior, 173; morbus eius, A.U.C. 706, 180; eam Attico commendat pater, 182; Ciceronem ob eius mortem consolatur Ser. Sulpicius, 208–211.
Tullius, L., legatus Ciceronis, 91, 104.
— M., amicus Ciceronis, 131.
— M. Cicero, orator, consularis candidatus A.U.C. 689, 1–4; orationes consulares, 23, cp 205; a Cn. Pompeio ob res in consulatu

gestas se laudari vult, 4, 5; Q. Metellus Nepos inimicus ei, 7-9; domum emit, 12, 19; in P. Clodium testimonium dicit apud iudices, 17; eius cum eodem altercatio, 19; eius de primo Caesaris consulatu sententia, 26-32; a Caesare invitatur ut legatus ei sit, 32; P. Clodius ei minitatur, ib.; ei Pompeius omnia pollicetur et Caesar, 43; ad Q. fratrem scribit de administratione provinciae, 36-42; in exsilium it A.U.C. 696, 43-52; A.U.C. 697 Romam redit, 53; Pompeio rei frumentariae curationem decernit, 55; A.U.C. 698 in senatu decernit ut reductio regis Alexandrini P. Lentulo committatur, 56-59, cp. 66; dicit pro L. Bestia, 62; et pro P. Sestio, 63; ut de agro Campano referatur censet, 76; cum Pompeio et Caesare redit in gratiam, 77-79; παλινῳδία eius, 64; consilia sua litteris ad P. Lentulum scriptis vindicat, 74-87; C. Trebatium Caesari commendat, 70; C. Messium defendit, 73; C. Curioni Milonem commendat, consularem candidatum, 88-90; eius iter per Graeciam A.U.C. 703, 90-92; proconsulatus Ciliciae, 92-120; reditus in Italiam, 120; sperat triumphum, 114-116, 119, 121; sententiae eius instante bello civili, 122-125; diu dubitat an se cum Pompeio coniungat, 126-166; eius ad Pompeium litterae, 130; et ad Caesarem, 156; cum Caesare colloquitur, 159; navem conscendit in Epirum iturus, 173; in castris Pompeii a M. Caelio et a P. Dolabella litteras accipit, 174-176; ibi sollicitudine conficitur, 177; quid Pompeiani facturi essent si vicissent exponit, 179, 190; Pompeii consilia reprehendit, 189, 197; in Italiam redux Brundisii commoratur, 178-186; eius de belli Africani eventu sollicitudo, 184, 187; Caesari pro M. Marcello gratias agit, 194; Caesarem laudat, 195, 197-199; ei Apollonium commendat, 207; Ser. Sulpicio de morte Tulliae rescribit, 211-213; ludos Caesaris A.U.C. 709 spectat, 218; Caesarem hospitio Puteolis accipit, 218; venit ad Caesarem Sestii rogatu, 221; post Caesaris mortem devertit apud C. Matium, 220; Octavius perhonorifice cum eo agit, 223; M. Antonio Sex. Clodii restitutionem concedit, 225; Dolabellae gratulatur quod in seditiosos animadverterit, 226; eius 'Cato maior,' 230, 246; ad C. Matium litteras mittit, 230; a Leucopetra Graeciam versus navigat, 238; austro reiicitur, ib.; Veliae cum M. Bruto colloquitur, 239; Romam reversus Philippicam orationem primam habet, 241; Philippicam secundam Attico mittit, 245; librum 'de Officiis' scribit, 246; xiii Kal. Ian. in senatu verba facit, 249, 252; ad rem publicam defendendam hortatur M. Aemilium Lepidum, 257; C. Cassium Longinum, 241, 251, 253, 261, Q. Cornificium, 249; D. Iunium Brutum, 248, 250; L. Munatium Plancum, 256, 260, 271; eius liber 'de Oratore,' 86; orator, 291; de temporibus suis, 86.

Tullius, M. Cicero, praecedentis filius, 3, 203.

— Q. Cicero, oratoris frater, Asiam pro praetore regit, 28, 36-42; pro fratre aliquid Cn. Pompeio despondet, 77; in Sardiniam it Pompeii legatus, 62, 77; et in Galliam cum Caesare, 85; cum fratre legatus in Ciliciam proficisci-

tur, 104, 108; Marcus eum provinciae praeponere in animo habet, 105, 119; sed quaestorem praeponit, 119; Pomponiam repudiare in animo habet, 110; post pugnam Pharsalicam aversissimo animo in fratrem est, 179; in Asiam proficiscitur ut iram Caesaris deprecetur, 181; epistolam scribit plenam omnium in fratrem proborum, 182; pro eo frater Caesaris iram deprecatur, 183; litteras eius ad Atticum mittit frater, 247.
— Q. Cicero, praecedentis filius, 63, 110, 119, 179, 181.
— M. Tiro, 132–134.
Tullus, v. Volcatius.
Tusca disciplina, 196.
Tuscenius, 38.
Tusculanum Ciceronis, 26, 192, 230.
Tyrannion, 63, 187.
Tyrus, 149.

Ulixes, apud Homerum, 272.
Utica, 187.

Vada, 265, 273.
Valerius, P. 108, 238 (?).
— L. Flaccus, interrex A.U.C. 672, 137.
— — — praetor A.U.C. 691, 35.
— M. Messalla Niger, cos. A.U.C. 693, 10–14.
— M. Messalla, cos. A.U.C. 701, 73, 93.
— Q. Orca, 216.
— interpres, 247.
Varius, P., 2.
Vatinius, P., 34, 76, 83, 84, 179, 182.
Veiens ager, 192.
Velia, 239.
Velinus, 72, 73.
Vennonianae res, 128.
Ventidius, P. Bassus, 264, 265, 271.
Ventidiani milites, 274.
Vergilius, (C.), 39.
Vestorius, C., (Puteolanus), 96, 111, 114, 224, 230.
Vettius, 64.
— (L.), index, 33, 34.
Vibius, C. Pansa, trib. pleb. A.U.C. 703, 98, 99; cos. des. 710 A.U.C., 124; de D. Bruto bene sentit, 248, cp. 249; cos. 711 A.U.C., 'egregius consul,' 251, 252; Romae dilectum habet, 253; ad Pollionem litteras mittit, 255; ad D. Brutum liberandum profectus, ab Antonio vincitur, 263; quo in praelio vulneratus, paulo post Bononiae moritur, 264, 273.
Vibullius, L. Rufus, 77, 130.
Villius, Sex., 88.
— L. Annalis, 97.
Vinicius, L., 98.
Visellius, C. Varro, 52.
Vocontii, 275.
Volaterrani, 216, 217.
Volcatius, L. Tullus, cos. 688 A.U.C. 57, 58, 139, 154, 194.
Volusius, (?) Cn., 91.
— M., 134.
— Q., 104.

Xeno, philosophus Epicureus, 91, 92.
Xenocrates, philosophus, 17.
Xenophon, Cyrus atque Agesilaus apud eum, 39.

Zeuxis, Blaudenus, 37, 38.
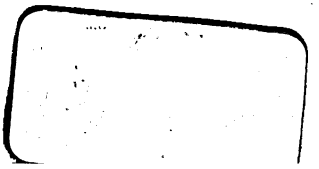
BODLEIANA BIBLIOTHECA